समाजभूषण सेठ श्री चम्पालालजी बाँठिया स्मृति ग्रंथ

चम्पालाल बाँठिया

प्रकाशक
श्री जवाहर विद्यापीठ
जवाहर मार्ग, भीनासर-३३४४०३, बीकानेर (राजस्थान)

- स्मृति ग्रन्थ प्रकाशन समिति
  - भवरलाल कोठारी (संयोजक)
  - चम्पालाल डागा
  - माणकचन्द रामपुरिया
  - धीरजलाल बाँठिया
  - सुमतिलाल बाँठिया

- अर्थ सौजन्य

  श्रीमती तारा देवी बाँठिया धर्मपत्नी स्व सेठ श्री चम्पालालजी बाँठिया

- परामर्श मण्डल
  - अन्नाराम सुदामा एम ए
  - हजारीमल बाँठिया कानपुर

- सम्पादक
  - उदय नागोरी एम ए जैन सिद्धान्त प्रभाकर

- सहसम्पादक
  - डा किरण नाहटा एम ए (हिन्दी) पीएच डी

- संस्करण

  १ मई १९९४ श्री जवाहर विद्यापीठ – स्वर्ण जयन्ती महोत्सव के अवसर पर

- मूल्य

  १०१/ (एक सौ एक रुपये मात्र)

- मुद्रक

  सांखला प्रिन्टर्स सुगन निवास
  चन्दन सागर बीकानेर

सयोजकीय

सेठ श्री चम्पालालजी बाठिया अनन्य गुरुभक्ति सघनिष्ठ एव समाजसेवा के प्रतीक थे। उन्होंने प्रज्ञापुज ज्योतिर्धर युगपुरुष अध्यात्म परम्परा के राष्ट्रधर्मी आचार्य श्री जवाहरलालजी महाराज सा की अन्तिम दो वर्षों मे भीनासर मे विराजने पर अनन्य सेवा की। आषाढ शुक्ला अष्टमी सवत् २००० को भीनासर मे आपके ही हॉल मे आचार्य श्री का स्वर्गवास हो गया। आचार्य श्री की स्मृति को अक्षुण्ण बनाने व उनकी वाणी को कालजयी बनाने हेतु भीनासर मे एक सस्था स्थापित करने के उद्देश्य से आपने समाज के महानुभावो के सामने एक अपील जारी की जिसे अपार जन समर्थन मिला और बाद मे श्री जवाहर विद्यापीठ के रूप मे इसने मूर्त रूप लिया। सस्था की स्थापना से इसके बहुमुखी उन्नयन तक सम्बद्ध रहकर आपने सेवा निष्ठा व समर्पण की अलख जगाते हुए जो आदर्श प्रस्तुत किया है वह प्रेरणास्पद एव अनुकरणीय है। इस वर्ष सस्था ने अपनी स्थापना के ५० वर्ष पूर्ण करके त्रिदिवसीय स्वर्ण जयन्ती महोत्सव दिनाक २९ ३० अप्रेल व १ मई १९९४ को भव्य समारोहपूर्वक मनाया। इस अवसर पर सस्था के सस्थापक सेठ श्री चम्पालालजी बाठिया की स्मृति में एक ग्रन्थ सस्था द्वारा प्रकाशित करने का निर्णय लिया गया जो सस्था की उस महान् विभूति के प्रति सच्ची श्रद्धाजलि है। इसके प्रकाशन मे व्यय होने वाली सम्पूर्ण राशि उनके परिवार द्वारा सस्था को भट करने की सहर्ष घोषणा की गई। एतदर्थ हार्दिक साधुवाद।

स्मृतिशेष श्री चम्पालालजी सा विद्यापीठ से एकाकार हो गये थे और आजीवन इसके विकास हेतु प्रयत्नशील रहे। अद्वितीय क्षमता व बेजोड़ प्रतिभा के धनी बाठिया जी का जीवन-लक्ष्य गुरुदेव की वाणी को कालजयी बनाना रहा और इसमे उन्हें अप्रतिम सफलता मिली। जवाहर विद्यापीठ गौरवान्वित है कि जवाहर किरणावलियों के माध्यम से श्रीमद् जवाहराचार्य की वाणी लाखो पाठको तक पहुँची है और इससे उन्हे आत्माभिमुख होने व जीवन के ऊर्ध्वारोहण का सदेश मिला है। विद्यापीठ उनके ध्येय निष्ठ कर्तृत्व से गौरवान्वित हुई है। फलस्वरूप उनकी दीर्घकालीन समाज सेवा हेतु सस्था द्वारा स्वर्ण जयन्ती के अवसर पर उन्हे 'समाज भूषण की पदवी से विभूषित किया गया है।

मेरे मरुधरा के सपूत, भीनासर के भामाशाह एवं जैन समाज के अग्रणी समाजसेवी की स्मृति ग्रन्थ प्रकाशन समिति के संयोजक का दायित्व प्रदान कर संस्था ने मुझे जो अवसर प्रदान किया एतदर्थ आभारी हूँ। स्मृति ग्रन्थ प्रकाशन समिति के अन्य सदस्य सर्वश्री चम्पालालजी डागा, माणकचन्दजी रामपुरिया, धीरजलालजी बांठिया व सुमतिलालजी बांठिया भी धन्यवाद के पात्र हैं जिन्होंने इसके प्रकाशन में अपनी बहुमूल्य सलाहें प्रदान की हैं। श्री सुमतिलालजी बांठिया (संस्था के ट्रस्टी व मंत्री तथा श्री चम्पालालजी के आत्मज) की तो अद्वितीय भूमिका रही है जिन्होंने प्रकाश्य सामग्री महत्वपूर्ण सूचनाएँ दस्तावेज व फोटो आदि संकलित/प्रस्तुत करने में पूर्ण तत्परता का परिचय दिया है।

स्मृति ग्रन्थ को सुरुचि सम्पन्न पठनीय एवं संग्रहणीय बनाने और इसके सम्पादन में श्री उदय नागोरी ने अथक परिश्रम किया है। उनकी श्रमनिष्ठा व प्रतिभा के प्रस्फुटन से उनकी समर्थ लेखनी सार्थक हुई है। बांठिया सा. के तेजस्वी व्यक्तित्व को उजागर करने हेतु विविध आलेख तैयार करने व अन्य लेखों के सम्पादन में आपने अहर्निश श्रम किया है। इनके अनथक श्रम के प्रति हार्दिक आभार। उल्लेखनीय है कि प्रारम्भ में स्मृति ग्रंथ के सम्पादक मण्डल में डॉ. नरेन्द्रजी भानावत भी सम्बद्ध थे परन्तु अस्वस्थता एवं असामयिक निधन के कारण वे इसे मूर्त रूप देने में सहयोग प्रदान नहीं कर सके। इस अवसर पर उनका स्मरण करना भी हमारा पुनीत कर्त्तव्य है। प्रकाशन के अन्तिम चरण में डॉ. किरण चन्द जी नाहटा ने भी सम्पादन कार्य में सहयोग कर अमूल्य सेवाएं प्रदान की हैं एतदर्थ हार्दिक साधुवाद एवं आभार।

स्मृति ग्रन्थ परामर्श मण्डल के सदस्यों में सर्वश्री जशकरणजी 'सुमन' (गंगाशहर) एवं हजारीमलजी बांठिया (कानपुर) को धन्यवाद देना ही पर्याप्त नहीं क्योंकि उन्होंने अपने बहुमूल्य सुझाव देकर ग्रंथ-सौष्ठव हेतु जो समय दिया वह अविस्मरणीय है।

स्मृति ग्रंथ के आकर्षक मुद्रण व नयनाभिराम सज्जा के लिए सांखला प्रिन्टर्स के कर्मचारी व विशेष रूप से इसके प्रभारी श्री दीपचन्दजी सांखला को धन्यवाद देना भी मेरा कर्तव्य है जिन्होंने अल्प समय में पूरी तत्परता से इसे पूर्ण किया।

इसे सर्वांग बनाने में जिन पूज्य आचार्यों, विद्वान मुनियों, लेखकों, कवियों, हितचिन्तकों एवं महानुभावों ने अपने आशीर्वचन, शुभ कामना संदेश तथा अपनी रचनाएँ/संस्मरण/श्रद्धांजलियाँ भेजकर जो सहयोग प्रदान किया है एतदर्थ उन सब के प्रति हम हृदय से आभारी हैं। संक्षेप में स्मृति ग्रंथ को मूर्त रूप देने में प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में संलग्न सभी हितैषियों के प्रति हार्दिक आभार।

स्मृति ग्रन्थ के प्रथम खण्ड 'तेजस्वी व्यक्तित्व के आयाम मे समाविष्ट आलेखो मे श्री उदयजी नागोरी ने अपने विचार उपलब्ध सामग्री के आधार पर प्रस्तुत किये हैं। इसी प्रकार द्वितीय खण्ड 'सस्मरणो के आईने मे एव पचम खण्ड 'सवेदना के स्वर मे सम्मिलित विचार लेखको के स्वय के हैं स्मृति ग्रन्थ प्रकाशन समिति का उनसे सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

चूकि स्मृति ग्रन्थ का मुद्रण सस्था की स्वर्ण जयन्ती के अवसर पर औपचारिक विमोचन होने तक अपूर्ण था अत इसमे ग्रन्थ विमोचन एव स्वर्ण जयन्ती समारोह से सम्बन्धित चित्र भी सम्मिलित किये गये हैं।

यह स्मृति ग्रन्थ सबके लिए प्रेरणादायक बने यही मगल कामना है।

ओसवाल कोठारी मोहल्ला
बीकानेर

—भवरलाल कोठारी
सयोजक
समाजभूषण सेठ श्री चम्पालालजी बाठिया
स्मृति ग्रन्थ प्रकाशन समिति

सम्पादकीय

व्यक्ति व समाज का अन्योन्याश्रित सम्बन्ध है। व्यक्ति यदि बूद है तो समाज समुद्र। व्यष्टि व समष्टि की भेदमूलक दीवारो को ध्वस्त कर देने वाला व्यक्ति अपने कार्यों से अमरत्व प्राप्त कर लेता है। सामाजिक सस्थाओं के निर्माण मे भी नि स्वार्थ सेवाभावी एव समर्पित कार्यकर्ताओं की अहम् भूमिका रहती है। इस दृष्टि से समाज सेवी, कर्मठ कार्यकर्ता एव बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न श्रीमान् चम्पालाल जी बाठिया का जीवन आदर्श व अद्वितीय रहा है। विविध व्यवसायो से सम्बद्ध रहते हुए एव बहुमुखी व्यस्तताओं के बावजूद आपने साहित्य-सरक्षण शिक्षा-प्रसार सस्कार-निर्माण समाज सेवा जनोपयोगी कार्यों, महिला स्वावलम्बन आदि क्षेत्रों मे अभूतपूर्व कार्य किया है। लक्ष्मी की इन पर कृपा रही पर विद्यानुरागी होने के कारण आपने सरस्वती की सदैव उपासना की है। 'चम्पा सुमनवत सुरभित कर्तृत्व के धनी प्रेरणास्पद व्यक्ति के स्मृति-ग्रन्थ का सम्पादन कर स्वय गौरवान्वित अनुभव करता हूँ।

व्यष्टि समष्टि नहीं होता परन्तु समष्टि व्यष्टि का ही सयुक्त रूप है। दोना मे एकत्व व अद्वैत भाव होने से ही नव-निर्माण की स्वर्णिम पृष्ठभूमि को आधार मिलता है। आचाराग सूत्र १ ३ ४ के सूत्र 'जे एग जाणइ से सव्व जाणइ जे सव्व जाणइ से एग जाणई अर्थात् जो एक को जानता है वही सबको जानता है एव जो सबको जानता है वही एक को जानता है—को आत्मसात् कर बाठिया सा ने जो इतिहास बनाया वह समय की शिला पर सशक्त हस्ताक्षर है। निस्सदेह इस अनासक्त कर्मयोगी ने जो कुछ किया वह कल्पनातीत ही नहीं वर्णनातीत भी है। इस दिशा मे उनका स्मृति ग्रन्थ एक विनम्र भावाजलि ही है।

स्मृति-ग्रन्थ को सात खण्डों में विभाजित किया गया है। यद्यपि श्रीमान् बाठिया सा के व्यक्तित्व एव कर्तृत्व को लिपिबद्ध करना पूर्णरूपेण सम्भव नहीं परन्तु प्रयास किया गया है कि इसमे स्मृति रूप अधिकाधिक सामग्री समाविष्ट हो सके। प्रथम खड में शुभ कामना सन्देश सकलित हैं।

द्वितीय खड 'तेजस्वी व्यक्तित्व के आयाम मे श्रीमान् बाठिया सा के सक्षिप्त जीवन वृत सहित उनके विविध क्षेत्रों मे किये गये योगदान सम्बन्धी आलेख हैं। गुरु

सेवा, शिक्षा प्रसार समाज-सेवा के प्रतीक बाठिया सा ने जनोपयोगी कार्यों मे विशेष रुचि ली तो उदारतापूर्वक प्रभूत राशि दान देकर भामाशाह की स्मृति भी ताजा की है। श्री जवाहर विद्यापीठ जैसी सस्था की स्थापना कर आपने श्रीमद् जवाहराचार्य के विचारो को जन-जन तक पहुचाया है तो उनका प्रगतिवादी व क्रातिदर्शी स्वरूप भी स्पष्ट उभरा है। आपने अखिल भारतवर्षीय स्तर पर कुशल नेतृत्व का भार निर्वाह किया है तो सजग प्रहरी रूप मे अपना परिचय भी दिया है। सामान्य जन से लेकर बीकानेर के राजघराने और राजनैतिक नेताओं से आपकी घनिष्ठता व आत्मीयता रही है। इसी के साथ उनक कलाप्रेम व पडितमरण का भी परिचय प्रस्तुत किया गया है। तृतीय खड मे पारिवारिक चित्र वीथी दर्शाई गई है।

चतुर्थ खड 'सस्मरणो मे झाकता व्यक्तित्व एव कर्तृत्व मे आचार्यो मुनि-वृन्द समाज के विशिष्ट महानुभावो परिजनो हितैषियो आदि के सस्मरण सकलित हैं। यद्यपि प्रथम खड मे बीज रूप मे इनके जीवन की घटनाओं व कर्तृत्व का उल्लेख हो चुका है परन्तु उनके सम्पर्क मे आने वाले व्यक्तियो ने उनको विविध स्वरूपो व दृष्टियों से प्रस्तुत किया है। अत घटनाओं/कार्यों की पुनरावृत्ति भले ही हो पृथक् नजरिया प्रस्तुत करना ही मुख्य ध्येय रहा है। सस्मरण प्रेषित कर ग्रन्थ को सर्वाग व सुरुचिपूर्ण बनाने में सहयोगियों लेखको आदि का मैं कृतज्ञ हू। पचम खड मे सामाजिक धार्मिक शैक्षणिक व पारिवारिक उत्सवो/समारोहों सम्बन्धी चित्रो को प्रस्तुत किया गया है।

षष्ठम खड में उनके सम्मान अभिनन्दन वन्दन श्रद्धार्पण से सम्बन्धित अभिलेख सकलित हैं।

सप्तम खड मे स्मृति पुरुष बाठिया सा के प्रति प्रस्तुत श्रद्धासुमन व सवेदना के स्वर सगृहीत हैं। सम्पादन मे डॉ किरण नाहटा के अमूल्य सहयोग हेतु मैं विशेष रूप से आभारी हू। पूरा विश्वास है कि प्रस्तुत ग्रन्थ बाठिया सा के जीवन विचार बहुमुखी व्यक्तित्व को समझने मे प्रेरक व उपयोगी सिद्ध होगा। उनकी निष्ठा कर्मठता सेवा-समर्पण की ओर अभिमुख करने मे स्मृति ग्रन्थ मार्गदर्शक सिद्ध होगा इसी विश्वास के साथ।

सेठिया जैन ग्रन्थालय
बीकानेर

—उदय नागोरी

सेठ श्री चम्पालालजी बाठिया - एक दृष्टि मे

जन्म — १५ दिसम्बर १९०२ मिती मार्ग शीर्ष शुक्ला पूर्णिमा संवत् १९५९

जन्म स्थान — भीनासर जिला-बीकानेर (राज.)

पिताजी — श्री हमीरमलजी बाठिया

माताजी — श्रीमती जवाहर बाई

भाई — श्री कानीरामजी श्री सोहनलालजी

बहिनें — श्रीमती सिरेकंवर बाई खजान्ची
श्रीमती राजकंवर बाई मालू,
श्रीमती मगन कंवर बाई सेठिया
श्रीमती सूरज कंवर बाई सेठिया

प्रथम विवाह — सन् १९१४ (संवत् १९७१)

धर्मपत्नी — श्रीमती आनन्द कंवर (स्वर्गवास संवत् २००१)

पुत्री — चाँद बाई पारख

पुत्र पुत्रवधू — शान्तिलाल सुशीला देवी

पौत्र पौत्री — सुनील नीरजा चारड़िया

द्वितीय विवाह — सन् १९४४ (संवत् २००१)

धर्मपत्नी — श्रीमती तारा देवी

ज्येष्ठ पुत्र पुत्रवधू — धीरजलाल नलिनी देवी

पौत्र पौत्री — आशीष संगीता बदलिया कविता सामसुखा

कनिष्ठ पुत्र पुत्रवधू — सुमतिलाल प्रभा देवी

पौत्र — आदर्श

पुत्रियाँ — सन्तोष खजान्ची संवर चोरड़िया सुधा सिरोहिया समता वैद
सुमन भूतोड़िया सरिता चौरारिया

शिक्षा — माध्यमिक स्तर तक

व्यवसाय

छाते का	मै मौजीराम पन्नालाल ४५ आरमेनियन स्ट्रीट कलकत्ता
जूट का	मै हमीरमल चम्पालाल २ राजा वूडमन्ट स्ट्रीट कलकत्ता
	मै हमीरमल चम्पालाल एण्ड क २ राजा वूडमन्ट स्ट्रीट कलकत्ता
	मै हमीरमल चम्पालाल जूट एजेन्ट २ राजा वूडमन्ट स्ट्रीट कलकत्ता
	मै राजपूताना कॉमर्शियल क लि २ राजा वूडमन्ट स्ट्रीट कलकत्ता
	मै जी एम फोगट एण्ड क लि पार्क स्ट्रीट कलकत्ता
	मै फ्री इण्डिया मर्केन्टाइल क (प्रा) लि ३ इजरा स्ट्रीट कलकत्ता
	मै ग्रेटर राजस्थान ट्रेडिंग क (प्रा) लि २ राजा वूडमन्ट स्ट्रीट कलकत्ता
	मै इन्टरनेशनल ट्रेडिंग क नारायणगज ढाका
पत्थर पिसाई का	मै इण्डियन मिनरल इण्डस्ट्रीज लि २२/१ दमदम रोड काशीपुर (प बगाल)
	मै माइनिंग ट्रेडिंग क लि २२/१ दमदम रोड काशीपुर
फाईनेन्स का	सेठ चम्पालाल बाँठिया बैंकर्स भीनासर (बीकानेर)
कपड़े का	मै बीकानेर सिल्क भण्डार पुराना बाजार बीकानेर
लकड़ी का व	मै बीकानेर जनरल ट्रेडर्स कोटगेट के अन्दर बीकानेर
सॉ मिल	मै पोपुलर टिम्बर मार्ट कोटगेट के अन्दर बीकानेर
	मै राजस्थान टिम्बर सप्लाई क कोटगेट के अन्दर बीकानेर
एजेन्सी का	मै अनुपम ट्रेडर्स कोटगेट के अन्दर बीकानेर
ठेकेदारी का	मै यूनाइटेड कट्राक्टर कार्पोरेशन कोटगेट के अन्दर बीकानेर
बिजली का	मै जैन इलेक्ट्रिक कम्पनी कोटगेट के अन्दर बीकानेर
बर्फ फैक्टरी	मै दी रामपुरिया आईस फैक्ट्री लि , पावर हाउस के पास, बीकानेर
मशीनरी का	मै इण्डो-यूरोपियन मशीनरी कम्पनी चादनी चौक दिल्ली
पखे की फैक्टरी	मै मैचवेल इलेक्ट्रीकल्स इण्डिया लिमिटेड ऑफ नागर रोड पूना
जिप्सम का	मै बीकानेर जिप्सम कम्पनी बीकानेर
सूते का	मै रामजी ट्रेडर्स ३ बैकुण्ठ सेन लेन कलकत्ता

समाज सेवा क्षेत्र

- ❑ श्री जवाहर विद्यापीठ भीनासर की स्थापना एव सचालन
- ❑ सेठ श्री हमीरमलजी बांठिया स्थानकवासी जैन पौषधशाला भीनासर का निर्माण एव श्री जवाहर विद्यापीठ को समर्पित
- ❑ सेठ श्री चम्पालालजी बांठिया धर्मार्थ ट्रस्ट भीनासर का निर्माण कर समाज के उपयोगार्थ समर्पित
- ❑ भीनासर म दो कुओं का निर्माण कर मीठा पानी उपलब्ध करवाना
- ❑ सन् १९५२ मं सादड़ी सम्मेलन में श्री अखिल भारतवर्षीय स्थानकवासी जैन कान्फ्रेंस के अध्यक्ष रूप मे महत्वपूर्ण भूमिका।
- ❑ सन् १९५६ में भीनासर म विराट साधु सम्मेलन का आयोजन/प्रबन्ध-स्वागताध्यक्ष
- ❑ श्री श्वेताम्बर साधुमार्गी जैन हितकारिणी सस्था बीकानेर के ३७ वर्षों तक अध्यक्ष
- ❑ श्री जवाहर विद्यापीठ भीनासर के ३२ वर्ष तक मत्री व कोषाध्यक्ष के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका
- ❑ श्री जैन गुरुकुल ब्यावर व जैनेन्द्र गुरुकुल पचकुला (अम्बाला) की अध्यक्षता
- ❑ विभिन्न धार्मिक सामाजिक सस्थाओं को उदारतापूर्वक प्रभूतदान।

जनोपयोगी क्षेत्र

- ❑ छात्रो के लिए श्री जवाहर हाई स्कूल, भीनासर का निर्माण एव शिक्षा विभाग राजस्थान सरकार को समर्पित
- ❑ छात्राओं के लिए सेठ हमीरमलजी बांठिया उच्च प्राथमिक बालिका विद्यालय भीनासर का निर्माण एव शिक्षा विभाग राजस्थान सरकार को समर्पित
- ❑ श्री जवाहर विद्यापीठ के अन्तर्गत पुस्तकालय व वाचनालय की स्थापना एव सचालन
- ❑ श्री जवाहर विद्यापीठ में महिला सिलाई-बुनाई-कढ़ाई प्रशिक्षण केन्द्र की स्थापना एव सचालन

साहित्य प्रकाशन एव सेवा क्षेत्र

- ❑ आचार्य श्री जवाहरलालजी महाराज सा की अनन्य सेवा
- ❑ जवाहर किरणावलियों की ३५ किरणों का प्रकाशन कर श्रीमद् जवाहराचार्य की वाणी को कालजयी बनाना।

- ❑ श्रीमद् जवाहराचार्य की जीवनी का सर्वप्रथम प्रकाशन
- ❑ शुरू की दो जवाहर किरणावलियाँ श्रीमद् जवाहराचार्य के जीवन काल मे ही स्वय द्वारा प्रकाशित

विशेष उपलब्धियाँ

- ❑ अध्यक्ष बीकानेर राज्य व्यापार उद्योग सघ
- ❑ अध्यक्ष नगर पालिका भीनासर
- ❑ विशिष्ट समाज सेवा के लिए तत्कालीन महाराजा श्री गगासिंहजी द्वारा पब्लिक सर्विस मैडल फर्स्ट क्लास से सम्मानित।
- ❑ बीकानेर जैन समाज की तरफ से विशिष्ट समाज सेवा के लिए स्वर्ण पदक से सम्मानित
- ❑ बीकानेर राज्य के विधान सभा सदस्य तथा बाल दीक्षा के विरोध म विधेयक प्रस्तुत
- ❑ महाराजाधिराज गगासिंहजी के स्वर्ण जयन्ती महोत्सव सवत् १९९४ मे रजत पदक द्वारा सम्मानित
- ❑ बीकानेर न्यायालय में कई वर्षों तक ऑनरेरी मजिस्ट्रेट रूप मे कार्य
- ❑ बहुआयामी सेवाओं का बीकानेर गोल्डन जुबली बुक व हूज हू मे रेखाकन
- ❑ महाराजा गगासिंहजी द्वारा कैफियत तथा चादी की छड़ी व चपड़ास का सम्मान
- ❑ महाराजा बीकानेर द्वारा पैर मे सोना पहनने की इज्जत प्रदान कर मान बढ़ाना
- ❑ विभिन्न सस्थाओं द्वारा अभिनन्दन पत्र सम्मान-पत्र व श्रद्धार्पण पत्र देकर सम्मानित करना
- ❑ श्री जवाहर विद्यापीठ की स्वर्ण जयन्ती के अवसर पर 'समाज भूषण पदवी सम्मान पत्र देकर सम्मानित करना (मरणोपरान्त)
- ❑ भीनासर में कलात्मक हवेली का निर्माण जो स्थापत्य कला का बेजोड़ नमूना है।

स्वर्गवास सथारापूर्वक दिनाक १ अप्रेल सन् १९८७ मिती चैत्र शुक्ला ३ सवत् २०४४

अनुक्रम

पचम खण्ड चित्र वीथी—सामाजिक, धार्मिक, शैक्षणिक व राजनैतिक

पष्ठम खण्ड सम्मान, अभिनन्दन, वन्दन, श्रद्धार्पण

सप्तम खण्ड श्रद्धा सुमन—सवेदना के स्वर

शुभकामना सदेश

सुशीला कुमारी
राजमाता
लालगढ़ पैलेस बीकानेर

मुझे यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि आप स्वर्गीय सेठ चम्पालाल जी बाठिया की सेवाओं को चिरस्थायी रखने हेतु एक स्मृति ग्रन्थ का प्रकाशन कर रहे हैं।

बाठिया जी का विभिन्न आयामी व्यक्तित्व सबके लिए प्रेरणा का स्रोत तथा नई पीढ़ी के लिए अनुकरणीय है। बिना किसी भेदभाव के मानवता की सेवा मे रत उनका जीवन एक गौरवमय उदाहरण है।

बाठिया जी का बीकानेर राजघराने से भी बहुत आत्मीय और निकट का सम्बन्ध रहा है। बीकानेर के सेठ साहूकारो मे वे गण्यमान व्यक्ति थे। मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि 'सेठ श्री चम्पालाल जी बाठिया स्मृति ग्रन्थ' न केवल उनके कृतित्व एव व्यक्तित्व का लेखा-जोखा प्रस्तुत करने मे सफल होगा बल्कि पाठको के लिए मार्गदर्शक का महत्वपूर्ण कार्य करने मे भी सक्षम होगा।

—सुशीला कुमारी

एन आर भसीन
SECRETARY TO GOVERNOR
RAJASTHAN JAIPUR

सदेश

महामहिम राज्यपाल महोदय को यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि श्री जवाहर विद्यापीठ, भीनासर (बीकानेर) द्वारा त्रि-दिवसीय स्वर्ण जयती महोत्सव मनाया जा रहा है तथा स्वर्ण जयती स्मारिका एव सस्था के सस्थापक सेठ चम्पालाल बाठिया की स्मृति में ग्रथ का प्रकाशन किया जा रहा है।

विद्यापीठ समाज सेवा के कार्यों से जुड़ी हुई है। किसी भी सस्था की स्वर्ण जयती उसकी सफलता की दास्तान स्वय कह देती है।

महामहिम की ओर से आपके इस शुभ अवसर पर हार्दिक शुभकामनायें।

—एन आर भसीन

बलराम जाखड़
कृषि मत्री भारत सरकार
नई दिल्ली ११०००१

सदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि सेठ चम्पालाल जी बाठिया की स्मृति मे एक स्मृति ग्रन्थ प्रकाशित किया जा रहा है।

श्री बाठिया जी ने अपने जीवन काल मे जिस दूरदर्शिता कार्यकुशलता एव अनवरत सेवा के माध्यम से समाज को जो मार्ग दिखाया है, वह एक सराहनीय कार्य है। मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि स्मृति ग्रन्थ में प्रकाशित की जाने वाली सामग्री से छात्र वग लाभ उठायेगा।

मैं स्मृति ग्रन्थ की सफलता के लिए अपनी शुभकामनाए प्रेषित करता हू।

—बलराम जाखड़

मनफूलसिंह चौधरी
सासद लोकसभा
२३ फिरोजशाह रोड नई दिल्ली

सेठ श्री चम्पालाल जी वाठिया प्रखर प्रतिभा सौम्य स्वभाव व सेवा के प्रतीक थे। सामाजिक सेवा उनमे कूट-कूट कर भरी हुई थी मेहमान सेवा उनकी आदत में शुमार थी। विद्या प्रेमी और धार्मिक भावना से वे ओत-प्रोत थे।

मेरा कई बार उनसे मिलने का मौका मिला। मैं दिवगत आत्मा के प्रति श्रद्धाजलि अर्पित करता हूँ और शुभ कामना करता हू कि सेठ श्री चम्पालाल जी वाठिया का स्मृति ग्रन्थ एक इतिहास बने और जन जन इस ग्रन्थ को पढ़कर अपना जीवन सफल बनाये।

—मनफूलसिंह चौधरी

देवीसिंह भाटी
नहर एव सिचाई मत्री राजस्थान सरकार
जयपुर

सदेश

स्वर्गीय सेठ श्री चम्पालाल जी बाठिया जैसे बहुआयामी प्रतिभा वाले एव विभिन्न सामाजिक सेवाओं औद्योगिक सामाजिक धार्मिक एव सास्कृतिक क्षेत्रो के लिए सदैव ही अविस्मरणीय रहेगे। इन विशेषताओं के साथ ही आपका सर्व धर्म समभाव भी चिरस्मरणीय रहेगा। ऐसे कुशाग्र बुद्धि एव श्रमनिष्ठ व्यक्ति की स्मृति मे प्रकाशित किया जाने वाला स्मृति ग्रन्थ वास्तव में एक सुविचारित एव स्मृति को अक्षुण्ण बनाये रखने हेतु परमावश्यक तथा आम जनता के लिए एक आदर्श स्थापित करने मे अपूर्व योगदान प्रदान करेगा।

मैं भी मेरी ओर से इस प्रयास के लिए आप सब लोगो को बधाई देता हूँ।

—देवीसिंह भाटी
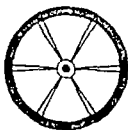
मक्खन जोशी
प्रदेश महामंत्री
जनता दल राजस्थान बीकानेर

स्व सेठ चपालाल जी बाठिया लक्ष्मीपुत्र के साथ सरस्वती पूजक उदारचित्त सहज स्वभाव मृदु भाषी व संवेदनशील व्यक्तित्व के धनी थे।

आपने समाज म उन दिनों शिक्षा मुख्यत स्त्री-शिक्षा के प्रसार हेतु शिक्षण संस्थाए बनाने मे रुचि लेकर दूरदर्शिता का उदाहरण प्रस्तुत किया। केवल अक्षर ज्ञान की शिक्षा ही नहीं बल्कि जीविकोपार्जन हेतु सिलाई बुनाई की शिक्षा के प्रसार मे उन्होने जो रुचि दर्शायी यह समाज की मुख्य आवश्यकता पूर्ति करने वाली योजना सिद्ध हो रही है।

स्वर्गीय सेठ चम्पालाल जी बाठिया एक बहुआयामी प्रतिभा के धनी थे।

—मक्खन जोशी

नवलमल फिरोदिया
सन्मित्र
१३२/बी (२ ए) गणेश खींद रोड
पूना ४११००७

श्री चपालाल जी साहब बाठिया के जीवनी सबधी स्मृति ग्रथ प्रकाशित हो रहा है यह जानकर खुशी हुई।

मेरा व्यक्तिगत स्व श्री चपालालजी साहब से मिलने का योग नहीं आया। लेकिन मेरे पिताजी स्व कुदनमल जी साहब से उनका घनिष्ट परिचय था यह मुझे अवगत है।

श्री चपालाल जी साहब सादड़ी सम्मेलन मे श्री अखिल भारतीय स्थानकवासी जैन कान्फ्रेन्स के अध्यक्ष चुने गये और बाद मे सोजत सम्मेलन भी आप ही के मार्गदर्शन मे हुआ ऐसा मुझे याद है।

जैन समाज के एक सेवाभावी कार्यकर्ता एव पू श्री जवाहरलालजी महाराज साहब के निस्सीम भक्त तरीके उनकी स्मृति सदैव रहे इसलिये स्मृति ग्रथ का आयोजन उचित ही है।

—नवलमल फिरोदिया

हरख चद नाहटा
अध्यक्ष
अखिल भारतीय श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ महासघ
५३७ कटरा नील चादनी चौक दिल्ली

समय के इस अनन्त अनवरत प्रवाह मे लोग अपने अस्तित्व की रक्षा करने मे असमर्थ होते हैं, पर कुछ चद लोग ऐसे भी होते हैं जो समय के प्रवाह को समय की इस धारा को रोकने मे समर्थ होते हैं। जीवन-यात्रा मे वे अपने पद चिह्न छोड़ जाते हैं, जो उनके उत्तराधिकारियों के लिये पथ-प्रदर्शन करते हैं।

स्व सेठ श्री चम्पालाल जी बाठिया ऐसे ही विरल जैन श्रावक थे जिन्होंने समय के प्रवाह को अपने अनुरूप निरूपित किया समाज को नई दिशा दी। वे परम्परागत रूढ़ियो एव धार्मिक असहिष्णुता से सघर्ष करते रहे फलस्वरूप एक के बाद एक निर्माण होता रहा।

लोग पद और वैभव प्राप्ति के पश्चात् अपने सामाजिक दायित्वो को भूल जाते हैं पर श्री बाठिया जी पद व वैभव प्राप्ति के बाद निर्लिप्त भाव से और अधिक उत्साह व निष्ठा के साथ अपने सामाजिक दायित्वों को निभाते रहे। आपने एक आदर्श रखा आने वाली पीढ़ियो के सामने।

वस्तुत श्री बाठिया जी जैन समाज के एक आलोकित प्रकाश-स्तम्भ सामाजिक रचनाओं के प्रभावक व्यक्तित्व लक्ष्मी के वरद पुत्र सरस्वती की वीणा के झकृत तार उच्च कोटि के विचारक एव सर्व धर्म समभाव के 'एकला' पथिक थे। ऐसे महान व्यक्तित्व की स्मृतियों को अक्षुण्ण बनाये रखने के लिए स्मृति ग्रथ का प्रकाशन एक महत्वपूर्ण कदम है।

ऐसे सुश्रावक स्व सेठ श्री चम्पालाल जी बाठिया सा को इस अवसर पर मेरा सादर नमन एव स्मृति ग्रथ के लिए शुभ कामनाये।

—हरख चद नाहटा

दुलीचन्द टाक
सयुक्त मत्री, श्री वीर बालिका शिक्षण सस्थान
जौहरी बाजार, जयपुर

आदर्श समाज सेवी श्रावक रत्न दानवीर सेठ श्री चम्पालालजी बाठिया का स्मृति ग्रथ प्रकाशित किया जा रहा है यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई। सेठ सा के दर्शन का सुअवसर तो मुझे नही मिला पर आपके व्यक्तित्व एव कृतित्व के बारे मे मैं बहुत सुनता रहा हूँ।

आपकी दृष्टि दूरदर्शितापूर्ण थी। शिक्षा और सेवा के क्षेत्र में आपने सदैव समर्पित भाव से कार्य किया। आप कई सस्थाओं के सूत्रधार व ट्रस्टी थे। स्थानकवासी समाज के प्रमुख होकर भी आप मे धार्मिक अध कट्टरता नहीं थी। सर्व-धर्म समभाव की आपकी दृष्टि सदैव रही। ऑनरेरी मजिस्ट्रेट एव बीकानेर क्षेत्र मे विधान सभा सदस्य के रूप मे की गई आपकी सेवाएँ चिरस्मरणीय रहेगी। साहित्य प्रकाशन मे आपकी गहरी रुचि थी। जवाहर किरणावलियो का प्रकाशन आपके मार्गदर्शन मे ही हुआ। ऐसे शिक्षाप्रेमी साहित्यानुरागी समाजसेवी दानवीर सेठ सा की स्मृति मे प्रकाशित यह ग्रथ युवा पीढ़ी के लिए निश्चय ही प्रेरणादायक सिद्ध होगा। मेरी ओर से सेठ सा के प्रति हार्दिक श्रद्धाजलि।

—दुलीचन्द टाक

B UGAMRAJ MOOTHA
Vice President
A. B Sadhu Margi Jain Sangh
MADRAS

Sriman Seth Sri Champalalji Sa Banthia was a pious man with relegious and charitable disposition The teachings of Jain relegion had a deep impact on his soul and he dedicated his life for the service of humanity His initiative in starting many relegious and welfare institutions bears ample testimony of his concern for the welfare of the people

I had the privilege of meeting him before about 30 years in 1962 or so Inspite of vast difference in our age he made a deep impact on me by his simplicity cheerful disposition and his matured thoughts which I still remember He was a man of high taste and his love for our past tradition and cultural heritage is reflected in his vast collection of antiques He was also a shrewd businessman and maintained high ethical and moral standards in his business which paid rich dividends

Shri Dhiraj Babu and Sumati Babu are following the rich tradition of their father

It comes to my knowledge that Shri Jawahar Vidyapeeth, Bhinasar is publishing the 'Smriti Granth of their founder Member late Sri Champalal ji Banthia This granth will be a source of inspiration for the younger generation to follow the noble path shown by him and assumes greater significance in this jet age when our past values rich traditions and cultural heritage are facing a challenge from the modern western influence.

With best wishes and greetings.

—B UGAMRAJ MOOTHA

G M SINGHVI
OF LINCOLN'S INN BARRISTER AT LAW
MANAGING DIRECTOR
WILLARD INDIA LTD
3 Netaji Subhas Road Calcutta

I am happy to note that a Samiti has been formed to give concrete shape to the laudable idea of publishing a Smriti Granth to commemorate the memory of Late Seth Champalalji Saheb Banthia who was a highly distinguished personality of the Oswal Samaj during the past several decades His philanthropic disposition and liberal contributions in the fields of education and various charitable activities were remarkable. Seth Saheb was also a notable forward looking social reformer and had actively participated in local self government He led and supported reformist movements Late Shri Banthia was one of the eminent leaders of the Jain Community

The work undertaken by the Samiti is truly commendable and I hope you will soon be able to bring out a memorable volume worthy of the cherished memory of Late Seth Shri Champalalji Banthia

—G M SINGHVI

पुखराज छलाणी
S Manakchand Pukraj
1 Vinayaka Mudali Street
Sowcarpet
MADRAS

हृदय गद्‌गद् हो उठा कि स्व श्री चम्पालालजी साहब बाठिया की पावन स्मृति मे उनकी स्मृति को अक्षुण्ण रखने के लिए वृहद् स्मृति-ग्रन्थ का प्रकाशन हो रहा है।

स्व श्रीमान् चम्पालालजी सा जिस नि स्वार्थ भाव से जीवन पर्यन्त समाज धर्म व सन्त-सेवा मे समर्पित रहे वह अत्यन्त ही श्लाघनीय है।

धुन के धनी श्री बाठियाजी ने जन-जन की सेवा भावना से जैन जवाहर विद्यापीठ, जवाहर पुस्तकालय व वाचनालय बालिका विद्यालय आदि सस्थानों की स्थापना कर विद्यादान द्वारा जो समाज-सेवा की वह अविस्मरणीय है।

साहित्य के क्षेत्र म जवाहर किरणावलियो का जन साधारण की भाषा में प्रकाशन करा कर जन-जन के जीवन में जो ज्ञान-ज्योति प्रदीप्त की वह जैन साहित्य को अमर देन कहलायेगी। उस महापुरुष के बारे मे अधिक लिखना सूर्य को दीपक दिखाना है।

उस महान समाज-सेवी महामानव को शत शत प्रणाम।

—पुखराज छलाणी

कन्हैयालाल सेठिया
सेठिया ट्रेडिंग क
३ मैंगोलेन कलकत्ता

सेठ श्री चम्पालालजी बाठिया स्मृति ग्रन्थ प्रकाशन री विज्ञप्ति मिली। घणो हरख हुयो।

स्व चम्पालालजी बाठिया असाधारण व्यक्तित्व रा धनी हा। वा री प्रतिभा बहुमुखी ही। वै निस्पृह लोकसेवक हा और समाज रै साधारण सू साधारण व्यक्ति सू वै जुड़्योड़ा हा। बै घणा सवेदनशील और समभावी हा।

मैं स्मृति ग्रन्थ सारू म्हारी हार्दिक शुभकामना भेजू हू।

—कन्हैयालाल सेठिया

शान्तिलाल धाकड़
शान्तिलाल भवरलाल धाकड़
फवन विहार
७/१ न्यू पलासिया
इन्दौर ४५२००१

इन्द्रधनुषी व्यक्तित्व

सरलता की प्रतिमूर्ति बांठिया सा. में जनसेवा का अदम्य उत्साह था। आत्मविश्वास एव दृढ़ निश्चय के फलस्वरूप आपको सार्वजनिक एव रचनात्मक कार्यों मे सदैव सफलता ही मिली। यथार्थ में आपने जीवन की सार्थकता सिद्ध की एव सेवा तथा विनम्रता का अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया। सौम्यता एव बहुआयामी प्रतिभा के धनी एक इन्द्रधनुषी व्यक्तित्व के गुणों का स्मरण ही सच्ची स्मृति है।

स्मृति ग्रन्थ के लिए शुभकामनाए स्वीकारें।

—शान्तिलाल धाकड़

महेन्द्र सागर प्रचडिया
निदेशक जैन शोध अकादमी अलीगढ़
मगल कलश ३६४ सर्वोदय नगर
आगरा रोड अलीगढ़ (उत्तर प्रदेश)

श्रद्धा-शब्दावलि

प्रिय भाई श्री चम्पालालजी बाठिया की स्मृति मे श्री जवाहर विद्यापीठ भीनासर द्वारा स्मृति ग्रथ का प्रकाशन किया जा रहा है वस्तुत बड़ी बात है। उनके जीवन के आदर्श सस्मरण स्मरण कर उसमे सकलित किए जायेंगे। सुश्रावको के जीवत सस्मरण सदा सन्मार्ग का प्रवर्तन करते हैं। आज के विघटनकारी वातावरण मे स्मृतिग्रथ की सामग्री लोगों मे व्यक्ति की नहीं अपितु गुणो की वदना करने की प्रेरणा प्रदान करेगी, ऐसी हार्दिक मगल कामना और भावना है। वदना के इस पवित्र प्रसग पर उस महान आत्मा के प्रति मेरी तमाम श्रद्धा शब्दावलिया सादर समर्पित हैं।

—महेन्द्र सागर प्रचडिया

S M Kanthed
Director
Pithampur Conzima Pvt Ltd
60 Bajaj Khana
Dist. Ratlam (M P) JAORA

समाज शिरोमणि जैन समाज के गौरव पुज श्रीमद् जवाहराचार्य के स्तम्भश्रावक श्रीमान सेठ स्व चपालालजी बाठिया द्वारा सामाजिक एव धार्मिक क्षेत्रों म किये गये कार्यों को भुलाया नहीं जा सकता। जैन जवाहर विद्यापीठ उनकी अमूल्य देन है। भीनासर के उस परिसर में प्रवेश करते ही मन पुलकित हो उठता है। श्रीमद् जवाहराचार्य के अमृत विन्दु के रूप मे जवाहर किरणावली मे उनका अमूल्य योगदान बृहत् सादड़ी सम्मेलन मे कार्फ्रेस के अध्यक्ष के रूप में उनकी प्रतिभा के चमत्कारी दृश्य आज भी सजीव हैं। ऐसे वैभवशाली प्रतिभासम्पन्न व्यक्तित्व का स्मरण होते ही मन श्रद्धा से भर जाता है। उनका विराट व्यक्तित्व शब्दों में नहीं बाधा जा सकता। भारत के श्रेष्ठतम श्रावकों म उनकी गणना होती थी। हम उनके आदर्शों का अनुसरण कर सक तो हमारा जीवन सफल होगा। स्मृति पुरुष के जीवन से जन-जन को प्रेरणा मिले।

—समीरमल कांठेड़

तेजस्वी व्यक्तित्व के आयाम

समय की शिला सशक्त हस्ताक्षर

मरूधरा मे शिक्षा सेवा एव सघनिष्ठता की त्रिवेणी प्रवाहित करने वाले सेवानिष्ठ सौजन्यमूर्ति, निष्काम कर्मयोगी बुद्धि और कौशल के प्रतीक श्रीमान् चम्पालाल जी बाठिया जैन समाज के अग्रणी श्रावको मे प्रमुख एव समादृत रहे हैं। आपका सम्पूर्ण जीवन उत्तम आदर्श, उदात्त सिद्धान्तो एव शाश्वत मूल्यो के प्रति समर्पित रहा है। सरलता उदारता स्पष्टवादिता एव समर्पण के प्रतीक रूप मे वे चिरस्मरणीय हैं। समन्वयवादी प्रगतिशील, धुन के धनी कला के पारखी समाज के हित चिन्तक साहित्य उपासक एव आदर्श श्रावक के बहुआयामी व्यक्तित्व को उनमे देखा जा सकता था।

माधुर्य कर्तव्य परायणता कार्यकुशलता एव प्रखर प्रतिभा से आपने व्यावसायिक सफलता के चरमशिखर स्पर्श किये तो अपनी कर्मठता दृढ़ सकल्प शक्ति नेतृत्व की अपरिमित मेधा एव विलक्षणता से अखिल भारत स्तरीय सामाजिक नेता बने। प्रशासनिक दक्षता के कारण आपने अनेक सस्थाओं के पदाधिकारी रहकर अतुलनीय सेवाए प्रदान कीं तो नगरपालिका से विधान सभा तक मे अपनी अमिट छाप छोड़ी। उनके व्यक्तित्व मे ओज वाणी म मृदुलता एव कर्तृत्व मे वैशिष्ट्य अपने मे उदाहरण थे। श्रद्धावान, विवेकवान एव क्रियावान सुश्रावक रूप मे उनकी पृथक् पहचान थी। समता की सौरभ क्षमा की भद्रता दया की महक करूणा की आर्द्रता एव वैचारिक क्रान्ति का एक ही नाम था श्री चम्पालालजी बाठिया।

आकर्षक मध्यम कदकाठी सुघड़ नाक नक्श घनी मूछे नेत्रो मे विशेष चमक वद गले पर राजस्थानी पगड़ी एव चेहरे पर गाभीर्य मुस्कान व ओज की त्रिवेणी। जीवट पूर्ण फक्कड़ स्वभाव के तेज तर्रार व्यक्ति को वेगवान गति से आते हुए देख अनेक हाथ अभिवादन के लिए उठ जाते। विनोदी धुन के धनी कठिन परिश्रमी कर्तव्यनिष्ठ तथा न्याय के लिए सर्वस्व की बाजी लगा देने वाले श्री चम्पालालजी ने इतिहास के दरवाजो पर दस्तक दी है। उन्होंने कालखण्ड को स्थिर करके अपना नाम अकित करने को विवश कर दिया है। उनका परिचय तो उनके जन कल्याणकारी कार्य हैं।

एक जीवन पूरा इतिहास

आपके पूर्वज शुरू मे बीकानेर शहर मे रहते थे। कई वर्षों बाद आपके प्रपितामह श्री मौजीरामजी बीकानेर मे भयकर जलोदर रोग से ग्रसित हो गये।

मौजीरामजी का ननिहाल कोटासर म था। उस वर्ष कोटासर मे खेती बहुत अच्छी हुई तो उनके मामाजी ने कहा कि कोटासर अपने खेता म इस साल मतीरे खूब हुए हैं और मतीरा खाने व शुद्ध जलवायु से जलोदर रोग ठीक हो जावेगा तो मौजीरामजी कोटासर जाकर बस गए और कुछ वर्ष वहा रहने से उनका रोग बिल्कुल ठीक हो गया। विक्रम सवत् १६१० म वे फिर बीकानेर की तरफ आए। उन्हें बीकानेर के पास ही भीनासर का जलवायु अधिक अच्छा लगा तो एक पट्टा वहीं खरीद लिया और भीनासर म ही बस गए। उसके बाद जैसे-जैसे परिवार बढ़ता गया वैसे-वैसे और जमीन आस-पास की खरीदते गए और मौजीरामजी और उनके भाई प्रेमराजजी का सारा परिवार भीनासर में ही बस गया। मौजीरामजी के एक ही पुत्र पन्नालालजी हुए और पन्नालालजी के तीन पुत्र मानिमचन्दजी हमीरमलजी व किशनचदजी हुए। हमीरमलजी की शादी शिवबक्सजी कोचर की बहिन से हुई जिनसे एक पुत्र कानीरामजी व एक पुत्री सिरेकवर बाई हुई लेकिन छोटी उम्र मे ही पहली धर्मपत्नी का देहावसान हो गया तो पुनर्विवाह माणकचन्दजी धाड़ेवा दशनोक की बहिन जवाहर बाई से हुआ जिनसे दो पुत्र सर्व श्री मोहनलालजी व चम्पालालजी तथा तीन पुत्रियाँ राजबाई मगनबाई व सूरज बाई पैदा हुए। उधर मानिमचदजी के कोई सन्तान न होने से कानीरामजी को उन्हे गोद दे दिया।

सबसे बड़ी बहिन सिरेकवर बाई का विवाह बीकानेर के श्री मुन्नालालजी खजाची से हुआ इनके कोई पुत्र न होने से इन्होंने हेमराजजी को गोद लिया। उनसे छोटी बहिन राजकवर बाई का विवाह बीकानेर के श्री डालचन्दजी मालू से हुआ उनके भी कोई पुत्र नहीं हुआ तो चारुलालजी को गोद लिया। उनसे छोटी बहिन मगन बाई का विवाह बीकानेर के श्री लहरचन्दजी सेठिया से हुआ उनके एक पुत्र खेमचन्दजी व पुत्री चित्रलेखा बाई हुए। सबसे छोटी बहिन सूरज बाई का विवाह श्री उदयचन्दजी सेठिया से हुआ लेकिन छोटी उम्र मे ही सूरज बाई एव उदयचन्दजी दोनो का देहावसान हो गया।

आपका जन्म १५ दिसम्बर सन् १९०२ तदनुसार मिती मार्गशीर्ष शुक्ला पूर्णिमा विक्रम सवत् १६५६ को भीनासर म हुआ था। अपने पितृश्री से आपको उदारता व दान देने के संस्कार और अपनी माताजी से धार्मिक/नैतिक संस्कार विरासत म मिले। श्री हमीरमलजी एव जवाहर बाई का यह लाडला सपूत जैन समाज का प्रिय हो गया। आपने प्रत्येक कार्य को अदम्य उत्साह दृढ़ निश्चय एव आत्म विश्वास के साथ किया और समाज म बहुत यश कमाया। आपका परिवार भी भरा पूरा तथा सुख समृद्धि शाली है। परिवार जनों का परिचय भरा पूरा परिवार परिजन परिचय शीर्षक पृष्ठ पर मय चित्रो के साथ दिया जा रहा है।

शैशव व शिक्षा

प्रारम्भ से ही आप कुशाग्रबुद्धि व होनहार थे। इन्हे पढ़ने व खेलने-दोनो ही शाक थे। भीनासर की प्राइमरा स्कूल म प्रवेश लेकर आपने तीसरी कक्षा उत्तीर्ण की। अग्रेजी हिन्दी व बाणिका की पढ़ाई होती थी। तीक्ष्ण बुद्धि होने से आपको सीधे ही पाचवी कक्षा मे प्रवेश मिल गया। प्रधानाध्यापक जी श्री प्रहलाद जी गोस्वामी थे तथा श्री कालका प्रसाद जी त्रिपाठी हिन्दी और श्री उदयलाल जी माली बाणिका का अध्यापन करते। आप पढ़ाई के साथ खेल में गहन रुचि रखते थे। फुटवाल आपका प्रिय खेल था। पाचवी कक्षा पूर्ण भी न हुई कि १२ वर्ष की आयु मे आपका पाणिग्रहण सन् १६१४ (सवत् १६७१) म श्रीमती आनन्द कवरी (आत्मजा श्री तोलाराम जी सेठी बीकानेर) से हो गया। तदन्तर आपने पढ़ाई छोड़ दी व व्यापार मे लग गये।

व्यवसाय क्षेत्र

सर्वप्रथम आपके प्रपितामह श्री मौजीरामजी व प्रमराजजा कलकत्ता गय थे। उस समय यहाँ से ट्रेन का साधन नही था अत अजमर तक ऊँटा पर जाते थे और अजमेर से ट्रेन द्वारा कलकत्ता जाते थे। सर्वप्रथम उन्हाने मूँगा पट्टा म मूगा का व्यापार शुरू किया जो दो पीढ़िया तक चला अर्थात् पन्नालालजा ने भी वह पैतृक व्यवसाय किया उसके बाद आपके दादाजी श्री पन्नालालजी ने हजारीमलजा व मगलचन्दजी के साथ पार्टनरशिप मे छत्ता का व्यापार शुरू किया लेकिन आपस म कुछ मतभेद शुरू हुआ तो आपके पिताजी श्री हमीरमलजी जव २० वर्ष क थे तब अपना अलग फर्म मौजीराम पन्नालाल के नाम से ४३ आरमनियन स्ट्रीट में गद्दी लेकर शुरू किया व कारखाना १०८ ओल्ड चीना बाजार मे खोला तथा प्रेमराजजी के सुपुत्रो श्री हजारीमलजी व मगलचन्दजी ने अपना अलग फर्म M/s प्रेमराज हजारीमल के नाम से खोला। M/s मौजीराम पन्नालाल में आप तीनो भाई सर्व श्री कानीरामजी सोहनलालजी व आप पार्टनर हो गये तथा साथ म अभयराजजी कोचर शिवबक्सजी कोचर नारायणदासजी मल्ल को भी पार्टनरशिप मे लिया। कई वर्षों तक उपरोक्त छ पार्टनर कार्य सुचारू रूप से चलाते रह तदनन्तर सवत् १६८० मे श्री कानीरामजी पार्टनरशिप से अलग हो गए और सालमचन्द कानीराम के नाम से चलानी का काम शुरू किया और सवत् १६८८ मे आप स्वय भी अलग हो गए और सवत् १६८६ मे २ न राजा वूडमट स्ट्रीट मे गद्दी लेकर M/s हमीरमल चम्पालाल के नाम से जूट का व्यापार शुरू किया। इसम श्री चम्पालालजी वेद पुत्र श्री पन्नालालजी बैद भीनासर को पार्टनर लिया। प्रारम्भ मे सारा रुपया आपने लगाया व व्यवसाय कार्य श्री चम्पालालजी बैद देखते थे। व्यवसाय

की प्रतिष्ठा बाजार में काफी जम गई तो मर्केन्टाइल बैंक से लिमिट करवा ली और व्यवसाय क्षेत्र काफी फैला लिया और आपकी साख के आधार पर मर्केन्टाइल बैंक ने क्लीन लिमिट कर दी। पैसे की पूरी छूट आपने उपलब्ध करवा दी और व्यवसाय में पारगत पार्टनर श्री चम्पालालजी वैद मिल गए तो व्यापार ने जबरदस्त प्रगति की और पाकिस्तान म ब्राच खोलने की मशा जाहिर की तो मर्केन्टाइल बैंक के अंग्रेज अफसरों ने कहा हम आपकी फर्म के लिए अपनी बैंक की ब्राच पाकिस्तान में खोल सकते हैं और खोली। हालाकि खोलने के बाद और भी व्यवसाय बैंक को मिला ही लेकिन शुरू म एक फर्म के लिए बैंक की ब्राच खोल देना अपने आप म अनुपम उदाहरण है और इसका कारण था कि उस समय आपकी फर्म से करोड़ो का व्यापार होता था। फर्म का कार्य पाकिस्तान मे नारायणगज चटगाव, ढाका आसूगज आदि स्थाना म तथा बिहार के मुरलीगज बनमखी आदि मे था। आप स्वय तो वर्ष मे एक दो बार ही हिसाब किताब आदि देखने जाते थे बाकी सारा कार्य श्री चम्पालालजी वैद ही देखते थे और आपको उन पर पूर्ण विश्वास था। जब तक वे जीवित रहे काम दिन दूना रात चौगुना प्रगति करता रहा। गद्दी म पैर रखने की जगह नहीं रहती थी आर गाव के जो भी लोग कलकत्ता गये सबको अपने यहाँ काम पर रखा। यह गाव के प्रति विशेष लगाव का परिचायक था। श्री चम्पालालजी वैद के स्वर्गवास के पश्चात् नये फर्म और खोले गए जिनके नाम थे M/s हमीरमल चम्पालाल एण्ड कम्पनी तथा हमीरमल चम्पालाल जूट एजेन्ट जिसमें श्री छगनलालजी व सोहनलालजी वैद को पार्टनर लिया गया तथा आपके दोनो छोटे पुत्रा सर्वश्री धीरजलाल व सुमतिलाल को भी इसमे पार्टनर लिया गया।

इसी फर्म के अन्तर्गत राजपूताना कमर्शियल क जी एम फोगट एन्ड क फ्री इन्डिया मर्केन्टाइल क , ग्रेटर राजस्थान ट्रेडिंग क इन्डियन मिनरल इन्डस्ट्रीज व माईनिंग ट्रेडिंग क थी। बीकानेर म बीकानेर सिल्क भडार नाम से पुराने बाजार म आपने वस्त्र व्यवसाय भी किया। यह कार्य श्री जवाहरमल सेवग समालते थे। साथ ही कोटगेट के अन्दर श्री प्रहलाद जी व्यास व श्री जवाहरमलजी सुथार के साथ बीकानेर जनरल ट्रेडर्स के नाम से लकड़ी का व्यापार कार्य प्रारम्भ किया। तदनन्तर चिराई की मशीने बैंड शॉ व ट्राली बैठाई गई और सन् १९६० से फर्म का नाम राजस्थान टिम्बर सप्लाई कम्पनी कर दिया गया। अन्य पार्टनर के निवृत हो जाने पर अब आपके छोटे पुत्र श्री सुमतिलाल यह कार्य देखते हैं। दिल्ली में आपने श्री आनन्द राज जी सुराणा के साथ इण्डो यूरोपा मशीनरी क म भी काम किया तथा बाद म मैवनेल इलेक्ट्रिकल्स के नाम से पखे का काम शुरू किया जिसमें आपके प्रमुख सहयोगी भागीदार दिल्ली के श्री मोहनलाल जी कठोतिया

थे। यह यूनिट छोटी थी सो पूना मे बड़ा कारखाना खोला जो एक लिमिटेड क थी जिसमे आप दोनो के अलावा रणजीतसिंहजी बैगानी भवरलालजी दूगड़ व सैंसकरणजी कोठारी के शेयर थे। मैनेजिंग डाइरेक्टर श्री मोहनलालजी कठोतिया थे तदनन्तर उन्होंने सम्पतमलजी कठोतिया को एसीसटैन्ट लिया जो बाद मे मैनेजिंग डाइरेक्टर हो गए। अन्त मे अधिकाश शेयर कमलनयन जी व रामकृष्ण जी बजाज द्वारा क्रय कर लेने से प्रबन्ध बजाज ग्रुप के हाथ मे चला गया। बाद मे कम्पनी को बजाज इलेक्ट्रीकल्स मे मिला दिया गया और बदले मे आपको बजाज इलेक्ट्रीकल्स के शेयर प्राप्त हुए जो आज भी मोजूद हैं। बीकानेर जिपसम क मे आप मैनेजिंग डायरेक्टर थे परन्तु कम्पनी मे चूना समाप्त हो जाने से कार्य बन्द हो गया। इसके अतिरिक्त आपने बीकानेर मे रामपुरिया आईस फैक्ट्री के शेयर क्रय कर उसमे कार्य किया और यूनाईटेड कट्राक्टर्स कोर्पोरेशन के नाम से मोहम्मद हनीफ के साथ ठेकेदारी भी की। धीरे धीरे आप व्यावसायिक कार्यों से निवृत होते गये और सामाजिक/धार्मिक क्षेत्रो मे लग गये। आपकी व्यापारिक प्रगति से प्रभावित होकर आपको बीकानेर ट्रेड एण्ड इण्डस्ट्रीज एसोसियेशन का अध्यक्ष चुना गया तथा एसोसियेशन की ओर से बीकानेर लेजिस्लेटिव एसेम्बली के सदस्य रूप म प्रतिनिधित्व किया। चार वर्ष तक आप एम एल ए रहे।

एक सुवासित चम्पा पुष्प की भाति आपने उद्योग-व्यवसाय समाज सेवा साहित्य प्रसार ज्ञान-प्रसार आदि क्षेत्रो मे अपनी अमिट छाप छोड़ी। एक कर्मयोगी की भाति विचार व कर्म का समन्वय किया तथा ५० वर्षों तक समाज के रगमच पर अग्र पक्ति मे एव चतुर्विध सघ के जागरूक प्रहरी बने रहे। सेवा ही उनका व्रत व धर्म रहा। उच्च पदा पर रहते हुए भी स्वय को साधारण सदस्य ही माना। अह से कोसों दूर थे पर स्वाभिमान के लिए सदैव सजग रहे। भगवान महावीर के सन्देश 'समय गोयम मा पमायए (समय मात्र भी प्रमाद न कर) के अनुसार अप्रमत्त रहे। लक्ष्मी के इस वरद पुत्र ने सरस्वती की सदा पूजा की तथा साधारण जन से आचार्य देव तक की अनन्य सेवा की।

धन्य है भीनासर जहा बाठिया जी ने जन्म लिया। धन्य है वे गलिया जहा उनकी किलकारिया गूजी। गौरवान्वित है समाज इन पर एव इनके कार्यों पर।

बाठिया सा ने बाधाओं को कभी हावी नहीं होने दिया। वे अपने कर्त्तव्य पथ पर अग्रसर रहे व निर्णयो पर अटल। उन्हे हार-जीत हानि-लाभ की चिन्ता नहीं रहती-बस अपने पथ पर अडिग रहते। सदैव मितभाषी व मिताहारी बने रहे। भोजन करते तो सयमित नियमित व एक समय पर। कभी अधिक नहीं खाया भूख से कुछ कम खाकर ऊनोदरी तप का सहज लाभ लेते।

...बन्धा था आपका। बाठिया कपड़े अन्य आवश्यक सामान ...के लिए इन अलमारी सब नियत थे। इसमें लापरवाही उन्हें अप्रिय ... हाथ का रखा चीज अंधेरे में भी निकाल सकते थे। आप ... परन्तु न गलत परम्परा व रूढ़ियों को अपनाया और न ... लीक से हटकर चलना उनका स्वभाव था क्योंकि वे शायर व ... ज्ञान वाले सपूत थे। जैसा कि कहा गया है —

...ताक गाड़ी चले लीकहिं चले कपूत।
...छाड़ तीनों चले शायर सिंह सपूत।।

...के शिलालेख पर सशक्त हस्ताक्षर थे बाठिया सा और अदम्य साहस के ... समय की पाबन्दी उनकी विशेषता थी। किसी से मिलना हो किसी बैठक में ... हो किसी समारोह की अध्यक्षता करना हो अथवा कोई उनसे मिलने आ ... आप ठीक नियत समय पर पहुंच जाते। अनेक धार्मिक सामाजिक शैक्षणिक ... संस्थाओं से सम्बद्ध रहकर आपने जो कार्य किया समय उन्हें भुला नहीं सकता।

धर्मनिष्ठ सुश्रावक

बाठिया सा का जीवन धर्म के लिए समर्पित था। आप सदैव धार्मिक कार्यों में ... रहते। धर्म को आपने सूक्ष्म दृष्टि से देखा परखा था। उनकी दृष्टि में धर्म केवल क्रिया ही नहीं है यह सुनने पढ़ने या बोलने का नहीं जीने का तत्त्व है। *धारयते इति धर्म* के अनुसार जिसे जीवन में धारण किया जाय वही धर्म है और ऐसा धर्म ही जीवन को सही दिशा प्रदान करने वाला जीवन्त धर्म है। भोजन करते समय अन्य कार्य में ... या अध्ययनरत होने पर भी कोई अपनी समस्या लेकर आ जाता तो ... को समाधान देना व समाधान करना भी धर्म समझते थे। रोगी सुश्रूषा या किसी ... सहयोग प्रदान करना भी धर्म का अंग ही मानते। वैसे तो आप स्थानकवासी जैन सम्प्रदाय के अनुयायी थे और आचार्य श्री जवाहरलालजी म सा के अनन्य भक्त थे फिर भी आपकी दृष्टि सम्प्रदायातीत थी। त्रिवेणी संघ में किसी भी सम्प्रदाय के बड़े ... या गुणी साधु साध्वी का पदार्पण होता तो आप दर्शन व प्रवचन ... से लाभान्वित अवश्य होते। उपाध्याय अमरमुनि ... सुशील मुनि जी के दर्शनार्थ दिल्ली भी ... तो यहाँ विराजित खतरगच्छ सम्प्रदाय ... पधारे। तेरापंथ धर्म संघ के आचार्य श्री तुल...

दर्शनार्थ पधारे एव प्रवचन का लाभ लिया। आपक अनुराध पर आचार्य श्री तुलसी घर पर गोचरी हनु भी पधारे। सभी धर्म सघो के आचार्यों से आपके अच्छे ताल्लुकात थे और आप सबका आदर करते थे। आपकी भावना यही रहती थी कि अच्छाई कही भी हो उसे ग्रहण करनी चाहिए तथा बुराई कही भी हो उसका त्याग करना चाहिए।

आपको देशाटन का भी बहुत शौक या जहाँ भी जाते जैन मन्दिर या तीर्थस्थल की भी जानकारी करते। आपने शिखरजी गिरनार रणकपुर आबू, जैसलमेर की तीर्थ यात्राएँ की तो राजगिरी पावापुरी चम्पापुरी भागलपुर केसरियानाथजी उदयपुर आदि जगहो पर भी परिवार सहित पधारे। इनके अतिरिक्त दक्षिण अचल म गोमटेश्वर कुलपाक तिरुपति बालाजी आदि भी पधारे। तीर्थस्थलो के अतिरिक्त देश के चारा महानगरा दिल्ली कलकत्ता बम्बई मद्रास की कई-कई बार यात्रा की। इसके अलावा देश के प्राय सभी बड़े शहरो को देखने का सौभाग्य मिला तथा गर्मियो मे पहाड़ी स्थानो मे काश्मीर कुलू, मनाली शिमला मसूरी व दक्षिण मे महाबलेश्वर व ऊटी आदि जगहा पर भी पधारे। पूरा देश भ्रमण करके सभी तरह के अनुभव किए तथा अपना ज्ञान लोगो म भी बाँटा लेकिन जहाँ भी गए आपने धार्मिक नियम कही नहीं छोड़े। रोज नवकार मत्र जाप करना है तो चाहे दुनिया के किसी कोने म हो सवेरे उठते ही सबमे पहले नवकार मत्र का जाप किए बिना पानी भी नहीं पीते ऐसे धर्मनिष्ठ कर्मनिष्ठ सुश्रावक थे सेठ साहब। □

सच्चे गुरु जिन्होने जीवन परिवर्तित किया
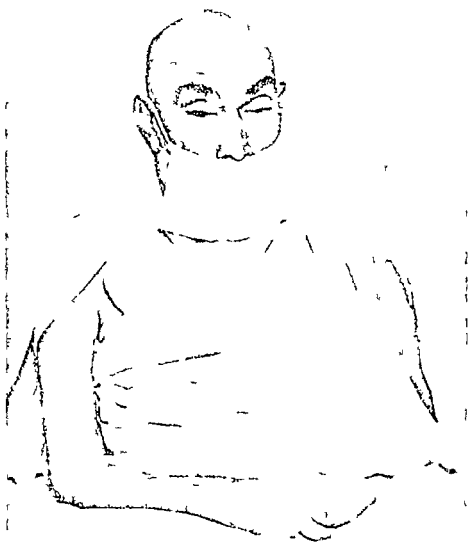
आचार्य श्री जवाहरलालजी म सा

गुरु सेवा के प्रतीक

सामाजिक कार्यों के साथ धार्मिक कार्यों मे भी आपकी शुरू से ही विशेष रुचि रही है तथा धार्मिक कार्यों मे भी हमेशा अग्रणी में रहे। इसीलिए आपको श्री अखिल भारतवर्षीय श्वेताम्वर स्थानकवासी जैन कान्फ्रेंस के बारहवे सादड़ी अधिवेशन का अध्यक्ष भी चुना गया। वैसे धार्मिक कार्यों मे विशेष रुचि आपकी आचार्य श्री जवाहरलालजी म सा के सान्निध्य मे आने से हुई। पहले सवत् १९८४ मे आचार्य श्री का चातुर्मास भीनासर म हुआ उस समय मे चौमासे का सारा बदोवस्त बाठिया परिवार ही करता था लेकिन उस चातुर्मास मे आपके बड़े भ्राता श्री कानीरामजी व बहादुरमलजी आदि विशेष भाग लेते थे लेकिन अन्तिम समय मे जब सवत् १९९९ मे आचार्य श्री भीनासर पधारे उस समय आपके बड़े भ्राता श्री कानीरामजी बीमार हो गए तथा बहादुरमलजी को भी लकवा हो गया अत आपने अपनी जिम्मेदारी समझी और महाराज के आना जाना शुरू किया लेकिन सिर्फ सुबह शाम जाते थे दोपहर मे ताश खेलने की आदत थी। प्रतिदिन आपके साथी सर्वश्री मेघराजजी दूगड़ पीरदानजी कोचर, हरखचन्दजी मीमाणी आदि आते और रोज ही ३ ४ घटे ताश का दौर चलता था। इधर आचार्य श्री को भी मालूम हुआ वे तो मानव जौहरी थे उन्होंने सोचा यह आदमी अपना समय ताश मे नष्ट नहीं करके समाज सेवा मे लगावे तो समाज का बहुत भला हो सकता है। व्याख्यान मे आप नियमित रूप से जाते ही थे और व्याख्यान के बाद दर्शन करने भी जाते थे एक दिन आचार्यश्री ने पूछा कि दोपहर मे आप क्या करते हैं।

सेठ सा तो स्पष्ट वक्ता थे बिना लाग लपेट के बोले कि—गुरुदेव! दोपहर मे खाना खाकर ताश खेलने बैठता हू और शाम तक यही क्रम चलता है।

आचार्य श्री ने कहा कि 'हम आपके गाव मे रहे और आप दिन भर ताश खेल क्या यह अच्छा लगता है ?

सेठ सा ने कहा कि 'अच्छा तो नहीं लगता है पर आदत पड़ गई है लेकिन मन में उनके प्रति अगाढ श्रद्धा थी अत बोले अब आप जैसा हुक्म करे कर लूगा

आचार्य श्री ने कहा 'आज से ही ताश खेलना छोड़ दो' तत्काल उसी क्षण दृढ़ निश्चय कर बोले महाराज आप तो मुझे आज से ही सौगन्ध दिला दीजिये मैं जीवन पर्यन्त ताश नहीं खेलूँगा। इस प्रकार उसी क्षण सौगन्ध लेकर जिन्दगी म कभी ताश के

हाथ नहीं लगाया और उसी दिन से जीवन में परिवर्तन हुआ और पूर्ण भावन समाज सेवा में समर्पित हो गए। गुरु के आदेश से जीवन परिवर्तन का यह अप्रतिम उदाहरण ढूंढे नहीं मिलेगा।

जब ताश छोड़ दी तो दिन भर घर में मन नहीं लगता तो दिन में चार पांच बार महाराज की सेवा में पधारते तथा आचार्यश्री के प्रति श्रद्धा और प्रगाढ़ होती गई तथा आपके अग्रज कानीरामजी व बहादुरमलजी के बीमार होने जाने के कारण दर्शनार्थियों के लिए आवास भोजन चिकित्सा आदि व्यवस्थाओं में दत्तचित्त होकर लग गए इधर आचार्य श्री अस्वस्थता के कारण भीनासर ही स्थिरावास घोषित हुआ और निकटवर्ती ही नहीं सुदूर स्थानों से भी दर्शनार्थी उमड़ पड़े। आप रोजाना व्यक्तिश व्याख्यान में जाकर ज्ञात करते कि बाहर से कौन कौन आए हैं तथा तत्सम्बन्धी व्यवस्था में जुट जाते। प्रतिदिन १० २० भाई बहिनों का घर पर ही भोजन बनता और आप अतिथि देवो भव की मान्यता का पूर्णत निर्वाह करते। मनुहार पूर्वक आत्मीयता से पास बैठकर सबको जिमाते थे और किसी प्रकार की असुविधा होने पर उन्हें हवेली में सूचना कराने हेतु भी कहते थे। संघनिष्ठता स्वधर्मी सेवा एवं जनसेवा की प्रतिमूर्ति बनकर आपने एक अनुकरणीय आदर्श प्रस्तुत किया। समर्पित भाव से सेवा करते हुए आचार्यश्री से नैकट्य क्रमश बढ़ता गया।

आचार्य श्री को मधुमेह की बीमारी थी। करीब एक वर्ष बाद आचार्य श्री के कूल्हे में बहुत जबरदस्त अदीठ फोड़ा हो गया जिसे कार्बंकल कहते हैं। आचार्य श्री को अपार वेदना थी लेकिन फोड़े को ठीक करवाने के लिए बहुत बड़े आप्रेशन की आवश्यकता थी जिसमें जान का भी खतरा था। इसी दौरान समाज की बैठक में आचार्यश्री को संथारे का प्रत्याख्यान कराने का प्रस्ताव आया।

सेठ सा ने पूछा यह आप अपने मन से कह रहे हैं या आचार्यश्री से पूछ कर कह रहे हैं।

पूछा तो नहीं है समाज के प्रतिनिधियों ने कहा। अन्तत मीटिंग में तय हुआ कि एक चार सदस्यीय समिति बनाई जावे जो आचार्य श्री का इस सम्बन्ध में मन्तव्य ज्ञात करे। इस प्रकार सेठ सा सहित सर्वश्री भैरूदानजी सेठिया, सतीदासजी तातेड़ व बुधसिंहजी बैद को चुना गया और इन्होंने आचार्य श्री से बात की तो उन्होंने फरमाया मेरा शरीर तो संघ का है और संघ जैसा उचित समझे करे। अब संघ भी असमंजस में पड़ गया लेकिन आपने कहा जब आचार्यश्री ने फरमा दिया है तब हर सम्भव इलाज समाज को करवाना चाहिए और समाज के कहने पर इस इलाज की सम्पूर्ण जिम्मेदारी आपने अपने ऊपर ले ली।

तदन्तर सेठ सा ने बीकानेर के प्रसिद्ध विलायता डाक्टर एलन को बुलाकर दिखाया उन्होंने कहा कि आप्रेशन तो वे कर दगे लेकिन मधुमेह के कारण घाव भरन की कठिनाई है तो डॉ अविनाश सतीजा ने कहा घाव भरने की जिम्मेदारी मेरी है तो आप्रेशन का तैयारी शुरू हुई। हॉल मे ही आप्रेशन हुआ। आप्रेशन के समय पास क साधुओं मे सिरेमलजी महाराज सा और श्रावका म सिर्फ आप थे। आप्रेशन वहुत ही सफलतापूर्वक सम्पन्न हो गया। सारा सड़ा हुआ भाग डाक्टर ने निकाल दिया और एक दड़ी जितना छेद हो गया। अव डॉ अविनाश ने इसके लिए एक स्पेशल मल्हम वनाया और उससे रोज मरहम पट्टी करके १५ दिन मे घाव भर दिया और ऊपर चमड़ी आ गई और आचार्य श्री फिर से एकदम स्वस्थ हो गए। इलाज का समस्त खर्चा भी आपने स्वय ने ही वहन किया। नि सदेह इस सफलता का श्रेय सेठ सा के अथक प्रयासा को ही जाता है। आपकी अनन्य भक्ति व श्रद्धा से गुरुदेव अत्यन्त प्रभावित हुए तथा समाज म भी बाठिया सा प्रशसित व लोकप्रिय हो गए।

इसके एक वर्ष वाद आचार्य श्री का पुन गर्दन पर इसी तरह का भयकर कार्बकल फोड़ा हुआ पुन डाक्टर एलन को वुलाया गया उन्होंने जाच कर वताया कि इस जगह आप्रेशन सम्भव नहीं है। डॉक्टर के उत्तर दे देने पर अव अन्तिम समय म भा श्री सिरेमलजी म मा की हिम्मत नही हो रही थी कि आचार्यश्री को सथारे का प्रत्याख्यान करा द तो आचार्य श्री ने स्वय ही सथारे का प्रत्याख्यान कर लिया। और आषाढ़ सुदी ८ सवत् २००० को शाम को आचार्यश्री का सथारा सीज गया। शाम को समय कम था अत निर्णय लिया गया कि सवेरे ही महाप्रयाण यात्रा निकाली जावे। चलावे के लिए चन्दा हुआ कुल २००००/ चादी के सिक्के एकत्र हुए जिसमे २०००/ ता घी व चन्दन की लकड़ी म लगे बाकी १८०००/ की उनके पीछे उछाल की गई। चादी की वैकुण्ठी आचार्य श्री की तबियत खराब होने पर पूर्व मे ही सेठ सा ने वनवाकर रख दी थी मे महाप्रयाण यात्रा निकाली गई जिसम हजारो श्रद्धालुजन सम्मिलित हुए। श्मशान भूमि पहुचकर आप इतने भाव विह्वल हो गये कि वैकुण्ठी सहित ही दाह सस्कार घृत व चन्दन से कर दिया गया वाद मे दूसरी रजत वैकुण्ठी वनाकर जवाहर विद्यापीठ को अर्पित की और उनकी स्मृति मे इस स्थल पर एक विश्राम गृह भी वनवाया गया।

आचार्य श्री जवाहरलालजी म सा के व्याख्यान वहुत ही उच्च कोटि के समयानूकूल सुन्दर व सरल भाषा के होते थे जिससे कोई भी प्रभावित हुए विना नही रहता था अत उनके क्रातिकारी विचार जो व्याख्याना के माध्यम से प्रस्फुटित हात थे

पडित नोट करते थे। उन्हीं व्याख्यानों को पडित शोभाचन्द्रजी भारिल्ल से सम्पान्न करवाकर सेठ सा ने जवाहर किरणावली के माध्यम से प्रगट किए। शुरू की दो किरणावली महाराज सा के जीवन काल मे ही सेठ सा ने निजी खर्चे से प्रकाशित करवा दी थी बाद मे तीसरी व चौथी किरणावली श्री बहादुरमलजी बाठिया की तरफ से तथा पाचवी फिर आपने अपनी तरफ से प्रकाशित करवाई। बाद मे जन साधारण का सहयोग लेकर ३५ किरणावलिया प्रकाशित करवाई। यह इतना सुरुचिपूर्ण व मौलिक साहित्य है तथा आज भी नया लगता है तथा निरन्तर इसकी माग बनी हुई है लोग बार-बार इसे पढ़ना चाहते हैं। इसके प्रकाशन का प्रमुख श्रेय सेठ सा को ही है। इसके अलावा आचार्यश्री जवाहरलालजी म सा की जीवनी भी आपके प्रयत्न से ही प्रकाशित हुई। उनकी स्मृति को अक्षुण्ण बनाने के लिए भीनासर में उनकी स्मृति मे श्री जवाहर विद्यापीठ की स्थापना की जो एक तरह से उनका जीवन्त स्मारक है।

इस प्रकार जब-जब आचार्य श्री जवाहर का नाम लिया जायेगा तब-तब सेठ सा का नाम लिया जायेगा। वे अपने गुरु के साथ अमर हो गये और गुरु सेवा के प्रतीक के रूप म देदीप्यमान हैं। □

श्री जवाहर विद्यापीठ के प्रमुख सस्थापक

भीनासर मे श्रीमद् जवाहराचार्य के स्मारक रूप मे श्री जवाहर विद्यापीठ को स्थापित करने का श्रेय मुख्यत बाठिया सा को है। गुरुदेव के प्रवास काल में आपने उनकी अनन्य सेवा की और उनके अस्वस्थ होने पर चिकित्सा हेतु हर सम्भव व्यवस्था की। आपके अथक प्रयासो विचक्षण सूझ-बूझ एव कर्मठता से ही इस परिकल्पना को मूर्त रूप मिल सका। आषाढ़ शुक्ला अष्टमी स २००० को आचार्य श्री का स्वर्गारोहण होते ही आपने दृढ़ निश्चय कर लिया था कि उनकी स्मृति को अक्षुण्ण बनाने व उनकी वाणी को कालजयी बनाने के लिए एक सस्था की स्थापना करनी है। स्मारक के लिए धन एकत्रित करने के उद्देश्य से त्रिवेणी सघ (भीनासर गगाशहर व बीकानेर) की एक मीटिंग बुलाकर अपील जारी की जिसमे व्यापक जन समर्थन मिला। श्रीमान् भैरादानजी सेठिया ने इस योजना को समयोचित व आवश्यक बताया। फिर क्या था दोना ने ११ ११ हजार रुपये की राशि घोषित की और तदनन्तर समाज के श्रीमन्तो से अपील कर अर्थ सग्रह किया और लक्ष्मीचन्दजी मूलचन्दजी लूणिया ने इस उद्देश्य के लिए अपनी १६०० गज जमीन अर्पण की।

दिनाक २६/४/४४ को श्री जवाहर विद्यापीठ की स्थापना करने हेतु साधारण सभा में निर्णय होने पर बाठिया सा का स्वप्न साकार होने लगा। भूखण्ड की प्राप्ति व स्मारक फड मे प्राप्त राशि से निर्माण कार्य प्रारम्भ हो गया। यहा पुस्तकालय भवन व छात्रावास का निर्माण हो गया तथा प्रकाशन कार्य को भी गति मिली। आज गौरवान्वित है भीनासर कि इसे 'दादा गुरु का धाम' बनने का अवसर मिला और ज्योर्तिधर आचार्य की वाणी जन जन तक पहुच सकी।

श्री जवाहर विद्यापीठ मे एक छात्रावास चालू किया गया जो सन् १९५४ तक चला। यहा विद्याध्ययन कर अनेक छात्रो ने साहित्य शिक्षा शोध समाज-सेवा व्यवसाय आदि क्षेत्रो मे कीर्तिमान स्थापित किये व आज भी सस्था के नाम को चारो दिशाओं मे फैला रहे हैं। आप स्वय विद्यापीठ के रहने वाले छात्रो के रहने खाने-पीने आदि की व्यवस्था का जायजा लेते थे। शुरू मे कई वर्ष तक अपने गेस्ट हाऊस मे ही छात्रावास चलाया। बाद मे विद्यापीठ मे भवन बन जाने पर छात्रावास उसमे स्थानान्तरित कर दिया गया। इसमे भूपराज जैन मिट्ठालाल मुर्डिया और मेवाड़ के छात्र थे जो पढ़ाई में प्राय अच्छे अको से उत्तीर्ण होते उन्हें अपने पैरो पर खड़ा करने का श्रेय चपालालजी बाठिया को ही है।

संस्था का मुख्य कार्य गुरुदेव की वाणी का प्रचार-प्रसार करना है। इस दिशा में महत्वपूर्ण कार्य करवाया है जवाहर किरणावलियों के प्रकाशन का। अब तक इसके ३५ भाग श्री शोभाचन्द्रजी भारिल्ल के सम्पादकत्व में आपके प्रयास से प्रकाशित हुए थे। स्वर्ण जयन्ती वर्ष में इनकी संख्या बढ़ाकर ५० कर दी जायेगी। उल्लेखनीय है कि इनमें मुद्रित श्रीमद् जवाहराचार्य के विचार व सन्देश परिवर्तित देश-काल में भी उतने ही प्रासंगिक व उपादेय है। अब तक लक्षाधिक प्रतियों के प्रकाशन से इनकी लोक-प्रियता स्वयं सिद्ध है।

संस्था का एक पुस्तकालय है जिसमें लगभग ५००० पुस्तकें एवं लगभग ४०० हस्तलिखित ग्रंथ हैं। इसी से सम्बद्ध वाचनालय है जिसमें दैनिक साप्ताहिक पाक्षिक मासिक कुल ३५ पत्र पत्रिकाएं उपलब्ध कराई जाती हैं। प्रतिदिन लगभग ६० पाठक इससे लाभान्वित होते हैं। ज्ञान-प्रसार के क्षेत्र में पुस्तकालय-वाचनालय की सेवा अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

महिलाओं को स्वावलम्बी बनाने के लिए संस्था में सिलाई-बुनाई कढ़ाई केन्द्र भी प्रारम्भ किया गया है। इसमें योग्य अध्यापिकाओं द्वारा महिलाओं और छात्राओं को सिलाई बुनाई कढ़ाई फेब्रिक पेन्टिंग आदि का प्रशिक्षण दिया जाता है। इससे वे अपने गृहस्थी के कार्यों में योगदान दे सकती हैं तथा आवश्यकता होने पर इस कार्य के सहारे जीवन में स्वावलम्बी भी बन सकती हैं। दिन प्रतिदिन इस प्रवृत्ति में विकास हो रहा है। आपके स्वर्गवास के बाद विद्यापीठ द्वारा प्रतिवर्ष महावीर जयन्ती को आपकी स्मृति में एक व्याख्यान माला का भी आयोजन किया जाता है। युवा वर्ग में वक्तृत्व प्रतिभा का विकास करने के लिए विद्यालय एवं महाविद्यालय स्तरीय भाषण प्रतियोगिताएं आयोजित की जाती है एवं विजेताओं को पुरस्कृत कर उनका उत्साह बढ़ाया जाता है। बीकानेर जिले में स्नातक स्तर तक सर्वाधिक अंक प्राप्तकर्ता को प्रतिवर्ष पुरस्कृत भी किया जाता है। इसके द्वारा विद्यार्थियों में उच्च शिक्षा के प्रति रुचि जाग्रत कर स्वस्थ प्रतिस्पर्धा को प्रोत्साहित किया जाता है।

धुन के धनी बांठिया सा. ने श्री जवाहर विद्यापीठ को स्थापित करने में अपनी अहम् भूमिका निभाई। दीर्घावधि तक आप इसके मंत्री व कोषाध्यक्ष रहे। इसमें अतिशयोक्ति नहीं कि वे विद्यापीठमय बन गये। इसे श्रीमद् जवाहर का जीवन्त स्मारक बना दिया। आपके स्वर्गवास के पश्चात् आपके छोटे पुत्र सुमतिलाल को संस्था का मंत्री बनाया गया जो अब पूरी लगन के सेठजी के लगाए इस पौधे को सिंचित कर रहे हैं तथा पल्लवित और पुष्पित होकर यह पौधा वटवृक्ष बन चुका है। आशा है युगों तक यह ज्ञान का आलोक फैलाती रहेगी। □

शिक्षा प्रसार अनन्य योगदान

लक्ष्मी के वरद पुत्र बाठिया सा ने सदैव सरस्वती की उपासना की। स्वय को उच्च शिक्षा के अवसर न मिलने पर भी आपने युग की धड़कन को समझा और शिक्षा का महत्व हृदयगम कर भीनासर म शिक्षा प्रसार का नया अध्याय प्रारम्भ किया। शिक्षा के क्षेत्र म गहन अनुराग के कारण ही आपने छात्र-छात्राओं के लिए शिक्षा-सस्थाना की स्थापना की। उस युग म नारी शिक्षण की अलख जगाकर तो आपने एक कीर्तिमान ही स्थापित किया। भीनासर व निकटवर्ती क्षेत्र की जनता इनके अनुकरणाय व प्रशसनीय कार्यों के लिए इन्हे युगो तक स्मरण करती रहेगी क्योंकि इन्होंने ज्ञान का आलोक प्रदान करने मे अद्वितीय कार्य किया। ऐसे जीवट वाले कर्मयोगी के कार्य भावी पीढ़िया के लिए प्रेरक हैं शिक्षा प्रसार के क्षेत्र म आपका योगदान अनक दिशाओं म रहा जिसका सक्षिप्त परिचय अग्रत प्रस्तुत है—

१ सेठ हमीरमलजी बाठिया कन्या उच्च प्राथमिक विद्यालय का निर्माण

इस विद्यालय की स्थापना स्वनामधन्य स्वर्गीय सेठ श्रीमान् चम्पालालजा बाठिया ने अपने पूज्य पिताजी सेठ हमीरमलजा बाठिया की स्मृति म सवत १९८८ (सन् १९३२) म का थी। आप स्त्री शिक्षा के प्रबल पक्षधर थे और आपके मन म यह भावना थी कि गाव का बालिकाए शिक्षा के अभाव मे अपूर्ण न रहे और सतत् प्रयत्नशील थे कि किसी प्रकार भीनासर गाव मे ही बालिकाओं के लिए पाठशाला प्रारम्भ हो अत आपने अपने अथक प्रयासो से अपने ही मकान सेठ हमीरमलजी बाठिया पौषधशाला वाले हॉल व इसके साथ बने कमरों म शुरू किया। इसका उद्घाटन १ मार्च सन् १९४४ को बीकानेर के तत्कालीन महाराजा श्री सार्दुलसिंह जी बहादुर ने किया। उदघाटन् समारोह अपने आप मे अनुपम व विस्मयकारी था। उद्घाटन के लिए मुख्य गेट से काफी दूर तीन बिजली के बटन लगाए गए। पहला बटन दबाते ही मुख्य गेट पर लगा ताला अपने आप खुल कर अलग हो गया दूसरा बटन दबाते ही दरवाजे की भोगल खुल गई और तीसरा बटन दबाते ही दरवाजा खुल गया। यह विस्मयकारा प्रदर्शन देखकर वातावरण हर्षोल्लास व तालियो की गड़गड़ाहट से गूँज उठा। उल्लेखनीय है कि उद्घाटन के इस बेजोड़ तरीके का ईजाद भीनासर के कारीगरा द्वारा ही किया गया और विज्ञान ने उस समय भी इतनी प्रगति कर ली थी। इसके पश्चात् कई वर्षों तक यहीं पर पाठशाला का सचालन स्वर्गीय सेठ चम्पालाल जा बाठिया के निजी खर्चे से सुचारू रूप से चलता रहा।

उधर श्री जवाहर विद्यापीठ के पीछे जहा वर्तमान मे उपरोक्त स्कूल चल रही है वह जमीन बाबा सालमनाथ जी की थी वे वहा कुआ खुदवा रहे थे लेकिन काफी गहराई तक खोदने के बाद भी उसमे पानी नहीं निकला तो अन्तत बाबा सालमनाथ जी महाराज ने अपनी ३६२० गज जमीन जिसकी लागत उस समय २५ ०००) थी बिना कीमत मुफ्त जन हित सेवा के लिए सेठजी को सुपुर्द कर दी। सेठजी ने लड़कियों का स्कूल जो पाचवीं कक्षा तक अभी तक आपके हॉल व कमरो में चल रहा था उसे क्रमोन्नत करने की आवश्यकता महसूस की। वहा पर जगह की कमी थी अत आपने यहा बाबा सालमनाथजी की जमीन के पास की ५८२१ गज जगह सर्व जन हितार्थ और खरीद कर ली और यहा स्कूल के लिए सुन्दर भवन का निर्माण करवाया। अपनी देखरेख मे सारा कार्य सम्पन्न करवाकर स्कूल को उच्च प्राथमिक विद्यालय तक क्रमोन्नत कर इस नये भवन म स्थानान्तरित कर दिया और बाद म चैत्र सुदी १ सवत् २०१५ को स्कूल को राजस्थान सरकार को अर्पण कर दिया। अपने स्वर्गीय पूज्य पिताजी सेठ हमीरमलजी बाठिया की पुण्य स्मृति म इसे दान कर रजिस्ट्री करवा दिया तब से शाला राजस्थान सरकार शिक्षा विभाग द्वारा सुचारू रूप से चलाई जा रही है। दान देने के बाद भी जब कभी भवन मे कोई टूट फूट मरम्मत आई स्कूल प्रधानाध्यापिका द्वारा सम्पर्क करने पर आपने इसकी मरम्मत आदि भी करवाई। वर्तमान में प्रधानाध्यापिका सुबोध बाला गुप्ता के कुशल निर्देशन म शाला मे करीब ४०० छात्राए अध्ययनरत हैं तथा शाला निरन्तर प्रगति पथ की ओर अग्रसर है। गगाशहर भीनासर व किसमीदेसर की छात्राओं को ज्ञानालोक प्रदान कर सेठजी ने एक कीर्तिमानीय कार्य किया है।

इस वर्ष विद्यालय की स्थापना के ६२ वर्ष पूर्ण होने पर सस्था की हीरक जयन्ती दिनाक १ २ व ३ अप्रेल १९९४ को भव्य समारोह पूर्वक मनाई गई एव दिनाक ३ अप्रेल १९९४ को आयोजित मुख्य समारोह के मुख्य अतिथि श्री देवीसिंह जी भाटी नहर एव सिंचाई मत्री ने आगामी सत्र से स्कूल को माध्यमिक स्तर तक क्रमोन्नत करने की भी घोषणा की ताकि गाव की बालिकाए मैट्रिक तक की शिक्षा यहीं प्राप्त कर सकें और सेठजी का यह सपना भी जल्द ही साकार रूप ले लेगा।

दिनाक १ मार्च सन् १९४४ को विद्यालय का विधिवत् उद्घाटन महाराजा सार्दुलसिंहजी के कर कमलो से हुआ। इस भव्य उद्घाटन समारोह में आपने महाराजा साब को जो स्वागताभिनन्दन भेट किया वह परिशिष्ट 'क' में प्रकाशित किया गया है।

परिशिष्ट 'क'

।।श्री वीतरागाय नम ।।

श्रीमान् परममाननीय राठौड़ वश चूड़ामणि प्रजावत्सल धर्मनिष्ठ
बीकाणनाथ महाराजाधिराज नरेन्द्रशिरोमणि लेफ्टिनेन्ट कर्नल
हिज हाईनेस महाराजा श्री १०८ श्री सार्दुलसिह जी बहादुर
सी वी ओ जय जगलधर बादशाह का सेठ हमीरमल बाठिया
विद्यालय भवन के उद्घाटन के लिए महती कृपा कर
पधारने पर सादर सविनय सम्पादित

स्वागताभिनन्दन

श्री अन्नदाता जी घणी घणी खमा!

पृथ्वीनाथ!

आज हमारे परम पुण्य और सौभाग्य का उदय है कि आज हमारे कृपालु बीकाणनाथ इस छोटे से भीनासर जैसे कस्बे मे भी पधार कर सेठ हमीरमल बाठिया बालिका विद्यालय के इस साधारण भवन का अपने कर कमलो से उद्घाटन कर रहे है। इस अवसर पर श्रीमान् का आनन्दमय स्वागत करते समय भीनासर निवासी एव यह बाठिया वश अपने आपको कृतकृत्य समझता है।

प्रजाप्रिय राजराजेश्वर!

यह श्रीमान् की प्रत्येक प्रजाजन, प्रत्येक धर्म और प्रत्येक शिक्षा आदि बीकानेर राज्य की उन्नति मे सहयोग देने वाली प्रवृति को प्रोत्साहित करने वाली नीति का ही फल है कि हम आज यहा पर श्रीमान् के शुभ दर्शन से अपने जीवन को कृतार्थ कर रहे हैं।

अन्नदाता!

यह बालिका विद्यालय मेरे पूज्य पिता हमीरमलजी बाठिया की स्मृति मे सवत् १९८८ से स्थापित है। यह भीनासर जैसे छोटे स्थान मे जितनी कन्या शिक्षा की प्रवृति है उसकी पूर्ति कर रहा है। इसके भवन का उद्घाटन श्रीमानो के कर कमलों से हो रहा है। इसलिए इसका भविष्य परम उज्ज्वल है और भगवान् की कृपा से आगे भी यहा की जरूरता को पूरी करता रहे यही मेरी हार्दिक भावना है।

महामान्य नृपप्रवर!

बीकानेर मे एक नवजीवन को सचारित करने की और प्रत्येक धर्म एव सम्प्रदाय से व्यावहारिक सहानुभूति रखने की श्रीमान् की यह नीति समस्त राज्य के लिए अनेक

मगलमय भावनाओं से परिपूर्ण है। भीनासर म इस शुभागमन के अवसर पर श्री जन श्वेताम्बर स्थानकवासी सम्प्रदाय के श्री साधुओं क यहा आज पधार कर जो इस सम्प्रदाय को कृतार्थ कर रह हैं इसके लिए यह समाज श्रीमान् का चिरऋणी रहेगा।

हे आदर्श नरेश!

अन्त मे मेरी प्रभु से यही विनीत प्रार्थना है कि श्रीमान् की प्रजाजनों पर यह कृपा अक्षुण्ण बनी रहे और श्रीमान् समस्त सुखी परिवार समेत सदा हम सबको अपने आनन्दमय शासन से सुखी और समुन्नत करते रहें।

विनीत

भीनासर — श्रीमाना का परमराजभक्त प्रजाजन

ता १ मार्च सन् १६४४ ई — चम्पालाल बाठिया

२ जवाहर हाई स्कूल का निर्माण

भीनासर के बच्चो को भयकर सर्दी व चिलचिलाती धूप मे गगाशहर के चौपड़ा स्कूल मे पढ़ने जाते देखकर आपके हृदय म भावना जागृत हुई कि अपने गाव मे भी हाई स्कूल हो जहा बच्चे ज्ञान प्राप्त कर गाव का नाम रोशन कर सके।

अपने अन्तर की भावना को मूर्त रूप देने का अवसर दस्तक दे रहा था अत अपने प्रतिष्ठान मै हमीरमल चम्पालाल के पार्टनर श्री चम्पालाल जी बैद से विचार-विमर्श कर प्रतिष्ठान की ओर से ही स्कूल भवन का निर्माण करा दिया।

यह समय सन् १६४७ का था। स्वतत्रता प्राप्ति के पश्चात् देशी रियासतो के विलय से राजस्थान का निर्माण हो चुका था। बीकानेर मे श्री भगवन्तसिह जी मेहता कमिश्नर नियुक्त हुए थे। उनसे आपके घनिष्ठ सम्बन्ध थे। एक दिन बातचीत के दौरान आपने भीनासर मे हाईस्कूल बनवाने की इच्छा प्रकट की तो मेहता सा ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए तत्काल ही आवश्यकतानुसार जमीन नि शुल्क घेर लेने के लिए कह दिया। आपको जमीन फ्री लेना स्वीकार्य नहीं था अत दो पैसा गज की दर से ५० ००० गज जमीन क्रय कर पट्टा बनवाया और फिर निर्माण कार्य प्रारम्भ कराया। लगभग एक वर्ष मे शाला भवन निर्मित हुआ और अब इसे चालू करने के प्रयास करने थे।

इधर सयोग ऐसा बना कि विधानसभा चुनाव मे श्री कुम्भाराम आर्य आपसे नाराज हो गये और एक वर्ष तक हाई स्कूल का कार्य प्रारम्भ न हो सका। वस्तुत नाराजगी के मूल म बाठिया सा की स्पष्टवादिता थी। श्री आर्य की श्री जसवन्तसिंह जी

से टक्कर थी जिनका बाठिया सा से निजी सम्बन्ध था। जब श्री आर्य आपसे वोट मागने आये तो सहजता से आपने कह दिया कि आपका वोट इनके प्रतिपक्षी को जायेगा। श्री आर्य ने इसकी गाठ बाध ली और कुछ न कुछ बाधा आती रही। अन्तत बाठिया सा स्वय जयपुर पधारे व मत्रियों से मिले।

सेठ सा को काफी दौड़ धूप करनी पड़ी। फिर आपको कहा गया कि फर्नीचर की व्यवस्था कोई करे तो स्कूल चालू किया जा सकता है। आपने सहर्ष स्वीकार कर अपनी ओर से २० ०००) फर्नीचर हेतु प्रदान किये। तत्कालीन शिक्षा मत्री श्री नाथूराम मिर्धा द्वारा उद्घाटन से सन् १९५३ में लोकार्पित सस्था अनवरत कार्यरत है। सेठ सा ने इसे सरकार को ही सुपुर्द कर दिया और शिक्षा का आलोक फैलता जा रहा है इसके माध्यम से।

कुछ वर्षों के पश्चात् भवन मे मरम्मत अपेक्षित थी परन्तु भवन आपके ही नाम से होने से मरम्मत नही कराई गई। प्रधानाध्यापक श्री बी डी आचार्य द्वारा वस्तु स्थिति से अवगत होने पर आपने भवन भी सरकार के नाम स्थानान्तरण की कार्यवाही की। श्री आचार्य के प्रयासो से इसमे सफलता मिली और तदनन्तर शाला भवन की मरम्मत बराबर होती है। यह बाठिया सा की गुरू श्रद्धा का पावन तीर्थ है। उल्लेखनीय है कि आपने अपना अपने प्रतिष्ठान या परिजनो का नाम न देकर श्रीमद् जवाहराचार्य के नाम पर इसको जवाहर हाई स्कूल नाम दिया।

यहा उल्लेख करना अप्रासगिक नहीं कि पूर्व मे निर्मित प्राथमिक शाला भवन मे भी आपके परिवार की अहम् भूमिका रही है। प्रारम्भ मे तीन कमरे श्रीमान् हमीरमल जी कानीराम जी व बहादुरमलजी बाठिया ने निर्मित करवाये थे। तत्पश्चात् स्थान की कमी अनुभव होने पर दो कमरे श्री नारायणदासजी मल्ल व सोहनलालजी ने बनवाये। बच्चो को खेलकूद की सुविधा उपलब्ध कराने हेतु सरकार से जमीन की माग करने पर दोनो शालाओं के मध्य ५० ००० गज जमीन सरकार ने खुली छोड़ दी है। यह महत्वपूर्ण उपलब्धि है और पाच सौ से अधिक छात्रो के लिए उपयोगी खेल मैदान है।

□

समाज सेवा के आयाम व कीर्तिमान

वाठिया सा ने समाज के उत्थान व सचालन म जो योगदान दिया वह वहुआयामी है। पृथक् से प्रस्तुत अग्र विवरण से स्पष्ट है उनकी लगन व निष्ठा।

सेठ श्री हमीरमलजी वाठिया स्थानकवासी जैन पौषध शाला का निर्माण

वर्षों से आपको साधु सन्तो के प्रवचन स्थल की कमी अनुभव हो रही थी। आपके पितृ श्री हमीरमलजी व भाई श्री कानीरामजी ने १८ हजार गज जमीन क्रय की हुई थी। आधी आपके हिस्से म आई थी व आधी कानीरामजी ने सोहनलालजी को वेच दी थी। दोनो भाईयो ने योजना वनाकर एक वड़ा हॉल वीच म जिसम ८०० १००० व्यक्तियो के वैठने की व्यवस्था है निर्मित कराया। साथ ही दोना तरफ चार कमरे व दो वरडो का निर्माण भी करवाया। एक तरफ सोहनलालजी के चार कमरा मे आयुर्वेदिक औषधालय प्रारम्भ किया जो वर्षों तक चला। दूसरी ओर आपके चार कमरा म वालिका विद्यालय चलता था जिसे शाला के नये भवन में स्थानान्तरित करने पर वे कमरे साधु सन्तो के ठहरने के काम आने लगे। उसे भी धमार्थ ट्रस्ट वना दिया गया। इसकी रजिस्ट्री सन् १९८३ म सेठ श्री चम्पालालजी वाठिया धर्मार्थ ट्रस्ट के नाम से कराई गई। इसम आगे के ४ कमरो के अतिरिक्त पीछे एक वड़ा कमरा व खुली जमीन थी उसे भी ट्रस्ट को प्रदान कर दी गई। वड़े हॉल को भी आपने जवाहर विद्यापीठ को दान दे दिया। इस हॉल मे प्रवचन आदि होते हैं सावत्सरिक प्रतिक्रमण किया जाता है तथा सामाजिक कार्य भी सम्पन्न होते हैं। पीछे आपकी निजी खुली जमीन में कुआ व उद्यान वनवाया हुआ है। वगीचे म सब्जिया व फुलवारी आदि लगाई जाती थी जिससे वातावरण सुरम्य था। शुद्ध हवा पानी मिलने से स्थान साधु-सन्तो के लिए साताकारी सिद्ध हुआ। श्रीमद् जवाहराचार्य का अन्तिम दो वर्ष का समय यहीं व्यतीत हुआ। सवत् २००० म आचार्य श्री जवाहरलालजी म सा इसी हॉल म देवलोक हो गये। तथा यह पुण्य भूमि दादा गुरु का धाम वन गई तदनन्तर आचार्य प्रवर युवाचार्य श्री जी व सन्त मुनिराज यहा निरन्तर विराजते रहे हैं।

उपरोक्त जमीन वीकानेर के राठीजी से खरीदी था और इसे राठी की कोटड़ी कहते थे। आप व आपके वड़े भाई सोहनलालजी इसके मालिक हुए तो आपके वड़े भाई सोहनलालजी ने आपको प्रस्ताव रखा कि सेठ हमीरमलजी जो धरमादे फड का रुपया दोनो भाईयो को दे गए है उसम से आधा आधा रुपया लगाकर इस जमीन के अग्रभाग

के एक तरफ स्कूल बीच म एक हजार आदमी सामायिक प्रतिक्रमण कर सके ऐसा हॉल बनाया जा सकता है तथा दूसरी तरफ धर्मार्थ आयुर्वेदिक औषधालय बनाया जा सकता है और आपको यह प्रस्ताव पसन्द आया और अपनी सहमति जाहिर की तो सोहनलालजी ने मेघजी चलवा से इस हॉल का निर्माण कार्य प्रारम्भ करवाया। सवत् १९९६ म हॉल का निर्माण कार्य पूरा हो जाने पर दोना भाईयो ने अपने पूज्य पिताजी की पुण्य स्मृति म हॉल पर मार्बल का साइन बोर्ड 'सेठ हमीरमलजी बाठिया स्थानकवासी जैन पौषधशाला लगवाया जो आज भी मौजूद है और सवत् १९९६ से ही इस हॉल मय खुली जमीन व पोर्च का उपयोग समाज के लोगो के धार्मिक अध्ययन अध्यापन सत मुनिराजा के प्रवचन एव धार्मिक क्रियाओं के लिए किया जाता रहा है इस प्रकार पिछले ५५ वर्षों से यह हॉल धार्मिक कार्यों के लिए समाज के उपयोग मे आ रहा है। हॉल निर्माण के समय दोनो भाईयो मे कितना प्रेम था व कितनी शुद्ध भावना थी यह श्रीमान् सोहनलालजी द्वारा आपको लिखे गये पत्रो से स्पष्ट झलकती है। उनके पत्रा मे से एक की प्रति आगे परिशिष्ट अ मे मूल रूप म प्रकाशित की जा रही है ताकि लोग इनसे कुछ शिक्षा ले सके। चूकि मूल पत्र मोडिया भाषा मे हैं जो जनसाधारण समझ नही पाता है अत यहा उसका रूपान्तरण देवनागरी लिपि म प्रकाशित किया जा रहा है।

सिध श्री कलकत्ता चिरु चम्पालाल बाठिया सू सोहनलाल रा आशीष बचीजो। चिट्ठी तुम्हारी आई सारा समाचार बाच्या अठै सारा राजी खुशी है। तुम घणा खुशी रहीजो तुमारे सरीर को जावता राखीजो सारी बात सरीरो लारे छै। हमारे शरीर अब एक रकम ठीक ही छै आख मे दवाई डॉक्टर घालण ने आवे छै। दिन ३ ४ फिर घालेगा छाय तो कट गई छै थोड़ी ऑख मे लाली छै तथा नाम मातर छाय भी छै सो कट जावेगा। कोई फिकर करीजो मताना हमा आसोज सुदी में एकला रवाने हुय कर आवागा निगह रैसी। और तुमा मोटर बाबत लिख्यो सो घर की ही मोटर छै जरूरत हुवेगा जद कढाय लेवागा। और चदे बाबत लिख्यो सो जाण्या स्कूल लड़की री गोल्डन जुबली री नाम दराय कर जचै नही। स्कूल करणे री आमना छै तो सेठ घणाई रुपिया टल गया छै अपौने खाणे री गरज तो छै नहीं सेठा रे परताप दोनू तरफ आनन्द छै तुमा लिखो जिकी जागा लेयकर सेठा रे नाम सू कराय सको छो रुपिया आधा आधा लगाय दैसो तुम्हारे जचे तो राठी री कोटड़ी अपौ दोनो री छै बहुत चोखो मकान एक तरफ स्कूल रैय सकै छै एक तरफ दूसरा मकान १ हजार आदमी री पुरखता रैय सकै जिसो हुय सकै छै तिके में सामायिक प्रतिक्रमण श्रावक करे इसो बदोबस्त हुय सकै छै। वखत पर साधुजी और पूज महाराज उतरे तो भी अटकना लागे नहीं। रुपिया १५ हजार मकान म लगायो

आलीशान मकान कमरो हुय सके छै। सेठो रा रुपिया भी मोकला छै कुछ अटकी लागे नहीं तथा जागा अपणी तरफ सू फेर भी देय दी जावे तो अटके नहीं अपोरे कुछ भी कमी छै नहीं। बाकी रुपिया सेठो रा बचे तिके मे स्कूल रो खरचो हमेशा वास्ते चला सको छो। औषधालय री जचै तो एक औषधालय वी देशी दवायों री हुय सकै छै। १५० रुपये महीने में औषधालय चल सकै छे तथा ७५/ ८०/- मे स्कूल चल सकै छै। सेठो रा रुपिया अवार तो मोकला छे ईण उपर ब्याज इतरो नहीं हुवेगा तो अवार तो बरसा चलेगा ईतरेने परमात्मा अपोरो दिन चोखा राखेगा तो अपने किसो १ दिन मरणो छै नहीं। धरमध्यान अपो अपोरी तरफ सू भी टाल कर ब्याज री आमदनी इतरी हुवे इसो बदोबस्त कर देवागा तो कई आट छै। लारे किसो धन आपोरे सागे चालसी तथा धरम सू किसो धन घटे छै सोच लीजो। हमारे तो इस तरह जचै छै तुम्हारे जचै तो तुमा भी आवो छो १ मकान चोखो मजे रो बणाय कर सेठो रे नाम सू दोनू काम हर बखत सेठो रे नाम सू चाले इसो बदोबस्त कर देणे म लाभ ई है सोच लीजो। राज सूँ स्कूल रो खरचो वास्ते अपोने कोई मदद लेणे री हमारे तो जचै नहीं फिर तुमारे जचै जिसी लिख दीजो।

चम्पालालजी को अपने बड़े भाई का प्रस्ताव पसन्द आया और उन्होंने इसके लिए अपनी स्वीकृति लिखकर भेज दी तो सोहनलालजी ने वापिस जो पत्र चम्पालालजी को लिखा उसके अश निम्न प्रकार हैं।

कमठाणे री बात मेघजी ने सारी बात समझाय दीवी छै आगे आगे ठेठ ताई कमरा गज १०० ने तथा आगीने रो बरडो गज पाच ने तथा पिछाड़ी रो छपरो ईतरा करणे वास्ते कैयो छै। १ तरफ कमरा ईसकूल वास्ते रैय जासी फिर बीच मे पिरोल हुय कर बठीने जो बहुत बड़ा होल हुवेगा तिके मे करीब १ १$\frac{1}{2}$ हजार आदमी तक वी बैठे जिसो तथा आगे आगे ठेठ तक चेहरो भी चोखो हुय जासी तथा ऊचाई कमरा री गज ७ सू बेसी हुवेगा नहीं ईतरो काम मे वी रुपिया १५ हजार सूँ ऊपर लागता दीसै छै कारण कि अगाड़ी सूँ गज १०० सू ऊपर छै १ तरफ थोड़ो लारे पड़े छै तिकी जमीन वी राज सू लेणी पड़सी। ईतरो काम में हमारी आमना छै तिके सू ज्यादा रुपिया लाग जावेगा पण अबे ईतरे काम सूँ बेसी तो कराय सकाँगा नहीं इण काम में जमीन समेत रुपिया ३० हजार पड़ जासी आधा हमारा लाग जासी आधा तुमारा लाग जासी। सेठो रे धरमादा फण्ड रा रुपिया जितरा नी छै ईतरा बचत रैय जासी जिण सू लड़की को ईस्कूल तथा अस्पताल चालू रैय जासी। मकान उपर नाम १ पथर को सैन बोर्ड में ईण मुजब खोदाय कर देय दीनो जावेगा। यह कोटड़ी की जमीन तथा मकान बनवा कर सोहनलाल

चम्पालाल की तरफ से धरमादे फड मे दे दिया गया तथा सस्था ओसधालय तथा स्कूल जो चालू है वह हमीरमलजी धरमादे फड की तरफ से है। रुपिया तुमारा हमारा में जमा है तिके तक तो आधा तुमारे तरफ से लग जावेगा आधा हमा दे देवागा और कठेई जमा होवेगा जद आपसू और कठेईसू उपज जावेगा। पण मकान तो सरु कर देणो चाइजे मेघजी केवे छै कि जुमलो बाद करायो थोड़ो कमती मे होय जासी पण तुमारे जचे तो अबार सरु कर देवा जचे तो थोड़ा ठहर जावा। □

जनसेवा के मसीहा

आनन्द सागर कुआ व बाग कुआ

आपकी प्रथम पत्नी श्रीमती आनन्दकवरी का असामयिक निधन हो जाने पर उनकी स्मृति मे एक कुआ निर्मित कराने की भावना प्रकट करने पर सरकार द्वारा आपके हॉल व उद्यान के पीछे ७८४० गज भूमि नि शुल्क उपलब्ध कराई गई। उन दिनो जलदाय विभाग का कार्य प्रारम्भ नहीं हुआ था और गाव मे पेयजल की कठिनाई थी। आपने उस जमीन मे कुआ खुदवाया जहा से भीनासर व गगाशहर निवासियो को नि-शुल्क पानी की सप्लाई की जाती।

आगे बगीचे वाली भूमि मे आपने कूप निर्मित कराया जहा से भी पानी की सप्लाई फ्री की जाती थी। इन कुओं का पानी बहुत मीठा था अत सभी इनका पानी ले जाना पसन्द करते थे। प्रात एव सायकाल हजारो लोग घड़ों द्वारा पानी ले जाते थे। सभी सेठ सा के कार्य की प्रशसा करते न अघाते।

कालान्तर मे वाटर वर्क्स की टकी बन जाने पर घरो मे पाइप लाइन चली गई और अब इन कुओं से पानी की टकिया भरवाई जाती है। आपके घर आज भी अपने कुए का पानी ही व्यवहृत होता है। कुए से हवेली तक बिछी पाइप लाइन से पानी सप्लाई होता है। आनन्द सागर और बाग के कुए का मीठा पानी आज भी हवेली तक आता है।

बीकानेर से भी कई लोग आपके कुओं का मीठा पानी मगाते थे। मरुधरा मे मीठा पानी अमृत के समान लेता है और आपने अपने निजी खर्च से लाखो रुपये व्यय करके दो कुए खुदवाए और पूरे गाव को यह अमृत प्रदान किया यह अपने आप मे अत्यन्त महत्व की बात है। इसके अलावा दोनो कुओं के आगे खेलियाँ भी बनाई हुई है जिससे गर्मी में पशु पक्षी भी अपनी प्यास बुझाते हैं। मीठे पानी से बाग मे हरित वातावरण रहता था और रोज शाम को आप हवेली से पैदल घूमने आते थे जिससे जिन्दगी भर शरीर भी स्वस्थ एव छरहरा बना रहा। □

प्रगतिवादी एव क्रान्तदर्शी विचारक

वाल दीक्षा के विरोध मे विधेयक

निष्काम सेवाभाव अप्रमत्त कार्य-कौशल तथा समर्पित व्यक्तित्व के धनी बांठिया सा प्रगतिवादी विचारक थे। रूढ़ परम्पराओं अंध विश्वासो एव कुण्ठित मान्यताओं के विरुद्ध युगीन विचार तथा क्रान्तदर्शी चिन्तन के कारण आप अत्यन्त लोकप्रिय हुए। छोटे-छोटे अवोध वच्चो को मुनि-जीवन के लिए दीक्षित करने की जो प्रवृत्ति उन दिनो चल रही थी उस आपने वच्चो को मानवोचित अधिकारों से वंचित करना माना। वाल-दीक्षा की इस कुप्रथा के आप विरोधी थे आंख मूद कर रहना उन्हे अप्रिय था। इस प्रवृत्ति को आप वन्द करना चाहते थे। सन् १६४२ मे चूरू म २८ नावालिग भाई वहिनो की तेरापथ धर्म सघ म दीक्षा हुई जिसका दिनाक २६ १० ४२ को श्री सोहनलाल जी दूगड़ ने विरोध किया। उन्होने एक पत्र महाराजा वीकानेर से अपील प्रकाशित कराया और सदा के लिए इस कुरीति को वन्द करने की अपील की। वांठिया जी उन दिनो एम एल ए थे। आपन सन् १६४३ म राजसभा वीकानेर म वाल दीक्षा प्रतिवन्धक विल प्रस्तुत कर क्रान्तिकारी कदम उठाया।

साधु जीवन के लिए जिस त्याग तपस्या और सयम की आवश्यकता है वालक उन्हे समझ भी नहीं सकता। इसीलिए वालिग होने से पूर्व वच्चो को दीक्षित करना उन पर अत्याचार है। साधु सस्था तथा समाज मे स्वस्थ परम्परा के निर्वाह हेतु ऐसे अयोग्य व्यक्तियों को साधु वनाने की प्रवृति पर कानून का अकुश लगाना आपने आवश्यक माना। वालक राष्ट्र की सवसे वड़ी सम्पत्ति है और वे हमारे समाज के भावी कर्णधार हैं। उनके जीवन को उन्नत वनाना परम आवश्यक मानकर उनके हितों की रक्षा करना आपने राज्य का प्रधान कर्त्तव्य माना। इस सामाजिक कुरीति का उन्मूलन करने हेतु आपने कानून वनाने का जो प्रस्ताव किया वह स्तुत्य व अनुकरणीय है।

इस सम्वन्ध म वांठिया सा ने एक पुस्तक वाल दीक्षा विवेचन प्रकाशित कराई (मार्च १६४४) और वाल दीक्षा के विरोध में काफी प्रचार किया। इसके लेखक थे प श्री इन्द्रचन्द्र शास्त्री एम ए शास्त्राचार्य वेदान्त वारिधि न्यायतीर्थ। लेखक ने विविध धर्मों के परिप्रेक्ष्य में दीक्षार्थी की योग्यता का वर्णन किया। जैन-ग्रन्थो के अनेक उद्धरणों एव जैनागमो के सन्दर्भों से सिद्ध किया कि वालदीक्षा का कोई औचित्य नहीं है। अपने वाल दीक्षा प्रतिवन्धक विल मे आपने प्रावधान कराया कि १८ वर्ष से कम उम्र के नावालिग लड़के व लड़की को दीक्षा नहीं दी जाय। उन्हे दीक्षित करने उनका दीक्षा में सहायता करने या ऐसा प्रयत्न करने वाले को दण्डित भी किया जाय।

पुस्तक मे बालदीक्षा के विधि विधान पर चर्चा कर कानूनी पक्ष पर भी विस्तार से प्रकाश डाला गया। देश भर मे इसकी प्रतिक्रिया हुई और इसके पक्ष-विपक्ष म एक आन्दोलन सा छिड़ गया। हिन्दी व अग्रेजी समाचार-पत्रो मे छाये रहे सेठ सा व प्रस्तावित विल। देश के शीर्षस्थ नेताओं, विचारको बेरिस्टरो न्यायाधीशो पदाधिकारियो आदि ने इस विल का समर्थन किया। इनके पत्राश बाठिया सा ने Some Opinions नामक पुस्तक मे प्रकाशित कराये और जन-जन तक अपनी बात पहुचाई।

बाल दीक्षा विवेचन मे बाठिया सा ने स्पष्ट किया कि प्रस्तावित विल का ध्येय किसी समाज विशेष की धार्मिक भावनाओं मे हस्तक्षेप करना नही था और न ही दीक्षाओं की पवित्रता कम करना ही। इसका ध्येय तो नाबालिग बच्चो के हितों की रक्षा करना ही था। इस विल की नेशनल कॉल (१५ जून १६४४) हिन्दुस्तान टाइम्स (१७ जून १६४४) वीर अर्जुन (१७ जून व १३ अगस्त १६४४) दैनिक विश्वामित्र (२४ अगस्त १६४४) मे खुल कर चर्चा हुई। अन्त मे जब विल पर बहस का समय आया तो तेरापथ के अनेक लोगा ने महाराजा श्री गगासिंह जी से मिलकर धार्मिक हस्तक्षेप न करने की अपील की। महाराजा के आश्वासन के फलस्वरूप यह विल पास न हो सका।

यहा उपरोक्त पुस्तक Some Opinions से कतिपय सम्मतिया व सहमतियों के अश प्रस्तुत करना अप्रासगिक नही है।

● श्रीयुत् चम्पालाल जी बाठिया भीनासर के बाल-दीक्षा-प्रतिबन्धक विल का बगाल प्रान्तीय हिन्दू महासभा जबर्दस्त समर्थन करती है। यह प्रथा समाज के लिए बहुत हानिकारक है। आशा है श्रीमान् बीकानेर नरेश इस विल को पास करेंगे।

दि २२ १० ४३

श्यामा प्रसाद मुकर्जी
सभापति-ब प्रा हिन्दू महासभा

● अखिल भारतीय महिला कान्फ्रेस छोटी उम्र के बालक और बालिकाओं को साधु एव साध्वी के रूप मे दीक्षित करने की प्रथा का विरोध करती है और प्रस्तावित विल का पूर्ण समर्थन करती है।

दि २४ १० ४३

(श्रीमती) विजय लक्ष्मी पडित
सभा नेत्री-अखिल भारतीय महिला कान्फ्रेस
भूतपूर्व स्यानिक स्वराज्य मत्रिणी
यू पी गवर्नमेंट

● सेठ चपालाल जी वाठिया ने बीकानेर राज्य नी धारा सभा मा वाल दीक्षा प्रतिवन्धक खरड़ो रज्यु कर्यो छे ते साथे हु सपूर्ण सहमत छु। आवा धारा नी आवश्यकता विषे वे मत होई सके नहीं।

वाल दीक्षा धर्म समाज हिते के मानस शास्त्र नी दृष्टिए अनिष्ट छे। धर्म अने समाज नु आ महान कलक छे। तेने अटकाववु धर्म छे। तेने निभाववा मा अधर्म छे।

चीमनलाल चकुभाई शाह

(भूतपूर्व सालिसिटर-गवर्नमेट आफ बम्बई) १५ २ ४४

● वाल-दीक्षा को रोकने के लिए जो विल पेश करने का विचार किया है वह युग-प्रवाह के अनुकूल और समाज के लिए अत्यन्त हितकारी है। समझदार लोगों से मेरा अनुरोध है कि वे साम्प्रदायिक पक्षपात से रहित होकर विवेक से काम लें और इस विल का जोरदार समर्थन करके इसे पास कराने म सहायता कर।

रामगोपाल जी मोहता

अध्यक्ष मारवाड़ी कान्फ्रेंस वीकानेर

● विल का उद्देश्य मानव हित से परिपूर्ण है। मैंने वड़ौदा के प्रधानमत्री काल में सरकार से ऐसा कानून वनाने का अनुरोध किया था जिससे नावालिगो का ससार त्याग रोका जा सके। यदि आप वड़ौदा के कानून का सहारा चाहते हैं तो न्याय-विभाग को लिखकर विल की प्रति मगवा लीजिए।

विल में जो कार्य दण्डनीय वताए गए हैं उनमे दीक्षा देने के प्रयत्न तथा सहायता को सम्मिलित कर आपने समझदारी की है।

इस कानून के वनने म मैं आपकी सफलता चाहता हू।

सर मनुभाई मेहता

Kt C I G M A LL B

(भूतपूर्व प्रधानमत्री वड़ौदा तथा वीकानेर)

● जव धर्मगुरू और समाज के अगुए स्वय वालदीक्षा का आत्यन्तिक नियमन नहीं करते तव यह काम सुराज्य के तन्त्र को ही अपने हाथ में लेना चाहिए। धर्म के विकार दूर करना यह भी राजधर्म है। इसलिए वीकानेर जैसे प्रगतिशील राज्य के लिये वड़ौदा राज की तरह उचित है कि वह श्रीयुत् चम्पालाल जी वाठिया के प्रस्तुत विल को कानून का रूप अवश्य दें और इस तरह धार्मिक तथा सामाजिक सुधार के लिए दूसरे

राज्यो के वास्ते एक विचारभूत उदाहरण पेश करे।

१३ २ ४४

प सुखलाल
भूतपूर्व जैनदर्शनाध्यापक
हिन्दू विश्व विधालय बनारस

● बीकानेर राज्य मे बाल दीक्षा प्रतिबन्धक कानून के जारी करने के लिये श्रीयुत् चम्पालाल जी बाठिया ने जो बिल तैयार किया है उसके लिये हमारी सम्पूर्ण सहमति है। बड़ौदा जैसे प्रगतिशील राज्य ने तो बहुत वर्षो पूर्व ऐसा कानून बनाकर अपने राज्य मे होने वाली ऐसी अनुचित बालदीक्षा का प्रतिबन्ध करने का बहुत ही प्रशसनीय कार्य किया है।

वर्तमान काल की सामाजिक और राष्ट्रीय परिस्थिति मे नाबालिग बालक/बालिकाओं को दीक्षित करने की प्रवृति बहुत ही निन्दनीय और हानिकारक है। धर्म और समाज दोनो के हित की दृष्टि से ऐसी बाल-दीक्षाओं का प्रतिबन्ध होना आवश्यक है।

(आचार्य) जिनविजय मुनि
अध्यक्ष
राजस्थान हिन्दी साहित्य सम्मेलन
डाइरेक्टर भारतीय विघा भवन

● In view of the present circumstances the conversion of minor boys and girls into asceticism is utterly improper

पजाब केसरी जैनाचार्य पूज्य श्री काशीरामजी महाराज वादिमान मर्दन
महास्थविर गणि श्री उदयचन्दजी महाराज एव प मुनि श्री शुक्लचन्द्रजी महाराज

● Doubtless the conversion of minors is harmful Prevention of such a system is necessary Legislation in this regard is extremely necessary for the good of the society

न्याय विशारद न्यायतीर्थ मुनिश्री न्याय विजयजी महाराज

● Every possible effort to uproot this vile custom is laudable

साधु शान्तिनाथ अमलनेर

- It is a very good attempt and I agree with its principles I hope that you will succeed in your efforts

The Rt Hon ble Mr M R Jayakar
P C M.A L L D D C L Bombay

- I am also against the exercise of any kind of influence on a minor boy or girl which would commit him or her irrevocably to abnormal mode of life

Dr G S Arundale M A L L B D litt.
F R.S Adyar Madras

- I cannot agree that anybody could have any right in reducing minor boys to the ascetic profession nor would the Sastras support any such queer custom

Mr Surendranath Das Gupta
C I E I E S M A PH D litt Kalighat Calcutta

- I entirely agree in the purpose of this Bill and in the objects and reasons

Dr Bhagwandas M A D litt Benares

- There is a great deal of force in what you say in favour of the proposed Bill I hope it may pass successfully through the Bikaner Legislature and be placed on the Statute Book

Dr Sachhidanand Sinha D litt Bar at law
Vice Chancellor Patna University

- I sympathise with the object of the Bill We cannot expect austere renunciation of tender aged boys and girls

Shri Sampoornanandji Ex Minister for Education U P
Government Principal Kashi Vidyapitha.

- I fully approve of the principles underlying the Bill It is in every respect improper to have minor boys and girls converted into Sadhus and Sadhvis at an age when they

do not know the significance and greatness of this stage of life

Shri Shriprakashji M A Bar at law
M L A Benares

- This endeavour on your part is praiseworthy and deserving of every sympathy

Swami Sahajanand Saraswati
President All India Kisan Sabha

- It is in the interest of the country that such conversion should be prevented

The Hon ble Pandit Hirday Nath Kunzru
Servants of India Society Allahabad (by his Secretary)

- I have gone through your bill and generally agree with the object underlying it

The Hon'ble P N Sapru M L C Allahabad

- I am entirely opposed to the idea of minors being initiated to a career of Asceticism

Amar Nath Jha M A Vice Chancellor
Allahabad University Allahabad

- I think this is a more in the right direction

Pt Iqbal Narain Gurtu Pro Vice Chancellor
Benares Hindu University

- I highly appreciate the need and the utility of a Bill for the prevention of minors initiation into asceticism If the proposed bill is passed and becomes a law in the Bikaner State it will indeed go a great way towards eradicating one of the great social evils of our times.

महामहोपाध्याय राय बहादुर डॉ गौरी शकर एच ओझा डी लिट् रोहेडा
(सिरोही)

- I am entirely in favour of the Bill which I have no doubt if passed will be beneficial to society

मृणालकान्त बोस, सम्पादक अमृत बाजार पत्रिका
कलकत्ता

- The Bill will be highly benificial to the country I wish you success

राजा बलदेवदास बिड़ला, बिड़ला हाउस बनारस

- I am glad that you have taken up this question

सेठ घनश्यामदास बिड़ला कलकत्ता

- There is a great deal of force and cogency in what you have written and the social problem which you are seeking to solve is of first rate importance

जमनादास मेहता
एम ए एल एल बी बारएट-लॉ

- I heartily approve of this Bill It is proper that there should be a legislative measure for the prevention of such underserved tendencies

हनुमानदास पोद्दार सम्पादक 'कल्याण गोरखपुर

- I am not only in full sympathy with the object of your Bill but entertain the hope that the example set by Bikaner will be followed all over India.

सर कैलाश नारायण हक्सर
Kt C I E L L D Mashiri Khus Bahadur
(Ex Prime Minister Bikaner State)

- A minor s conversion into Sadhu is most undersirable from every point of view and I heartily support the Bill and hope it will be passed

सर सिरेमल बाफना Kt C I E
Ex Prime Minister Indore and Bikaner Prime Minister
Alwar State

- I agree that appropriate legislation is needed for the prevention of this evil

  सर मिर्जा इस्माईल
  K C I E Kt. C I E
  Prime Minister Jaipur State

- The object of your Bill is indeed laudable and deserve the sympathy and support of every right thinking man

  सर विजय महाराज कुमार विजयनगरम्

- The Bill seems to be a beneficient measure for the prevention of a great social evil which ought certainly to be countered by legislation

  सर ब्रिजेन्द्र लाल मितर
  K C S I Advocate General of India New Delhi

- Every right thinking person must feel in sympathy with the objects of the Bill

  I wish for every success in your endeavours

  Sir William Roberts
  C I E M L A Lahore

- I cannot but be in sympathy with its objects

  Sir F E James O B E M L A (Central)
  New Delhi

- I shall be very glad to see this Bill become a law

  Raj Kumar Raghunath Singhji Dewan and President Council of Administration Sitamau State

- I entirely agree with the principles and policy underlying the Bill in question and I wholeheartedly support the enactment of the Bill as a law in the State early

  Rao Raja Dr Shyam Behari Mishra M A D Litt
  Rai Bahadur Retired Magistrate and Collector Chief Adviser to H H the Maharaja of Orchha President Legislative Assembly Orchha State

- I trust you will succeed in getting it through the State Assembly and thereby protect the interest of minors

Rao Bahadur Dadasaheb Appasaheb Prime Minister
Kolhapur State.

- The Bill is a legislative measure for a very healthy social reform which was long overdue Your efforts therefore in this direction are really praiseworthy for which I congratulate you

Dewan Saheb Idar State Himmatnagar

- The spirit which animated you to take up the Bill is indeed laudable and praiseworthy

Rao Bahadur Ichhashankar K Pandya B A L L B
Chief Minister Sirohi State

- I am in thorough agreement with the purpose of the Bill for the prevention of conversion of minors At any rate, conversion of those under 18 is certainly unthinkable and must be prohibited by law

Dewan Bahadur Hiralal L Kaji M.A. B Sc F R C S
F S S P R S I E S J P

- I have read your draft Bill and write to give it my heartiest support

सर सी वी रमन
Kt F R S M.A Hon Ph D Hon D Sc Hon LL D
Banglore

I I entirely approve of the new Bill

Mr K. M Munshi
Bharatiya Vidya Bhawan Bombay

□

कुशल नेतृत्व

श्री अखिल भारतवर्षीय श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कान्फ्रेस के बारहवे सादड़ी अधिवेशन की अध्यक्षता

बाठिया सा समाज के लोकप्रिय नेता थे। उनकी अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ कान्फ्रेस का बारहवा अधिवेशन (४ से ६ मई १९५२ सादड़ी-मारवाड़) अत्यन्त महत्वपूर्ण व सफल सिद्ध हुआ। इसी अवसर पर आयोजित वृहत् साधु-सम्मेलन से यह अधिवेशन ऐतिहासिक बन गया। लगभग ३५ हजार की जनमेदिनी एकत्रित हुई थी। सादड़ी एक तीर्थस्थली सा प्रतीत हो रहा था। विविध प्रान्तो की रग-बिरगी वेशभूषा अनेकता म एकता का बोध करा रही थी।

अधिवेशन का उद्घाटन राजस्थान के मुख्यमत्री श्री टीकारामजी पालीवाल ने किया एव स्वागताध्यक्ष थे सादड़ी निवासी श्री दानमलजी बरलोटा। अधिवेशन म पारित १५ प्रस्तावा म निम्नाकित मुख्य थे—

(क) जैनदर्शन को सरकारी पाठ्यक्रम मे स्थान दिलाया जाय।

(ख) महावीर जयन्ती का सार्वजनिक अवकाश घोषित कराना।

(ग) स्वधर्मी सहायता फड को अनुदान।

(घ) गोवध और जीव हिंसा रोकने के लिए सरकार से अनुरोध।

(ड़) वृहत् साधु सम्मेलन द्वारा श्री स्थानकवासी जैन श्रमण सघ की स्थापना हेतु लिये गए निर्णय के प्रति पूर्ण श्रद्धा व आदर ज्ञापित करना। एक स्थायी समिति का गठन।

इस अवसर पर महिला परिषद् और युवक परिषद् सम्मेलन भी आयोजित किये गए थे।

यह अधिवेशन अत्यन्त महत्वपूर्ण व ऐतिहासिक था। सैंकड़ों सन्त मुनिराज इस अवसर पर एकत्रित हुए। साधु सम्मेलन के इतिहास मे यह सम्मेलन एक मील का पत्थर सिद्ध हुआ, जिसमे सघ ऐक्यता का नया आयाम प्रकट हुआ। सर्व सम्प्रदायो के सन्त मुनिराजो ने अपनी पदवी छोड़कर एक नेतृत्व को स्वीकारा। यह अतिशयोक्ति नहीं कि सबको एक मच पर लाने मे बाठिया सा ने उल्लेखनीय भूमिका का निर्वाह किया।

वे इस सगठन से कभी अलग नहीं रह सकते। इस सम्मेलन मे जो कुछ निर्णय किया गया है उसे वे अवश्य स्वीकार करेंगे। प्रगतिशील प्रदेश के मुनिराज कभी पीछ नहीं रह सकते ऐसा हमारा विश्वास है।

हमारे अनेक भाई अपनी ना समझी से यह प्रश्न उठाया करते हैं कि इन अधिवेशनो और सम्मेलनो से क्या लाभ है। आने जाने मे लाखो रुपये बर्बाद होते हैं और सार कुछ नहीं निकलता। मेरे बन्धुओं को रुपये खर्च होने की बड़ी चिन्ता होती है। मनोविनोद के लिए यात्राए करने मे पानी की तरह रुपये बहाने मे इनको किसी प्रकार का ख्याल नहीं आता। अपने ऐश और आराम के लिए हजारो का पानी करते हुए भी सकोच नहीं होता। किन्तु जहा अपने स्वधर्मी बन्धुओं से मिलने का उनसे वार्तालाप करने का तथा दूसरे के विचारो का आदान-प्रदान करने का सुन्दर अवसर प्राप्त होता हो वहा खर्च की बात को आगे लाकर अपनी प्रतिक्रियावादिता को छिपाने की कोशिश करते हैं। ऐसे सम्मेलनो से समाज म जाग्रति आती है और जीवन को बल मिलता है। और यह सम्मेलन तो विशेष महत्त्व रखता है। इससे हमारी समाज का नव निर्माण होने वाला है। यहा हमारे गुरुदेव मुनिजन इतिहास का नया अध्याय लिख रहे हैं।

हमारी महासभा (कान्फ्रेस) के सम्बन्ध मे दो शब्द कह दू। सन् १६०६ से १६४६ तक इसके ग्यारह अधिवेशन हो चुके हैं। बम्बई मे होने वाले सप्तम अधिवेशन के सभापति का स्थान हमारे श्रद्धेय दानवीर वयोवृद्ध सदा सरस्वती की उपासना मे लीन रहने वाले श्री भैरोदानजी सा सेठिया ने सुशोभित किया था। उस अधिवेशन मे अनेक नवीन प्रवृत्तियों का जन्म हुआ। इसके बाद अजमेर का अधिवेशन बड़ा महत्वपूर्ण रहा। पिछले कई वर्षों से जब से श्री कुन्दनमलजी सा फिरोदिया का नेतृत्व और विचारकता का इस महासभा को लाभ प्राप्त हुआ है तब से यह एक जीवित सस्था बन गई है। समाज की नाड़ी परीक्षा करने मे और ठीक ठीक निदान करने मे श्री फिरोदियाजी की पैनी बुद्धि ने बहुत समुचित कार्य किया है। ऐसे महान् व्यक्ति का मार्ग प्रदर्शन समाज के लिए बड़े गौरव की वस्तु है। राजकीय सेवाओं से अब आप मुक्त हो चुके हैं अत हमें आशा रखनी चाहिए कि आप की सेवाएं हमारे समाज को सदा मिलती रहेंगी।

महासभा के द्वारा समय-समय पर अनेक समाजोपयोगी कार्य हुए हैं और हो रहे हैं। जैन ट्रेनिंग कॉलेज के द्वारा सस्कृत मागधी भाषा और जैन तत्त्व ज्ञान के विद्वान तैयार किये गये। छात्रवृत्ति के द्वारा स्त्री शिक्षा का प्रचार किया गया। पूना बोर्डिंग के द्वारा छात्रो को उच्च शिक्षण प्राप्त करने मे सहायता प्रदान की जा रही है। विस्थापित

भाइयो की सहायतार्थ एक बड़ा फण्ड किया जाकर उनकी मदद की गई। असहाय विधवाओं को आर्थिक सहायता और छात्रों को स्कोलरशिप दी जाती रही है। साहित्यिक क्षेत्र मे अर्धमागधी कोष और आचाराग आदि सूत्रो का हिन्दी अनुवाद तथा पाठ्य पुस्तका का प्रकाशन हमारे सामने है। 'जैन प्रकाश' का नियमित प्रकाशन और उसके द्वारा समाज सगठन का कार्य सुविदित है।

सबसे महान् और आवश्यक कार्य हमारी महासभा ने हाथ मे लिया है वह है 'सघ ऐक्य योजना' इस योजना को मूर्त रूप देने के लिए वर्षों से प्रयत्न चालू है। अजमेर अधिवेशन मे इस योजना ने कुछ कुछ मूर्त रूप धारण किया था। इस विषय मे पूज्य श्री सोहनलालजी म आचार्य श्री जवाहरलालजी म तथा प श्री रतनचन्द्रजी शतादधानीजी म ने बहुत प्रयत्न किया था। किन्तु तब काल पका न था। इन बीस वर्षो म परिस्थितियों ने बड़ा पलटा खाया। राज्य बदल गये। भारत आजाद हो गया। हमारे मुनिराजो के विचारो मे भी देश काल के अनुसार परिवर्तन हुआ और अब इस योजना को पूर्ण तथा मूर्त रूप देने का अवसर आ गया है। आठ दिनो म मुनि सम्मेलन म जो कुछ निर्णय हुआ है वह आपके सामने आने वाला है।

यहा जो अनेक सम्प्रदायो के मुनिराज एकत्रित हुए हैं वह कोई सरल कार्य नहीं है। इन मुनि शार्दूला को एक जगह लाने मे बड़े प्रयत्न करने पड़े हैं। इसके लिए कान्फ्रेस की तरफ से कई शिष्ट मण्डल गये बड़ा लम्बा पत्र-व्यवहार चला अनेक प्रकार की शकाओं का समाधान किया गया है। तथा इन सब प्रयत्नो के बावजूद श्री धीरजलाल भाई तुरखिया का अथक परिश्रम और लगनशीलता मुख्य है। ये रात दिन इधर से उधर घूमते रहे हैं। आशा और निराशा के झूले मे झूलते रहे हैं। किन्तु जैसा इनका नाम है वैसा ही इनमे धीरज का गुण है। अपने इरादो में डटे रहे हैं और सफल हुए हैं। श्री धीरज भाई से बौद्धिक भूले हो सकती हैं किन्तु इनकी नियत मे किसी प्रकार का अविश्वास करना उनके प्रति अन्याय करना है। मैं समाज की ओर से इस महान् कार्य के सम्पादन के लिए श्री धीरजभाई को साधुवाद प्रदान करता हू। साधु सम्मेलन के इतिहास मे श्री दुर्लभजी भाई तथा धीरजभाई के नाम स्वर्णाक्षरो म लिखे रहेगे।

मित्रो! मेरी ओर ध्यान खींचिये और विचार कीजिए कि हम साधु सम्मेलन से क्या आशा रखते हैं। साधु सम्मेलन मे जो कुछ निर्णय हुआ है वह तो हो चुका है और आपके सामने भी शीघ्र आने वाला है। किन्तु हम क्या चाहते हैं और आज का युवक मानस क्या चाहता है तथा यह बड़ा जन समुदाय क्या आशा लेकर आया है यह सोचिए। जहा तक मैं लोगों के विचारों और भावनाओं को समझ पाया हू, एक बहुत

वड़ा वहुमत एक आचार्य के नेतृत्व मे सकल सघ का आ जाना पसद करता है। यह वात मुझ से छिपी नहीं है कि कुछ थोड़े साधु और श्रावक एक आचार्य के झण्डे के नीचे आने की विचार धारा के विरोधी भी हैं। हम आशा रख कि उनकी विचार धारा में परिवर्तन हो गया है या अव हो जायेगा।

समय की माग है युवको की आकाक्षा है कि सोलह सौ साधु साध्वी तथा सात आठ लाख श्रावक श्राविकाए एक नेतृत्व मे आ जाय। एक अनुशासन मे रह कर अपने सयम और नियम का पालन करे। वर्तमान आचार्य अपनी पदवी त्याग करके एक आचार्य नियुक्त करे। सब मुनिजनो का आहार पानी और वन्दन व्यवहार खुला हो जाय। सारे भारत म योजना पूर्वक चातुर्मासो की नियुक्ति हो और सब तक पहुचा जाय। अपने छोटे दायरे को छोड़ कर विस्तृत दायरे म प्रवेश किया जाय तथा सयम और आचार विचार मे उन्नति की जाय।

श्रावको का भी एक सगठन होना चाहिये। अव से यह मेरी सम्प्रदाय और यह तेरी सम्प्रदाय जैसी छोटी वाता का उच्चारण न किया जाय। सव साम्प्रदायिक मडलो और सस्थाओं को दफना दिया जाय तथा इनकी जो भी स्थावर जगम सम्पति हो वह एक सयुक्त ट्रस्ट मडल या महामभा के सुपुर्द कर दी जाय।

इससे कम म हमें सतोष नही हो सकता। आशा तो यहा है कि हम सव की भावना पूर्ण होगी। किन्तु यदि कुछ कमी रह जायगी तो हमे आगे प्रयल जारी रखना होगा। तव तक हमारा प्रयल जारी रहेगा जव तक कि हम अपने लक्ष्य तक न पहुच जाये।

अव इस वात पर थोड़ा विचार करें कि इस समय ससार दो क्षेत्रो मे विभक्त है। एक मे साम्राज्यवादी शक्तिया और दूसरे में साम्यवादी शक्तिया हैं। दोनो शक्तिया एक दूसरे को अपनी ओर खींचने के लिए वल खा रही हैं। इसके लिए परमाणु वम और उद्जन वमा का आविष्कार किया गया है। क्या हमारे पास कोई ऐसी शक्ति है जो इस द्वन्द्व को मिटाने मे कारण हो सके? अवश्य हमारे पास एक अचूक अस्त्र है जो भगवान महावीर से हम विरासत मे मिला हुआ है और जिसका प्रयोग करके महात्मा गाधीजी ने भारत को आजाद बनाया है। अहिंसा रूपी अस्त्र का प्रयोग करके ससार म लगी हुई आग का शमन किया जा सकता है। हमारे धर्म का अहिंसा परमो धर्म मूलभूत सिद्धान्त है। भगवान महावीर ने अपने युग म मुख्य चार वाता पर ध्यान दिया था—(१) वाह्य क्रिया काण्डों की नि सारता वताकर अहिंसा की प्राण प्रतिष्ठा की। (२) नारी जाति को समानाधिकार प्रदान किया (३) जन्मना वर्ण व्यवस्था के वजाय कर्म से

वर्ण व्यवस्था बताकर उच्च नीच की भावना मिटाई। (४) पण्डिताऊ सस्कृत भाषा के स्थान पर लोक भाषा अर्द्धमागधी का आदर किया।

ढाई हजार वर्ष पूर्व आरम किया गया भगवान् महावीर का कार्य गाधी युग मे हमारी राष्ट्रीय सरकार ने नया विधान बनाकर पूरा किया है। अहिंसा के इर्दगिर्द हमारी सरकार की सारी नीति चलती है। अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र मे भी इसी नीति से कार्य हो रहा है। स्त्री जाति और शूद्रो के लिए नये विधान मे सुन्दर कानून बनाये गये हैं। राष्ट्रभाषा हिन्दी को राज्य भाषा करार देकर लोक भाषा का आदर किया गया है। यह सब जैन धर्म की ही प्रभावना है। जैन के उसूलो का ही प्रचार है। किन्तु मानव की यह कमजोरी है कि वह अपने द्वारा किये मे ही आनन्दित होता है और इसी कारण से इन बातो का महत्व हम नहीं समझ पाये हैं। समाज से मेरी प्रार्थना है कि वह इन ऊपर उल्लिखित चारों महत्वपूर्ण कार्यों के प्रति पूर्ण ध्यान दे। इससे हम अपने धर्म की प्रभावना के साथ-साथ राष्ट्र निर्माण के कार्यों मे भी सहयोग प्रदान कर सकते हैं। हमारे मुनिजनो से भी मैं खास तोर से प्रार्थना करता हू कि वे अपने उपदेश की शैली म समयानुकूल परिवर्तन करे। नारी को नरक की खान बताने के बजाय नारी जाति के उत्थान का उपाय बताए। भारतीय लोक मानस मे ठसी हुई छूआछूत की बीमारी को दूर करने वाली विचार धारा का प्रचार करे। राष्ट्र भाषा हिन्दी से खजाने मे वृद्धि करे और उसका प्रचार करें तथा अहिंसा धर्म का उपदेश देकर मानव समाज मे रही हुई राग द्वेष और अपने पराये की विषम भावना को दूर करें।

बड़ी नम्रतापूर्वक सत जनो की सेवा मे तथा समाज के भाइयो की सेवा म मैं यह बात रखना चाहता हू कि यह जमाना जन सम्पर्क से कट कर रहने का नहीं है। हम जैन लोग जन साधारण से अपने को अलग अनुभव करे उनसे दूर रहे तथा उनमे अपनत्व का अनुभव न करे यह महज हमारी भूल है। मुझे यह बात सुनते हुए बड़ा दु ख होता है जब सत मुनिराज भी यह कहते हैं कि अमुक गाव मे हमारे इतने घर है। उस गाव मे किसान आदि के अनेक घर होते हुए और उनसे आहार पानी ग्रहण करते हुए भी उनको अपना न मानना और उनके जीवन सुधार की जिम्मेवारी से अपने को बरी समझना सकुचित मानस का ही कार्य है। जैन साधु किसी जाति विशेष का गुरु नहीं है। वह मानव मात्र का गुरु है। सकुचित मनोवृत्ति का त्याग करके राष्ट्र निर्माण के कार्यों के प्रति भी हमें ध्यान रखना चाहिये। भारत का नैतिक स्तर ऊचा उठाने के लिये किये जाने वाले राष्ट्रीय प्रयत्नो मे हमारा योगदान मुख्य होना चाहिये। अहिंसा का नाम

लेना ही काफी नहीं है उसे जीवन मे उतार कर उसका रस जन साधारण तक पहुचाने मे ही जैन धर्म की महत्ता है।

आधुनिक यत्र युग मे महात्मा गाधीजी और विनोब भावे ने पैदल विहार करके पाद विहार की उपयोगिता ससार के समक्ष ला दी है। हमारे मुनिजन अनादिकाल से पद विहार ही करते है। यदि वे कोई योजना लेकर घूमे तो उनका विहार देश की नजरो मे तैरने लगे। लक्ष्यहीन विहार कुछ परिणाम नहीं ला सकता।

सत्य और अहिंसा पर अधिष्ठित, वर्ग विहीन और शोषण रहित समाज बनाना हमारा उद्देश्य है। ऐसा समाज जिसमे हर एक के विकास के लिए पूर्ण अवकाश हो। आज हमारे देश मे जो आर्थिक विषमता है उसे बदल कर इस उद्देश्य की ओर किस तरह बढ़ सकते हैं। यह आज हमारे सामने मुख्य प्रश्न है। केवल ससार को छोड़ देने मात्र के उपदेश से अब कार्य नहीं चल सकता। इस ससार को सुधारने का मार्ग बताना होगा। राग द्वेष और स्वार्थ के कारण ससार नरक बन सकता है और इनके ह्रास से स्वर्ग। नैतिक जीवन सुधार का उपदेश आवश्यक है। हम जैना पर किसी को यह आक्षेप करने का अवसर न आना चाहिये कि वे अनैतिक तरीका से अर्थोपार्जन करते हैं। जन साधारण का यह स्वभाव है कि वह किसी धर्म के अनुयायियो के आचरण देख कर इस धर्म को भला बुरा समझ लिया करता है। हम लोग अपने आचरणों से जैन सिद्धान्तो की विशुद्धता दुनिया के समक्ष प्रकट करें यह वाछनीय है। सर्वोदय की योजना मे जैनो का मुख्य हिस्सा होना चाहिये। यही तो जैन धर्म की प्रभावना है। हम लोग ऊनोदरी (कम खाना) तप का पालन करके खाद्य समस्या सुलझाने म सहायक हो सकते हैं। हमारे मुनिराज अपने उपदेश की धारा से डकैतिया वन्द करवाने मे मददगार हो सकते हैं। जो काम शक्ति या कानून से नहीं हो सकता वह प्रेमपूर्ण उपदेश से हो सकता है। दारू निषेध जैसी प्रवृत्तियो म भाग लेकर राष्ट्र धर्म का पालन किया जा सकता है। कहने का साराश यह है कि हमे अपना दृष्टिकाण विशाल बनाना चाहिए। यही जैन धर्म की सच्ची सेवा और प्रभावना है।

जैन साहित्य मे बहुमूल्य ग्रन्थ भरे पड़े हैं। उनका उच्च स्तरीय प्रकाशन होना जरूरी है। कान्फ्रस ने आगम प्रकाशन का कार्य हाथ म ले रखा है। उस पर भी गहराई से विचार करना चाहिये। जबकि साहित्यिक क्षेत्र मे इतनी प्रगति हो चुकी है हमारे प्रकाशन निम्नस्तर पर हो कैसे सहन किया जा सकता है? भारत के उच्च विद्वाना के पढ़ने योग्य सामग्री प्रकाशित होनी चाहिये। जैन धर्म पर समय समय जो आक्षेप आदि होते हैं उनमे हमारी अपनी कमजोरी भी छिपी हुई है। हमने अपने विचारा को विद्वानों

तक यथातथ्य रूप पहुचाने के लिए विशेष यत्न नही किया है। राष्ट्र भाषा का भण्डार जैन प्रकाशनों से भरना है और यह कार्य विद्वानो का इस ओर ध्यान आकर्षित करने से हो सकता है इसके लिए 'मगला प्रसाद पारितोषक की तरह पारितोषिक रख कर कार्य में उत्तेजना और प्रेरणा दी जा सकती है। एक ऐसे ग्रथ की भी बहुत लबे समय से महती आवश्यकता महसूस की जाती रही है जिसमे जैन धर्म का समग्र रूप आ जाता हो। बबई अधिवेशन में भी इसकी चर्चा चली थी। किन्तु छब्बीस वर्षों म इस दिशा म कोई प्रयत्न नहीं हुआ है।

धर्म शिक्षा की तरफ भी हमे ध्यान देना है। भारत के विधानानुसार सरकार धर्म कार्यों मे साधक बाधक न होगी। सेक्यूलर स्टेट्स का अर्थ यही है कि सरकार हमारे आध्यात्मिक जीवन की जिम्मेवारी नहीं लेती है। वह केवल हमारी भौतिक आवश्यकताओं को पूरा करने की जिम्मेवारी लेती है। ऐसी अवस्था मे हम पर अपने धर्म सिद्धान्तो के प्रचार की जिम्मेवारी आ जाती ही है। चन्द जैन छात्रो को जैन धर्म का सैद्धान्तिक दार्शनिक और सास्कृतिक बोध कराना हमारा फर्ज हो जाता है। छोटे बच्चो मे जैन धर्म का सस्कार जाग्रत करने के लिए काफ्रस ने पाठ्य पुस्तक तैयार की हैं वे उपयुक्त है। किन्तु इस बात का बड़ा खेद है कि इस वक्त हमारी समाज मे एक भी ऐसी सस्था नही है जहा छात्रा को जैन आगम दर्शन कर्मग्रन्थ अर्द्ध मागधी भाषा आदि का ऊचे दर्जे का ज्ञान कराया जाता हो। हा बनारस मे पारस नाथ विद्याश्रम (बोर्डिग) अवश्य है किन्तु पूर्व भूमिका निर्माण करने वाली सस्था न होने से वहा का लाभ भी बहुत अल्प मात्रा मे लिया जा रहा है। मैं ऐसी सस्था की महती आवश्यकता महसूस करता हू। भारत के मध्यस्थल मे ऐसी सस्था होनी चाहिये। इस सस्था का लाभ मुनिमहाराज भी ग्रहण करे। त्याग और तप की शोभा ज्ञान के साथ है।

आज मुनिराजो मे अगुलियो पर गिनने जितने भी उच्च विद्वान् नहीं हैं। सतों मे मेरी प्रार्थना है कि योग्य साधु और साध्वियो को ऐसी सस्था मे अवश्य पढ़ाना चाहिये। किसी बुजुर्ग सत की निगरानी में रख कर अध्ययन का कार्य चलाना चाहिये।

गृहस्थो मे भी जैन धर्म के विद्वान होने चाहिए। किन्तु यह तभी हो सकता है जब समाज विद्वानो का आदर करना सीखे। समाज में धन की प्रतिष्ठा है। यदि विद्वान् अपेक्षित है तो सरस्वती का आदर करना अनिवार्य है। इसके बिना आगमिक अध्ययन को प्रेरणा नहीं मिल सकती। मैं आशा करता हू कि एक उच्च सस्था के निर्माण-कार्य पर ध्यान दिया जायगा। जिसे सिद्धान्तशाला या अन्य नाम से पुकारा जा सकता है। जब तक साहित्य रसिक व्यक्ति न होगे साहित्य प्रकाशन का भी क्या उपयोग है? भगवान्

महावीर का जो ज्ञान हमे आगमो के रूप मे प्राप्त है उसे सुरक्षित रखन का-जीवित रूप म सुरक्षित रखने का एक मात्र उपाय अध्ययन के द्वारा परम्परा जारी रखना ही है। पचागी—मूल आगम, टीका भाष्य चूर्णी और अवचूरी के ज्ञान की परम्परा लुप्त होती आ रही है। क्या हम ज्ञान परम्परा की रक्षा करने की जिम्मेवारी से दूर हट सकते हैं? कदापि नहीं। आशा है इस बात पर अधिवेशन मे विचार किया जायगा।

यह बात हमारे ध्यान से ओझल नहीं है कि ऐसी सस्था बिना पैसे के नहीं चलाई जा सकती। पैसे का प्रश्न बड़ा विकट है। मेरी नम्र सम्मति है कि इसके लिए कोई ठोस उपाय जारी करना चाहिये। पारसी कौम मे गोद न लेने का रिवाज है और इससे उनको सामाजिक उन्नति के कार्यों के लिये प्रखर सम्पत्ति मिल जाती है। हमारी समाज मे भी यह रिवाज जारी किया जाना चाहिये। इसके लिये एक प्रस्ताव पास किया जाय और प्रचार करके लोक मानस तय्यार किया जाय। यदि यह वस्तु बन जाय तो पैसे का प्रश्न हल हो जाता है।

व्यावहारिक शिक्षा के लिये सरकारी साधनो का उपयोग करना चाहिये। छात्रो के सस्कार सुधार और साम्प्रदायिक क्रियाकाण्ड सीखाने के लिए बोर्डिंग पद्धति को सुसस्कारित बनाने से कार्य चल सकता है। हमारी अपनी सरकार होने से अब स्कूली और कॉलेजी शिक्षा म आमूल परिवर्तन होने की सभावना है। अत अलग खर्च करना वृथा है।

अब दो चार बातो की तरफ आपका ध्यान खींच कर मैं अपना वक्तव्य समाप्त करना चाहता हू।

जाति-पाति का झगड़ा जैनधर्म की मूल प्रकृति से सम्बन्ध नहीं रखता। यह ब्राह्मण सस्कृति से ग्रहण किया हुआ दोष है। जो जैन धर्म को मानते हैं उनकी एक जाति होनी चाहिये। किन्तु पिछले दिनो ब्यावर म हुए धड़ों ने कितना उग्र रूप धारण कर लिया था। यह एक दु:खद काण्ड घटित हो गया था। मुनिराजों के प्रयत्न से यह समस्या शीघ्र सुलझ गई यह सद्भाग्य की बात है। इस प्रकार के काण्ड अब दुबारा न होने पाये ऐसी हमे आशा रखनी चाहिये। यह वस्तु समय की गति से मेल नहीं खाती। जैनो की चतुर कौम ऐसे छोटे काण्डो को महत्व प्रदान करे यह अशोभनीय बात है।

आप लोगो को यह विदित है कि मैं व्यक्तिरूप से बाल दीक्षा का विरोधी हू। बीकानेर स्टेट मे तद्विषयक बिल भी मैंने पेश किया था। मद्रास अधिवेशन मे भी बालदीक्षा विरोधी प्रस्ताव मैंने भेजा था। किन्तु कारणवश मैं स्वय अधिवेशन मे

उपस्थित होकर उसे पेश न कर सका। वह प्रस्ताव जिस रूप म पास हुआ है, उससे मुझे सतोष है। उसका अमल पूर्ण रूप से होना चाहिए। पिछले साधु सम्मेलन मे दीक्षार्थी की वय सोलह वर्ष की उचित मानी गई थी। किन्तु बीस वर्षों मे जमाना पलट गया है। अब अठारह वर्ष से कम उम्र के लड़के लड़कियो को दीक्षा न दी जानी चाहिए। उम्र के साथ-साथ योग्यता पर भी ध्यान देना चाहिए।

घाटकोपर मे श्राविकाश्रम की स्थापना का कार्य महासभा ने हाथ मे ले रखा है। किसी कार्य मे अधिक विलम्ब करने से लोगो की मनोवृत्ति मे अन्तर आ जाता है और भविष्य के लिए उसका प्रभाव अच्छा नहीं होता। अत इस आश्रम की स्थापना करके शीघ्र ही अमलीरूप दिया जाना चाहिए।

महासभा के कार्य को सुव्यवस्थित चलाने के लिए प्रान्तिक शाखाओं मे जीवन सचार करना भी बहुत आवश्यक कार्य है।

मुनिराजो द्वारा निर्णीत विधान (समाचारी) का पालन करवाने में सहायता प्रदान करने के लिये एक स्टेण्डिग कमेटा का निर्माण भी करना है तथा आचार्य श्री के अनुशासन का पालन जिस तरह हो सके उसका उपाय भी सोचना है। आचार्यश्री के पीछे सघ वल होना चाहिये। इसके लिए श्रावको का सगठन भी नये रूप से होना चाहिये।

जेन गणना का कार्य भी वहुत महत्वपूर्ण है। यदि महासभा इस काम को हाथ मे ले तो बड़ा उपयोगी कदम होगा। यदि अभी इस महान् कार्य को न उठाया जा सके तो कम से कम प्रत्येक ग्राम या शहर म जैनो की कितनी सख्या है यह नोध ली जाय और बड़े-बड़े गावों कस्बा और शहरो का नक्शा तैयार करवाया जाय। ताकि योजनापूर्वक विहार का कार्यक्रम बनाये जाने मे सुविधा हो।

हमारी सब सम्प्रदायें तो एक होने जा रही हैं किन्तु अब हमे अपना लक्ष्य जैनो के सब फिरको मे एकता साधने का बनाना चाहिये। जैन जाति तभी जीवित रह सकती है जब दिगम्बर श्वेताम्बर स्थानकवासी और तेरापथी सब एक सूत्र मे बन्धकर भगवान् महावीर के अहिंसा सिद्धान्त का प्रचार करे और स्वय अमल मे लावे। छोटे-मोटे भेदों को भुलाये बिना अन्य गति नहीं है।

अत मे एक वात और निवेदन कर दू। हमारी समाज मे अनेक कुरिवाज हैं। उनमे पर्दा प्रथा भी एक है। मैं इस प्रथा को अच्छा नहीं मानता। फिर भी हमारे घर में अमली रूप देने मे सकोच होता है। समाज की व्यर्थ की टीका टिप्पणी और नीची

निगाह से देखने की वृत्ति पर्दा प्रथा निवारण मे बाधक कारण है। इसके लिए लोक मानस तैयार करना है। क्या कभी ऐसा अवसर आ सकता है जब हमारी मा बहिनें सामूहिक रूप से इस कुप्रथा को दफना देगी? फिजूलखर्चिया भी बहुत बढ गई है। सुकृत के कार्य म चदा देते हुए हमारे भाई अनेक बहानेबाजिया करने लगते हैं। किन्तु विवाह शादिया क वक्त कितने उदार बन जाते हैं। शादियो के आडम्बर और कार्य भी कितने बढ गय हैं। यह समय छिपाकर खाने का है न कि लक्ष्मी प्रदर्शन का। इस विषय मे हमे अपने पूर्वजो की शैली पर पुन पहुचना चाहिये।

—सौजन्य जैन प्रकाश २६ ५ १९५२

महिला सम्मेलन की प्रमुख श्रीमती ताराबहिन बांठिया द्वारा दिया गया अभिभाषण

माताओं तथा बहना!

अच्छा होता महिला सम्मेलन का अध्यक्ष पद किसी वयोवृद्ध अनुभवी या कार्यकुशल बहिन को दिया जाता हम लोग उसके पथ प्रदर्शन का लाभ उठाते और आगे बढ़ते। फिर भी आप सबने मुझे जो उत्तरदायित्व दिया है उसका अर्थ मैं यह मानती हू कि आप सभी का अनुभव कार्यशक्ति और विश्वास मेरे साथ हैं। मेरे लिये है यही सबसे बड़ा बल है।

आज का जमाना क्राति का हैं इस समय ससार म क्रातिकारी परिवर्तन हो रहे हैं। पुराने बधन तथा रूढ़िया टूट रही हैं। प्राचीन व्यवस्थाय छिन्न-भिन्न हो रही हैं ससार तीव्र गति से दौड़ रहा है। यह नहीं कहा जा सकता कि जो कुछ हो रहा है वह सब शुभ परिणाम को लिये हुये हैं। इस सरपट दौड़ से उत्थान भी हो सकता है और पतन भी। हमें ऐसा प्रयत्न करना है जिससे इस परिवर्तन का परिणाम मगलमय तथा कल्याणकारी हो। मैं चाहती हू कि हम सभी समय के साथ चले किन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि हम पुरुषो का अनुकरण करे। पुरुष और स्त्री दोना ही समाज के मूल तत्त्व हैं अपने-अपने कार्यक्षेत्र मे दोनों पर ही उत्तरदायित्व रहता है। इसका अर्थ आप यह न समझे कि स्त्रिया आगे न बढ़ें और अपने क्षेत्र को चक्की चूल्हा तथा सन्तान पालन तक ही सीमित रखें। आवश्यकता इस बात की है कि स्त्रिया अपने कार्य के महत्व को पहचाने। मैं तो यह कहना चाहती हू, कि समाज को धुरी स्त्री समाज है पुरुषो का कार्य सिर्फ बाहर का है। गृह व्यवस्था तथा समाज का असली सूत्र तो स्त्रियों के हाथ में हैं। मैं यह नहीं चाहती कि वे अपने गौरवपूर्ण पद का छोड़ कर पुरुषो की अन्धी नकल करें। उन्हे अपने ही सम्मानपूर्ण पद के लिये योग्य बनना चाहिए।

माता का पद समाज का सबसे ऊचा पद है। तीर्थकरो और चक्रवर्तियो की मातायें भी तो हम ही हैं फिर बतलाइये कि इससे ऊचा पद और कौनसा हो सकता है। हममे इस पद की योग्यता रखना बड़ा ही जरूरी है। हमे चाहिए कि हम अपनी सतान को सुसस्कृत सुशिक्षित तथा समाज के कर्णधार बनावे जो कि आगे जाकर हमारे नाम को उज्वल करे लेकिन हमारी बहनों मे शिशु पालन की जो अज्ञानता फैली हुई है उसे देखकर बड़ा दु ख होता है। मैं तो कहू कि जिन्हे शिशु पालन का पूरा पूरा ज्ञान नहीं है उन बहनो को सतान पैदा करने का भी कोई हक नही है। जिन बहनो को सतान होवे उन्हे यह सीखना आवश्यक हो जाता है कि वे किस प्रकार अपने बच्चो मे अच्छे सस्कार डाले और किस प्रकार की उन्हे शिक्षा देवे ताकि व अच्छे नागरिक बन कर अपना तथा अपने पूर्वजो का नाम उज्वल कर।

हमारे प्रत्येक सम्मेलन मे परदा उठाने का प्रश्न उठता है मैं भी यह मानती हू कि यह प्रथा उठानी चाहिए। समझ मे नहीं आता कि हमने कौन ऐसा बड़ा पाप किया है कि जिससे हमे अपना मुख छिपा कर रहना पड़ता है। फिर भी हमें चाहिए कि हमे एक ऐसा कदम उठाना है कि जिससे हम समाज के साथ चल सक। गाड़ी छोड़ कर आने वाला एजिन उपयोगी सिद्ध नहीं होता इसलिये आज हमे ऐसा प्रस्ताव पास करना है कि जो अमल में लाया जा सके। मेरा सुझाव है कि कम से कम स्त्रियो का आपसी परदे का आज ही एक साथ अन्त कर दे। सभी बहने यह निश्चय कर उठे कि वे आपस मे परदा नहीं करेगी। मैं यह मानती हू कि गुजरात तथा पजाब में तो यह समस्या नहीं है परन्तु मारवाड़ी समाज मे तथा राजस्थान की महिलाओं को आज यह निश्चय कर लेना चाहिए कि हम आज से आपसी परदा न करेगी। इससे मैं यह मानूगी कि मैंने एक कदम आगे बढ़ाया। स्त्री शिक्षा के लिये भी हमे आवश्यक प्रयत्न करना चाहिए। इसका महत्व सर्वविदित है इससे हमे अपने को और अपनी लड़कियों को शिक्षित करना जरूरी है।

आज इस सादड़ी गाव मे सैंकड़ो की सख्या मे हमारे पूज्य मुनिराज तथा साध्वीजी एकत्रित हुई हैं और उन्होंने अपने साम्प्रदायिक मतभेद तथा अपनी पदवी को छोड़कर सघ ऐक्य की योजना को सफल बनाया है। दूसरी ओर हमारी काफ्रेस समाज के उत्थान के लिये उपयोगी निश्चय कर रही है उन सब को व्यवहार मे लाना तथा समाज की एकता को कायम रखना एव उसे आगे बढ़ाना। इसमे हमारा भी उतना ही कर्त्तव्य है जितना पुरुषो का। मैं आप सबसे अनुरोध करती हू कि हमे अपनी काफ्रेस को पूरा सहयोग देना चाहिए।

हमारी समस्याये अनेक हैं उनकी चर्चा के लिये काफी समय की आवश्यक्ता है। मैं तो आपसे यही अनुरोध करती हू कि हम जो कुछ भी निश्चय करें उसे व्यवहार म लाकर बताये। बाते ऊची-ऊची करना तथा काम के समय भाग जाना हमारे देश का रोग है हमे यथाशक्ति इससे बचना चाहिए।

अन्त मे मैं आप सभी को धन्यवाद देती हू कि आपने मेरे भी विचारों को शातिपूर्वक सुना। आशा है कि इस सम्मेलन मे आप हमारे सामाजिक उत्थान के लिये योग्य निर्णय करेगी और इसी दृष्टि से करेगी कि वह निर्णय व्यवहार मे लाया जायेगा।

—सौजन्य जैन प्रकाश ५ ६ १९५२

□

कान्फ्रेस अधिवेशन एव वृहत् साधु सम्मेलन—भीनासर

'भीनासर के भामाशाह बाठिया जी के सद् प्रयासो का सुफल ही था कि अ भा श्वे स्था जैन कान्फ्रेस का तेरहवा अधिवेशन-स्वर्ण जयन्ती अधिवेशन ४ से ६ अप्रेल सन् १९५६ को भीनासर मे सम्पन्न हुआ। साथ ही २६ मार्च से ६ अप्रेल तक यहीं द्वितीय वृहत् साधु सम्मेलन भी आयोजित हुआ। देश के कोने-कोने से समागत ३५ ४० हजार श्रद्धालुजनो का सम्मेलन कान्फ्रेंस व भीनासर के इतिहास मे चिर स्मरणीय बन गया।

अधिवेशन की अध्यक्षता श्री विनयचन्द्र भाई दुर्लभ जी भाई जौहरी ने की तथा स्वागताध्यक्ष थे श्री जयचदलाल जी रामपुरिया। अधिवेशन की सफलता के लिए महामहिम राष्ट्रपति डॉ राजेन्द्र प्रसाद शर्मा उप राष्ट्रपति डॉ एस राधाकृष्णन् और प्रधानमत्री प जवाहरलाल नेहरू ने भी शुभ सन्देश प्रेषित किये थे। अधिवेशन का उद्घाटन गृहमत्री माननीय प गोविन्द वल्लभ पत ने किया। इस अवसर पर श्रीयुत् मोहनलाल सुखाड़िया (मुख्य मत्री-राजस्थान) श्री जयनारायण व्यास (पूर्व-मुख्यमत्री) श्री बलवत राय मेहता-एम पी , श्रीमती रुक्मिणी अरूडेल आदि नेता भी पधारे। श्री गोविन्द वल्लभ पन्त को श्वे स्था जैन समाज की ओर से अभिनन्दन पत्र भेंट किया गया।

अधिवेशन मे पारित प्रस्तावों मे उल्लेखनीय हैं १ महावीर जयन्ती के सार्वजनिक अवकाश हेतु सरकार से आग्रह। २ वीर सेवा सघ की स्थापना हेतु योजना। ३ श्रमण सघ द्वारा गठित सवत्सरी तिथि-निर्णायक समिति को सहयोग देने के लिए एक उपसमिति का गठन। ४ व्यापार विकास हेतु हिंसक प्रवृत्तियो पर खेद। ५ जैन धर्म के विश्वव्यापी सिद्धान्तो का प्रचार। ६ ध्वनि वर्द्धक यत्र (लाऊड स्पीकर) के प्रयोग सम्बन्धी श्रमण सघ के प्रस्ताव पर अमल। ७ दिल्ली मे कान्फ्रेस भवन क्रय की स्वीकृति। ८ भगवान महावीर के निर्वाण स्थान पावापुरी को अभय भूमि घोषित कराना। ९ जिनागम प्रकाशन समिति की नियुक्ति। १० पचशील के सिद्धान्ता के प्रचार हेतु पूर्ण सहयोग।

ध्वनि-विस्तारक यत्र के प्रयोग पर प्रायश्चित के प्रस्ताव पर काफी बहस छिड़ गई। कतिपय मुनियो ने इसका विरोध किया परन्तु मुनि श्री मिश्रीलाल जी मुनि श्री अमृतलाल जी तथा मुनि श्री सुशीलकुमार जी के प्रयासों से झगड़ा शान्त हो गया व प्रस्ताव पारित हो गया।

अपने उद्घाटन भाषण मे भारत सरकार के गृहमत्री पडित गोविन्द वल्लभ पत ने जैन धर्म के अहिंसा एकता और सहिष्णुता के मूलभूत सिद्धान्तो का अनुसरण करने की अपील की। आपने आगे कहा 'आज हम बड़े क्रातिकारी युग म रह रहे हैं। सम्पूर्ण विश्व ही हमारा परिवार बन गया है। इस दृष्टि से जैन धर्म द्वारा प्रतिपादित विश्व बन्धुत्व के सिद्धान्तों की उपादेयता स्वय सिद्ध है जिन्हे अपना कर जीवन मे नव आलोक प्राप्त किया जा सकता है।

पडित पत ने कहा कि भौतिक साधना से हुई समृद्धि और सुख सुविधाओं के बावजूद भी आज लोग वास्तव मे सुखी नहीं है। सर्वत्र सन्देह और भय का वातावरण है और इस स्थिति का अन्त केवल धार्मिक सिद्धान्तो के आचरण से ही सम्भव है। सभी धर्मों का मूल सिद्धात एकता है फिर भी यह विडम्बना है कि धर्म के नाम पर मानव मानव म ऊच-नीच की कृत्रिम दीवार निर्मित कर दी गई हैं। इस बनावटी भेदभाव को समाप्त करना आवश्यक है। जैन धर्मानुयायी देश की एकता हेतु कार्य करे तो यह देश की सबसे बड़ी सेवा होगी।

अपने अध्यक्षीय भाषण म श्री विनयचद भाई दुर्लभ जी जौहरी ने कहा 'यदि जैन सस्कृति साहित्य और तत्वज्ञान का जगद्व्यापी प्रचार करना चाहते हैं तो—एक बनो अखड बनो और एकाग्र बनो—हमारा जीवन सूत्र बनाना चाहिए। हमारी अखड एकता द्वारा अहिंसा अनेकात और अपरिग्रह का सविशेष प्रचार करके जैनत्व का प्रकाश विश्व म फैला सकगे।

आपने जोर देकर कहा कि आज के युग मे वही समाज वही धर्म जीवित रह सकता है जिसमें सघठन है क्योंकि सघ शक्ति ही वास्तविक शक्ति है। आपने श्रमण-सघ को एक अखड और अद्वितीय बनाने हेतु कतिपय सुझाव दिये तो श्रावक सघ को भी सगठित होकर कार्य करने की अपील की।

स्वागताध्यक्ष श्री जयचन्दलाल जी रामपुरिया ने जैन समाज को सगठित होकर कार्य करने की आवश्यकता बताई। आपने साधु समाज को आध्यात्मिक जीवन का सजग प्रहरी माना जो आत्म-सयम अध्यात्म व उच्चादर्श के प्रति जागरूक हैं। सह स्वागत मत्री श्री प्रतापमल जी बाठिया ने नैतिक उत्थान के लिए प्रारम्भ से ही धार्मिक शिक्षा पर ध्यान देने का सुझाव दिया और बताया कि राष्ट्र और धर्म मे कोई मतभेद नहीं रहना चाहिए।

बृहत् साधु-सम्मेलन उपाचार्य श्री गणेशीलाल जी महाराज सा के तत्वावधान में सम्पन्न हुआ था। इसमे प्रधानमत्री श्री आनन्द ऋषि जी म सा पजाब केसरी श्री

प्रेमचन्दजी महाराज मरूधर केसरी श्री मिश्रीलाल जी महाराज श्री प्यारचदजी महाराज श्री हस्तीमल जी महाराज कविसम्राट श्री अमरचन्द जी महाराज श्री सुशील कुमार जी महाराज श्री मदनलाल जी महाराज सहित करीब दो सौ सन्त मुनिराज पधारे।

जैन काफ्रेस स्वर्ण जयन्ती महोत्सव हेतु गठित स्वागत समिति के स्वागत मत्री निर्वाचित किए गए थे श्रीमान् चम्पालाल जी सा बाठिया। एक विशाल पडाल (लगभग ५० हजार व्यक्तियो के बैठने की व्यवस्था) का निर्माण किया गया था। अहर्निश परिश्रम कर बाठिया सा ने सम्मेलन को सफल बनाया। स्वर्णाक्षरो मे अकन योग्य बन गया यह अधिवेशन।

जैन युवक सम्मेलन

अ भा श्वे स्था जैन कान्फ्रेस के अधिवेशन के अवसर पर ही भीनासर मे श्वे स्था जैन युवक सम्मेलन श्री जवाहरलाल जी मूणोत की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ। इसका उद्घाटन दानवीर सेठ श्री सोहनलाल जी दूगड ने किया। मध्यभारत के राजस्व मत्री श्री सौभाग्यमल जी जैन दिल्ली विधान सभा के सदस्य श्री आनन्दराज जी सुराणा आदि विशिष्ट महानुभाव भी इसमे उपस्थित हुए। अनेक वक्ताओं ने समाज सुधार के बारे मे अपने विचार प्रकट किये। श्री मूणोत ने अपने अध्यक्षीय अभिभाषण म युवा पीढ़ी को धार्मिक शिक्षा देने की आवश्यकता बताई। आपने नवयुवको को सम्बोधित करते हुए कहा कि वे धर्म के प्रति विश्वास व श्रद्धा रखते हुए श्रमण व श्रावक सघो के प्रति निष्ठा पूर्वक कार्य करे।

जैन महिला परिषद्

जैन कान्फ्रेन्स के अधिवेशन के दौरान ही अ भा श्वे स्था जैन महिला परिषद् का सम्मेलन श्रीमती पारसरानी जैन (भुसावल) की अध्यक्षता मे हुआ। उद्घाटन किया श्रीमती सोहनलाल जी दूगड़ ने। स्वागताध्यक्ष श्रीमती तारादेवी बाठिया के स्वागत भाषण के पश्चात् महारानी सुदर्शना महिला कॉलेज की प्राचार्या श्रीमती स्वर्णलता अग्रवाल ने महिलाओं की शिक्षा पर जोर दिया। उल्लेखनीय है कि अखिल भारतीय महिला परिषद् की स्थापना करने का प्रस्ताव भी स्वीकृत हुआ। महिला परिषद् के महिलाओं मे आपसी पर्दा नहीं रखने मृत्यु के अवसर पर चिल्लाकर न रोने तथा दहेज प्रथा बन्द करने के प्रस्ताव प्रशसनीय हैं।* □

★ दैनिक हिन्दुस्तान नई दिल्ली ८ ४-५६ ६ ४ ५६

दैनिक राष्ट्रदूत जयपुर १२-४ ५६ दैनिक लोकवाणी जयपुर ६ ४ ५६

उदारता की प्रतिमूर्ति

बांठिया सा के हृदय मे करुणा व सहयोग की भावना रची-पची थी। इनकी हवेली पर आकर जिसने अपना दुखड़ा सुनाया उसका हल अवश्य निकला। ग्रामवासी परिचित जन अथवा सामाजिक धार्मिक सस्थाओं के पदाधिकारी/ कार्यकर्ता प्राय मिलने आते और उन्हें परामर्श समानुभूति या आर्थिक सहयोग अवश्य मिलता। आपको उदारता अपने पितृश्री से विरासत मे मिली थी। उन्होंने अपने जीवन मे लाखो रुपयो का गुप्त और प्रकट दान दिया था। बाठिया सा ने भी उसी आदर्श का निर्वाह किया। आपने अनेक बार बड़ी-बड़ी राशिया दान की हैं। एक प्रसग पर एक मुश्त ७५ हजार रु का दान देकर आपने स्तुत्य कीर्तिमान स्थापित किया।

सामाजिक सस्थाओं के उन्नयन हेतु आपकी सदैव रुचि रही है। इन्हे कार्यक्रम बनाने व गतिशील रखने हेतु अनेक अवसरो पर आपने अर्थ सहयोग प्रदान कर एक आदर्श प्रस्तुत किया जिनमे से कुछ प्रमुख निम्न प्रकार हैं।

२१०००/ श्री अखिल भारतवर्षीय श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कान्फ्रेंस के बारहवें सादड़ी अधिवेशन की अध्यक्षता के अवसर पर

११०००/ श्री जैन गुरुकुल ब्यावर म समारोह की अध्यक्षता के अवसर पर

५०००/ जैनेन्द्र गुरुकुल पचकुला (अम्बाला) की अध्यक्षता के अवसर पर

२५००/ भोपालगढ़ गुरुकुल के समारोह की अध्यक्षता के अवसर पर

११११११/ श्री जवाहर विद्यापीठ भीनासर की स्थापना के लिए सवत् २००० मे

४१०१/ श्री जवाहर विद्यापीठ के उद्‌घाटन के अवसर पर

५२५०/ श्री जवाहर विद्यापीठ के विद्यार्थियो के भोजन हेतु सवत् २००३ से २०१२ तक ५२५/ प्रति वर्ष।

२२२२/- *श्री जैन पाठशाला सभा (एक क्वार्टर निर्माणार्थ)*

५००१/ स्थानकवासी जैन सभा, कलकत्ता

१०००/ सार्दूल सस्कृत कालेज बीकानेर

५०००/ भीनासर साधु सम्मेलन के चदे में

१०००/- गृह उद्योग शिक्षण शाला, भीनासर

१००१/ उदयपुर म गणेशीलालजी म सा के आप्रेशन के समय हॉस्पिटल मे

६०००/ सरदार शहर जवाहिर प्रन्यास

आपके स्वर्गवास के पश्चात् भी आपकी धर्मपत्नी श्रीमती तारा देवी बाठिया ने आपकी उदार परम्परा को जारी रखते हुए निम्नलिखित सस्थाओं को मुक्त हस्त से दान दिया—

१५०००/ श्री जवाहर विद्यापीठ भीनासर को सेठ श्री चम्पालाल जी बाँठिया स्मृति व्याख्यानमाला फड मे

११०००/ साधुमार्गी जैन सघ गगाशहर भीनासर मे आचार्य नानेश के होली चातुर्मास के अवसर पर

५१११/ श्री श्वेताम्बर साधुमार्गी जैन हितकारिणी सस्था बीकानेर की हीरक जयन्ती के अवसर पर

५००१/ दलोदा समता भवन के निर्माणार्थ

४०००/ गगाशहर में गरीब भाईयों के क्वार्टर निर्माणार्थ

१२०००/ श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन महिला समिति को स्वधर्मी सहायता हेतु

३१००/ सेठ हमीरमलजी बांठिया राजकीय कन्या उच्च प्राथमिक विद्यालय की हीरक जयन्ती के अवसर पर

१ ०१ ०००/ श्री जवाहर विद्यापीठ भीनासर की स्वर्ण जयन्ती के अवसर पर। ☐

महाराजा सार्दूलसिंहजी फंड प्रभूतदान

दिनाक १ मार्च १९४४ को बाठिया बालिका विद्यालय का उद्घाटन करने हेतु बीकानेर के तत्कालीन नरेश श्रीमान् सार्दूलसिंहजी को आमन्त्रित किया गया था। इस अवसर पर सेठ सा न उनको २५ हजार रु नगदी नजर किये। इसी क्रम म आपने एक लाख रुपये चम्पालालजी वैद व ७००० रु सोहनलालजी बाठिया से नजराना भेंट कराया। यह १,३२ ००० रु की राशि सार्दूल वेलफेयर फड मे जमा करादी गई। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् इस राशि के बारे मे निर्णय हेतु एक कमेटी गठित की गई जिसके सचिव कलेक्टर जसवन्तसिंहजी M L A. अध्यक्ष मनोनीत किये गये। तीन सदस्य राजाजी की ओर से व तीन जनता से लिये गये। एक सदस्य आप भी थे।

श्री जसवन्त सिंहजी के तात्कालीन ससद ने प्रश्न उठाया कि सार्दुल वेलफेयर फण्ड मे बीकानेर दरबार को जो नजराना बीकानेर की जनता द्वारा पेश किया गया है यह बीकानेर का रुपया है अत बीकानेर मे ही खर्च होना चाहिये। कमेटी द्वारा बा॰ में निर्णय लिया गया कि जिसने जितना नजराना किया उसका आधा भाग उसे वापस लाय दिया जाय। किन्तु आपश्री कि विशिष्ट सेवाओं को देखते हुए कमेटी ने आपका ७५% राशि वापस लौटाने का निर्णय लिया। इस प्रस्ताव के अन्तर्गत आपको १ ३२०००/ का ७५% से ९९००० / का चैक दिया गया। आप इसे धर्मार्थ कार्य में व्यय करना चाहते थे परन्तु वैदजी कुआ व वाटर वर्क्स बनवाना चाहते थे। अत उनको व श्री सोहनलालजी को उनकी राशि दे दी गई और आपने अपनी राशि १८७५० रु (२५ ००० रु का ७५ %) बांठिया बालिका विद्यालय भवन मे व्यय की।

यहा उल्लेखनीय है कि दरबार के सम्मान में जवाहर विद्यापीठ प्रागण मे समारोह किया गया था वह भी अपने मे अनुपम था। उनके प्रवेश हेतु एक रजत द्वार लगाया गया जो बीकानेर के श्री भवरलालजी रामपुरिया के यहा से लाया गया था। प्रागण खचाखच भरा हुआ था और सभी तन्मय होकर दरबार का उद्बोधन सुन रहे थे। ☐

सजग प्रहरी

आदर्श एव सजग प्रहरी के रूप मे भी बाठिया सा का व्यक्तित्व बेजोड़ था। उच्च पदासीन अधिकारी ही यदि भ्रष्ट हो तो उससे क्या अपेक्षा की जा सकती है। ऐसे ही एक जज थे डी एम नानावती जिन्हे अपने पद से ही हाथ न धोना पड़ा वरन् देश निकाले का दण्ड तक भुगतना पड़ा। सेठ सा का बीकानेर राज्य की हाई कोर्ट मे एक मुकदमा श्री शिवबख्सजी कोचर से चल रहा था। आपको ज्ञात हुआ कि जज घूसखोर है और दूसरी पार्टी से पैसा लेकर उनके विरुद्ध निर्णय करेगा तो आपने एक योजना बनाकर उसे सबक सिखाना चाहा। आपने तत्कालीन पुलिस अधीक्षक श्री जवाहरलालजी व आई जी पी हार्डिंग से भेट कर सारी स्थिति से अवगत कराया। इधर हार्डिंग ने महाराजा गगासिंहजी से बात की तो उन्हे विश्वास नही हुआ। महाराजा सा को ५००० के नोट दिखाकर नम्बर नोट करा दिये।

निश्चित समय पर श्री शेसकरणजी के मार्फत राशि जज को दी गई। इतने मे सीटी बजते ही गुप्तचर अधिकारियों ने आकर महाराजा सा के विश्वासपात्र अधिकारियों श्री जीवराजजी आदि की उपस्थिति मे जज को रगे हाथो पकड़ लिया।

सेठ सा की भी पेशी हुई। महाराजा गगासिंहजी ने पूछा कि आपको पता है कि रिश्वत लेना व देना दोनो अपराध हैं तो आपने रिश्वत क्यो दी? सेठ सा ने निर्भयता से बयान दिया कि उन्हें ज्ञात है कि रिश्वत देना जुर्म है पर महाराजा सा से बताकर ही ऐसा किया है। यही नहीं आपने याद दिलाया कि हार्डिंग सा के साथ आकर नोट महाराजा सा को दिखा दिये थे व नम्बर भी नोट करा दिये थे।

जस्टिस नानावती ने एक बार तो साफ नकार दिया कि उन्होंने रिश्वत ली है और यह राशि इनके द्वारा किये गये रूई के सौदे मे नफे की है परन्तु महाराजा सा के सम्मुख स्थिति स्पष्ट थी। आखिर आपने जज को गलत बयानी झूठ बोलने व रिश्वत लेने के जुर्म में देश निकाला दे दिया। उन्हे आदेश दिया गया कि सात दिन मे बीकानेर राज्य की सीमा छोड़कर चले जाओ।

इस प्रकार आपने जज को पाठ पढ़ाया और एक उदाहरण प्रस्तुत किया अपनी निर्भयता का तथा भ्रष्टचार के विरुद्ध अपने जेहाद का। □

अद्वितीय कला प्रेमी

बाठिया सा की कलात्मक अभिरुचि अद्वितीय थी। कला के सरक्षण एव सवर्द्धन हेतु आप सदैव तत्पर रहते थे। उनकी हवेली 'बाठिया भवन' स्थापत्य कना का वेजोड़ नमूना है। देश-विदेश के कला प्रेमी हवेली एव उसमे सग्रहीत कलात्मक सामग्री का अवलोकन कर अवाक् ही नहीं रह जाते वरन् आत्म-विभोर हो जाते हैं। कारीगर एव मजदूर लगभग चार दशक तक अनवरत कार्यरत रहे और उनकी परिकल्पना को मूर्त रूप दिया। उनकी सूझ-बूझ कुशाग्र बुद्धि एव उच्च कोटि की परख परिलक्षित है हवेली के निर्माण एव स्तरीय कलाकृतियो मे।

कला का अनूठा सगम है हवेली। प्रवेश द्वार से अनुमान लगाया जा सकता है हवेली की भव्यता का। कलात्मक काष्ठ द्वार अनावृत होते ही इटालियन मार्वल की टाइलो से निर्मित फर्श हमे सहसा आकर्षित कर लेता है। विविध वर्णी सगमरमर का सयोजन इस प्रकार किया गया है कि हम कल्पनालोक में खो जाते हैं। दीवारो पर लगे बड़ौदा ग्रीन मार्वल मे खुदाई कर अन्य प्रकार के मार्वल की भराई कर जो डिजाइन वनाई गई हैं अपने मे अद्वितीय है। 'बड़ौदा ग्रीन' के ये इजारे वस्तुत दर्शनीय हैं। मार्वल मे खुदाई का कार्य तो आवू के देलवाड़ा मदिर रणकपुर के मदिर व अन्य भी वहुत से मदिर व हवेलियों मे मिल जायेगा लेकिन मार्वल मे इस तरह की भराई का काम वहुत ही दुर्लभ है। आपकी पिरोल मे बायीं ओर इजारे हैं लेकिन किसी मे भी एक वाल भर भी फर्क नहीं जव कि उस समय सव कार्य हाथ से ही होता था वड़ौदा ग्रीन के वड़े पत्थर को काट काट कर उसमे दूसरे इटालियन व वेल्जियम के मार्वल को कलात्मक ढग से काटकर भरे गये हैं तथा अपनी वैठक के आगे दोनो तरफ के इजारे वेल्जियम के काले मार्वल मे जो मार्वल के गुलदस्ते वनाये हैं इस एक एक इजारे को वनाने मे कारीगरो को ३ ३ महीने लगे और इनकी कलात्मकता वस्तुत अद्वितीय है। वर्माटीक वुड की एकल छतों में फूल पत्तियो की सूक्ष्म खुदाई की गई है तथा स्थान-स्थान पर टगी दीवाल-घड़िया अतीत को वर्तमान से जोड़ देती है। औत्सुक्य जागृत होता है कमरों मे सजोयी कला से साक्षात् होने का।

आपके विशिष्ट अतिथि कक्ष को देखने पर लगता है कहीं म्यूजियम में पहुच गए हैं। क्या नहीं है यहा पर! इटालियन मार्वल अखरोट-काष्ठ रजत हाथी दात प्रोसलिन चन्दन-काष्ठ वेल्जियम कट ग्लास की मूर्तिया व सजावटी सामग्री। आलमारियों की वेल वूटेदार फ्रेम एव द्वार हाथीदात की शतरज व बुद्ध सिकन्दर आदि

की लम्बाकर मूर्तिया प्रोसलिन की 'थ्री-मिस्ट्र्स , एम्ब्रोइडरी चित्र गलीचे फर्नीचर आदि साक्षी हैं डाठिया सा की कला-दृष्टि के। कितना समय लगा होगा, कितनी धनराशि व्यय हुई होगी, कल्पनातीत है।

विशिष्ट अतिथि कक्ष अपने मे विशेषता लिये हुए है। दीवार के ऊपरी सिरे पर राष्ट्रीय नेताओं एव बीकानेर नरेशो के चित्रो मे हम गोखले नेहरू पटेल डॉ राजन्द्र प्रसाद, इन्दिरा गाधी के साथ बीकाजी से लेकर डॉ करणीसिंहजी को एक साथ देख सकते हैं। मध्य मे अवस्थित टेबल पर फूल फव्वारा भी दर्शक को मोह लेता है।

हर चौक में, हर कमरे मे विविध प्रकार की कुल ४० घड़िया लगी हुई हैं। दरवाजो में चारों ओर सुनहरी कलम का काम चूना व कलर की आला-गीला आर्ट आज भी जीवन्त है। सेठ सा को पार्टियो का शौक था। अब तक कितने सेठ-साहूकारो, सरकारी अधिकारियो नरेशो मत्रियो सासदो विधायको ने यहा सेठ सा के साथ भोजन अल्पाहार स्वरुचि भोज का आनन्द लिया-गणना कठिन है।

हवेली के चेहरे पर लाल पत्थर की महीन खुदाई का काम देखकर लोग दातो तले अगुली दबा लेते हैं। ऊपर हवेली के शयनकक्ष जिनकी छ्ने करीब २० फुट ऊची है तथा इनमे कलात्मक चित्रकारी छतो व दिवारो पर की हुई है कितना समय व श्रम लगा होगा इस बारीक चित्रकारी को करने म कल्पनातीत है। लगता है कि किसी राजमहल मे आ गए हों वैसे इन दोनों शयनकक्षों को घर मे भी महल कहकर ही पुकारा जाता है।

सभी कमरों के इजारो मे विदेशी जापानी टाइले लगी हुई हैं जो आज दुर्लभ हैं और इनकी चमक आज भी उसी तरह बरकरार है। दरवाजो में भी कहीं खुदाई का व कहीं हाथीदात की भराई का काम किया हुआ है।

२० २५ वर्षों तक चेजे का कार्य करने वाले कारीगर मजदूर व लकड़ी का कार्य करने वाले सुथार व मार्बल का कार्य करने वाले कारीगर अपनी कला उत्कीर्ण करते रहे। आपने कभी-उनको जाकर नहीं पूछा कार्य कब सम्पूर्ण होगा। आपकी तो एक ही शर्त थी काम बढ़िया से बढ़िया होना चाहिए चाहे समय व श्रम कितना ही लगे। कार्य सम्पूर्ण होने पर उसकी तारीफ सुनकर भैरूदानजी कोठारी जो मार्बल के कार्य में विशेष जानकार थे उन्होंने हवेली के काम देखकर मुक्त कठ से उसकी सराहना की तो आपने कहा कि मेरी वर्षों की मेहनत व पैमा सब वसूल हो गया। अगर काम मे कुछ कमी रहती तो उसे वापिस तुड़वाने में भी आप कोई सकोच नहीं करते थे। हवेली की पिरोल का फर्श दो बार तुड़वा दिया जो पसन्द आया उसे ही रखा ऐसे अद्वितीय कला प्रेमी थे सेठ साहब। □

पडाव-दर-पड़ाव

जीवन एक यात्रा थी आपके लिए। ऐसी यात्रा जिसमे अनेक मोड़ व पड़ाव आये। प्रारम्भ से ही समाज सेवा मे आपका रूझान था। अपनी कार्य-कुशलता दूरदर्शिता एव समर्पित भावना ने आपको अनेक क्षेत्रा मे आशातीत सफलता प्रदान की। उद्योग व्यापार म नये कीर्तिमान स्थापित किये तो नगर पालिका के अध्यक्ष रूप में जन-प्रतिनिधि भी बने। यही नहीं आपको ऑनरेरी मजिस्ट्रेट भी नियुक्त किया गया। वर्षों तक आपने सेवा प्रदान की।

बीकानेर राज्य मे सर्वप्रथण जन साधारण को न्याय दिलाने के लिए सन् १८८५ में स्माल कॉज कोर्ट की स्थापना की गई थी। इसी क्रम मे ऑनरेरी मजिस्ट्रेटों के न्यायालयो की स्थापना का निर्णय लिया गया था। श्रीमान् बाठिया सा को भी ऑनरेरी मजिस्ट्रेट बनाया गया था।

जैन जवाहर विद्यापीठ की स्थापना के पश्चात् आपने इसका सफलतापूर्वक सचालन किया। इसके मत्री व कोषाध्यक्ष रहकर इसके विकास हेतु आपने अथक परिश्रम किया। साथ ही नगर की अन्य सामाजिक धार्मिक जन कल्याणकारी सस्थाओं से सम्बद्ध रहकर आपने अपनी प्रतिभा से सबको लाभान्वित किया। मुरली मनोहर गौशाला के अध्यक्ष रूप मे आपने इसके विकास हेतु अथक प्रयास किये व इसे आर्थिक सुदृढ़ता प्रदान की। इसी प्रकार श्री साधुमार्गी जैन हितकारिणी सस्था बीकानेर के ३७ वर्षों तक अध्यक्ष रहे व सस्था का चहुमुखी विकास किया। कौन जानता था कि बांठिया सा अपनी प्रतिभा के बल पर बीकानेर राज्य की विधान सभा के सदस्य बन जायेंगे।

समाज के प्रति आपके योगदान को कभी भुलाया नहीं जा सकता आपने तो अपना सारा जीवन ही समाज की सेवा म लगा दिया। समाज के लिए समर्पित ऐसे महापुरुष विरले ही होते हैं। आपने तन मन और धन से पूर्णत समर्पित होकर अपनी सेवाएँ प्रदान की। अत समाज की विभिन्न सस्थाओं ने समय समय पर आपकी विशिष्ट सेवाओं के लिए अभिनन्दन पत्र प्रदान कर सम्मानित किया। आपकी जीवन यात्रा के पड़ाव जन साधारण को प्रेरणा देने वाले एव राह दिखाने वाले हैं। □

भरा-पूरा परिवार परिजन परिचय

बाठिया सा का एक भरा पूरा सस्कारी परिवार है। १२ वर्ष की अल्पायु मे आपका पाणिग्रहण सन् १६१४ (सवत् १६७१) मे श्रीमती आनन्द कवरी आत्मजा श्री तोलारामजी सेठी बीकानेर से हो गया था। शादी के छ वर्षों बाद सवत् १६७७ मे आपके एक पुत्री चादकुवर का जन्म हुआ तथा वर्षों बाद (श्री शाति विजयजी म सा के आशीर्वाद से) सवत् १६६५ मे आत्मज श्री शान्तिलाल का जन्म हुआ। बच्चे ने छह बसन्त ही देखे थे कि मा आनन्द कवरी का स २००१ मे देहावसान हो गया। चिकित्सा की कोई कमी न रही परन्तु पानीझरा जान लेवा बन गया।

स २००१ मे ही आपकी शादी इन्दौर के श्री जेठमलजी कोठारी की सुपुत्री श्रीमती तारा कुमारी के साथ हो गई। इनका पगफेरा ऐसा था कि इनके आने के अनन्तर सुख समृद्धि की वृद्धि हुई। इनके दो पुत्र व छ पुत्रिया हुई। पुत्रो के नाम श्री धीरजलाल व सुमतिलाल हैं। पुत्रियो के नाम हैं क्रमश सन्तोष सवर सुधा समता सुमन व सरिता। सभी बच्चो के सम्बन्ध प्रतिष्ठित व सम्पन्न परिवारो मे हुए।

सबसे बड़ी पुत्री चादकुवर का विवाह बीकानेर के श्री भवरलालजी पारख के साथ हुआ जिनका लिलुवा मे एस बी मिनरल इन्डस्ट्रीज के नाम से ग्राइन्डिंग मशीन लगी हुई थी। कुछ वर्ष पूर्व ब्रेन हमरेज हो जाने से उनका असामयिक व आकस्मिक निधन हो गया। इनके कोई सन्तान न होने से अपने देवर सम्पतलालजी के पुत्र निर्मल कुमार को गोद लिया।

श्री शान्तिलाल का पाणिग्रहण सस्कार मद्रास के प्रख्यात सुश्रावक श्री इन्द्रचन्द्रजी गेलड़ा की सुपुत्री सुशीला देवी के साथ हुआ। शादी के कुछ वर्ष पश्चात् कलकत्ता में यूनाइटेड इजीनियर्स कार्पोरेशन नाम से रेडीमेड जीन्स का कार्य करते हैं। इन्हें अलग होने पर कलकत्ता मे ७२ केनिंग स्ट्रीट तथा भीनासर मे गेस्ट हाउस वाला मकान दिया गया। इनके एक पुत्री नीरजा एव एक पुत्र सुनील है।

श्री धीरजलाल की शादी अहमदाबाद के श्री लालचन्दजी मेहता की पुत्री नलिनी देवी से हुई। इनके दो पुत्रिया-सगीता कविता एव एक पुत्र-आशीष है। ये पूर्व मे बीकानेर में पैतृक व्यवसाय-राजस्थान टिम्बर सप्लाई क यूनाइटेड कान्ट्रेक्टर कार्पोरेशन रामपुरिया आईस फैक्ट्री सभालते थे। एक फर्म अनुपम ट्रेडर्स नाम से खोली थी जिसकी ब्राच जयपुर मे भी थी। इसमे फोरमाइका रग पेन्ट का काम था। कालान्तर में

राजस्थान टिम्बर के अतिरिक्त अन्य प्रतिष्ठान बन्द कर दिये गये। अब श्री धीरजलाल कलकत्ते मे अपना अच्छा व्यवसाय करते हैं। सामाजिक कार्यों मे भी रुचि रखते हैं। वर्तमान मे भीनासर नागरिक परिषद के सक्रिय सदस्य एव उपमत्री हैं।

पुत्री सन्तोष का विवाह बीकानेर के श्री माणकचन्दजी खजान्ची के पुत्र श्री धनपतसिंह जी से हुआ है। इनके बीकानेर मे जवाहरात का व्यापार है तथा सूरत में हीरे का व्यवसाय है एव बीकानेर मे खजाची मार्केट के एक हिस्से का स्वामित्व है। इनके दो पुत्र तरुण सिंह व अरुणसिंह तथा एक पुत्री शशि है।

पुत्री सबर की शादी मद्रास की ख्यातनामा फर्म मै अगरचन्द मानमल के सेठ मोहनमलजी चोरड़िया के पुत्र सम्पतमलजी चोरड़िया से हुई, जो फाइनेन्स का कार्य करते हैं। इनके फार्मास्युटिकल फैक्ट्री व बैंगलोर मे होलसेल डिस्ट्रीब्यूटर्स का कार्य है। इनके दो पुत्र पन्नालाल व गम्भीर तथा एक पुत्री चन्द्रकला है।

पुत्री सुधा का विवाह बीकानेर के श्री मोहनलालजी सिरोहिया के पुत्र सुरेश कुमारजी के साथ हुआ है जो कलकत्ता मे सुधा टैक्सटाइल्स नाम से होलसेल सूती साड़ी का व्यवसाय करते हैं। इनके दो पुत्र मनीष व महीप हैं।

कनिष्ठ पुत्र श्री सुमतिलाल ने बी कॉम तक अध्ययन किया है और इनकी शादी बीकानेर के साहित्यकार-श्रेष्ठीवर्य श्री माणकचन्दजी रामपुरिया की पुत्री प्रमादेवी के साथ हुई है। इनके एक इकलौता पुत्र-आदर्श है। इन्होंने कलकत्ता में बांठिया टैक्सटाईल्स नाम से होलसेल व्यापार किया परन्तु पाच वर्षों बाद वापस बीकानेर आकर टिम्बर का काम सभाला। इसमें चिराई की मशीने भी लगी हुई हैं और प्रामाणिकता तथा व्यवहार कुशलता के कारण बीकानेर मे इनकी प्रतिष्ठा है। श्री सुमतिलाल भी अपने पितृश्री के पद चिह्नों पर चल कर सामाजिक धार्मिक शैक्षणिक सस्थाओं से सम्बद्ध रहकर अनुकरणीय सेवा कार्य कर रहे हैं। आप बीकानेर जिले की शॉ मिल ऑनर्स एसोसियेशन के अध्यक्ष व बीकानेर टिम्बर मर्चेन्ट एसोसियेशन के उपाध्यक्ष भी हैं। श्री जवाहर विद्यापीठ के आप मत्री एव ट्रस्टी हैं।

पुत्री समता की शादी चूरू के मै पन्नालाल सागरमल के श्री मानसिंहजी वैद के सुपुत्र श्री तेजसिंहजी बैद से हुई है। इनका कार्य क्षेत्र बम्बई है जहा मानसिंह जगतसिंह नाम से थोक व्यापार है। इसके अतिरिक्त उमरगाव में इनके केबल की फैक्ट्री भी है। इनके तीन पुत्रियाँ रैनी हिमानी व चन्दना तथा एक पुत्र श्रेयास है।

पुत्री सुमन का विवाह लाडनू के श्री बहादुरसिंहजी भूतोड़िया के सुपुत्र श्री सुरेन्द्र कुमारजी से हुआ। इनका व्यवसाय बगाल के वर्धमान जिले मे है। इन्होंने एफ सी आई को गोदाम किराये दे रखा है तथा कलकत्ता हाईकोर्ट मे वकालत का कार्य भी करते हैं। इनके एक पुत्र मयक व एक पुत्री स्नेहा है।

सबसे छोटी पुत्री सरिता ने उच्च शिक्षा (बी ए) प्राप्त की। इनकी बहिने मैट्रिक व हायर सैकेन्ड्री तक ही अध्ययन कर पाई थी। इनका विवाह मद्रास की प्रसिद्ध फर्म जीतमल जयचन्दलाल के श्री सम्पतराय जी चोरड़िया के सुपुत्र श्री सुरेश कुमारजी के साथ हुआ। इनके मद्रास में जाली की फैक्टरी व लोहे का व्यवसाय है। इनके एक पुत्र चिराग व एक पुत्री पूजा है।

बाठिया सा ने दूरदर्शितापूर्वक कार्य कर पारिवारिक सदस्यो को आत्मनिर्भर बनाया व अपने अनुभव उन्हे प्रदान किये। उनके पुत्रों पुत्रियो, पौत्र, दौहित्रादि का भरा-पूरा सस्कारी व सुसम्पन्न परिवार अब श्रीमती तारादेवी की छत्र-छाया मे है। आप स्वय प्रगतिशील व जागरूक महिला हैं तथा समाज की सेवा में सलग्न हैं। शुरू से ही महिलाओं के उत्थान के लिए प्रयत्नशील रही हैं। महिलाओं मे पर्दा प्रथा की घोर विरोधी रही हैं। आपने मैट्रिक तक की शिक्षा इन्दौर मे ग्रहण की थी जिस समय आपकी शादी होकर भीनासर आई तो गाव में शायद और कोई महिला मैट्रिक पास नहीं थी। आप शुरू से महिला सम्मेलनो में भाग लेती थी। भीनासर मे सन् १६५६ मे आयोजित साधु सम्मेलन मे महती भूमिका अदा की और महिलाओं की बड़ी-बड़ी सभाओं को सम्बोधित करती थी एव महिलाओं मे नव जागरण व स्फूर्ति पैदा की है। आज भी आप अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन महिला समिति की उपाध्यक्षा एव गगाशहर भीनासर की महिला समिति की अध्यक्षा हैं एव जनसेवा के कार्य करने मे हमेशा तत्पर रहती हैं। आपकी विशिष्ट समाज सेवा के लिए श्री अखिल भारतीय साधुमार्गी जैन महिला समिति ने उदयरामसर के रजत जयन्ती वर्ष अधिवेशन में दिनाक २८/६/६२ को आपको अभिनन्दन पत्र देकर सम्मानित भी किया। □

वशावली

परिशिष्ट 'क'

मगनीरामजी बाँठिया

विक्रम सवत् १९१० में कोयसर से भीनासर आए

- मोजीरामजी
  - पन्नालालजी
    - सालमचंदजी
      - खोले लिया बगनीरामजी
        - तोलारामजी
          - मालचन्द
            - राजेन्द्र
            - प्रमोद
            - सुशील
          - दौलतराम
            - नरेन्द्र
              - पवन
            - देवेन्द्र
        - रामलालजी
          - विमल
            - किशोर
          - कमल
            - मनोज
          - मिलाप
            - सन्तोष
          - अशोक
            - हेमन्त
            - रोहित
        - भैरूदानजी
    - हमीरमलजी — जन्म वि सं १९१९ स्वर्गवास वि सं १९८५
      - (बगनीरामजी — सालमचंदजी के खोले)
      - सोहनलालजी
        - संपतलालजी
          - रविन्द्र
          - प्रवीण
        - इन्द्रकुमारजी
          - प्रेम
          - हेम
          - प्रमोद
          - खगेन्द्र
        - सुन्दरलालजी
          - जय
          - विजय
        - जेठमलजी
          - सुरेश
            - गौरव
          - सन्तोष
          - सुनील
        - सुरेन्द्रजी
          - महेश
          - नरेश
          - जितेश
      - चम्पालालजी *विस्तृत विवरण अगले पृष्ठ पर
        - शान्तिलाल
          - सुनीत
        - धीरजलाल
          - आशीष
        - सुमतिलाल
          - आदर्श
    - किशनचंदजी
      - दीपचंदजी
        - रामचन्द्रजी
          - मुल्तान
          - सुलतान
            - नीलरतन
            - सरोजकुमार
        - रामकरणजी
          - गोरधन
          - अशोक
          - सुशील
          - कमल
        - रामलालजी
          - विजयचन्द
          - विनोदकुमार
            - महेश
            - विक्रम
- प्रेमराजजी
  - हजारीमलजी — जन्म वि सं १९१३ स्वर्गवास वि सं १९९९
    - रेखचंदजी (खोलायत)
      - बहादुरमलजी
        - तोलारामजी
          - धीरेन्द्र
          - प्रदीप
          - हीरेन्द्र
          - पुष्प
        - श्यामलालजी
          - जैनेन्द्रकुमार
            - गजेन्द्रकुमार
        - वशीलालजी
  - मगलचंदजी — जन्म वि स १९२० स्वर्गवास वि स १९५०

परिशिष्ट 'ख'

सेठ श्री चम्पालालजी बाँठिया का परिवार
जन्म—मार्गशीर्ष शुक्ला पूर्णिमा संवत् १९५९ तदनुसार दिनांक १५ दिसम्बर सन् १९०२
स्वर्गवास—चैत्र शुक्ला तृतीया संवत् २०४४ तदनुसार दिनांक १ अप्रेल सन् १९८७
आनन्दकुमारी बाँठिया (धर्मपत्नी)
सुपुत्री तोलारामजी सेठी बीकानेर
तारकुमारी बाँठिया (धर्मपत्नी)
सुपुत्री श्री जेठमलजी कोठारी इन्दौर
चांदकुमारी पारख (पुत्री)
धर्मपत्नी भवरलालजी पारख
बीकानेर
निर्मलकुमार पारख (खोलायत)
धर्मपत्नी चदूदेवी
सुपुत्री श्री चम्पालालजी बांठिया
बीकानेर
विकास (पुत्र)
श्वेता (पुत्री)
शांतिलाल बाँठिया (पुत्र)
धर्मपत्नी सुशीला देवी
सुपुत्री इन्द्रचन्दजी गेलड़ा मद्रास
नीरजा (पुत्री)
W/o कैलाशचन्द चोरडिया
S/o श्री तेजराजसा चोरडिया
पुत्र
पुत्री
सुनील (पुत्र)
धर्मपत्नी सरिता
सुपुत्री विजयकुमारजी
कुम्मट मद्रास
पुत्र
धीरजलाल (पुत्र)
सन्तोष (पुत्री)
सबर (पुत्री)
सुधा (पुत्री)
सुमतिलाल (पुत्र)
समता (पुत्री)
सुमन (पुत्री)
सरिता (पुत्री)
सभी पुत्रियों की वंशावली नीचे अलग से दी गई है।
धीरजलाल (पुत्र)
धर्मपत्नी नलिनी देवी
सुपुत्री श्रीलालचन्दजी मेहता
अहमदाबाद
संगीता (पुत्री)
W/o संजयकुमारजी बदलिया
S/o श्री अजयचन्दजी
बदलिया कलकत्ता
सोनाली
कविता (पुत्री)
आशीष (पुत्र)
सुमतिलाल (पुत्र)
धर्मपत्नी प्रभादेवी
सुपुत्री श्री माणकचन्द जी रामपुरिया बीकानेर
आदर्श (पुत्र)

①
सन्तोष (पुत्री)
धर्मपत्नी श्री धनपतसिंहजी खजान्ची
सुपुत्र श्री माणकचन्दजी खजान्ची
तरुणसिंह (पुत्र)
धर्मपत्नी प्रीति
सुपुत्री श्री इन्द्रचन्दजी डागा
बीकानेर
शशि (पुत्री)
धर्मपत्नी श्री कमलचन्दजी
सांड सुपुत्र श्री
कंवरलालजी सांड
अरुणसिंह (पुत्र)
दीपिका
दर्शना
उज्ज्वल
②
सवरदेवी (पुत्री)
धर्मपत्नी श्री सम्पतमलजी चोरडिया मद्रास
सुपुत्र श्री मोहनमलजी चोरडिया
चन्द्रकला (पुत्री)
धर्मपत्नी धर्मेन्द्र जी टोंक
सुपुत्र श्री दूलीचन्द जी टोंक
अदिती (पुत्री)
आरती (पुत्री)
पन्नालाल (पुत्र)
गम्भीर (पुत्र)
③
सुधादेवी (पुत्री)
धर्मपत्नी श्री सुरेशकुमारजी सिरोहिया
सुपुत्र श्री मोहनलालजी सिरोहिया
मनीष (पुत्र)
महीप (पुत्र)
④
समता (पुत्री)
धर्मपत्नी श्री तेजसिंहजी वैद
सुपुत्र श्री मानसिंह वैद जी बम्बई
रैनी (पुत्री)
हिमानी (पुत्री)
चन्दना (पुत्री)
श्रेयास (पुत्र)
⑤
सुमन (पुत्री)
धर्मपत्नी श्री सुरेन्द्रकुमार जी भूतोड़िया
सुपुत्र श्री बहादुरसिंह जी भूतोड़िया बर्दवान
मयंक (पुत्र)
येश (पुत्री)
⑥
सरिता (पुत्री)
धर्मपत्नी श्री सुरेशकुमार जी चोरडिया
सुपुत्र श्री सम्पतराय जी चोरडिया
पूजा (पुत्री)
विराग (पुत्र)

सथारा देहातीत भावना का साक्षात्

जीवन-मरण का चक्कर अनादिकाल से इस जीवात्मा के साथ लगा है। यह अविच्छिन्न परम्परा हमारे जीवन मे तब तक रहती है जब तक हम सम्पूर्ण कर्मों का क्षय न करलें। ससारी जीव प्राय· जन्म के समय हर्ष और उल्लास मनाते हैं परन्तु मृत्यु के समय दु·ख और वेदना प्रकट करते हैं। यह बाल मरण कहा गया है।

जैनागमो मे मृत्यु को भी महोत्सव रूप मे माना गया है। तदनुसार मरण-आत्मा का अलकरण है। मृत्यु जीवन का अन्त नहीं है अपितु परिवेश-परिवर्तन है। अत अन्तिम समय विचारो का परिष्करण करने हेतु सलेखना (सथारा) पूर्वक-मरण का वरण किया जाता है। इसे पडित मरण की सज्ञा दी गई है। बाठिया सा ने भी सथारा पूर्वक अपनी पार्थिव देह त्यागी। साधक का यह मृत्युजयी रूप है और इसे आध्यात्मिक दृष्टि से देहातीत भावना का अलौकिक प्रतीक माना गया है।

दिनाक १ अप्रेल १९८७ तदनुसार चैत्र शुक्ला ३ स २०४४ को आपने सबसे विदा ली परन्तु यश रूप मे आप अमर हैं। हजारो की जनमेदनी ने महाप्रयाण यात्रा मे सम्मिलित होकर उन्हे अश्रुपूरित श्रद्धाजलि अर्पित की। सेठजी जब ससार मे आए तो सारे भीनासर मे आनन्द की लहर छा गई। जग खुशी से हसा तथा आप रोये तथा आज उनका स्वर्गवास होने पर भी उनके चेहरे पर एक अद्‌भुत तेज था और लगता था वे हँस रहे हैं तथा सारा जग रो रहा है। रजत वैकुण्ठी मे सवार उनकी महाप्रयाण यात्रा भीनासर के प्रमुख मार्गों से उनकी जय जयकार करती निकली तो देखने वालों की आखो से आसू बरबस झलक उठे क्योंकि उनके गाव का मसीहा चला गया। आगे आगे पुरुष थे और सबमे रजत वैकुण्ठी के कन्धा देने की जैसे होड सी लगी थी और पीछे-पीछे स्त्रिया भी गुलाबी रग के वस्त्रों मे श्मशान भूमि के बाहर तक चली और बाहर विश्राम स्थल पर अतिम प्रणाम कर लौट आई। पूरी यात्रा के दौरान जन समूह नारे लगा रहा था जब तक सूरज चाद रहेगा सेठजी का नाम रहेगा। जैन समाज के ही नहीं भीनासर एव निकटवर्ती स्थानो के सैकड़ो व्यक्ति समाचार सुनकर जैसे अवाक् रह गये। पूरा भीनासर गाव शोकमग्न हो गया। लोगो ने अपनी स्वेच्छा से अपने व्यवसाय दूसरे दिन दाह क्रिया होने तक बन्द रखे यहा तक कि चाय-पान की दूकाने भी बन्द रही। बीकानेर मे भी आपके व्यवसाय स्थल के पास की दाऊजी रोड की प्राय· दूकानें बद रही यह लोगो की उनके प्रति असीम श्रद्धा का प्रतीक थी। बीकानेर के महाराजा डॉ करणीसिंहजी सहित देश-विदेश से सैकड़ों गणमान्य विशिष्ट व्यक्तियो के सवेदना सदेश

प्राप्त होने लगे। जिनमे कुछ प्रमुख सवेदना के स्वर खड म प्रकाशित किये जा रहे हैं। गरीबा का मसीहा दु ख-दर्द का साथी सबका अपना भीनासर का भामाशाह जाने कब चला गया। सहसा विश्वास नहीं होता कि उन जैसा हर क्षण जिन्दा दिल इन्सान चिर निद्राधीन कैसे हो गया! वे तो मित्रो परिजनों एव जन-जन के हृदय में स्मृति रूप में सदैव स्पदित होते रहेंगे। सचमुच उन्होने जीवन को सार्थक कर दिया।

एक व्यक्ति न होकर वे इतिहास निर्माता हैं। उनकी सेवा सुरभि जन-जन के लिए थी। उनकी सस्थापित सस्थाए वस्तुत उनके जीवन्त स्मारक हैं जो हमें युगो तक एक कीर्ति स्तम्भ की भाति आलोकित करती रहगी। विशाल दृष्टि वैचारिक उदारता राष्ट्रीय भावना व समाज सेवा में रचे-पचे बाठियाजी टॉर्च बिअरर (Torch Bearer) थे जो अपने सम्प्रदायातीत अवदान, अदम्य कार्यशीलता व समर्पित सेवा भाव के लिए पीढ़ियो तक जाने व माने जाते रहेगे। □

—सेठिया जैन ग्रन्थालय
बीकानेर

उदय नागोरी
एम ए (दर्शन) जै सि प्रभाकर

चित्र वीथी

पारिवारिक

स्वर्गीय सेठ श्रीमान् चम्पालालजी वांठिया

अग्रज सोहनलालजी व अनुजा राजकुमारी मालू के साथ

अग्रज सोहनलालजी व भगिनि मगनकंवर राठिया के साथ
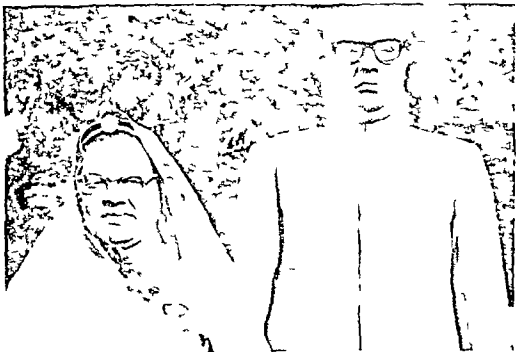
बड़े भाई श्री कानीरामजी

बड़े भाई श्री सोहनलालजी

दिवंगत धर्मपत्नी श्रीमती

ज्येष्ठ पुत्री चादकुमारी पारख एव जवाई श्री भवरलालजी पारख बीकानेर

ज्येष्ठ पुत्र शातिलाल
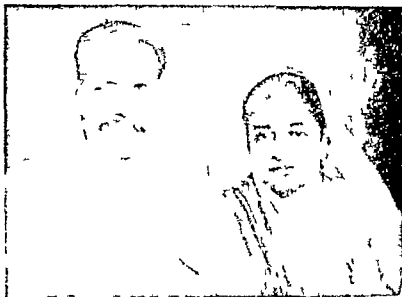
42 वर्ष की आयु में धर्मपत्नी श्रीमती तारादेवी के साथ

दीपावली पूजन के अवसर पर (60 वर्ष की आयु में)

सबसे छोटी पुत्री सरिता के विवाह के अवसर पर (80 वर्ष की आयु मे)
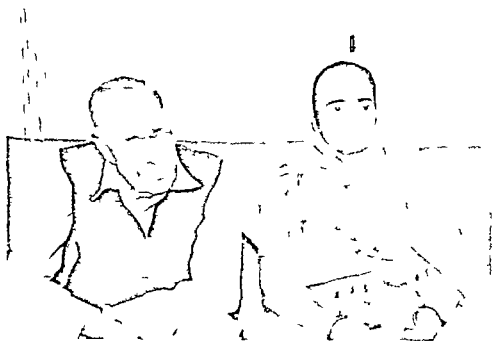
अंतिम युगल चित्र
(85 वर्ष मे)

42 वर्ष की आयु मे धर्मपत्नी श्रीमती तारादेवी के साथ

दीपावली पूजन के अवसर पर (60 वर्ष की आयु मे)

सबसे छोटी पुत्री सरिता के विवाह के अवसर पर (80 वर्ष की आयु में)
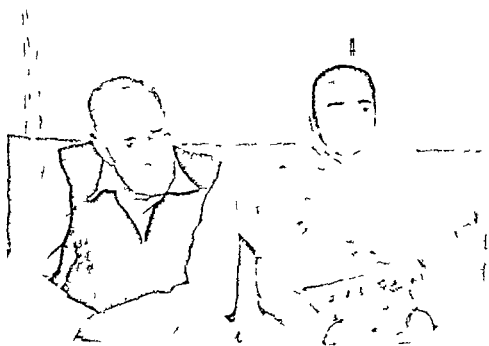
अंतिम युगल चित्र
(85 वर्ष में)
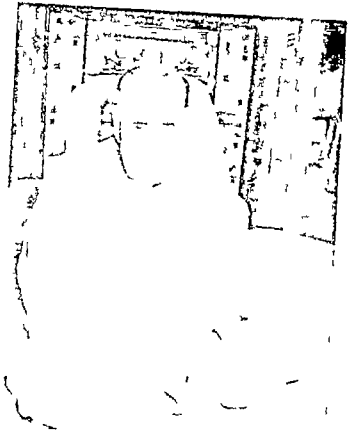
अपनी बैठक मे सहज सौम्य मुद्रा मे
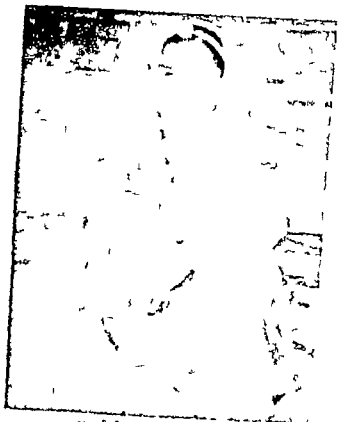
लेखन मे दत्तचित्त
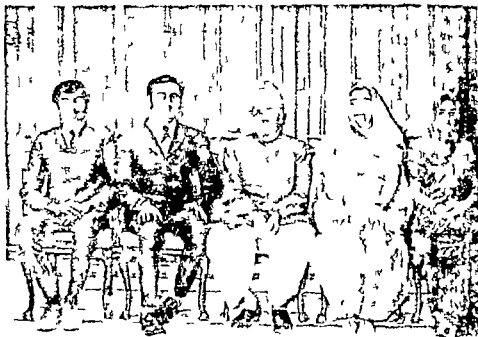
परिवार के साथ (बायें से—सुमतिलाल (पुत्र) धीरजलाल (पुत्र) सेठजी सेठानीजी एवं पुत्रव
नलिनी देवी)

तृतीय पुत्री सुधा व कवरसा सुरेशकुमारजी सिरोहिया का फोटो
विलम्ब से मिलने के कारण यहाँ दिया जा रहा है।
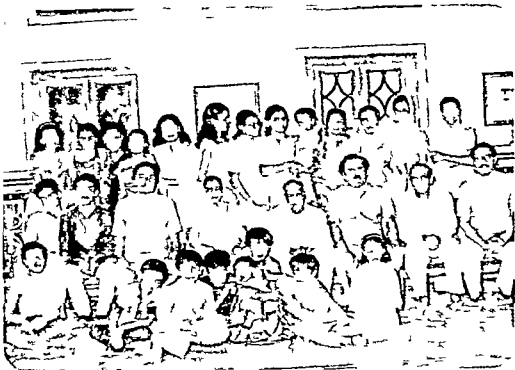
तीन पीढ़ियों के साथ
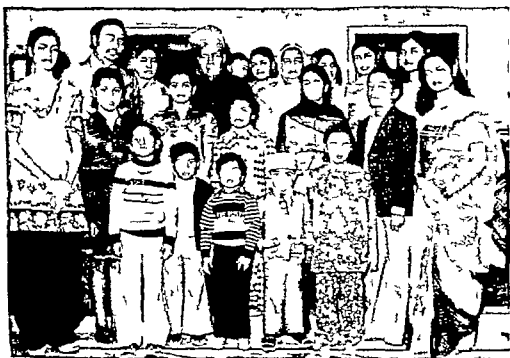
छोटे पौत्र आदर्श के साथ—प्रसन्नमुद्रा मे

पौत्र आदर्श के नक्षत्र पूजन के अवसर पर

आदर्श की प्रथम वर्षगाठ के अवसर पर

परिवार के सदस्यो के आग्रह पर आयोजित 85वीं वर्षगाठ का दृश्य
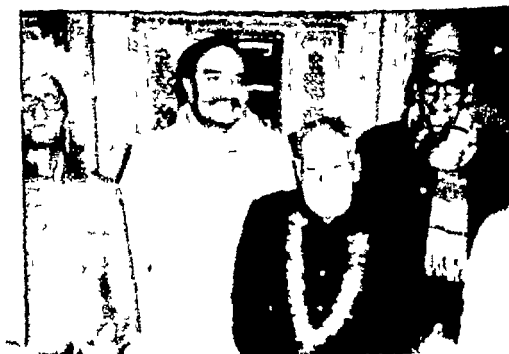
85वीं वर्षगाठ पर मित्रों व सम्बन्धियों के साथ
बायें से—देवचन्दजी सेठिया माणकचन्दजी रामपुरिया व रामलालजी बाँठिया
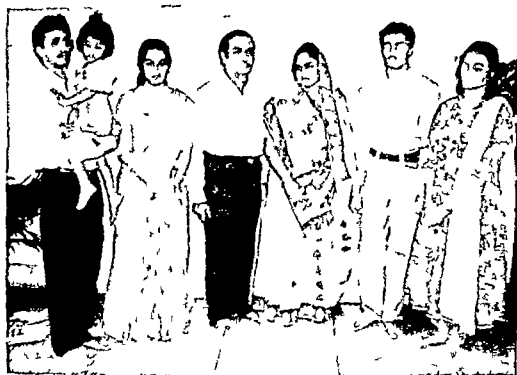
दाहिने से—पौत्री कविता पौत्र आशीष पुत्रवधू नलिनी देवी (आत्मजा श्रीमान् लालचन्दजी मेहता अहमदाबाद) पुत्र धीरजलाल बड़ी पौत्री सगीता पौत्री जवाई सजयकुमार जी बदलिया एव पड़दौहित्री स्वीटी
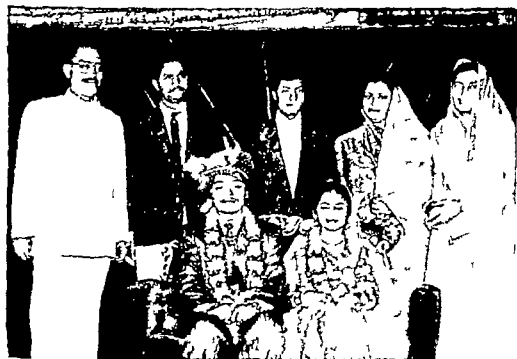
बाये से—कवरसा धनपतसिंहजी आत्मज श्रीमान् माणकचन्दजी खजाची बीकानेर दौहित्री जवाई कमलचन्दजी साड़ दौहित्र अरुण दौहित्री शशि एवं बड़ी पुत्री सन्तोष।

[illegible] शादी के अवसर पर धर्मपत्नी प्रीति के साथ

द्वितीय पुत्री सबर कवरसा सम्पतमलजी चोरड़िया (आत्मज पद्मश्री मोहनमल सा चोरड़िया मद्रास) के साथ बैठे हुए तथा पीछे हैं—दौहित्र गम्भीर दौहित्री चन्द्रकला दौहित्री जवाई धर्मेन्द्रजी टाक (आत्मज श्रीमान् दुलीचन्दजी टाक जयपुर) तथा ज्येष्ठ दौहित्र पन्नालाल
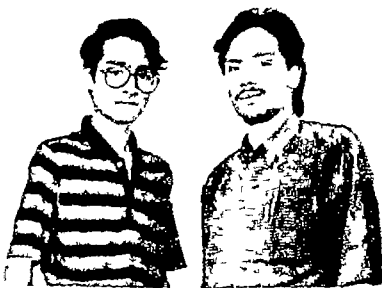
तृतीय पुत्री सुषा एवं कंवरसा सुरेशकुमार जी सिरोहिया (आत्मज श्रीमान् मोहनलालजी सिरोहिया) का फोटो अनुपलब्ध होने से दौहित्र मनीष व महीप सिरोहिया
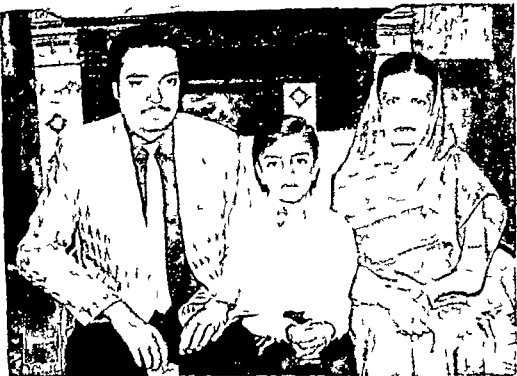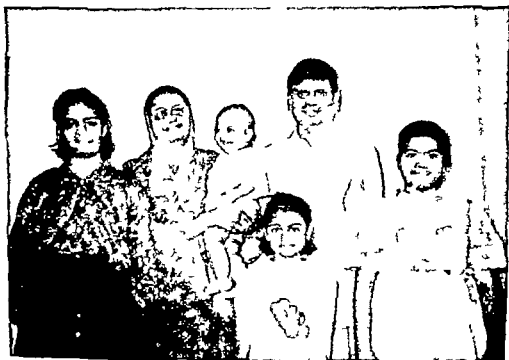
पचम पुत्री सुमन कवरसा सुरेन्द्रकुमार जी भूतोड़िया (आत्मज श्रीमान् बहादुरसिंहजी भूतोड़िया बर्दवान) दौहित्र मयक एव दौहित्री स्नेहा के साथ
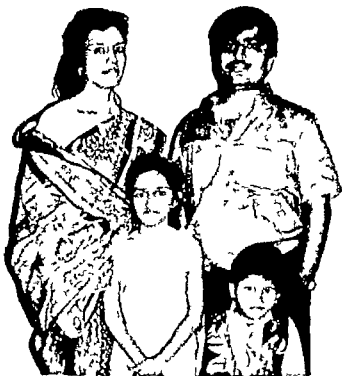
षष्ठम् पुत्री सरिता कँवरसा सुरेशकुमार जी चोरड़िया (आत्मज श्रीमान् सम्पतराजजी चोरड़िया मद्रास) दौहित्र चिराग एव दौहित्री पूजा के साथ

संस्मरणो से झांकता
व्यक्तित्व एव कर्तृत्व
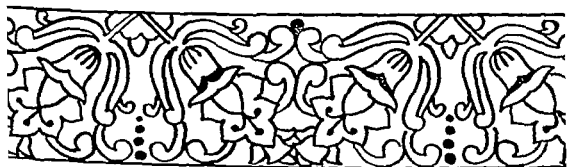
स्वर्णिम अध्याय जोड़ दिया है तो अतिशयोक्ति पूर्ण नही होगा। श्री बाठियाजी अपनी सानी के बेजोड़ व्यक्ति थे।

गगाशहर भीनासर दो गावो का एक सघ, दो गावो को एकत्व में पिरोने वाला धर्म स्थान (बाठिया पौषघ शाला) जवाहर विद्यापीठ बाठिया जी की विचक्षणता एव दूरदर्शिता का ज्वलन्त उदाहरण है। वे जोड़ने की अद्‌भुत कला में दक्ष थे। उन्होंने सघ अभ्युदय मे जो योगदान दिया है वह अविस्मरणीय होने के साथ जन-जीवन में प्रकाश स्तम्भ का कार्य करने वाला है। □

प्रगतिशील चिन्तन के पक्षधर

— उपाध्याय अमरमुनि —

समग्र विश्व के प्राणिया मे मनुष्य का जीवन-तत्त्व महान एव महत्तर है। यह जीवन-तत्त्व केवल नासिका द्वारा प्राणवायु के गमनागमन के आधार पर ही स्थित नहीं है। उसका मूलाधार एक और है जो विशिष्ट पुण्यशाली आत्माओं को ही प्राप्त होता है।

श्री चपालालजी बाठिया का जीवन उक्त दृष्टि से ही एक महत्तर जीवन रहा है। उनका भौतिक जीवन तो जैसा कि प्राय धनिक-वर्ग मे होता है वह तो था ही। मैं उस जीवन-तत्त्व की बात कर रहा हू, जो उनका जीवन व्यष्टि की सीमा से आगे बढ़कर विशाल सामाजिक समष्टि की ओर प्रवाहित रहा है। सामाजिक क्षेत्र में अनेक महत्वपूर्ण कार्य उनके युगानुरूप उदात्त व्यक्तित्व को सूचित करते हैं।

श्री चम्पालालजी प्रगतिशील चिन्तन के पक्षधर थे। उनका चिन्तन रूढ़िवाद से मुक्त यथार्थ सत्य से युक्त युक्ति-युक्त एव तर्कसगत ही नहीं जीवन्त भी बना रहा। प्राय ऐसा होता है कि वृद्धावस्था की ओर ढलती आयु म शरीर की शिथिलता के साथ चिन्तन भी शिथिल होता जाता है। किन्तु श्री बाठियाजी का चिन्तन अधिकाधिक प्राणवान् एवं प्रगतिशील ही होता रहा।

मुझे प्रसन्नता है उनके कर्त्तव्यशील व्यक्तित्व की स्मृति रूप यह प्रकाशन वर्तमान एव भावी प्रजा के लिए प्रेरणाप्रद एव स्फूर्तिदायक प्रमाणित होगा।

—वीरायतन राजगिर (बिहार)
पिन ८०३११६

आशिर्वचनम्

— आचार्य श्री आनन्द ऋषि जी म सा —

भगवान महावीर ने दो प्रकार के विभाग धर्म के कहे हैं। अणगार धर्म और आगार धर्म। अणगार धर्म श्रमण के लिए है और आगार धर्म श्रावक के लिए है।

गृहस्थावस्था मे रहते हुए भी व्यक्ति धर्माचरण कर सकता है। अपनी आत्मा को समुन्नत बना सकता है। पाप की दीवार को ढहा सकता है।

श्रावक शब्द तीन अक्षरो से निष्पन्न हुआ है। श्र यानी श्रद्धावान। व अर्थात् विवेकवान। क अर्थात् क्रियावान।

ये तीनो गुण जिसमे सम्मिलित रूप से पाये जाए वही सच्चा श्रावक है।

सुश्रावक श्री चम्पालालजी बाठिया मे ये तीनो गुण समाहित थे। उनको नजदीक से देखने का मौका भी मुझे प्राप्त हुआ था।

वे एक पारखी थे। रत्नो की सही परीक्षा करने मे निष्णात थे। रत्न का मतलब यहा व्यक्ति से है।

श्रद्धा उनके भीतर लबालब भरी थी। शास्त्र के छोटे छोटे थोकड़ो का प्रकाशन श्रुत श्रद्धा का परिचायक है। 'सुविसद्धा का सूत्र उनके जीवन मे खून के प्रत्येक कतरे में सचारित था।

विवेक का तो कहना ही क्या ? कम बोलना उनका खास गुण था। श्रमण सघ के निर्माण मे विशेष योगदान सेठजी का रहा था।

क्रिया के वे धनी थे। सयमित आचार और विचार की भूमिका मे हमेशा सतुलित रहते थे।

सेठ श्री चम्पालालजी बाठिया की स्मृति में स्मृति ग्रन्थ का प्रकाशन हो रहा है यह एक स्तुत्य एव प्रशसनीय कदम है। आशा है विद्वत्‌जन और पाठक लाभान्वित होंगे। इसी आशा के साथ।

विशेष—आचार्यश्री का दिनाक २८ मार्च ९२ को साय स्वर्गवास हो गया था। उसी दिन प्रेषित यह आशीर्वाद सभवत उनकी अन्तिम वचनिका है। इसे प्राप्त कर हम गौरवान्वित हैं। —सम्पादक

जीवन्त और प्रेरक व्यक्तित्व

— आचार्य चन्दना —

श्रीयुत चम्पालालजी वाठिया अपने नाम के अनुरूप 'चम्पा' के समान सुरभित थे एव साथ ही 'लाल' के समान ज्योतिर्मय भी। उनको जो ठीक लगता था उसे सहज स्वीकार करने एव कहने मे उन्हे कोई सकोच नहीं होता था। उनका उदात्त मन मगलमय चिन्तन से सुरभित था और उनके द्वारा मुखरित होने वाला सत्य धूमिल न होकर ज्योतिर्मय था। रूढ़िवाद के नाम पर असत्य के समक्ष उनका मन मस्तिष्क कभी झुका नहीं। बीकानेर रतनगढ़ तथा निकटवर्ती अपरिचित प्रदेश म विचरण एव चातुर्मास करते हुए हम दूर प्रदेश की अनजान साध्वियो की उन्होने और उनकी धर्मनिष्ठ धर्मपत्नी श्रीमता तारावाई ने निष्ठा के साथ जो सेवा की है वह आज भी स्मृतिपटल पर ज्यों की त्यो अकित है। सत्कर्म और सत्कर्म के कर्ता क्षणभगुर काल के प्रवाह म कभी क्षणभगुर नही होते। व विचारशील जगत मे युगानुयुग जीवन्त रहते हैं।

उपर्युक्त शब्दो म जो कुछ कहा गया है उसका मूल भावार्थ यह है कि श्री वाठियाजी युग-युगान्तर तक जीवन्त रहगे और उनके महान् समाजनिष्ठ कर्त्तव्यो द्वारा जन-जन को सत्कर्म की दिव्य प्रेरणा मिलती रहेगी।

यह स्मृति प्रकाशन इसी दिशा म समय-समय पर अपना दिव्य प्रकाश विकीर्ण करता रहेगा और अपने परिवार समाज एव राष्ट्र को समयोचित कर्त्तव्य-बोध हेतु दिशा-सूचन करता रहेगा। □

(संकलित) महासती सुमति कुंवर
वीरायतन राजगिर (बिहार)

समन्वय की अनूठी मिसाल

— मुनि श्री कन्हैयालाल जी —

मानव-जीवन के निर्माण मे विचार एव आचार का महत्व प्रारम्भ से है। विचार शुद्धि आचार शुद्धि का मूल है। हमारे विचारों मे यदि पवित्रता रहगी—विचारो मे विशुद्धि होगी तो उसका प्रभाव आचार पर जरूर पड़ेगा। विचार यदि बीज है तो आचार उसका फल। जीवन मे विचारो की उज्ज्वलता अति आवश्यक है अगर विचारो मे अपवित्रता होगी तो आचार पवित्र नही रह सकता। विचार और आचार ज्ञान और व्यवहार जैसा होगा उसी के अनुरूप जीवन बन जायेगा।

अकेला ज्ञान अथवा अकेली क्रिया से कुछ भी होने का नहीं। जीवन-रथ एकागी अग्रसर नही हो सकता। ज्ञान तथा क्रिया पृथक्-पृथक् वस्तुए हैं। दोना का सामजस्य जीवन-विकास हेतु अत्यन्त आवश्यक है। रथ के दोनो पहिए तभी सरपट दौड़ेगे जब उनमे एकरूपता तथा सतुलन होगा। एक पहिया छोटा—दूसरा पहिया बड़ा तो प्रगति ऊबड़-खाबड़ रहेगी और रथ सुचारु रूपेण अग्रणी नही हो सकेगा। वही रथ जिसके दोनो पहियो मे समकक्षता होगी निरन्तर सक्रिय-सफल होगा।

स्वर्गीय श्री चम्पालालजी बाठिया (भीनासर) स्थानकवासी समाज के एक विशिष्ट एव प्रमुख श्रावक माने जाते थे। सारे बीकानेर चौखले मे वे प्रतिष्ठित नागरिको की कोटि मे थे। बाठिया जी आचार और विचार के धनी थे।

वि स २०१५ मे अणुव्रत-अनुशास्ता के विद्वान शिष्य मुनि श्री गणेशमलजी का चातुर्मास गगाशहर था। मुनिश्री के अपूर्व प्रयास से वहाँ पर अनेको सार्वजनिक कार्यक्रम आयोजित हुए। स्थानकवासी समाज के सन्तो के चातुर्मास प्राय बाठियाजी के हॉल मे (भीनासर) होते थे। लेकिन इस वर्ष हॉल मे किसी का भी चातुर्मास नहीं था। मुनि श्री का चातुर्मास सफलतापूर्वक सम्पन्न हो ही रहा था।

अचानक एक कार्यक्रम की आयोजना हुई जिसे कल्पनातीत कह सकते हैं। मैं (मुनि कन्हैया) एक दिन बाठियाजी के घर पर भिक्षा हेतु गया। वार्तालाप के प्रसग म मैंने कहा —चातुर्मास सम्पन्न होने वाला है क्षमा-याचना दिवस का सामूहिक कार्यक्रम होना चाहिए। जिससे अन्य समाज पर अच्छा प्रभाव पड़े।

बाठियाजी सहर्ष बोले—मुनिश्री! यह कार्यक्रम मेरे हॉल में होना चाहिए। सामूहिक आयोजना से समन्वय का वातावरण बनेगा। सामूहिक क्षमा-याचना से मानसिक-तनाव में कमी आयेगी।

परस्पर चिन्तन चला। मनन हुआ। समाज भूषण श्री छोगमलजी चौपड़ा ने मुनि श्री गणेशमलजी को निवेदन की भाषा मे कहा—मुनिश्री! बाठियाजी की भावना बहुत ही सुन्दर है। ऐसी प्रशस्त भावना का आदर होना चाहिए। कार्यक्रम बाठियाजी के हॉल मे अवश्य ही रखें। तेरापथ धर्म-सघ के साधु-साध्वियो का प्रवचन इस हॉल में कभी नहीं हुआ।

आखिर मुनि श्री गणेशमलजी (गगाशहर) के सान्निध्य में बाठियाजी के भव्य हॉल मे सौहार्द्रपूर्ण वातावरण मे कार्यक्रम सानन्द सम्पन्न हुआ। दोनों ही सम्प्रदाय के लोगा से हॉल खचाखच भरा था। तेरापथ धर्म-सघ की ओर से समाज भूषण श्रीमान् छोगमलजी चौपड़ा ने अपने विचार रखते हुए साधार्मिक भाई-बहिनों से क्षमा-याचना की।

स्थानकवासी सम्प्रदाय की ओर चम्पालालजी बाठिया ने सामूहिक क्षमा-याचना करते हुए मुनिश्री के प्रति आभार प्रदर्शित किया। मुनिश्री क समन्वय पर प्रवचन का जनता पर अच्छा प्रभाव पड़ा। इस कार्यक्रम की सर्वत्र बहुत ही अच्छी प्रतिक्रिया हुई।□

गुरुभक्त श्री चम्पालालजी बाठिया

— (तपस्वीरत्न श्री मगनमुनिजी म सा , अहमदनगर) —

श्रीयुत् चम्पालालजी बाठिया स्थानकवासी जैन-समाज के एक लब्धप्रतिष्ठ एव विचक्षण श्रावक थे। धनाढ्य होने के साथ-साथ वे सामाजिक कार्यों में भी भाग लेते थे। वि सवत् १६६८ मे ज्योतिर्धर महामहिम जैनाचार्य पूज्य श्री जवाहरलालजी महाराज आपकी विनती को मानकर भीनासर मे बाठिया हॉल मे विराजे थे। उस समय मैं तथा प श्री मल्लजी महाराज आदि सत उनकी सेवा मे थे। पूज्य श्री जवाहरलालजी महाराज रुग्णावस्था के कारण भीनासर ही विराज रहे थे। उस समय मैंने देखा है कि आप आचार्य श्री की सेवा मे कितनी लगन से कितने अहोभाव से तत्पर रहते थे। आचार्यश्री की सेवा आपका एक नियम बन गया था। समय-समय पर सुप्रसिद्ध डॉक्टरो वैद्यो आदि को लाकर वे आचार्यश्री के शारीरिक स्वास्थ्य की जाच करवाते रहते थे और उन्हे उत्तम से उत्तम दवा देने और श्रेष्ठ चिकित्सा करने को खासतौर से निर्देश करते रहते थे। कभी-कभी आचार्यश्री की बीमारी की वृद्धि होने का सदेश उन्हे रात्रि को किसी भी समय मिलता तो वे फौरन उपस्थित होते थे और यथायोग्य नैसर्गिक उपचार आदि कराते थे। अपने विनम्र कोमल और विचक्षण स्वभाव से वे हम सभी सतो से बार-बार आग्रहपूर्वक सेवा के लिए तथा आचार्य श्री के स्वास्थ्य के विषय मे पूछा करते थे। कहना होगा कि वे आचार्यश्री को जिस भावना से विनती करके भीनासर अपने यहाँ लाए थे उसी उत्कृष्ट भावना से उन्होंने अन्त तक उनकी सेवा की।

आषाढ़ सुदी ८ को पूज्य आचार्यश्री (स्वर्गवास के दिन) लगभग १२ बजे अचानक बेहोश हो गए थे। यद्यपि सथारे की भावना तो उन्होने पहले से ही व्यक्त की थी, परन्तु हम सब सतो तथा बाठियाजी आदि श्रावको ने उनसे प्रार्थना की—'गुरुदेव! अभी सथारे का समय नहीं आया है। यथावसर सथारा कराने की हमारी भावना है। आज जब उनके सथारे का अवसर आया तो वे होश मे नहीं रहे। मैंने इस समस्या को बहुत गभीरता से लिया और अपनी समस्या बाठियाजी के सामने रखी। उन्होंने तुरन्त स्थानीय बड़े डॉक्टर से मिलकर होश मे लाने की दवा दिलाई। परिणामस्वरूप वे शीघ्र ही होश मे आए। उस समय तत्कालीन युवाचार्य पूज्यश्री गणेशीलालजी महाराज प श्री मल्लजी महाराज तथा मैंने पूज्यश्री से सथारे के लिये पूछा तो उन्होंने सहर्ष अपनी स्वीकृति दे दी। साथ ही श्री बाठियाजी आदि गगाशहर भीनासर के अग्रगण्य श्रावकों से

पूछा तो उन्होंने भी अपनी स्वीकृति दे दी। अत पूज्यश्री को सथारा दिलाया गया। लगभग ५ बजे उनका सथारा सीझ गया। यह सब बाठियाजी के प्रयत्न का फल था। पूज्यश्री देवलोक पधार गए। दिवगत पूज्यश्री के अन्तिम सस्कार का तथा समारोह का समस्त कार्यभार भी बाठियाजी ने अपने पर ले लिया था। उन्होंने बहुत ही उत्साहपूर्वक अपनी ओर से चादी की वैकुठी बनवाई थी। उसी म पूज्यश्री के पार्थिव शरीर को विराजमान करवाकर उनकी श्मशानयात्रा निकाली गई थी। पूज्यश्री को अन्तिम विदाई देते समय बाठियाजी की आँखा म अश्रुबिन्दु छलक रहे थे। उनका हृदय भर आया था।

हम स्मरण है कि पूज्यश्री की स्मृति मे उन्होंने जवाहर विद्यापीठ सस्था स्थापित की तथा उनके प्रभावशाली प्रवचना को जवाहर किरणावली के रूप मे प्रकाशित करवाने का उपक्रम किया। इसके लिए उन्होंने जवाहर साहित्य समिति स्थापित की। इस प्रकार श्री चपालालजी बाठिया ने अपनी गुरुभक्ति का पूर्ण परिचय दिया। □

प्रेषक
बसतलाल पूनमचद भडारी
२५८५ नवा कापड बाजार
महात्मा गाधी रोड
अहमदनगर ४१४००१ (महाराष्ट्र)

बेजोड़ वर्चस्व के धनी

स्थविर प्रमुख श्री शान्तिलालजी म सा के दिनाक १४ ४ ६४ के भीनासर के प्रवचन से सामार

वधुओं! हमारा साधुमार्गी जैन सघ एक गौरवशाली सघ रहा है। उस मे भी 'दादा गुरु का धाम कहलाने वाली इस गगाशहर भीनासर की पुण्यधरा ने धर्म-प्रभावना मे काफी महत्वपूर्ण योगदान दिया है। आपके ही क्षेत्र मे ऐसे-ऐसे प्रभावशाली एव आदर्श श्रावक हुए हैं जिनका सघ के सगठन मे बहुत बड़ा हाथ रहा है।

ऐसे ही एक श्रावक थे कानीरामजी बाठिया। हमने तो उनको नहीं देखा मगर चपालालजी बाठिया को हमने देखा है। वे भी अपने ढग के बड़े दबग-बड़े ही मक्कम श्रावक थे। उनकी रूह-रूह मे आचार्य श्री जवाहराचार्यजी के प्रति श्रद्धा समाई हुई थी। मैं आपसे पूछ लूँ कि यह सारा जवाहर सस्थान किस व्यक्तित्व की देन है ? यह जवाहर साहित्य का प्रकाशन! जवाहर-किरणावलियो का इस रूप मे निकलना! आज तो पूज्य ज्योतिर्धर जवाहराचार्यजी के साहित्य का काफी प्रचार-प्रसार हो रहा है किन्तु उसकी नींव किसने रखी ? आप सभी उस धर्मनिष्ठ व्यक्तित्व से परिचित हैं।

कल हम उस कमरे मे गए जहाँ जवाहर किरणावलियाँ रखी हुई हैं। यह सब काम किसका है ? चम्पालालजी बाठिया के सतत परिश्रम-लगन का यह फल है।

बन्धुओं! रचनात्मक कार्यों मे जो आगे आता है उसी का नाम होता है। आज सब सोचते हैं कि हम काम तो कुछ करें नहीं और नाम हो जाये। अरे! नाम की कामना मत रखो काम करो तो नाम खुद-ब-खुद हो जायेगा! चपालालजी बाठिया बड़े जीवट के साथ सघ और सम्प्रदाय की उन्नति मे जुटे। अपने समय मे वे धर्म के प्रचार-प्रसार मे लगे रहे। इसीलिए उस समय मे इस सघ की इतनी जाहोजलाली हुई। ऐसे-ऐसे धर्म-निष्ठ और श्रद्धा सम्पन्न दबग श्रावको से ही सघ मे निखार आता है।

अपने समय मे चम्पालालजी बाठिया पूज्य जवाहराचार्य के प्रति पूर्ण समर्पित थे। उन्होंने बड़े जीवट के साथ सघ की सेवा की। सघ की उन्नति म सर्वतोभावेन योगदान दिया। आज जगह-जगह जवाहर-किरणावलियो का नाम निरूपित होता है। मैं दिल्ली गया वहाँ कान्फ्रेस जैन भवन मे लेडी हार्डिग रोड पर मैं ठहरा। वहाँ कार्यालय मे अनेक गणमान्य श्रावकों के साथ चम्पालालजी बाठिया का भी फोटो लगा है। वे एक बेजोड़ वर्चस्व रखते थे उनके व्यक्तित्व की एक अलग ही प्रभावात्मकता थी। आज ऐसे दबग और जीवट वाले श्रावको की बहुत आवश्यकता है। ☐

प्रस्तोता—कमलचन्द लूणिया बीकानेर

सोने मे सुगन्ध—बाठियाजी

स्थविर प्रमुख श्री प्रेमचन्दजी म सा के दिनाक १४ ४ ६४ को प्रासंगिक वक्तव्य से सामार

स्वर्गीय सेवा समर्पित श्रद्धेय श्री वख्तावरमलजी म सा (वावाजी म सा) एव उत्कृष्ट आचार परिपालक आत्मार्थी निर्ग्रन्थ श्रमण परम श्रद्धेय श्री करणीदानजी म सा की चरण सन्निधि मे श्रेष्ठीवर्य श्री चम्पालालजी बाठिया का निकटतम सम्पर्क सत् समागम के रूप मे होता रहा। यद्यपि बाठियाजी की अनन्य भक्ति वैयक्तिक रूप में आचार्यश्री जवाहर से सबद्ध रही है तथापि उनकी यह श्रद्धा अनन्यता के बावजूद भी अन्ध श्रद्धा नहीं थी। बाठियाजी के विचारो मे विवेक समन्वित सतर्कता और सजगता सदैव परिलक्षित होती रही।

स्थानाग सूत्र मे श्रावक को माई मित्र और पताका की उपमा से उपमित किया गया है। बाठियाजी स्व श्रीमद् जवाहर के साथ तीना रूपों म जुड़े रहे। उस युग के साधुओं म जहाँ स्व श्रीमद् जवाहराचार्य परम प्रभावक युग प्रधान आचार्यों की श्रृखला मे एक महत्त्वपूर्ण प्रतिमा और व्यक्तित्व के रूप मे उभर रहे थे वहाँ यदि आचार्य श्री जवाहर के व्यक्तित्व को सोना कहा जाये तो बाठियाजी को उसमे सुगन्ध पैदा करने वाला माना जाना अतिशयोक्ति पूर्ण नहीं होगा। सघ के सुन्दर सृजन के लिए श्रावक और साधु के बीच सापेक्षता के सम्बन्ध को नकारा नहीं जा सकता तथा आत्म समाधि के सन्दर्भ मे निरपेक्षता की अनिवार्यता को भी नही नकारा जा सकता। सापेक्षता से सृजन होता है और निरपेक्षता में विसर्जन या ऊर्ध्वारोहण होता है। श्रीमज्जवाहराचार्यजी के व्यक्तित्व की उपलब्धि से बाठियाजी की दूरदर्शिता ने जवाहर साहित्य की सरचना-सग्रह-रूप जो सृजन किया है वह सस्कार-क्रान्ति के अभियान में एक अनुपम कीर्तिमान के रूप मे प्रतिष्ठित है जिसमे साहित्य मनोरजकता के साथ ही आचरण की ललक छिपी हुई है और इससे ठीक विपरीत श्रीमज्जवाहराचार्य प्रचार-प्रसार एव प्रतिष्ठा के धरातल से ऊपर उठकर निरपेक्ष निस्पृहता के आदर्श रहे हैं। इन दोना गुरु शिष्यों का सम्बन्ध 'सोने मे सुगन्ध की कहावत को चरितार्थ कर रहा है।

विज्ञ पुरुषो ने शिष्य के विविध प्रकारो का उल्लेख करते हुए मुख्य रूप से तीन प्रकार के शिष्य कहे हैं—पहला शिष्य गुरु प्रदत्त ज्ञान को यथावत् रखता है दूसरा बढ़ाता है और तीसरा नष्ट कर देता है। इनमें दूसरे नम्बर का शिष्य योग्य और प्रभावी

माना जाता है। श्री बाठियाजी ने अपने गुरु के ज्ञान की वसीयत को चौगुना कर चतुर्मुखी दिशाओं मे प्रचारित-प्रसारित करने का श्रेय हस्तगत कर आगम के पताका विशेषण को सार्थक किया है। एक विजेता राज्याध्यक्ष की ध्वजा पताका चारो दिशाओं मे घूमकर उसकी यश-दुन्दुभि बजाती है उसी प्रकार श्रीमज्जवाहराचार्य की यश-दुन्दुभि से श्रीयुत् बाठियाजी ने लोकाकाश की रिक्तता को दूर करके उसे समृद्धि से सजाया।

लोक मे प्रचलित है—गुरु भोर भोर-शिष्य ठौर-ठौर अर्थात् गुरु तो प्रात स्मरणीय होता है जबकि शिष्य अपनी गुरु भक्ति और शासन-प्रभावना के कृत्यो द्वारा क्षण-क्षण याद किया जाता है। इसी रूप मे स्व श्रीमज्जवाहराचार्यजी की यश पताकाओं को अपने सराहनीय सुकृत्यो द्वारा सम्पूर्ण लोकाकाश मे फहराकार श्रीयुत् बाठियाजी ने सोने मे सुगन्ध भर कर श्री सघ को जवाहर साहित्य की अमूल्य निधि दी है। इस अविस्मरणीय सेवा हेतु सघ उनका चिर ऋणी रहेगा। □

प्रस्तोता—कमलचन्द लूणिया बीकानेर

जवाहराचार्य के साथ बाठियाजी का नाम अमर रहेगा

— शासन प्रभावक श्री धर्मेश मुनि म सा —

ठाणाग सूत्र मे श्रावको की चार कोटिया बताई हैं।

चतारि समणोवासगा पण्णता तजहा—

(१) अम्मापिउ समाणा

(२) भाउ समाणा

(३) मित समाणा

(४) सवत्ति समाणा

अर्थात् श्रमणोपासक श्रावक चार प्रकार के होते हैं। यथा (१) माता-पिता के समान (२) भ्राता के समान (३) मित्र के समान (४) सौत के समान।

प्रकारान्तर से चार प्रकार के अन्य श्रावक फिर बताए हैं—

(१) अद्दाग समाणे

(२) पडाग समाणे

(३) खाणु समाणे

(४) खरकट समाणे

अर्थात् (१) आदर्श काच के समान

(२) पताका के समान

(३) कील के समान

(४) तीक्ष्ण काटे के समान

उपरोक्त आठ प्रकार के भेदों म श्रावक श्रेष्ठ श्री चम्पालालजी बाठिया ने माता पिता मित्र एव आदर्श श्रावक की भूमिका अत्यन्त कुशलता के साथ निभाई।

युग प्रधान ज्योतिर्धर पूज्य श्रीमद् जवाहराचार्य ने जैन जगत में व्याप्त बद्धमूल भ्रान्त धारणाओं के निरसन हेतु एक व्यापक आन्दोलन चलाया। उस आन्दोलन को व्यवस्थित गति देने एव जवाहराचार्य के क्रातिकारी विचारो को जन-जन तक पहुँचाने में श्री बाठियाजी ने भागीरथी का कार्य किया।

श्री बाठियाजी जवाहराचार्य की भावनानुसार कार्य करने वाले थे इसीलिए सही माने म वे शास्त्र की 'इगियागारे सम्पन्ने की उक्ति को चरितार्थ करने वाले सच्चे शिष्य थे।

जवाहराचार्य क्रान्तिदर्शी पुरुष थे। ऐसे क्रान्तिकारी आचार्य इतिहास मे कभी-कभी युगा-युगो के बाद होते हैं। उस अमर व्यक्तित्व के साथ जुड़कर श्री बाठियाजी ने भी अपना नाम अमर कर दिया। राम के साथ जैसे हनुमान का नाम है वैसे ही जवाहर के साथ चम्पालालजी का नाम रहेगा।

जवाहराचार्य को बाठियाजी जैसे भक्त रत्न मिले और श्री बाठियाजी को जवाहराचार्य जैसे गुरु मिले यह दोनो के लिए परस्पर गौरव की बात थी।

गुरुभक्ति का जो अखण्ड दीप श्री बाठियाजी ने प्रज्वलित किया उसे प्रज्वलित बनाए रखने एव उस दीप मे तेल भरने का कार्य उनकी धर्मपत्नी श्राविकारत्न श्रीमती ताराबाई एव उनके पुत्र रत्नो का है। आशा है वे इसे अत्यन्त निष्ठा के साथ पूरा करेगे।□

(भावाभिव्यक्ति सकलित)—श्री नेमचन्द जैन

अग्रसेन भवन श्री गगानगर (राज)

है कि श्री बांठियाजी की अमर आत्मा को उत्तरोत्तर उच्च लोकों की प्राप्ति हो। आशा है उनकी सुसंस्कृत सन्तानें उनके पद चिह्नों का अनुसरण करते हुए पारिवारिक समृद्धियों को बढ़ाने के साथ-साथ सामाजिक एवं धार्मिक कृत्यों में भी अभिरुचि विकसित करती रहेंगी।

हरि ॐ तत्सत् □

5103 North Oaks Blvd
North Brunswick NEW JERSEY 08902
(U.S.A)

सरलता व सेवा की प्रतिमूर्ति

— श्री मानव मुनि —

आप आचार्य श्री नानेश के अनन्य श्रद्धालु निष्ठावान सरल स्वभावी एवं चारित्रवान श्रावक थे। अतिथि सत्कार करने में उन्हें अत्यन्त हर्ष व आनंद होता था। शुभ कार्यों में सहायता देने में भी प्रफुल्लित होते थे।

मिलने का/चर्चा करने का अवसर मिलता वो कहा करते जीवन में जितनी सेवा एवं धर्म आराधना व गुरु भक्ति हो सके करना चाहिये तभी जीवन सार्थक होगा। हाथ बांध आया है खाली हाथ जाने वाला है धर्म ही साथ जायेगा तो उसमें कंजूसी क्यों की जाये।

मनुष्य को आपस में प्रेम बांटना चाहिये प्रेम से राग द्वेष भी मिट जाता है धन का उपयोग शुभ कार्यों में करना चाहिये जीवन का सच्चा आनंद उसी में है।

हम भेद को मिटाना चाहते हैं हम समता चाहते हैं मैत्री चाहते हैं समता याने बराबरी का नाता।

स्व. सेठ श्री चम्पालालजी बांठिया के परिवार के सदस्यों में वो गुण ग्रहण करने की शक्ति आये व उनकी भावना को पूर्ण करने में सफलता प्राप्त हो। यह मंगल भावना करता हूँ। □

—शिवाजि आश्रम मानव
इन्दौर ४५२००१

कर्मठता एव उदारता के आदर्श

— श्री गजेन्द्र सूर्या —

कोई भी राष्ट्र आदर्श राष्ट्र का दर्जा तब तक प्राप्त नहीं कर सकता है जब तक कि वहा के निवासी शिक्षा सेवा समर्पणा के चरित्र से समाज को अपनी शक्ति प्रदान न करे।

किसी भी राष्ट्र का सिर तभी ऊँचा उठता है जब जन सेवा मे समर्पित रहने वाला नेतृत्व अपनी क्षमता से समाज के अन्तिम छोर पर खड़े व्यक्तियो के लिए कल्याणकारी योजनाएँ पहुँचाने की व्यग्रता मन मे रखे।

मनुष्य मात्र को यह कभी नहीं भूलना चाहिए कि जिस धरती पर हमने जन्म लिया है जिसकी मिट्टी में खेलकर बड़े हुए हैं जिसकी समीर मे अब तक सास लेकर जी रहे हैं उस पावन पवित्र मातृभूमि के उपकार को भूल जाना विश्वासघात है।

मृत्यु तो अवश्यभावी है—एक न एक दिन अवश्य आएगी फिर क्यो न हम प्राणो का उत्सर्ग उस माटी से करे जिसने जन्म दिया प्राण दिया।

मेरे प्राण इस देश की अमानत है। उस अमानत को उसे सौंपना ही मेरा कर्त्तव्य है।

उपरोक्त सुन्दर शिक्षा को युग पुरुष युग दृष्टा क्रातिकारी जाज्वल्यमान नक्षत्र ज्योर्तिधर स्व श्रीमद् जवाहराचार्य से सीखकर अपने जीवन में उसे आत्मसात् कर अन्तिम श्वास तक निर्वाह करने वाले पुरुष थे—असाधारण व्यक्तित्व के धनी कर्मठ उदारमना प्रखर प्रतिभावान सेवा एव शक्ति के सगम श्रीमान चम्पालालजी साहिब बाठिया।

श्रीमान बाठिया साहेब ने जन सेवा मे अहर्निश समर्पित रहकर श्रम सेवा त्याग का जो अनुकरणीय आदर्श उपस्थित किया है वह सादर अविस्मरणीय बना रहेगा।

उन्होंने इस देश की शानदार विरासत एव परम्परा को रखकर नगर के बहुमुखी एव बहुक्षेत्रीय प्रगति मे अपूर्व योगदान प्रदान करके नागरिक कर्त्तव्य बोध का जो कीर्तिमान कायम किया है उससे हमारी पावन राष्ट्रीय सस्कृति उज्ज्वल बनी है।

आज के इस युग मे जब लोकोपकारी सस्थाए धन श्रम सेवा आदि सभी अभाव के दौर से गुजर रही हा ऐसे समय मे पदलिप्सा से कोसा दूर रहने वाले सदैव

सरस्वती की पूजा में अहर्निश समर्पित लक्ष्मी के इस वरद पुत्र का आदर्श समाज राष्ट्र एवं विभिन्न सेवा के क्षेत्र में एक ऐसा उज्ज्वल आईना है जो प्रत्येक प्रबुद्ध जन के लिए अनुकरणीय एवं शिक्षाप्रद है।

श्रीमान बांठिया साहिब के अद्भुत व्यक्तित्व को पढ़कर ज्ञात होता है कि उन्होंने अपने जीवन की समग्र ऊर्जा और शक्ति को उन कार्य क्षेत्रों एवं योजनाओं के सफल क्रियान्वयन में लगाया, जिनके सिंचन करने से वह बीज कल्प वृक्ष के रूप में पूर्ण आकार ग्रहण करने वाला बन सकें।

श्रीमान बांठिया साहिब ने भीनासर में जवाहर विद्यापीठ एवं श्रीमद् ज्योतिर्धर जवाहराचार्य के क्रांतिकारी साहित्य को जो सामाजिक राष्ट्रीय एवं धार्मिक क्रांति का सूत्रपात करने वाला था जवाहर किरणावलियां के रूप में प्रकाशित कर सम्पूर्ण जैन समाज सहित इस देश की संस्कृति पर जो उपकार का कार्य कर ऐतिहासिक योगदान प्रदान किया है और जिसे उनके सुपुत्र श्री सुमतिलालजी बांठिया सहित समाज के अनेक गणमान्य पुरुषों (जिसमें प्रमुख रूप में टी टी इण्डस्ट्रीज के प्रबन्ध संचालक श्रीमान रिखबचन्दजी जैन आदि हैं।) ने जिसे गतिशील किया है। वह श्रीमान चम्पालालजी साहिब बांठिया के त्याग सेवा एवं श्रम का ही प्रतिफल है।

अपनी अद्भुत सूझबूझ एवं कल्पना से आपने संस्था का जैसा परिवेश रखा था आज वह संस्था उसी सांचे के अनुरूप पूर्ण आकार को ग्रहण कर रही है।

उन्होंने अपनी प्रखर प्रतिभा से न केवल साहित्य प्रकाशन एवं सेवा क्षेत्र में अपना महत्वपूर्ण स्थान बनाया वरन् जनोपयोगी क्षेत्र एवं समाज सेवा क्षेत्र में भी अद्वितीय कार्य करके समाज के मुख को उज्ज्वल किया है।

बांठिया साहिब की औद्योगिक शैक्षणिक पारमार्थिक चिकित्सकीय व्यवसायों के विकास के अतिरिक्त विभिन्न लोकोपकारी संस्थाओं में सामाजिक धार्मिक सांस्कृतिक कार्यक्षेत्रों में धन श्रम सेवा से कार्य करके बेकस, बेसहारा लोगों के लिए पैरों पर खड़ा करने वाली अनेक स्वावलम्बी योजनाओं का जो सफल क्रियान्वयन किया है वह उनकी देश एवं समाज के प्रति समर्पित प्रतिबद्धता का ध्यान कराने वाली हैं। आपने समाज नगर राष्ट्र को जो कुछ प्रदान किया है, हम उस विरासत के धनी हैं अतः हमें मर्यादा एवं मूल्यों के आईने में अपने आदर्श को नियोजित कर ऐसे समाज के स्वरूप को बनाए रखने में अपना यथोचित योगदान प्रदान करके उसे निष्क्रिय होने से बचाए रखना चाहिए। आपकी स्मृति को तभी अक्षुण्ण एवं सुरक्षित रख सकते हैं। जब हम उनके बताये हुए सभी कार्यों को पूर्ण शक्ति से करने का संकल्प करें।

बाठिया साहिब न जो भी कार्य हाथ मे लिया उसे पूर्ण शक्ति से पूरा किया। हमारा कर्त्तव्य है कि हम भी अपने विवेक एव बुद्धि से प्रत्येक कार्य के सफल क्रियान्वयन मे तत्पर एव प्रतिबद्ध बन।

बिरले व्यक्ति ही ऐसे होते हैं जो अपनी ऐसी छाप छोड़ जाते हैं जो समाज और राष्ट्र के लिए गौरव की बात बन जाती है। श्रीमान बाठियाजी का व्यक्तित्व आडम्बर विहीन *निरभिमानी था। वे अद्भुत जिजीविषा और शौर्य के धनी थे हम उनके अद्भुत* व्यक्तित्व, प्रशस्त ललाट एव अपूर्व बलिष्ठता को अपनी धरोहर समझते हैं।

जवाहर किरणावली का प्रकाशन उनके नाम से हमेशा पहिचाना जाएगा जो कल्प वृक्ष को सिंचन करने वाला कार्य है।

श्रीमान बाठिया साहिब की विशेष उपलब्धियो के लिए समाज ने राज्य ने तत्कालीन बीकानेर महाराज ने एव विभिन्न प्रकार की सार्वजनिक एव लोकोपकारी सस्थाओं ने उनके अद्भुत यशस्वी कार्यों के लिए जो सम्मान प्रशस्तिया आदि प्रदान की हैं उससे उन सस्थाओं का ही गौरव बढ़ा है क्योंकि सेवाभावी एव चरित्रवान लोगो का मूल्याकन करना समाज एव राष्ट्र का ही आदर करना होता है और उनका तो समग्र कार्य ही समूचे समाज एव राष्ट्र के गोरव की बात है। अपना सम्पूर्ण जीवन समाज के लिए अर्पित कर देने वाले ऐसे व्यक्तियो के सम्मान से ही समाज का महत्व बना रहता है।

जौहरी के कारण ही बहुमूल्य पदार्थों का महत्व रहता है अन्यथा वे हीरे जवाहरात तो काच के टुकड़े के समान हैं। जैसे मूल्यो के कारण पदार्थ की कीमत है वस्तु की कीमत है मूल्य गिरते हैं तो पदार्थ का कोई महत्व नहीं होता है।

क्योंकि सस्थाओं में योग्य एव परिपक्व व्यक्तियो के माध्यम से ही समाज धर्म सघ एव जातीय समस्याओं के समाधान एव विकास के नये सोपान तैयार किये जाते हैं। श्रीमान बाठिया साहिब को विभिन्न परिस्थितियो म सस्थाओं को चलाने का काफी अनुभव प्राप्त हो चुका था इसलिए वे किसी भी व्यवस्था की सफल क्रियान्विति के लिए उन दक्ष एव निपुण व्यक्तियो को ही जिम्मेदारी सौंपते थे जो सस्था के निर्धारित लक्ष्य को पूरा करने के साथ ही उसके कल्याणकारी लाभा को अन्तिम व्यक्ति तक पहुचाने मे सक्षम एव जवाबदेह बना सकता हो।

जिस समूह में या जिस सस्था मे ऐसा परिपक्व नेतृत्व होता है उस समूह की सुव्यवस्था के फलस्वरूप न केवल असहाय निराश्रित निरीह लोगो की व्यथाओं एव

कथ का निवारण होता है अपितु समाज को जो शक्ति एवं दिशाबोध प्राप्त होना है उससे उस समूह की शक्ति पूंजीभूत बनती है एवं उसमें गति एवं क्षमता उत्पन्न होती है।

विभिन्न संस्थाओं मे अध्यक्ष/मंत्री/उपाध्यक्ष /अन्य पदाधिकारी कार्यकारिणी सदस्य तथा ट्रस्टी आदि देखे जाते हैं परन्तु अक्षम एवं विपरीत व्यक्तियो के कारण उसमे कलह झगड़े आदि देखे जाते हैं जिसके फलस्वरूप उन संस्थाओं की कल्याणकारी योजनाओं को न तो गतिशील रखा जा सकता है और न ही उसके विकास के लिए नया आधार प्रदान किया जा सकता है।

उपरोक्त परिस्थितियों में जब समाज के एक ऐसे कर्मठ उदारमना प्रखर प्रतिभा के धनी को स्मरण किया जाता है तो सहज ही उनके माध्यम से समाज के सदस्यो को ऐसे पुरुष के अनुकरणीय आदर्शों की शिक्षा दी जा सकती है कि सामाजिक संस्थाओं के पद सेवा और कार्य के लिए होते हैं तथा दिये जाते हैं। संस्था के विभिन्न पदों पर प्रतिष्ठित व्यक्ति को काम करने की सत्ता और शक्ति उपरोक्त पदों से प्राप्त होती है। तथा सारा समाज उनसे नेतृत्व त्याग बलिदान की अपेक्षा रखता है।

श्रीमान बाठिया साहिब के अलौकिक जीवन को स्मरण करने से विदित होता है कि कहा उनका समर्पित त्यागमय निःस्पृह जीवन जिसमें मानव के प्रति मानवीय व्यवहार उसकी वैयक्तिकता का समादर और जीवन के अनूठेपन की चेतना और कहा आज के विभिन्न क्षेत्रो की लापरवाह क्रूर निर्मम और दानवीय व्यवस्था जिसमे इन आत्मघाती लिप्सा में लिप्त संस्थाओं के हाथों से असख्य निरीह की क्या गति होगी कहा नहीं जा सकता।

स्वर्ण जयन्ती के इस पावन प्रसग पर पूज्य आदरणीय चम्पालालजी साहिब बाठिया के अद्भुत प्रेरक पवित्र जीवन से हम सबको शिक्षा लेनी चाहिए कि हम उन तथाकथित धार्मिक संस्थाओं से अपने को बचाकर रखें जो मात्र दिखावे की सेवा और लोक कल्याण के नाटक मे सलग्न हैं।

इस प्रसग पर श्रीमान बाठिया साहिब की सच्ची स्मृति तभी होगी जब हम उनके आदर्शों का अनुसरण कर पवित्र प्रयास वाली विभिन्न लोकोपकारी एवं कल्याणकारी संस्थाओं मे शक्ति का सृजन करके अपना एवं समाज का जीवन सार्थक करें। ☐

—१७०, आर एन टी मार्ग

भावुआ टॉवर इन्दौर (म.प्र.)

भीनासर-सरसिज सेठ श्री चम्पालाल जी बॉठिया

।। परोपकाराय सता विभूतय ।।

— श्री माणक चन्द रामपुरिया —

मरू प्रदेश का भीनासर बीकानेर ऐसे मानव-मणि महान् विभूति का जन्म-स्थान है जिसका यश-सौरम कीर्ति-कौमुदी दिगन्त मे परिव्याप्त है। वे हैं स्वनाम धन्य सेठ श्री चम्पालाल जी बाँठिया। उन्हे महाराजा श्री गगासिंहजी के राज्य काल एव सानिध्य मे एम एल ए तथा राज्य का अवैतनिक मजिस्ट्रेट का पद भार वहन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। समाज सेवी न्याय-प्रिय 'बाँठिया जी का कर्ममय जीवन सब के लिए स्पृहणीय था। भीनासर नगर पालिका के यशस्वी चेयरमैन बीकानेर राज्य ट्रेड एव इडस्ट्रीज एशोसियेशन के अध्यक्ष के पद भार का भी आपने योग्यता पूर्वक निर्वाह कर स्थानीय जन-समाज का हृदय हार बनने का सौभाग्य प्राप्त किया। आपकी दानशीलता सेवा-निष्ठा और कर्तव्य-परायणता के कारण ही महाराजा सा ने आपको रजत राजित सम्मान स्वरूप 'रजत-छड़ी तथा चपरास के उपकरणो से आदृत किया। महाराजा सा के प्रिय भाजन तथा विश्वास-पात्र के रूप में आपका स्थान महत्वपूर्ण था। आपका ऐतिहासिक व्यक्तित्व समय और समाज के लिए युग-सापेक्ष रहा।

आपकी समाज-सेवा-निष्ठा प्रशसनीय थी। जब आपने गगाशहर निवासियो के पेय-जल का अभाव देखा तो अविलम्ब-सर्व साधारण के लिए मीठे-जल की प्राप्ति हेतु यथा-स्थान कुओं का निर्माण करा कर पेयजल कष्ट का निवारण किया।

शिक्षा प्रेमी के रूप मे सामाजिक विकास के लिए भावी सतान के भविष्य को समुज्वल बनाने के लिए 'जवाहर हाई स्कूल बालका के लिए तथा बालिकाओं के सर्वांगीण विकास के लिए 'बाँठिया गर्ल्स स्कूल का निर्माण कराया जो समाज-सेवा और आपके शिक्षा-प्रेम का ज्वलन्त उदाहरण है। आपकी दूरदर्शिता का प्रतीक 'जैन जवाहर विघापीठ जिसका समृद्धिपूर्ण पुस्तकालय-विभाग आज भी शैक्षणिक-गौरव-स्तम्भ है। नारी कल्याण के लिए आपके विशाल हृदय में अनन्य भावना थी। आप की पुनीत भावना थी 'नार्यस्तु यत्र पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता' एतदर्थ आपने नारी उत्थान और उनके विकास के लिए शिल्प-कला (सिलाई-प्रशिक्षण-केन्द्र) स्थापित कराया जो आपकी नारी-सेवा-निष्ठा का प्रतीक है।

'सब जन हिताय-सब जन सुखाय' की उदार भावना से प्रेरित होकर आपने अपनी पितृ भक्ति स्वरूप 'सेठ हमीरमल बाँठिया पौषधशाला' बाँठिया अतिथि शाला के निर्माण द्वारा अतिथि देवो भव पितृ देवो भव' का आदर्श उपस्थित किया। सार्वजनिक हित साधना के लिए 'सेठ चम्पालाल बाँठिया धर्मार्थ ट्रस्ट (न्यास) की स्थापना की जो आपकी महती उदारता का प्रतीक है। जन साधारण की सुविधा तथा नगर-विकास तथा उद्यान हेतु आपने अच्छी सड़क के निर्माण कार्यों में महत्वपूर्ण योग दिया जो भीनासर नगर का एक ऐतिहासिक कार्य है। आपकी धार्मिक सेवा भी अप्रतिम है। आपने भीनासर म महान् क्रान्तिकारी जैनाचार्य पूज्य श्री जवाहरलाल जी महाराज सा का चातुर्मास का सफल अनुष्ठान सुसम्पन्न कराकर समाज को एक नयी दिशा और प्रेरणा दी तथा विशाल साधु-सम्मेलन के महत्वपूर्ण आयोजन म सफलता प्राप्त कर धर्म का आदर्श उपस्थित किया जो सदा स्मरणीय रहेगा।

आप 'सादड़ी-सम्मेलन' में स्थानकवासी-जैन सम्प्रदाय के अध्यक्ष पद का सौभाग्य प्राप्त कर धर्म एव सुयश के भागी बने। आप अपने व्यक्तित्व और कर्तव्य निष्ठा से बीकानेर गगाशहर भीनासर इत्यादि स्थानकवासी जैन संघो द्वारा अभिनन्दन पत्र प्राप्त कर अनन्य सुख और सौभाग्य के भी भागी बने। अनेक सामाजिक एव धार्मिक क्षेत्रा म भी आपने साहस उदात्त-चिन्तन और दृढ सकल्प का आदर्श उपस्थित किया। जैन साधुओं द्वारा दी जाने वाली बाल-दीक्षा से दु खी होकर आपने १८ वर्ष से कम यानी अल्पायु म बालक-बालिकाओं को दीक्षित करने का घोर विरोध किया। इसके समर्थन में कतिपय-समाज-नेता वकील डॉक्टर तथा शिक्षाविदो ने पूर्ण सहयोग दिया। जिसका पूर्ण श्रेय श्री बाँठियाजी को है। श्री बाँठिया जी की कर्तव्य परायणता सुदक्षता उदारता और दानशीलता का समुचित उल्लेख पत्र-पत्रिकाओं म भी विशेष रूप से वर्णित है किन्तु इसका तत्कालीन इयर-बुक सन् ५४ ५५ म विस्तार से वर्णित है।

सेवाव्रती धर्मानुरागी उदारमना सेठ श्री चम्पालाल जी सा का व्यक्तित्व एव जीवन लौकिक और अलौकिक दोनो दृष्टिकोण से वरेण्य है। उनका गरिमा जीवन-आदर्श जन-जन के लिए प्रेरणा प्रद एव श्लाघ्य है। उन्होने अपना पवित्र और आदर्श जीवन व्यतीत कर जो यश-कीर्ति-स्तम्भ की स्थापना की वह मानव मात्र के लिए प्रकाश पुञ्ज है। सेठ बाँठिया जी का कर्ममय जीवन यथार्थ में प्रेय और श्रेय दोनो का चरम उत्कर्ष है। यद्यपि उनकी पार्थिव काया इस धरा धाम पर नहीं है किन्तु यश-काया सदा अजर और अमर रहेगी— यावत चन्द्र दिवाकरो। ☐

— ४ मोइरा स्ट्रीट कलकत्ता-७०००१२

सस्कार-निर्माण एव साहित्य-प्रकाशन मे अनन्य सहयोगी

— डॉ नरेन्द्र भानावत —

प्रमुख समाज सेवी स्वर्गीय श्री चम्पालाल जी बाठिया के नाम से मैं अपने छात्र जीवन से ही परिचित था। जब मैं चौथी-पाचवीं कक्षा मे अपने गाँव कानोड़ मे पढ़ता था तब मेरे कुछ वरिष्ठ साथी जवाहर विद्यापीठ भीनासर (बीकानेर) मे रहकर अध्ययन करते थे। जवाहर विद्यापीठ छात्रावास था और वहाँ रहने वाले विद्यार्थी गगाशहर के चौपड़ा हाई स्कूल मे पढ़ते थे। जब भी वे ग्रीष्मावकाश मे अपने गाव लौटते जवाहर विद्यापीठ और उसके मत्री श्री चम्पालाल जी बाठिया की बात अवश्य करते। आठवीं से दशवीं कक्षा तक मैं जैन गुरुकुल छोटी सादड़ी का विद्यार्थी रहा। वहा मुझे स्व प शोभाचन्द जी वया धार्मिक शिक्षण देते थे। उनकी प्रेरणा से प्रसिद्ध जैनाचार्य श्री जवाहरलाल जी म सा के प्रवचन सग्रह 'जवाहर किरणावलियो को पढ़ने का अवसर मिला। इन किरणावलियो का प्रकाशन जवाहर साहित्य समिति भीनासर द्वारा किया गया था और इसके मत्री थे श्री चपालाल जी बाठिया। इस प्रकार साहित्य के पठन-पाठन के सदर्भ से भी बाठिया जी का नाम छात्र-जीवन से ही ध्यान मे आता रहा।

मैट्रिक परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद मैं कॉलेज शिक्षण के लिए जवाहर विद्यापीठ भीनासर मे प्रवेश लेने की भावना लेकर सन् १९५२ के जून मास के अतिम सप्ताह मे भीनासर पहुँचा था। वहाँ मेरे गाँव के ही पडित महेश चन्द्र जी जैन गृहपति थे। मैंने डूँगर कॉलेज में प्रथम वर्ष मे प्रवेश के लिए आवेदन किया और उधर मैं धर्मनिष्ठ श्रावक दानवीर सेठ भैरोदान जी सेठिया से मिलने के लिए श्री अगरचन्द भैरोदान सेठिया जैन पारमार्थिक सस्था बीकानेर के सेठिया जैन ग्रथालय मे पहुँचा। सभी लोग सेठिया जी को बाबूजी के नाम से पुकारते थे। बाबूजी ने मुझे मेरे शैक्षणिक जीवन के बारे मे पूछा। धार्मिक जानकारी भी ली। जब उन्हे मैंने बताया कि मैं अपनी कक्षा मे सदैव प्रथम आता रहा हूँ और मैट्रिक कक्षा में मैंने प्रथम श्रेणी प्राप्त की है तो वे बड़े खुश हुए और पूछा कि आगे कहाँ पढोगे ? मैंने कहा-जवाहर विद्यापीठ भीनासर में रहूँगा और डूगर कॉलेज मे पढ़ने आऊँगा। कुछ देर रुककर वे बोले—भीनासर से बीकानेर आने मे तुम्हारा समय जायेगा। तुम यहीं आ जाओ। यहा ऊपर कमरे मे रहने की व्यवस्था हो जायेगी और पास ही रामपुरिया कॉलेज है वहा प्रवेश ले लो। बाबूजी के इस सहज-सरल आत्मीय वात्सल्य भाव से मैं अत्यन्त प्रभावित हुआ और जवाहर

विद्यापीठ भीनासर से बीकानेर चला आया। इस कारण स्व बाँठिया जी से मेरा विशेष सम्पर्क तो नहीं हो सका पर मैं उनकी सामाजिक एव साहित्यिक प्रवृत्ति से सदा प्रभावित रहा।

बीकानेर आने से पूर्व मैंने अ भा श्वे स्थानकवासी जैन कान्फ्रेंस के १२वें अधिवेशन में भाग लिया था। यह अधिवेशन ४ ५ व ६ मई १९५२ को घाणेराव सादड़ी में हुआ था। हम कुछ साथी जैन गुरुकुल छोटी सादड़ी की ओर से वहा गये थे। उस समय कान्फ्रेंस के मुख पत्र 'जैन प्रकाश' के सम्पादक प रत्नकुमार जैन 'रत्नेश' थे। तब तक 'जैन प्रकाश' में मेरी कुछ कविताएँ प्रकाशित हो चुकी थीं। अत रत्नेश जी से मेरा अप्रत्यक्ष परिचय था। सादड़ी में जब वे मिले तो मुझे अधिवेशन की कार्यवाही को निकट से देखने की सुविधा उनके माध्यम से मिल सकी। इस अधिवेशन के अध्यक्ष श्री चम्पालाल जी बाँठिया थे। इस अधिवेशन मे राजस्थान के तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री टीकाराम पालीवाल विशेष रूप से आये थे। इस अधिवेशन के साथ स्थानकवासी परम्परा की विभिन्न सम्प्रदायों के साधुओं का वृहद सम्मेलन भी हुआ था और इसी अधिवेशन म स्थानकवासी सम्प्रदाओं का विलिनीकरण 'श्रमण संघ' में हुआ था। इस दृष्टि से यह अधिवेशन अपना ऐतिहासिक महत्व रखता है।

बीकानेर म रहते हुए समय-समय पर विभिन्न धार्मिक अवसरों पर बाँठिया जी से भेंट होती रही। जवाहर विद्यापीठ के मंत्री के रूप में बच्चों के संस्कार-निर्माण एव चरित्र-गठन में उनकी बड़ी प्रेरणा रही। श्रीमद् जवाहराचार्य क्रांतद्रष्टा आचार्य थे। आत्मधर्म के साथ उन्होंने अपने प्रवचनों में राष्ट्र धर्म को भी बड़ा महत्व दिया तथा राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी द्वारा प्रवर्तित अहिंसात्मक सत्याग्रह का समर्थन किया। स्वतन्त्रता समानता स्वावलम्बन और स्वदेशीपन पर उनका बड़ा जोर रहा। उनकी प्रेरणा से हजारों लोगों में देशभक्ति की भावना जगी और उन्होंने विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार कर खादी धारण करने का व्रत लिया। आचार्य श्री के प्रवचन सरल प्रभावी और जीवन-परिवर्तनकारी होते थे। इन प्रवचनों के प्रकाशन की व्यवस्था कर बाँठिया जी ने समाज का बड़ा उपकार किया। बाँठिया जी के कारण ही जवाहर किरणावलियों के कई भाग प्रकाशित हो सके। आज भी ये किरणावलियाँ बड़े चाव से पढ़ी जाती हैं।

दिवगत आत्मा को कोटि-कोटि प्रणाम और चिर शांति की कामना। □

—सी २३५ A दयानन्द मार्ग

तिलकनगर जयपुर ४

सेवा एव सौजन्य के प्रतीक

— श्री चम्पालाल डागा —

मेरा सेठ साहब के निकट आने का प्रथम माध्यम तो श्री जवाहर विद्यापीठ था। मैं कार्यकारिणी का सदस्य लिया गया व प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से मीटिंगो के माध्यम से विचार-विमर्श होता रहता। द्वितीय माध्यम बना परम पूज्य समता विभूति आचार्य श्री नानेश द्वारा गगाशहर व भीनासर मे १२ दीक्षाओं की स्वीकृति व बाद मे चातुर्मास की घोषणा व १२ दीक्षाओं के लिए पाडाल की व्यवस्था तथा अन्य व्यवस्था के लिए विचार-विमर्श होता ही रहता।

उनकी सन्निधि से उनकी कार्य शैली की जीवन्तता और दूरदर्शी योजक बुद्धि का प्रत्यक्ष अनुभव हुआ।

स्व सेठ श्री चम्पालालजी सा बाठिया ने धार्मिक सामाजिक राजनैतिक सभी धरातल पर अग्रणी होकर कार्य किया। नगर मे जिस सुविधा की उनको कमी महसूस हुई उन्होंने तत्काल उसे दूर किया और स्कूल पौषधशाला कुआ बाग दवाखाना अतिथि गृह आदि का निर्माण कराया। इन्होंने सामाजिक राजनीतिक धार्मिक व सस्कृति आदि प्रत्येक क्षेत्र में अपनी अमिट छाप छोड़ी व स्वतन्त्र पहचान बनाई। वे अपने समय के सर्वांगीण व्यक्तित्व के धनी सेठ थे। उन्होंने सेठ (श्रेष्ठ) उपाधि को सार्थक किया।

स्व सेठ सा ने आचार्य श्री जवाहर की तनमन से सेवा की उनके विचारों को श्री जवाहर किरणावलियो के रूप में प्रकाशित कराया और जन-साधारण के लिये उपलब्ध कराया। जवाहर किरणावलियो के ये ३५ भाग पूरे जैन समाज मे ही नहीं अन्य समाज मे भी आदर का स्थान रखते हैं। युगो तक जैन समाज इन किरणावलियो के माध्यम से सेठ सा की स्मृति सजोये रखेगा।

मैं स्वय की तथा श्री अ भा साधुमार्गी जैन सघ की ओर से पुन उन महामानव को अपनी हार्दिक श्रद्धाजलि अर्पित करता हुआ, आपके सद्प्रयासों की सफलता की कामना करता हूँ। □

—मत्री श्री अ भा साधुमार्गी जैन सघ

बीकानेर

विद्यापीठ भीनासर से बीकानेर चला आया। इस कारण स्व बांठिया जी से मेरा विशेष सपर्क तो नहीं हो सका, पर मैं उनकी सामाजिक एव साहित्यिक प्रवृत्ति से सदा प्रभावित रहा।

बीकानेर जाने से पूर्व मैंने अ भा श्वे स्थानकवासी जैन कान्फ्रेंस क १२वें अधिवेशन में भाग लिया था। यह अधिवेशन ४ ५ व ६ मई १९५२ को पानराव सादड़ी म हुआ था। हम कुछ साथी जैन गुरुकुल छोटी सादड़ी की ओर से वहा गये थे। उस समय कान्फ्रेंस के मुख पत्र 'जैन प्रकाश' के सम्पादक प रत्नकुमार जैन 'रत्नेश' थे। तब तक 'जैन प्रकाश' में मेरी कुछ कविताएँ प्रकाशित हो चुकी थीं। अत रत्नेश जी से मेरा अप्रत्यक्ष परिचय था। सादड़ी में जब वे मिले तो मुझे अधिवेशन की कार्यवाही को निकट से देखने की सुविधा उनके माध्यम से मिल सकी। इस अधिवेशन के अध्यक्ष श्री चम्पालाल जी बाठिया थे। इस अधिवेशन म राजस्थान के तत्कालीन मुख्यमत्री श्री टीकाराम पालीवाल विशेष रूप से आये थे। इस अधिवेशन के साथ स्थानकवासी परम्परा की विभिन्न सम्प्रदायों के साधुओं का वृहद सम्मेलन भी हुआ था और इसी अधिवेशन में स्थानकवासी सम्प्रदायों का विलिनीकरण श्रमण सघ' में हुआ था। इस दृष्टि स यह अधिवेशन अपना ऐतिहासिक महत्व रखता है।

बीकानेर मे रहते हुए समय-समय पर विभिन्न धार्मिक अवसरा पर बाठिया जी से भेट होती रही। जवाहर विद्यापीठ के मत्री के रूप में वहाँ के सस्कार-निर्माण एव चरित्र-गठन में उनकी बड़ी प्रेरणा रही। श्रीमद् जवाहराचार्य क्रातद्रष्टा आचार्य थे। आत्मधर्म के साथ उन्होंने अपने प्रवचनो मे राष्ट्र धर्म को भी बड़ा महत्व दिया तथा राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी द्वारा प्रवर्तित अहिंसात्मक सत्याग्रह का समर्थन किया। स्वतत्रता समानता स्वावलम्बन और स्वदेशीपन पर उनका बड़ा जोर रहा। उनकी प्रेरणा से हजारों लोगों में देशभक्ति की भावना जगी और उन्होंने विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार कर खादी धारण करने का व्रत लिया। आचार्य श्री के प्रवचन सरल प्रभावी और जीवन-परिवर्तनकारी होते थे। इन प्रवचनों के प्रकाशन की व्यवस्था कर बाठिया जी ने समाज का बड़ा उपकार किया। बाँठिया जी के कारण ही जवाहर किरणावलियों के कई भाग प्रकाशित हो सके। आज भी ये किरणावलियाँ बड़े चाव से पढ़ी जाती हैं।

दिवगत आत्मा को कोटि-कोटि प्रणाम और चिर शाति की कामना। ☐

—सी २३५ A दयानन्द मार्ग

तिलकनगर जयपुर ४

सेवा एव सौजन्य के प्रतीक

— श्री चम्पालाल डागा —

मेरा सेठ साहब के निकट आने का प्रथम माध्यम तो श्री जवाहर विद्यापीठ था। मैं कार्यकारिणी का सदस्य लिया गया व प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से मीटिंगो के माध्यम से विचार-विमर्श होता रहता। द्वितीय माध्यम बना परम पूज्य समता विभूति आचार्य श्री नानेश द्वारा गगाशहर व भीनासर मे १२ दीक्षाओं की स्वीकृति व बाद मे चातुर्मास की घोषणा व १२ दीक्षाओं के लिए पाडाल की व्यवस्था तथा अन्य व्यवस्था के लिए विचार-विमर्श होता ही रहता।

उनकी सन्निधि से उनकी कार्य शैली की जीवन्तता और दूरदर्शी योजक बुद्धि का प्रत्यक्ष अनुभव हुआ।

स्व सेठ श्री चम्पालालजी सा बाठिया ने धार्मिक सामाजिक राजनैतिक सभी धरातल पर अग्रणी होकर कार्य किया। नगर म जिस सुविधा की उनको कमी महसूस हुई उन्होंने तत्काल उसे दूर किया और स्कूल पौषधशाला कुआ बाग दवाखाना अतिथि गृह आदि का निर्माण कराया। इन्होंने सामाजिक राजनीतिक धार्मिक व सस्कृति आदि प्रत्येक क्षेत्र मे अपनी अमिट छाप छोड़ी व स्वतन्त्र पहचान बनाई। वे अपने समय के सर्वागीण व्यक्तित्व के धनी सेठ थे। उन्होंने सेठ (श्रेष्ठ) उपाधि को सार्थक किया।

स्व सेठ सा ने आचार्य श्री जवाहर की तनमन से सेवा की उनके विचारो को श्री जवाहर किरणावलियो के रूप मे प्रकाशित कराया और जन-साधारण के लिये उपलब्ध कराया। जवाहर किरणावलियो के ये ३५ भाग पूरे जैन समाज मे ही नहीं अन्य समाज मे भी आदर का स्थान रखते हैं। युगो तक जैन समाज इन किरणावलियो के माध्यम से सेठ सा की स्मृति सजोये रखेगा।

मैं स्वय की तथा श्री अ भा साधुमार्गी जैन सघ की ओर से पुन उन महामानव को अपनी हार्दिक श्रद्धाजलि अर्पित करता हुआ आपके सद्प्रयासों की सफलता की कामना करता हूँ। □

—मत्री श्री अ भा साधुमार्गी जैन सघ

बीकानेर

प्रखर प्रतिभावान

— श्री एस हस्तीमल जैन, मुणोत —

गणतंत्र भारत की आधार शिला को सुदृढ बनाने के लिए ऐसे कर्तव्यनिष्ठ अनुशासित एव चिंतनशील नागरिको की आवश्यकता है, जिनका नैतिक चरित्र ऊंचा हो जिनमे उत्तरदायित्व वहन करने की शक्ति हो तथा जिनमें धर्म संस्कृति देश और राष्ट्र के प्रति पूर्ण आस्था निहित हो। साथ ही आचार विचार में समन्वय स्थापित किया हो। इन गुणो से विभूषित-अलंकृत एव समाज में समादृत श्रावक मुकुट-मणि जन-जन के कण्ठहार मृदु-मधुर-मित भाषा प्रख्यात उद्योगपति अनासक्त समाज सेवी विद्याविलासप्रिय परोपकार कर्म विहित धन्य नर श्री चपालालजी बाठिया थे।

जीवन के निर्माण एव बहुविध विकास के लिए जिन विषयों का अध्ययन आवश्यक है उसमें मनुष्यो के जीवन चरित्र का अध्ययन भी मुख्य विषय है। महान पुरुषो और आदर्श व्यक्तियो के अध्ययन अनुशीलन और चरित्र-श्रवण से सन्मार्ग का मार्ग दर्शन मिलता है कि वह अन्धकार में प्रकाश रेखा बन जाता है भूले भटके मानस को सच्चे हमसफर साथी का काम कर देता है। आपका जीवन भी आलोक स्तम्भ के समान है जो औरो के लिए प्रेरणादायक है।

आपने भीनासर में लड़को व लड़कियों के लिए स्कूल का निर्माण कराया। उनकी दृष्टि में शिक्षा मानव जीवन को सुसस्कृत बनाती है। शिक्षा मनुष्य के हृदय और बुद्धि के नेत्रों को खोल देती है। शिक्षा से मनुष्य अपने हिताहित का भली भाति विवेक कर सकता है। भावी-पीढ़ी और भविष्य में मानव को बदलने तथा सुसस्कारी सुदृढ और स्वावलबी बनाने मे शिक्षा ही एकमात्र आधार हो सकती है। अभ्युदय व निश्रेयस की सिद्धि के लिए व्यक्ति-समाज राष्ट्र के सर्वांगीण विकास के लिए अर्थात् शारीरिक मानसिक चारित्रिक एव सामाजिक अभ्युत्थान के लिए उन्होंने जैन जवाहर विद्यापीठ की स्थापना की।

नहि ज्ञानेन सदृश पवित्रमिह विद्यते।
ज्ञानाग्नि सर्व कर्माणि भस्मसात्कुरुते ऽर्जुन ।।

इस ससार म ज्ञान के समान कोई पवित्र पदार्थ नहीं है। अर्जुन ज्ञान रूपी अग्नि समस्त कर्मों को भस्मसात कर देती है। इसीलिए श्रुति बार-बार पुकार-पुकार कर कहती है ऋते ज्ञानान्न मुक्तिः ज्ञान के बिना मुक्ति नहीं हो सकता ज्ञान हा एक ऐसा प्रकाश है
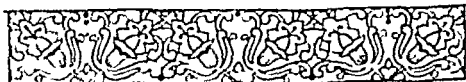
जो हृदय के अन्धकार को अज्ञान और मोह को, स्वार्थ और द्वन्द्व को विनष्ट कर सकता है।

परोपकारार्थमिद शरीरम। ससार के समस्त जड़ पदार्थ अपने लिए न होकर औरो के कल्याण-मगल के लिए है। भूमि अग्नि वायु, जल आकाश ये पच महाभूत भिन्न-भिन्न रूप मे प्राणिमात्र के लिए अत्यत उपयोगी हैं जबकि विवेक के साथ इसका प्रयोग करे।

शरीर समस्त इन्द्रिय परस्पर एक दूसरे के पूरक व सहयोगी हैं। ज्ञानेन्द्रिया कर्मेन्द्रियो के लिए है बिना उनके ये कुछ भी नहीं कर सकते। उसी प्रकार आपने भीनासर मे दो कुओं का निर्माण करा कर मीठा पानी उपलब्ध कराया। राजस्थान के तपन भूमि में तपकर सचार करने वाले पथिका की पिपासा को शान्त करने के लिए तथा जीवन प्रदान के लिए ये दो अमृत स्रोत हैं। राजस्थानवासियो के लिए सुवर्ण उतना मूल्यवान नही है जितना जल है जल को जीवन कहा जाता है। जल स्वच्छता के लिए पकाने के लिए विद्युतशक्ति के लिए औषधियो के निर्माण मे अनेक रोगो के निवारण के लिए जल चिकित्सा के रूप मे उपयोग किया जाता है। वैदिक साहित्य म जल को अमृत कहा गया है क्योंकि वह अत्यत उपयोगी है। वस्तुत इनका जीवन प्राणिमात्र के हित के लिए था।

पृथ्वी का चक्र धुरी पर चलता है। बिना धुरी के पहिया गतिशील नहीं होता उसी प्रकार नारी भी समाज की महत्वपूर्ण धुरी है उसके आधार के बिना समाज का उद्धार नहीं हो सकता। राम-कृष्ण महावीर-बुद्ध जैसे सपूतो को जन्म देने वाली समाज तथा राष्ट्र की निर्माता मातृ शक्ति है। जिस प्रकार पक्षी एक ही पख के बल पर अनन्त आकाश मे विहार नही कर सकता रथ भी एक पहिए पर आगे बढ़ नहीं सकता। पक्षी को उड़ने के लिए दो पखो की तथा रथ को गतिशील होने के लिए दो चक्र की आवश्यकता है। उसी प्रकार समाज को सुधार-मार्ग पर ले जाने के लिए पुरुष समर्थ नहीं है जिसका अर्द्धांग पक्षाघात हो।

इसीलिए आपने नारी के सर्वागीण विकास के लिए माध्यमिक स्कूल का निर्माण किया। ताकि सिनेमा टी वी के द्वारा पाश्चात्य स्त्रियो की वेषभूषा का अन्धानुकरण न करते हुए भारत के अतीत की आदर्श स्त्रियो व सती साध्वियो का अनुकरण कर हमारी प्राचीन उज्ज्वल सस्कृति एव सभ्यता आचार-विचार तथा रहन-सहन की सदेश वाहिका बने। प्रस्तुत सामाजिक मालुष्य को दूर कर सुरसरि सम सर्वहित करे। आप अनेक हितकारिणी सामाजिक सस्थाओं के अध्यक्ष बने तथा उन सस्थाओं को कुशल नेतृत्व

प्रदान किया जिसके कारण वह फलती-फूलती रही है। आप जनता के इतन लोकप्रिय रहे कि उन्होंने बीकानेर राज्य के विधान सभा के सदस्य के रूप में आपको निर्वाचित किया। आप अनन्य साहित्य प्रेमी थे। आपने विपुल उत्कृष्ट जैन साहित्य प्रकाशन कराया है। आपकी अनमाल सेवाओं का मूल्याकन जितना करें उतना कम है। आपका कार्य क्षेत्र इतना विस्तृत था कि केवल जैन समाज में ही नहीं बल्कि जैनेतर समाजो म भी आपको भारी सम्मान प्राप्त हुआ।

ऐसे स्मृति शेष प्रखर व्यक्तित्व को स्मरणाजलि। □

—अध्यक्ष विश्व जैन परिषद, पॉट मार्केट सिकन्दराबाद

साहस एव उदारता के आदर्श

— श्रीगणपतराज बोहरा —

आपका सत् सकल्प उनके बहुआयामी व्यक्तित्व को समाज के सम्मुख प्रस्तुत कर सेवा-साहस और उदारता के आदर्शों को प्रोत्साहित करेगा।

मेरी श्री अ भा साधुमार्गी जैन सघ के रायपुर अधिवेशन में आज से करीब २६ वर्ष पूर्व समादरणीय सेठ सा से मुलाकात हुई थी और वह मुझ आज भी स्मरण है। उन्होंने ज्यार्तिधर आचार्य श्री जवाहरलाल जी म सा के प्रवचना को "जवाहर किरणावली" के रूप में प्रकाशित कराने में जिस सूझ-बूझ और समर्पण भाव का परिचय दिया है वह केवल स्थानकवासी समाज या जैन समाज ही नहीं सारे भारत के प्रबुद्ध जना के लिए अविस्मरणीय रहेगी।

मैं पुन उन महामानव को अपनी हार्दिक श्रद्धाजलि अर्पित करता हूँ और आपके प्रयास की सफलता की कामना करता हूँ। □

—पूर्व अध्यक्ष श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन सघ बीकानेर

भीनासर के नर-रत्न

— श्री मुरारीलाल तिवारी —

वैष्णव परम्परा मे भगवान विष्णु को श्री तथा लक्ष्मी का स्वामी कहा गया है। 'श्री शब्द बहुत व्यापक है तथा विशेष अर्थ वाला है। 'लक्ष्मी' इस नाम से हम सभी परिचित हैं। 'लक्ष्मी जिसके पास होती है उसे हम लक्ष्मी पुत्र कहते हैं।

'लक्ष्मी पुत्र' होना बड़ा सरल है धनोपार्जन का लक्ष्य बनाईये और कुछ वर्षो मे भाग्य के साथ देने पर सम्पन्नता आ ही जाती है। सस्कृत मे एक सुभाषित है—

'उद्योगिना पुरुषसिंह मुपैयति लक्ष्मी

दैवेन देवति का पुरुषा वदन्ति'

अर्थात उद्योगी पुरुष के समीप लक्ष्मी आती है भाग्य से मिलती है—ऐसा का पुरुष कहता है।

अत इस सुभाषित के आधार पर श्रावक श्री बाठियाजी लक्ष्मी पुत्र थे। वे इस अर्थ में नगर श्रेष्ठ थे। रियासत के काल मे माननीय राजा साहब से और कालान्तर मे स्वाधीन भारत मे राजस्थान शासन से यह पद पाना उतना कठिन नहीं था। कठिन तथा असम्भव था उनका श्री सम्पन्न' होना।

लक्ष्मी जब परोपकारी बनती है या लक्ष्मी पुत्र जब लक्ष्मी को अपनी शक्ति की सीमा से सुख-सुविधा तथा ऐश्वर्य से जिनके पास उसका अभाव है उनको विभिन्न माध्यमो से वितरित करता है तब विष्णु प्रिया श्री उसे 'यश कलश बना देती है। इसीलिए पूरा नाम है श्री लक्ष्मी नारायण । लक्ष्मी की पूर्ववर्ति श्री है और श्री विहीन लक्ष्मी तिजोरी या बैंक मे बन्द रहती है। लक्ष्मी इस तरह जब कारावास भोगती है तब वह किसी दिन छोड़कर चली जाती है। 'श्री और 'लक्ष्मी' दोनो एक आत्मा के दो छोर हैं परन्तु व्यवहार मे छोर कभी मिलते नहीं क्योंकि सचय की वृत्ति लक्ष्मी से श्री को दूर रखती है। जिस दिन इस प्रवृत्ति से निवृत्ति मुख कोई व्यक्तित्व होता है उस दिन 'जैनत्व' का अपरिग्रह और वैष्णव की पर-पीड़ा हरण अर्थात् पराई पीड़ा की पहिचान दोनो आत्मालिंगन करने लगते हैं। इस अपरिग्रह की पराकाष्ठा का दूसरा नाम श्री है। अपरिग्रह मनुष्य को लोकोपकारी कार्यों से न केवल जोड़ता है लोक पीड़ा से तादात्म कराता है यही जैनत्व है।

वो विराट व्यक्तित्व ये थोड़े से शब्द

— श्री जयचन्दलाल कोठारी —

कहते हैं कुछ विशेष व्यक्तित्व ऐसे होते हैं जो जब देह त्याग देते हैं तो परिचित जनों की स्मृतियों में और प्रगाढ़ता से प्रविष्ट हो जाते हैं। ऐसा ही एक सुपरिचित नाम है भीनासर निवासी स्मृतिशेष सेठ श्री चम्पालालजी बांठिया का। यद्यपि वे नहीं रहे किन्तु अभी भी उनकी स्मृतियाँ इतनी जीवन्त हैं कि इस तथ्य को स्वीकारने को मन नहीं करता कि वे नहीं रहे।

गौरवर्ण सुघड़ नाकनक्श मँझोली कदकाठी और आकर्षक आकार प्रकार उन्हें प्रकृतितः प्राप्त था जिसमें अपनी शालीनता चातुर्य और व्यवहार कुशलता द्वारा उन्होंने चार चाँद और लगा दिये। पगड़ी युक्त विशिष्ट देशी परिधान और मोहक गन्धों का सामयिक प्रयोग उनकी पहचान बन गये थे। चालढाल की ठसक, बोलचाल का घरेलूपन और उठ बैठ की समझ ये सब देखने की थीं उनकी। एक भरीपूरी सुखी गृहस्थी और योग्य सन्ताने उनके पूर्वपुण्यों का प्रतिफलन थीं। श्री चम्पालालजी बांठिया बीकानेर के विशिष्ट गणमान्य नागरिक राजदरबार के सम्मान प्राप्त एवं प्रभावशाली व्यक्ति और समाज के मूर्धन्य सदस्य थे। केवल भीनासर ही नहीं सारा बीकानेर नगर उन्हें एक सेठ के रूप में जानता मानता था। स्थानकवासी जैन सम्प्रदाय उन्हें एक धर्मनिष्ठ सक्रिय श्रावक का मान और गौरव प्रदान करता रहा और रहेगा भी।

यद्यपि मेरा उनसे कौटुम्बिक सम्बन्ध रहा है अतः सौभाग्य से पुनःपुनः और अत्यन्त निकट से उनके साथ देखने मिलने के अवसर मुझे प्राप्त होते रहे हैं तथापि उनका शब्द चित्र बनाने और उस विराट व्यक्तित्व को उसाम दब से समो लेने के कार्य में मेरी लेखनी को बड़े सकोच और असामर्थता का सामना करना पड़ रहा है अतः अत्यल्प शब्दों द्वारा ही उनकी स्मृति को अपनी श्रद्धा भेंट करने का यत्न कर रहा हूँ।

वैसे मेरे और उनके मध्य वय का दीर्घ अन्तराल था किन्तु इस सत्य का आभास मुझे उन्हीं से हुआ कि वय केवल शरीर से सम्बन्ध रखती है चेतना की कोई उम्र नहीं होती। हर बार उनके अनुभवों में से कुछ न कुछ नई प्रेरणा और शिक्षा गाँठ बाँध कर ले जाने को प्राप्त होती रही। वे सेठ सिर्फ कहने भर के ही नहीं थे इस शब्द की पूरी गरिमा वे अपने आचार से प्रकट भी करते थे। उनसे मिलने का एक ऐसा आनन्द था जिसे गँवा देना चाहा नहीं जा सकता था।

होठो की मुस्कुराहट के बारे मे तो सभी जानते हैं किन्तु आँखे भी मुस्कुरा सकती हैं यह बात शायद सेठ साहब की सगत किये हुए लोग ही जान पाये होंगे। उनकी आकर्षक आँखे अद्भुत रूप से सदैव खिली खिली रहती थीं और बिलकुल लगता था कि स्नेह बिखेरते हुए हँस रही हैं। कुशलक्षेम पूछने का भी उनका एक अपना ढग था। एक दो वाक्यो मे ही लगता था कि पहले मिले तबसे आज तक की सब पूछ ली है। न्यून से न्यून शब्दो का नपेतुले ढग से प्रयोग करने म वे सिद्धहस्त थे।

कला के वे प्रेमी भी थे और मर्मज्ञ भी। उनके निवास का अवलोकन करने से यह तथ्य स्पष्ट हो जाता है। भीनासर स्थित अपने निवास के पत्थर पत्थर को उन्होंने अपने कलाप्रेम का प्रमाण बनाकर जड़वा रखा है। लक्ष्मी तो उन पर कृपालु थी ही सरस्वती ने भी उन्हे अपना स्नेहपात्र बना रखा था। पुस्तको का गम्भीर रूप से पठनपाठन उनका व्यसन था और विचारो को यथा योग्य रूप मे प्रस्तुत करने मे भाषा सदा उनकी सहचरी बनी रहती थी। बालदीक्षा के विरोध मे अपना मत विभिन्न शीर्षस्थो को पत्रो के माध्यम से उन्होंने इतने प्रभावी ढग से प्रस्तुत किया कि उनका विरोध मात्र विवशता बन कर रह गया था।

वे जीवन मे अन्याय से समझौता करके कभी नहीं चले उसका विरोध किया और जैसे करना चाहिये वैसे ही किया। कुछ लोगो ने शायद और अर्थ निकाला होगा और उन्हें मुकदमाबाज कहा होगा पर मेरी दृष्टि मे यह उनके चरित्र की एक विशेषता थी। न्यायालयो के द्वार खटखटाने मे अवश्य ही उनकी मानसिक शान्ति में विघ्न भी आये होंगे किन्तु यह मूल्य चुकाना भी उन्होंने स्वीकार किया और सत्य को उद्घाटित करते रहे। यह दृढ़ता उनकी असाधारणता की प्रतीक है।

उन्होंने जीवन को जिया और उसकी सम्पूर्णता के साथ जिया। श्वास का कष्टसाध्य रोग उनके शरीर को तो सताता रहा पर उनके मन को व्यथित नहीं कर पाया। वे चिन्ताओं और दुखो मे से भी सुख के क्षण ढूँढ लेते थे और फिर वही चिरपरिचित मुस्कुराहट उनकी मुखमुद्रा पर नाचने लगती थी। कभी भूले से भी उन्होंने अपने मुख को मन का दर्पण नहीं बनने दिया। उनके विचारो का अनुमान लगा लेना सहजशक्य न था। वे भाँप लेते थे पर भाँपे नही जा सकते थे। सच तो यह है कि वे एक ऐसी किताब की तरह थे जिसे पूरी पढ़ लेने का दावा कोई नहीं कर सका। □

—ओसवाल कोठारी मौहल्ला बीकानेर

पितृ-स्नेह प्रदाता

— श्री भूपेन्द्र बया —

जवाहर विद्यापीठ के संस्थापक आदरणीय बांठिया सा का नाम स्मृति पटल पर आते ही अनेक स्मृतियां मुखरित होने लगती हैं। छोटी सादड़ी के पन्द्रह साथियों सहित यहां सन् ४६ ४७ में अध्ययन के दौरान प श्री महेश चन्द्र जी व प श्री पूर्णचन्द्र जी दक की छत्रछाया थी। मेवाड़ से दूरस्थ इस छात्रावास में हमें अपने घर का वातावरण सहित आत्मीय स्नेह उपलब्ध था।

उन दिनों सेठ सा विद्यापीठ के दक्षिणी भाग की हवेली में विराजते थे और दिन मे दोनो समय यहा पधार कर सूक्ष्म निरीक्षण करते थे। हम किस प्रकार का खाना व दूध दिया जा रहा है इसे वे प्रत्यक्षत देखते थे। किसी प्रकार की कमी अनुभव होने पर इस सम्बन्ध म गृहपतिजी व रसोईये को आवश्यक निर्देश/आदेश फरमाते थे। रात्रि को भी एक बार पधार कर ध्यान रखते कि हम वास्तव मे अध्ययन कर रहे हैं या नहीं।

प्रति शनिवार रात्रि में आयोजित सभा में सेठ सा भी पधारते एव हमारे उत्साह में वृद्धि करते थे। यही नहीं किस प्रकार भाषण सगीत, कविता मनोरजन का कार्यक्रम रखा जाय एतदर्थ परामर्श भी प्रदान करते।

आज भी सेठ सा का स्मरण कर श्रद्धावनत हूँ। गरीबों के ये मसीहा थे किसी छात्र के पास यदि पर्याप्त वस्त्र बिस्तर आदि न होते तो अपने यहा से व्यवस्था करवाते। बच्चो को पितृ तुल्य स्नेह प्रदान करना तो उनका स्वभाव था।

सेठ सा की सरलता व आत्मीयता को स्मरण करने पर उनकी अनुशासन प्रियता भी नहीं भूल सकते। छात्र का दुःख-दर्द सुनने के लिए उनके द्वार सदैव खुले रहते परन्तु कोई भी अनुशासनहीन हो उन्हे बर्दाश्त न था। उनके व्यक्तित्व म ही एसा प्रभाव था कि हम अपनी मर्यादा में ही रहते।

ऐसे पितृ-स्नेह प्रदाता को शतश नमन। ईश्वर उनके परिजनों को प्रगति पथ में अग्रसर करता रहे। □

—शीतला माता मन्दिर

छोटी सादड़ी (राज)

अविस्मरणीय पूज्य काका साहब

— श्री हजारीमल बाँठिया —

पूज्य काका साहब श्री चपालाल जी बाँठिया से मेरा सम्बन्ध बचपन से रहा है। आज से लगभग पचास वर्ष पहले भाई श्री खेमचद जी सेठिया के साथ उनसे प्रथम बार मिला —जब मैं 'वीर पुत्र'बालोपयोगी मासिक पत्रिका (अजमेर) के सपादक-मडल मे था। मैंने भाई शाति को इसका ग्राहक बनाने के लिये अनुरोध किया तो तुरन्त शाति को बुलाया उसको पत्रिका का ग्राहक शुल्क देकर बना दिया। कई दिनो बाद मुझे पत्र लिख कर भेजा—'वीर पुत्र बराबर आता है —चि शान्ति को बहुत पसद आया है।' वह पत्र आज भी पूज्य काका साहब के हाथ का लिखा तिजोरी मे सुरक्षित रखा हुआ है। उनकी जागरूकता व सत्साहित्य के प्रति लगाव इससे स्पष्ट झलकता है।

वि स २००० मे हम लोगो ने भारतीय मित्र परिषद् का वार्षिक उत्सव सुप्रसिद्ध साहित्यकार श्री जैनेन्द्र कुमार जी की अध्यक्षता मे बीकानेर मे मनाया। स्वनाम धन्य सेठ 'बाबूजी' भैंरूदान जी सेठिया मुख्य अतिथि थे। स्वागताध्यक्ष थे श्री ज्ञानपाल जी सेठिया और प्राचीन वस्तुओं की प्रदर्शनी का उद्घाटन किया मेरे पूज्य मामाजी श्री अगरचदजी नाहटा ने। इस अवसर पर आयोजित 'मनोरजन सम्मेलन की अध्यक्षता पूज्य काका साहब ने की। काका साहब हम लोगो के इस भव्य कार्यक्रम से इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने दस हजार रूपये भारतीय मित्र परिषद् को देने की घोषणा कर दी जिसका मैं प्रधान मत्री था—भाई श्री माणकचद जी सेठिया अध्यक्ष थे।

कई दिनो बाद काका साहब ने मुझे भीनासर बुलाया और दस हजार रुपये ले जाने को कहा। मैंने विनम्रता से मना कर दिया-हम इनका क्या करेगे? उस वक्त तो हमारा विद्यार्थी जीवन है —यह सब काम शौक से कर रहे हैं —कुछ दिनों बाद पढ़ाई छोड़कर रोजगार धधे वास्ते — कहा चले जावेगे ठीक नही इन रुपयों की कौन देख भाल करेगा? सुप्रसिद्ध कथाकार और उपन्यासकार स्व श्री शभूदयाल जी सक्सेना जो हमारी परिषद् के परामर्शदाता थे—उनके परामर्श से हमने बालोपयोगी शिक्षाप्रद ट्रेक्ट माला प्रकाशित करने की योजना बनाई और पहली पुस्तक 'बालको के प्रश्न' प्रकाशित की जिसके लिये रु १५०) मैं काका साहब से लाया और उन्हे विश्वास दिलाया जैसे जैसे जरूरत होगी लेते जावेगे। ऐसे थे उदार मना काका साहब।

काका साहब सुधारवादी थे। उन दिनों तेरापंथी समाज में बाल दीक्षाएं विशेषकर होती थीं। निरे अबोध बच्चों को बहला-फुसलाकर साधु दीक्षा दे देते थे—फिर जब वे बड़े होते पचास प्रतिशत अपने घरों को लौट जाते थे। काका साहब उन दिनों बीकानेर एसेम्बली के एम. एल. ए. थे साथ में पू. लहरचंद जी सेठिया भी एम. एल. ए. थे। पूज्य काका साहब 'बाल दीक्षा' न हो इस के विरोध में एक बिल का प्रस्ताव एसेम्बली में लाये जिसको समस्त भारत में व्यापक समर्थन मिला—सभी शिक्षा विदों एवं न्याय विदों ने इसके पक्ष में राय दी। जन जागरण हुआ—तेरापंथी समाज में विशेषकर खलबली मच गई। मुझे वे दिन अच्छी तरह याद हैं। काका साहब पर जगह जगह से तेरापंथियों के दबाव आये वे इस बिल को वापिस करलें। किन्तु वे अडिग रहे। एसेम्बली में पूरा समर्थन मिला वह बिल पास हो जाता किन्तु महाराजा बीकानेर को तेरापंथी समाज ने येनकेन प्रकारेण प्रभावित कर लिया था। दीवान साहब के विशेष अनुरोध पर उनको यह बिल वापिस लेना पड़ा। दीवान साहब ने पूज्य काका साहब की सूझ-बूझ और कानून की जानकारी की प्रशंसा की और कहा —बाँठिया साहब नैतिक विजय तो आपकी हो गई है चाहे बिल पास एसेम्बली में न हो सका। इस बिल के कारण तेरापंथी समाज में भी जागृति आई और अब तो पूरा परिपक्व ज्ञान होने पर ही इस समाज में दीक्षायें होती हैं। यही कारण है कि आज इस समाज में बड़े बड़े मनीषी विद्वान हैं और जैनाचार्य श्री तुलसी ने अपने समाज और समस्त भारतीय समाज को नई दिशा दी है।

काका साहब शिक्षा प्रेमी एवं समाज सेवी थे। पूज्य आचार्य श्री जवाहरलालजी महाराज साहब की अंतिम दिनों में काका साहब ने जो सेवायें अर्पित की वह सदा स्मरणीय रहेगी। महाराज साहब के स्वर्गवास के बाद 'जवाहर विद्यापीठ' की स्थापना भीनासर में की और जवाहर किरणावली के नाम से अनेक पुस्तकों का प्रकाशन किया। भीनासर में स्थानकवासी साधु-सम्मेलन आप ही की पूर्ण निष्ठा एवं लग्न के कारण सफल हुआ। मुझे वह दिन भी याद है जब काका साहब जैन गुरुकुल ब्यावर के वार्षिक उत्सव में अध्यक्ष के नाते पधारे थे। उन दिनों पू. जवाहर लाल जी महाराज साहब की सम्प्रदाय में बीकानेर राज्य में दो ही प्रमुख स्तम्भ थे —पूज्य बापूजी (भैरूदान जी सेठिया) और काका साहब।

पिछले अनेक वर्षों से उत्तर-प्रदेश में प्रवास के कारण काका साहब से सम्पर्क कम होता गया। किन्तु पिछले दशक से 'बाँठिया डाइरेक्टरी' के कारण काका साहब से कई बार मिलना हुआ। उनको बड़ी प्रसन्नता हुई—भारत के समस्त बाँठिया परिवार का

इतिहास लिखा जा रहा है। मैंने उन्हे बताया समस्त भारत मे बाँठिया गौत्र के सख्या मे घर एक हजार से अधिक नहीं है किन्तु इस गौत्र के घरो की विशेषता है—जहा भी हैं वे अपने गाव मे प्रमुख हस्ती हैं। अपना विशेष प्रभाव रखते हैं। उदार वृत्ति के हैं। अपने समय के दानी और शूर वीर जगदेव पवार के वशज हाने के नाते इस गौत्र मे दान देने की उदारता है। अमर शहीद अमरचदजी बाँठिया के बलिदान दीवान जसवतसिंह जी बाँठिया के प्रशासकीय गुणो श्री कस्तूरमल जी बाँठिया की लेखनी को समस्त भारत नहीं भुला सकता। समस्त ओसवाल समाज मे ७७ दानवीर अब तक हुए हैं जिनमे भुजनगर वासी तेजपाल बाँठिया का भी नाम है। पूज्य काका साहब ने बताया —'हमारे पूर्वज भी बाहर से आकर भीनासर मे बस गये थे। छत्ते के व्यापार मे हमारा फर्म भारत मे 'मौजीराम पन्नालाल' अग्रणी था। भीनासर की पक्की सड़के भाई जी कानीराम जी ने बनाये थे। वे आगमो के ज्ञाता थे एव साधु-साध्वियो को पढ़ाते थे।

एक दिन काका साहब ने बताया—मैं भाग्यशाली रहा। मुनीम व भागीदार मुझे अच्छे मिले। मेरी बीसो दुकाने बगाल आसाम व बीकानेर मे भी रही। सभी ने मुझे कमा कमा कर दिया। मैं कभी व्यापार करने नहीं गया। सब फर्मो के रोजनामचे यहा आते रहते हैं उन्हीं से मैं वहीखाता स्वय बनाता हूँ। महाजनी वहीखातो का मैं पूरा मास्टर हूँ।

अतिम दिना मे मैं उनसे कलकत्ता मे भाई शातिलाल के घर मिला था। पीछे भीनासर मे जब वे रविवार को दूरदर्शन का कार्यक्रम चि सुमति के साथ देख रहे थे।

पूज्य काका साहब बड़े निर्भीक सुलझे हुए विचारो के उदारतावादी मानव थे। whos and who पुस्तक जिसमे भारत के अग्रणी पुरुषो के परिचय छपते हैं मे काका साहब को आदर भाव से स्मरण किया है। मुझे यह जानकर प्रसन्नता है चि सुमति भी उनकी यश पताका को फहराने में अग्रणी होकर कार्य कर रहा है। □

—५२/१६ शकरपट्टी कानपुर (उ.प्र) २०८००१

चतुर्विध सघ के जागरूक प्रहरी

— श्री मिट्ठालाल मुरड़िया, 'साहित्यरत्न —

समाज म कुछ व्यक्ति बड़े ही प्रभावशाली होते हैं, जो अपनी आन बान और शान के साथ जीते हैं, अपनी मर्यादाओं अपने सकल्पा और उद्देश्यों की पूर्ति के लिए जीवन-सग्राम में सदा आगे रहते हैं। प्रामाणिकता सचाई और न्यायनीति पर चलते हुए वे अपना जीवन पवित्र और मगलमय बनाते हैं। ऐसे व्यक्ति दृढ निश्चयी होते हैं सकटों और बाधाओं से नहीं घबराते और हिम्मत नहीं हारते हैं बल्कि अपने साहस और आत्मशक्ति से मुकाबला कर सफलता प्राप्त करते हैं। ऐसे ही कर्मशील और धर्मशील व्यक्तियों में भीनासर (बीकानेर) निवासी स्वनाम धन्य श्री चम्पालाल जी बाँठिया का स्थान सर्वोपरि है। वे समाज और धर्म के रगमच पर बड़े ठाठ प्रसन्नता और हर्षोल्लास के साथ आये जीये और उसी ठाठ के साथ मुस्कराते हुए चल दिये।

विशिष्ट व्यक्तित्व के धनी

श्री बाठिया जी विशिष्ट व्यक्तित्व के धनी थे। उनका प्रभावशाली और आकर्षक व्यक्तित्व गत ५० वर्षों तक समाज पर छाया रहा वे जीवन के गहरे पारखी प्रतापी पुरुष एव चतुर्विध सघ के जागरूक प्रहरी थे। उनका बुद्धिबल अनूठा था वे विचक्षण बुद्धि के विवेकवान धैर्यवान और प्रभावशाली व्यक्ति थे। इन्ही गुणो के कारण वे लम्बे समय तक समाज के सम्माननीय बने रहे और अपनी निरन्तर सेवा देते रहे। उनके व्यक्तित्व का निर्माण धर्म के अनूठे उपादानो, न्याय के पावन स्रोतो दृढ़ता के अनन्य भावों, प्रेम और एकता के अनुरागों और कल्याण के अनुपम सकल्पों से हुआ था। वे समाज और धर्म की हस्ती एव दीनों के दर्द निवारक स्तम्भ थे। इतिहास में उनके जैसी चमकवाला व्यक्तित्व ढूढने पर ही मिलेगा।

गौरवशाली पुरुष

श्री बाँठियाजी समाज के गौरवशाली पुरुष थे। उन्हें अधिक बोलना पसन्द नहीं था किन्तु बड़े प्रेम के साथ सभी की बात सुनते थे। जब वे एक बार किसी बात का दृढ़ निश्चय कर लेते थे तब फिर कोई ताकत उन्हें विचलित नहीं कर सकती थी। उनका आत्म विश्वास बड़ा प्रबल था वे गम्भीर प्रकृति के शान्ति और सतोष-प्रिय व्यक्ति थे।

उनकी वाणी मे माधुर्य था उनके व्यक्तित्व मे एक ओज एक तेज एव आकर्षण ही नहीं एक प्रेरक प्रभाव भी था। अपनी चिर परिचित वेशभूषा म वे सदा चतुर्विध सघ में पहिचाने जाकर आदर पाते रहे। सच पूछा जाय तो उनका जीवन बड़ा व्यवस्थित, सतुलित सयमित और सुन्दर था।

उनमे जीवन जीने की एक अद्भुत कला थी। वे कला और सौंदर्य के पारखी तथा साहित्य के उपासक थे। समाज के हित चिन्तन मे वे कभी पीछे नहीं रहे और कभी किसी पर अवलम्बित नहीं बने। धर्म और समाज के लिए उनका महत्वपूर्ण योगदान सदैव स्मरणीय रहेगा। वे बाँठिया परिवार के यशस्वी पुरुष थे। विद्वानो के प्रति उनके दिल मे आदर भाव था वे जो कहते थे कर दिखाते थे उनके लिए कोई कार्य असभव नहीं था। उनकी दृढ़ता का सिक्का सभी ने स्वीकार किया था जब तक इस धरा पर जैन समाज रहेगा तब तक उनकी कीर्ति-कथा अमर रहेगी।

अलकृत होते रहे

उनके सम्मुख साधु सम्मेलन हुआ ब्यावर गुरुकुल का अधिवेशन हुआ भीनासर सम्मेलन हुआ जवाहर विद्यापीठ का सचालन आया चतुर्विध सघ की समस्याए उभरी किन्तु इस दूरदर्शी व्यक्तित्व ने सभी समस्याओं का समाधान अपनी विवेक बुद्धि से किया और ससम्मान अपने पदों को बेदाग अलकृत करते रहे। यह अपने आपमें एक बहुत बड़ी उपलब्धि है।

मित्रो के सत्सग से सन्तो के समागम से ज्ञानियो से विद्वानो से तत्त्व चिन्तको से वकीलों से और समाज के अग्रगण्यो से बहुत कुछ सीखकर लाभान्वित होते रहे।

माननीय श्री भैरोदान जी सेठिया श्री सतीदासजी तातेड़ श्री हनुमतमल जी सेठिया आदि से परामर्श कर ही किसी काम मे हाथ डालते थे।

उनका चमकता हुआ चेहरा सुन्दर सुसज्जित उनकी ठेठ पारम्परिक पगड़ी, धोती उनका आचार-विचार जैन सम्मत और जैन सस्कृति के प्रतीक थे। अपनी कार्य कुशलता सेवा मृदुता मैत्री और सौजन्य के माध्यम से भीनासर गगाशहर और बीकानेर के वे लब्धप्रतिष्ठित नागरिक बन गये थे।

स्वभाव में समता की सौरभ

श्री बाठियाजी स्वभाव से बड़े सरल और स्वाभिमानी व्यक्ति थे उनमे सौजन्य मैत्री प्रेम एकता कूट-कूट कर भरी हुई थी। वे आधुनिक युग की सभी बुराइयों और बीमारियों से बचे हुए एक आदर्श श्रावक थे।

उनमे समता की सौरभ थी, दया की महक थी करुणा की आर्द्रता थी क्षमा की मधुरता थी वे जागृत थे और जीवन भर जागृत रहे पचासो को उन्होंने जगाया बनाया और समृद्धि के द्वार तक पहुँचाया। उनकी बैठक मे लगा मुनि श्री शान्ति विजय जी का फोटो भी महत्वपूर्ण रहा है।

आचार्य श्री जवाहर के अनन्य भक्त

आचार्य श्री जवाहर के वे अनन्य भक्त थे उनकी भक्ति भावना सच्ची और निस्वार्थ थी। जवाहराचार्य के सम्पर्क म आने के बाद भी बाठिया जी का जीवन ही बदल गया था। उनके दिल मे दया और करुणा का उद्रेक हो गया था। धर्म मे उनकी सच्ची लगन थी सभी उपलब्ध वैज्ञानिक उपलब्धियों का उपयोग करते हुए भी वे सच्चे मानव और मानवता के पुजारी थे। वे जीवन भर निर्भीक रहे, और सभी को निर्भीकता का पाठ पढ़ाते रहे कभी किसी सदेह से आक्रान्त नहीं हुए। वे कान की अपेक्षा आँख पर अधिक विश्वास करते थे।

अध श्रद्धा अधभक्ति और आडम्बर के खिलाफ वे लड़ते रहे जूझते रहे और अपने अदम्य उत्साह से सफलता प्राप्त करते गये। उनके कार्य क्षेत्र पर उनकी प्रखर बुद्धि अनुभव और आत्म विश्वास शखनाद करता हुआ उन्हें गौरवान्वित करता रहा।

उनकी जिन्दगी के कई प्रसग आज भी मेरे प्रेरणा स्रोत बने हुए हैं।

सच्चे गुणग्राही

आधुनिक जैन समाज के निर्माण म उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही है। जवाहर साहित्य पर उन्हें श्रद्धा थी उसके प्रचार-प्रसार के लिए उन्होंने काफी प्रयत्न किया था।

कानोड़ के प पूर्णचन्दजी दक दिल्ली के डा इन्द्रचन्दजी शास्त्री और ब्यावर के प शोभाचन्दजी भारिल्ल पर उनकी श्रद्धा थी इनके परामर्श से ही धार्मिक कार्यों म भाग लेते थे।

देश की बदलती हुई परिस्थितियों का भी उन्हे गहरा ज्ञान था। वे गुणग्राही थे और स्वय गुणी बन गये थे।

रतलाम के श्री वर्धमानजी पीतलिया जयपुर के श्री दुर्लभजी जौहरी बम्बई के श्री T G शाह बरेली के श्री रतनलाल जी नाहर मद्रास के श्री इन्द्रचन्दजी गेलड़ा बम्बई के श्री चिम्मनलाल चकुभाई शाह और अपने बड़े भ्राता का श्री बाठिया जी के जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ा।

उनका [illegible]रिक जीवन बड़ा सुखी था, सर्वत्र सद्भावना और सौहार्द था। श्री बाठियाजी जिस व्य[illegible] पर एक बार विश्वास कर लेते थे, जीवन भर उस व्यक्ति पर उनका विश्वास बना रह[illegible] आज वे नहीं हैं किन्तु उनके जीवन की सौरभ सर्वत्र फैली हुई है।

कुछ समय पहले [illegible]र के फिलोमिना हॉस्पिटल मे—मैं उनसे मिलने गया था, वे अस्वस्थ थे न मैं उन्हे [illegible]ान सका न वे मुझे। कुछ ही क्षणो बाद पहचान की धुधली स्मृति हटते ही बिना [illegible] ही दोनो ओर से अश्रु धारा बह चली। यह था उनके जीवन का सच्चा और बोलता [illegible] मर्म स्पर्शी जिसे कभी नहीं भुलाया जा सकेगा। □

[illegible]ी ह मु जैन छात्रावास न २० प्रीमरोज रोड बैंगलोर-२५

समन्व[illegible]एव प्रगति के उद्घोषक

— श्री मान सिंह वैद —

[illegible]जी साहब जैन धर्म के इतिहास मे समन्वयवाद की शृखला की ए[illegible] बहुत तत्वज्ञानी थे अपने गहन चिन्तन मनन से वे इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि [illegible] नहीं है साम्प्रदायिकता बुरी है।

[illegible]ीर के अनुयायी हैं हमारा मत्र एक है हमारा लक्ष्य एक [illegible]लकनी चाहिये। रूढिवादिता उन्हे कतई पसन्द नहीं [illegible]हण ऋजुता उनके उदय का रहस्य था और उनका [illegible] का हेतु था। उनकी जीवनी से हमे इस शृखला □

—सागर भवन १४७ प्रिन्सेस स्ट्रीट बम्बई २

कुशल व्यापारी एव समाज सुधारक बाठियाजी

— डॉ गिरिजा शकर शर्मा —

१९वीं सदी के सातवें दशक के पश्चात-राजस्थान में भी समाज सुधार की दिशा म प्रयत्न प्रारम हो गये थे। मेवाड मे देश हितकारिणी सभा ने जहा राजपूत ब्राह्मण व महाजन जाति में विवाह सम्बन्धी कुरीतिया को दूर करने के लिये अनेक नियम बनाये। तदनन्तर कुछ समय पश्चात अग्रेज अधिकारी वाल्टर के प्रयत्नो से विवाह को लेकर राजपूतो मे जो कुरीतिया प्रचलन मे थी, उनम सुधार करने का प्रयत्न किया गया।[1] इसी समय राजस्थान में स्वामी दयानन्द ने जिस प्रकार से आर्य समाज का प्रचार किया उससे सामाजिक कुरीतियो के विरोध मे जनजागरण फैला करने में बड़ी सहायता मिली। २०वीं सदी आते-आते आवागमन के साधनो के विकास के साथ राजस्थान से निष्कमण करने वाले मारवाड़ियो की सख्या बढ़ने लगी तथा दूसरी और अग्रेजी भारत से पढ़े लिखे लोग अच्छे रोजगार के लालच में राजस्थान के राज्यों में अबाध गति से आने लगे। निष्कमण किये हुए व्यापारियों और अग्रेजी भारत से राज्यों में आने वाले पढ़े-लिखे लोगो पर देश मे चल रहे समाज सुधार का व्यापक प्रभाव पड़ रहा था। इसका परिणाम था कि राजस्थान मे समाज सुधार के लिए जनसाधारण भी प्रयास करता नजर आने लगा।[2] इस पत्र में मैं उन मारवाड़ी व्यापारियो की जानकारी दे रहा हूँ, जिन्होने समाज सुधार की दृष्टि से क्रान्तिकारी कार्य किये। राजस्थान में प्राय सभी राज्यों में अनेक मारवाड़ी व्यापारी हुए हैं जिन्होने अपने-अपने समाज में बाल विवाह वृद्ध विवाह बाल दीक्षा ओसर-मोसर का विरोध व विधवा विवाह व अन्तर्जातीय विवाह आदि के लिये प्रयत्न किये थे। उन सबका यहा वर्णन करना सभव नहीं है। अत यहाँ हम केवल बीकानेर से सम्बन्धित स्वतन्त्रता पूर्व के मारवाड़ी व्यापारियों द्वारा समाज सुधार की दिशा मे किये गये प्रयत्नों पर प्रकाश डालेंगे।

अग्रेजी भारत में रहकर जब राज्य का व्यापारी अपने मूल राज्य में आता और अपने समाज में व्याप्त कुरीतियों को देखता तो उसकी इच्छा होती कि अंग्रेजी भारत की भाति यहा भी इन परम्परागत रूढ़ियों म कुछ सुधार होने चाहिये।[3] यहा यह उल्लेखनीय है कि इस सोच के सभी मारवाड़ी नहीं थे बल्कि इनकी सख्या गिनती की ही होती थी। बीकानेर में महाजन जाति के इन मारवाड़ी व्यापारियों में सेठ रामकृष्ण मोहता सेठ

बालचन्द मोदी, सेठ रामगोपाल मोहता सेठ श्री कृष्णदास जाजू, सेठ चम्पालाल बाठिया सेठ खूबराम सर्राफ आदि के नाम उल्लेखनीय थे।

बीसवीं सदी के दूसरे दशक के पश्चात् अपनी-अपनी जातियो यथा ओसवाल माहेश्वरी अग्रवाल व सरावगी आदि मे मारवाड़ियो ने समाज सुधार की दृष्टि से कुछ प्रयत्न किये फिर भी स्वजाति के विरोध के फलस्वरूप उन्हे सफलता नहीं मिली। किन्तु राज्य का मोहता परिवार स्वजाति बन्धुओं के विरोध के बावजूद समाज सुधार से विमुख नहीं हुआ। सन् १६२३ मे जयपुर राज्य के बिड़ला परिवार के एक सदस्य सेठ रामेश्वरदास बिड़ला ने अपनी पूर्व पत्नी के स्वर्गवास होने पर खुर्जा निवासी श्री बालमुकन्द झँवर की पुत्री के साथ दूसरा विवाह कर लिया। श्री झँवर कोलवार जाति से सम्बन्धित थे। इस विवाह सम्बन्ध से माहेश्वरी समाज मे एक सामाजिक आन्दोलन शुरू हो गया। समाज का एक वर्ग कोलवारो को डीडू माहेश्वरी नही मानता था। उस पक्ष ने बिड़लाओं और उनके साथ सम्बन्ध रखने वालों के सामाजिक बहिष्कार का प्रचण्ड आन्दोलन आरभ कर दिया। उसने धीरे-धीरे देश व्यापी-सघर्ष का भयानक रूप धारण कर लिया। कलकत्ता मे इस सघर्ष को माहेश्वरी जाति की पचायत और सघ के कलह का भीषण रूप दे दिया तथा उनके नाम से सारा माहेश्वरी समाज दो दलो मे बँट गया। कोलवारो को दोनो ही पक्ष माहेश्वरी मानने को तैयार नहीं थे और उनके साथ विवाह सम्बन्ध रखने के कारण बिड़लाओं का सामाजिक बहिष्कार किया हुआ था। किन्तु बिड़ला परिवार ने इस आन्दोलन की कोई परवाह नहीं की।[४] ऐसे समय में बीकानेर के मोहता परिवार ने बिड़लाओं से विवाह सम्बन्ध करके समाज की परवाह नहीं की। इसके पश्चात् सन् १६२७ मे पढरपुर में अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी सम्मेलन मे, जिसकी अध्यक्षता स्वय रामगोपाल मोहता ने की थी अन्य माहेश्वरी बन्धुओं यथा सेठ गोविन्ददास मालपाणी व सेठ बृजलाल बियाणी आदि के सहयोग से श्री मोहता ने माहेश्वरी समाज मे उठे कोलवार आन्दोलन को जिसमे कोलवारो से अन्तर्जातीय विवाह का विरोध चल रहा था, समाप्त करने के लिये कोलवारो के माहेश्वरी होने की घोषणा करके उनके साथ रोटी-बेटी को वैध करार दिया गया। कोलवारों के अलावा गुजरात तथा दक्षिण भारत मे रहने वाले सभी माहेश्वरियों के साथ रोटी-बेटी का सामाजिक व्यवहार खोला गया जो किसी कारण से पूर्व में बन्द हो गया था।[५]

कुछ समय पूर्व ही श्री रामगोपाल मोहता की धर्मपत्नी का देहान्त हो गया। उस समय श्री मोहता की अवस्था ५० वर्ष की थी। अत घर वालो का दबाव था कि कोई सन्तान न होने के कारण उन्हें पुनर्विवाह कर लेना चाहिये। इस पर विधवा विवाह के

पमघर श्री मोहता ने अपने छोटे भ्राता मूलचन्द मोहता जिसकी मृत्यु कुछ समय पूर्व हो गई थी की विधवा से विवाह करने की इच्छा प्रकट की। घरवाला की तरफ से उनका कोई विरोध नहीं हुआ और यह विवाह सम्पन्न हो गया। माहेश्वरी समाज में समवत यह पहला विधवा विवाह था। श्री मोहता विवाह करके ही सन्तुष्ट नहीं हुए उन्होंने मारवाड़ी समाज मे विधवा के जीवन का सही चित्रण करते हुए 'अबलाओं का इनसाफ' नाम से पुस्तक का प्रकाशन किया और उसे लोगो तक पहुचाने के लिये इलाहाबाद से निकलने वाले चाँद में छपवा दिया। यहा यह उल्लेखनीय है कि चाँद के सम्पादक श्री रामरखसिंह सहगल श्री मोहता के मित्र थे। चाँद के इस अक की मारवाड़ी विशेष रूप से कलकत्ता के लोगों में तीव्र प्रतिक्रिया हुई। कलकत्ता के समाचार पत्रों मे श्री रामगोपाल मोहता और चाँद के सम्पादक के विरुद्ध अत्यन्त रोषपूर्ण और उत्तेजनापूर्ण लेख प्रकाशित हुए। चाँद पत्रिका का मारवाड़ियो ने बहिष्कार कर दिया। श्री मोहता के फोटो जलाये गये और जब चाँद के सम्पादक कलकत्ता गये तो उन पर हमला किया गया। राजनैतिक नेताओं यहा तक कि महात्मा गाधी से भी चाँद के इस अक के विरुद्ध फतवा जारी करवाया गया। सरकार पर भी इस अक को जब्त करने के लिये जोर डाला गया जिसमे उन्हें सफलता नहीं मिली। पुस्तक की बिक्री पर इस सारे आन्दोलन का यह प्रभाव पड़ा कि पहला सस्करण हाथो हाथ बिक गया और दूसरा भी छपकर तैयार हो गया। इस अक में सत्य घटनाओं के आधार पर विधवा महिलाओं पर होने वाले वीभत्स व गुप्त अत्याचारो की कहानी अत्यन्त करुण शब्दो म दी गई थी।[६]

श्री रामरखसिंह सहगल ने मारवाड़ियों की सामाजिक स्थिति का और अधिक भयानक चित्र खेंचने हेतु सन् १९२९ मे चाँद का मारवाड़ी अक निकाल दिया। कहा जाता है कि इसकी सामग्री जुटाने में श्री मोहता का हाथ था। इस अक का भी मारवाड़ी समाज में भयकर विरोध हुआ। समाज म श्री मोहता पर चाँद से अपने सम्बन्ध तोड़ लेने के लिये काफी दबाव डाला गया। किन्तु श्री मोहता इसके लिये तैयार नहीं हुए। उन्होंने इसके बाद अपने पुत्र के विवाह के अवसर पर चाँद के सम्पादक श्री रामरखसिंह सहगल को पाच हजार रुपये देकर मदद की।[७]

माहेश्वरियो की भाँति ओसवाल समाज में भी अनेक लोग हुए जिन्होंने समाज मे आई कुरीतियों को दूर करवाने का प्रयत्न किया।[८] बीकानेर राज्य में भी राजस्थान के अन्य भागों की भाँति जैन श्वेताम्बरों के कुछ पक्षों में 'बाल दीक्षा' देने की परम्परा रही है। इनमें तेरापथी सम्प्रदाय अग्रणीय रहा है। धनाढ्य लोगो के इस वर्ग म अनेक लोग बाल दीक्षा के विरोधी हो गये और समाज में एक कुरीति मानते हुए इस प्रथा को

समाप्त करवाने हेतु बहुत प्रयत्न किया। सन् १६४२ मे चुरू नगर मे २८ नाबालिग भाई बहिनो की जैन धर्म के तेरापथ सम्प्रदाय की रीति-नीति के अनुसार 'बाल दीक्षा' देने का कार्यक्रम बनाया। जब इस वर्ग के कुछ समाज सुधारको को इसकी जानकारी मिली तो उन्होंने इसका विरोध किया। इसमे फतैपुर (जयपुर) के सेठ सोहनलाल दूगड व बीकानेर के सेठ चम्पालाल बाठिया का नाम उल्लेखनीय था। श्री सोहनलाल दूगड ने महाराजा बीकानेर को एक प्रकाशित पत्र लिखकर भेजा और उसमे अपील की गई कि इन अशिक्षित बच्चों पर होने वाले इस अत्याचार को रोका जाये। इस पत्र मे उन्होंने पहले प्रचलित बाल दीक्षा व वर्तमान मे होने वाली बाल दीक्षा की कमिया को बतलाते हुए इस कार्यक्रम को रोकने की हमेशा के लिये अपील की।[६]

श्री चम्पालाल बाठिया जो बीकानेर राज सभा के सदस्य भी थे ने सन् १६४३ मे 'बाल दीक्षा पर राज्य मे प्रतिबन्ध लगवाने के लिये 'बाल दीक्षा प्रतिबन्धक बिल राजसभा बीकानेर मे प्रस्तुत किया। इसके लिये उन्होंने बाल दीक्षा के विरोध मे काफी प्रचार-सामग्री प्रकाशित की। इस दृष्टि से उनके द्वारा प्रकाशित करवाई गई 'बाल दीक्षा विवेचन उल्लेखनीय थी।[१०] इस पुस्तक मे श्री बाठिया ने 'बाल दीक्षा देने की विधि-विधान पर चर्चा करते हुए साधु बनाने के कानूनी पक्ष पर भी विस्तार से प्रकाश डाला। सेठ चम्पालाल बाठिया द्वारा प्रस्तुत बिल की देश भर में प्रतिक्रिया हुई। बिल के पक्ष और विपक्ष मे आन्दोलन छिड़ गया। इस बिल को राज सभा मे शीघ्र पास करवाने के लिये प श्यामा प्रसाद मुकर्जी व श्रीमती विजयलक्ष्मी पण्डित ने तार द्वारा अपना समर्थन भेजा।[११] इसी भाति अनेक लोगो ने बाल दीक्षा के पक्ष में बुकलेट छपवाकर प्रचारित करवाई।[१२] देश भर के अग्रेजी और हिन्दी के समाचार-पत्रो ने पक्ष व विपक्ष मे समाचार प्रकाशित किये।[१३] अन्त मे जब १६४४ मे बिल पर बहस करने का समय आया तो तेरापथ के अनेक लोग राज्य के शासक से मिले और धार्मिक हस्तक्षेप न करने हेतु बिल पास न करने की अपील की। परिणाम स्वरूप महाराजा के इस प्रकार के आश्वासन दे दिये जाने के कारण यह बिल पास न हो सका।[१४]

इसके अतिरिक्त स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् तो मारवाड़ी समाज मे समाज सुधार की दिशा मे अनेक कदम उठाये गये जिनमे मारवाड़ी व्यापारियो के सगठना का सर्वाधिक योगदान रहा। इस प्रकार स्वतन्त्रता पूर्व बीकानेर राज्य के सेठ साहूकारो ने समाज सुधार के सम्बन्ध मे उपरोक्त वर्णित जो प्रयत्न किये उनके बड़े दूरगामी परिणाम निकले।

सन्दर्भ

१ डॉ एम एस जैन—आधुनिक राजस्थान का इतिहास पृ २४७-८०

२ डॉ गिरिजा शकर शर्मा—मारवाड़ी व्यापारी आर्थिक एव सामाजिक विश्लेषण पृ १११ ११२

३ सन् १९०७ में शुरू में स्वामी गोपालदास द्वारा स्थापित सर्व हितकारिणी सभा को स्थापित करने में राज्य के मारवाड़ी व्यापारियों का सर्वाधिक योगदान था। देखें —गोविन्द अग्रवाल जन सेवक स्वामी गोपालदासजी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व पृ ४६ ६५

४ भानपुरा से निकले माहेश्वरी जाति के इतिहास में कोनवार आन्दोलन की विस्तार से चर्चा मिलती है।

५ सत्यदेव विद्यालंकार—एक आदर्श समत्व योगी पृ ४६ ५४

६ वही पृ ८७

७ वही पृ ८८

८ अगर हम जैन धर्म के श्वेताम्बर सम्प्रदाय के समय-समय पर होने वाले विभाजन का अध्ययन करें तो पता चलता है कि प्रत्येक विभाजन जैन धर्म की कठोरता से छुटकारा पाने के उद्देश्य से हुआ। इसके अतिरिक्त अगर हम जैनों में महात्मा जाति का विश्लेषण करें तो यह जैन जाति में सुधार आन्दोलन का प्रतीक माना जा सकता है।

९ महाराजा बीकानेर से अपील-लेखक श्री सोहनलाल दूगड़ दिनांक २६ १० १९४२ (कल्याण प्रेस सीकर में मुद्रित)

१० बाल दीक्षा विवेचन लेखक प इन्द्रचन्द्र शास्त्री प्रकाशक चम्पालाल बांठिया मार्च सन् १९४४ (कलकत्ता)

११ वही

१२ इस बिल के विरोध में लिखी जाने वाली पुस्तक में 'बाल दीक्षा और जैनागम' लेखक श्री चन्द रामपुरिया प्रकाशक श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा २०१ हरिजन रोड कलकत्ता उल्लेखनीय थी।

१३ इस बिल की देश के जिन समाचार पत्रों में चर्चा हुई उनमें नेशनल काल दिनांक १५ ६ १९४४ हिन्दुस्तान टाईम्स दिनाक १७ जून १९४४ वीर अर्जुन १७ जून १९४४ १३ अगस्त १९४४ २६ अगस्त १९४४; दैनिक विश्वमित्र २४ अगस्त १९४४

१४ होम डिपार्टमेन्ट बीकानेर १९४४ न VII पृ ११०३ (रा रा अ बी)

□

—सहायक निदेशक

राज राज्य अभिलेखागार बीकानेर

गागर मे सागर

— श्री अन्नाराम सुदामा' —

मैं जब पहुँचा तो वे अपनी बही मे कुछ लिख रहे थे—बड़ी तन्मयता से। अकेले ही थे। उनके चारो ओर नीरवता बिखरी थी। सहसा पद चाप का कुछ आभास पा आँखे उनकी ऊपर उठी। चार मिले चौंसठ खिले की सुखद छाया मे राम-रमी हुई उनसे। चश्मा उतार कर उन्होंने एक ओर रख दिया बड़े सहज भाव मे बोले पधारो माट्साब विराजो।

मैं एक ओर बैठ गया।

होठ उनके फिर खुले 'सुनाओ कोई नई-जूनी ?

कुछ सकोच और सदाशय मे मैंने कहा 'नई तो साब इस समय ध्यान मे कोई है नहीं और जूनी आप मेरे से अधिक जानते हैं क्या सुनाऊँ ?

'सुनाने मे भी कजूसी तो देने मे तो आपसे कोई क्या निकलवाले ? और इसके साथ ही एक सहज हँसी उनके होठो पर उछलती कमरे के आकाश मे फैल गई।

'सुनाने की तो लाचारी ही समझे हाँ आपसे कुछ सुनने की इच्छा इस समय जरूर प्रबल हो रही है—समय दे सके तो।

गाड़ी चलती है तब तक तो समय ही समय है फरमावो क्या सुनाऊँ ? और मुस्कराहट उनके होठों पर फिर अपनी पूरी लम्बाई मे फैल गई।

'इस समय आयु आपकी ?

'बयासी ही समझो आप।

इस उम्र मे भी लिखा-पढ़ी करते हैं ?

'आप देख ही रहे हैं कर तो रहा हूँ। अपने काम को खुद जैसा भरोसेमद और सन्तोषप्रद मुनीम-गुमाश्ता कोई क्या करेगा ?

शरीर पूरी तरह स्वस्थ है ?

'दमे की बीमारी है आज की नहीं बहुत पुरानी पर है उसके लिए चिन्ता करने मे मुझे विश्वास नही विश्वास है उसके इलाज मे। दवा लागू पड़ गई है समय पर वह

ले लेता हूँ, सावधानी भी रखता हूँ, बीमारी हावी नहीं होती—दबी रहती है अंधे को दो आँखें चाहिए अपना काम निकल जाता है—बस इतना बहुत है।'

असाध्य बीमारी को लेकर आखिर चिन्ता तो कुछ रहती ही होगी ?

'एक सोखता तो पैंठी बैठी है घर मे पहले से ही, चिन्ता कर दो चार नई और न्योतू, क्या निकालू इस समझदारी में सकूगा कितने दिन ? और एक हल्की-सी हँसी और नाच उठी उनके होठो पर।

'केस-मुकदमे भी तो आपके यदा-कदा चलते ही रहते हैं उनकी परेशानी तो कुछ रहती ही होगी ?'

'हाँ चलते हैं वे भी' हार-जीत भी होती ही है उनमे, व्यापार भी करते हैं, घाटा-मुनाफा भी होता ही है पर मैं हार-जीत और घाटे-मुनाफे को न साथ लेकर ही सोता और न वश पड़ते उन्हे अपनी थाली पर ही बैठने देता। हाँ अनुकूलता के लिए कोशिश करने में अपनी ओर से पाछ कोई रखता नहीं। क्या होगा की चिन्ता ओढना न मुझे आता और न सुहाता।

'घर में कभी तनाव ?'

'अपनी सन्तान अपनी पत्नी, अपनी बहुएँ पराया कोई है नहीं, तनाव फिर किससे ? और तनाव किया पोसाता भी नहीं हार मे भी घाटा और जीत में भी। हाँ मौके-बेमौके आँख कभी मींचली और कभी दिखादी यह बात अलग है। तनाव मे रहता तो इतना शायद जीता भी नहीं जी भी जाता तो समझो जीता ज्यादातर खाट पर ही मैं भी थाप जाता और थाप जाते घर वाले भी। आगे नर्क है या नहीं मैं तो यहाँ भोग ही लेता। और फिर मुस्करा दिए।

'आपके लम्बे स्वास्थ्य का रहस्य ?

असली रहस्य तो ईश्वर ही जानता है, मैं तो केवल इतना ही जानता हूँ कि घर-बाहर कहीं भी रहूँ, खाता-सोना समय पर हूँ। भूख से एक भी कौर अधिक नहीं लेना चाहे वह अमृत ही हो।

'मतलब मन पर काबू है आपका ?

'मन पर काबू तो बड़ा मुश्किल है कमजोरियाँ भी हैं हैं वे हैं सन्त तो मैं हूँ नहीं साख भी रखनी पड़ती है और सामाजिकता भी हाँ इतना जरूर है कि खाने-पीने और बोलने पर काफी हद तक काबू रखने की इच्छा रहती है न ओछा बोलना पसन्

और न ओछा सुनना, भरोसा दे दिया किसी को तो घाटा-मुनाफा कुछ भी हो फिर पीछे खिसकना मेरे स्वभाव मे नहीं। और तभी एक नौकर आया। हाथ मे उसके चाबिया का एक गुच्छा था। वह कुछ उतावल मे लगता था। गुच्छा उसने एक खूटी पर टागा और चलने लगा। उसकी ओर देखते उन्होंने उसे पूछा 'झूमका लिया किस खूटी से था रे ?'

पल भर दीवार की ओर देखते उसने धीरे से उत्तर दिया 'साब उस परली खूटी से।

'तो फिर परली पर टाँग उसे यहाँ क्यो टाँगता है ?' झूमका उसने उतारा और सही जगह पर टाँग चल दिया वह।

वे मेरी ओर देखते बोले 'नियत जगह पर रखी चीज माट्साब अन्धेरे मे ही ठाई मिल जाती है —दिक्कत तनिक भी नहीं होती।

'बिल्कुल ठीक फरमाते हैं आप। औरो की तो साब क्या कहूँ मैं मुझे तो इसके अभाव में कभी-कभी बड़ी परेशानी भुगतनी पड़ती है। ऐन वक्त जूते कभी बारसाली मे खोजता हूँ, कभी घर के पिछवाड़े मे इसे पूछता हूँ, उसे धमकाता हूँ, कोई नहीं बोलता पारा बेमतलब ऊँचा चढ़ जाता है खोजते-खोजते आखिर मिलते वे गाय के छप्पर मे हैं।

दो मिनट और बैठकर, मैंने कहा 'इजाजत हो साब ?

और इजाजत अभी नहीं दू तो ? फिर उसी प्रथम हँसी की पुनरावृत्ति-निरोग और निश्छल। स्वास्थ्य का काफी कुछ राज शायद इसी मे हो मैंने सोचा।

मैं उठा और चल दिया खाली नही कुछ लेकर जड़ नहीं-जीवन्त एकपक्षीय नहीं सबके लिए अधिकस्य अधिकम् फलम् की तरह प्रिय प्रेरक और पारदर्शी। □

—गगाशहर (बीकानेर)

साकार अनन्वय अलकार वाठिया जी

— विद्यावारिधि डॉ महेन्द्र सागर प्रचडिया —
एम ए पी-एच डी डी लिट्

यदि किसी को जगत जानना है तो उसे एशिया जानना होगा, और एशिया जानना है तो उसे भारत जानना होगा। इसी प्रकार भारत के लिए उसे राजस्थान, राजस्थान के लिए बीकानेर और तदर्थ उसे भीनासर जानना होगा और यदि किसी को भीनासर जानना हो तो उसे स्वर्गीय सेठ श्री चम्पालालजी वाठिया को जानना होगा। यह परिचय दरअसल बिन्दु मे सिन्धु तथा गागर मे सागर जैसे कथन को चरितार्थ करता है। वाठियाजी अपने बेनजीर व्यक्तित्व और कुशल कर्तृत्व स पूरे समुदाय और समाज से उठकर समग्र साधु-ससार मे समा गए थे।

श्री वाठिया जी मात्र बड़े कुल मे उत्पन्न होकर बड़े नहीं बने थे। उनके बड़े बनने का मूलाधार रहा है उनके जीवन मे बड़े-बड़े गुणों का उजागरण होना। उदाहरण के लिए यह कहा जा सकता है कि उनमें श्रम के सस्कार जन्मजात थे। वे आरम्भ से ही स्वावलम्बी और सदाचारी प्रवृत्ति के सुधी श्रावक थे। कुशाग्र बुद्धिमत्ता और अपूर्व सूझ-बूझ की सत्ता श्री वाठियाजी की अतिरिक्त विशेषता थी। वे कठोर श्रम-साधना और अपूर्व प्रामाणिक जीवन-यापना के प्रबल पक्षधर थे। उनम आत्मिक गुणो के प्रति आरम्भ से ही आदरभाव विद्यमान थे। वे सर्व धर्म समभाव के प्रशसक थे।

सत्य और अहिंसा से अनुप्राणित सेवाभाव के सस्कार इनकी जीवनचर्या के प्रमुख अग बन गए थे। जनहितकारिणी अनेक उपयोगी योजनाओं म सक्रिय रहकर आपने अद्वितीय उदाहरण प्रस्तुत किए हैं। शिक्षा और स्वाध्याय के उन्नयन में उनकी कथनी और करनी इकसार बनकर समाज के सामने आई। फलस्वरूप समाज में आपकी दानप्रियता के बलबूते पर अनेक विद्यालय पुस्तकालय और वाचनालय स्थापित हुए जिनम समाज के अनेक शत-सहस्र युवक-युवतियों ने यथेच्छ ज्ञानार्जन लिया। प्रसन्नता का सदर्भ है कि यह क्रम आज भी निर्बाध रूप से सक्रिय है। जनहित की इसी परम्परा में औषधालय खुलवाना तथा मिष्ठ कुओं को खुदवाना वस्तुत आपकी उदात्त भावना का दस्तावेज है।

समाज के प्रसिद्ध सस्थानों तथा स्थानको की व्यवस्था म सतत सक्रिय रहकर भी जनसेवा मे आप सहज सुलभ रहे। उच्च पदों पर रहते हुए भी आपने किसी प्रकार

का अहकार प्रकट नहीं हुआ। आपकी लोकप्रियता और साधुता के व्याज से आपको तत्कालीन प्रशासन ने 'ऑनरेरी मजिस्ट्रेट मनोनीत किया। आपने अपनी सूझ-बूझ से पक्ष-विपक्ष की भूमिका से ऊपर उठकर सदा निष्पक्ष रहने को प्रमाणित किया। आपकी सज्जनता और सच्चरित्रता ने लोक मानस द्वारा आपको विधान सभा का सदस्य निर्वाचित किया। श्री बाठियाजी की ऐतिहासिक समाज-सेवाएँ 'कीर्ति स्तम्भ' की नाई प्रकाशित हैं।

श्री बाठियाजी जिनधर्मी थे तथापि आपके द्वारा सभी धर्मों के प्रति आदर भाव रहे आप सचमुच सर्वधर्म सम्मेलन के प्रतिनिधि एव प्रबल पक्षधर थे। उल्लेखनीय बात यह है कि आप किसी राग अथवा विराग के प्रशसक नहीं रहे अपितु आपके जीवन का क्षण-क्षण प्रतिक्षण सदैव वीतराग के प्रति लालायित रहा।

श्री बाठियाजी के सामाजिक और राजनीतिक जीवन की कीर्ति-कौमुदी यत्र-तत्र विकीर्ण ही नहीं है अपितु वह बीकानेर की गोल्डन जुबली बुक तथा 'हू इज हू' जैसी विख्यात विवरणिकाओं मे भी शब्दायित है। वे अपनी कर्त्तव्य परायणता श्रमशीलता और विनयशीलता जैसे आत्मिक गुणो से आज भी लोक मे आदरपूर्वक स्मरण किए जाते हैं। अनेक समितियो मे उनकी अशेष स्मृतियों के उल्लेख सदा-सदा के लिए रक्षित और सुरक्षित हैं। ऐसे कीर्तिवत बेजोड़ नक्षत्री भव्यजीवी भाई बाठियाजी को मेरे अनन्त शाब्दिक श्रद्धासुमन सादर समर्पित हैं। □

—मगल कलश
३६४ सर्वोदय नगर आगरा रोड़
अलीगढ़ २०२००१

प्रगति-पथ के पथिक

— श्री हरि कृष्ण झवर —

ऐसे महानुभाव के बारे में लिखने म मुझे कठिनाई महसूस होती है क्योंकि उम्र व अनुभव म वे मुझसे कई गुना अग्र थे। लेकिन बाठियाजी के कई गुणो से मैं प्रभावित हुआ उसका विवरण करना चाहूँगा। करीब १९७८ मे मुझे और मेरी पत्नी श्रीकान्ता को मेरे प्रिय मित्र श्री सम्पत चोरड़िया द्वारा श्रीमती व श्री बाठियाजी से परिचय कराया गया। तन्नन्तर कुछ अवसरो पर मुझ भीनासर में उनके निवास स्थान में मिलने का मौका मिला। जब भी मुझे बीकानेर आने का अवसर मिला श्री बाठियाजी ने मुझे खाने के लिये निमत्रित किया और मुझे उनके साथ कई घटो तक बातचीत करने का मौका मिला।

आप सादगी के पथ-प्रदर्शक और लोक-प्रिय व्यक्ति थे। यद्यपि उनकी और मेरी उम्र में लगभग ४५ वर्ष का फर्क था। लेकिन यह फर्क उन्होंने महसूस नहीं होने दिया। हम आपस मे तरह-तरह के विषयों पर निसकोच चर्चा करते थे। आप कला प्रिय थे और अपने यहाँ इकट्ठी की हुई कला-कृतियो का सग्रह उन्होंने समझाकर हमे बताया था। आपने अग्रेजो तथा राजाओं के राज्यों के समय अपने कई रोमाचक अनुभव हमे सुनाए। आप चतुर, बुद्धिमान और समाजसेवी थे। ये दोनों गुण एक ही व्यक्ति में पाना दुर्लभ होता है। जबकि इन गुणों के कारण आप आदरणीय पात्र थे। बीकानेर नरेश श्री गगासिंहजी तथा अन्य महानुभाव भी आपसे उचित सलाह के लिए विचार-विमर्श करते थे।

हमारा सौभाग्य है कि आपकी धर्मपत्नी श्रीमती तारादेवी से भी हमारा परिचय हुआ। आप बहुत ही प्रभावशाली महिला हैं। श्री बाठियाजी की प्रेरणा से ही श्रीमती तारादेवी ने समाज के पर्दा-रिवाज वातावरण से दूर हटकर धार्मिक और सामाजिक क्षेत्रों में अग्रण्य भाग लिया। आप मच से सामाजिक कुरीतियो पर प्रकाश डालती हैं। जब श्रीकान्ता ने उनका ऐसे उत्साह व लगन से सामाजिक क्षेत्र में आगे आने की प्रेरणा का रहस्य पूछा तो श्रीमती तारादेवी ने इन सबका श्रेय श्री बाठियाजी के प्रोत्साहन को दिया।

उस जमाने में ऐसा प्रोत्साहन राजस्थान के मारवाड़ी समाज में औरतो को देना स्वप्न में भी नहीं सोचा जा सकता था। यह सत्य है कि जिस समाज में स्त्रियों को उन्नति

के पथ से रोका जाता है वह समाज कभी आगे नहीं बढ़ सकता है। महिलाओं के दबे रहने से सामाजिक प्रगति नहीं हो सकती है। आज स्वतन्त्रता प्राप्त किए ४५ वर्ष पूरे हो गये हैं पर स्त्रियो की जागृति के विषय मे हमारा देश अभी तक बहुत पीछे है। आज भी हम श्री बाठियाजी के बताए हुए मार्ग का अनुकरण करे तो हमारे समाज से अधविश्वास, पिछड़ापन और कुरीतियाँ दूर होकर समाज का कल्याण हो सकता है। □

—'झवर हाऊस

१७५ टी एच रोड, मद्रास ६०००८१

आदर्श एव पूज्य

— श्री कन्हैयालाल पटवा —

विरला जाणति गुणा विरला पालति निद्धणा नेहा, विरला परकज्जकरा पर दुक्खे दुक्खिय विरला अर्थात् गुणो के ज्ञाता विरले होते हैं। विपन्नता प्राप्त व्यक्ति से स्नेह निभाने वाले विरले होते हैं। पराया कार्य सुधारने वाले और पराये दुख मे दुखी होने वाले विरले होते हैं।

सेठजी चम्पालाल जी बाठिया इन सब मानवीय गुणो से अलकृत उदारचित्त, साहसी कर्मठ सहनशील न्याय नीति सम्पन्न पुरुषार्थी मानव थे। उनकी सौम्य मुखमुद्रा, स्नेहिल आत्मीय व्यवहार हर किसी अपरिचित को भी आकर्षित करता था।

सेठजी करुणामूर्ति उदारमना कर्मयोगी, सादगीपूर्ण उच्चविचार नम्रता आदि सर्वगुण सम्पन्न थे।

सेठजी चम्पालाल जी के निधन से समाज की अपूरणीय क्षति हुई है।

मैं उनको अपना आदर्श मान कर नमन करता हूँ। □

—करीमगज

भीनासर की अमूल्य निधि

—श्री लक्ष्मणसिंह राठौड़ —

'जननी जणै तो दोय जण कै दाता कै सूर।
नीतर रीजै वाझड़ी मती गमाजै नूर।।

इस ससार म अमर ख्याति वास्तव में दो ही व्यक्तित्व प्रखर रूप से शाश्वत स्मृतियाँ छोड़ जाते हैं। एक दानवीर दाता और दूसरा शूरवीर। एक समाज को सवारता है, सुजाता है निखारता है गति देता है—अभावों की पूर्ति करता है। दूसरा —समाज को निर्भय-निडर व आश्वस्त बनाता है। दोनो ही समाज के सिरमौर हैं। वह जननी धन्य है जिसकी कोख से ऐसे पुत्ररत्न पैदा होते हैं। वह नगर बस्ती धन्य है जिसमे ऐसी विभूतिया अवतरित होती हैं। युग ऐसे ही महापुरुषा के गौरव से जगमगाता है। अस्तु।

स्वर्गीय दानवीर सेठ चम्पालालजी बाठिया का व्यक्तित्व-कृतित्व भीनासर नगर की अमूल्य निधि है। उन्होंने लगभग चार दशक तक भीनासर को सही नेतृत्व प्रदान किया और अपने प्रखर प्रतिनिधित्व से सजोया सवारा है। भीनासर के इतिहास म उनकी दन को सदैव चिरस्मृति के रूप में याद किया जाएगा। जवाहर सैकेण्डरी स्कूल, बाठिया बालिका उच्च प्राथमिक विद्यालय जवाहर विद्यापीठ पेयजल व्यवस्था और आचार्य प्रवर जवाहरलालजी म सा की स्मृति में अनेक ग्रन्थो का प्रकाशन उनकी चिरस्मृति के रूप में सदैव जुड़े रहेंगे। उनकी दूरदर्शिता सूझबूझ मौलिकता, नेतृत्व शक्ति और समाज सेवा निश्चय ही बेजोड़ एव स्तुत्य हैं। यह कहा जा सकता है कि विगत पचास वर्ष की उनकी देन को भीनासर के नवनिर्माण मे विलग कर दे तो शेष नगण्य ही बचेगा।

शुभ मगलमय चिन्तन और शुभ सकल्प समाज की अमूल्य निधिया हैं। चूकि श्री बाठियाजी शुभचिन्तक थे अत वे रात-दिन इसी शुभ मगलमय चिन्तन मे मग्न रहते थे और जब कोई समाजोपयोगी कार्य उनके सामने आता तब वे शुभ सकल्प एव दृढ निश्चय के साथ स्वय को पूर्णतया उस कार्य म लगा देते थे। धुन के धनी सेवापरायण एव अटल निर्णयी श्री बाठियाजी इस कदर किसी कार्य म लगते थे कि उसे पूर्ण करके ही छोड़ते। मा के इस लाडले सपूत ने बाधाओं कठिनाइया से घबराकर कार्य को कभी अधूरा छोड़ना सीखा ही नहीं था। सस्कृत साहित्य मे कहावत है कि निम्न श्रेणी के लोग किसी कार्य म आने वाली बाधाओं पर विचार करके उस कार्य को प्रारम्भ करने की हिम्मत ही नहीं जुटा पाते हैं। जो मध्यम श्रेणी के व्यक्ति होते हैं वे कार्य प्रारम्भ तो कर

देते हैं किन्तु कठिनाइया आने पर मैदान छोड़कर भाग खड़े होते हैं। एक तीसरे प्रकार के व्यक्ति और होते हैं जो कितनी भी कठिनाइयो बाधाओं से न घबराकर कार्य को पूर्ण करके ही विराम लेते हैं। इस कोटि के पुरुषो को उत्तम पुरुष कहा जाता है और श्री चम्पालालजी बाठिया इसी उत्तम पुरुषो की श्रेणी के व्यक्ति थे। सम्कृत की सूक्ति चरैवेति चरैवेति चरैवेति (चलते रहो, चलते रहो चलते रहो) उन पर पूर्णतया चरितार्थ होती है।

किसी कार्य को सम्पादित करने हेतु यदि उनको सहयोगी नहीं मिलत तो वे कवीन्द्र रवीन्द्र की एकला चलो रे की उक्ति को चरितार्थ करते हुए अकेले ही पूर्ण मनोयोग से उस कार्य म लग जाया करते थे। यही कारण था कि सफलताए सदा उनका वरण करती। सामाजिक धार्मिक शैक्षिक औद्योगिक न्यायिक एव साहित्यिक आदि अनेक क्षेत्रा म स्थापित किए गए अभूतपूर्व कीर्तिमान इसी बात के मुह बोलते प्रमाण हैं।

स्मृतिग्रन्थ के प्रकाशन द्वारा उनके विराट् व्यक्तित्व का विशद विवरण प्रस्तुत करके बहुजन को लाभान्वित करने एव बाठियाजी के कृतित्व को अमरत्व प्रदान करने का बीड़ा सेठ श्री चम्पालालजी बाठिया स्मृति ग्रन्थ प्रकाशन समिति द्वारा उठाया गया है —जो कि एक अतीव प्रशसनीय कार्य है। धन्य हैं श्री बाठियाजी एव (आप जैसे) प्रकाशन समिति सदस्य जो सदा परोपकार के कार्यों मे ही निरत हैं। प्रकाशन समिति को आशातीत सफलताएँ मिले—ऐसी ही असीम शुभ कामनाओं सहित। □

—प्रधानाध्यापक जवाहर माध्यमिक विद्यालय भीनासर

व्यक्ति नही, एक सस्था

— श्री राजीव प्रचडिया —

जन्म और जीवन प्रकृति की ये दो शाश्वत सम्पदाएँ हैं। जीव जब जन्म लेता है तो कुछ विशिष्ट बातो को वह अपने साथ लिए होता है किन्तु जब ये विशिष्ट बातें उसके जीवन मे घटित होती हैं या यू कहें अभिव्यक्त होती हैं तब उसके जीवन की सार्थकता सिद्ध होती है। श्री बांठियाजी का जीवन सार्थकता को लिए हुए था। यही कारण है कि हम आज भी उन्हें विविध रूपा म स्मरण कर रहे हैं। यह इस बात का एक प्रमाण है। उनमें जो भी गर्भित था उसे उन्होंने बाहर निकालकर समाज को सौंप दिया। उनका जीवन व्यक्तिपरक से हटकर समष्टिगत हो गया था। यह अनुभूतिजन्य है कि जिसने जीवन की कला को पहिचान लिया उसने जन्म के मर्म को समझ लिया। श्री बांठियाजी अपनी मात्र पिचासी वर्ष तक की वय मे जीवन की यथार्थता से अवबोधित थे। इसलिए उन्होंने जो जिया जितने क्षण भी जिया वह सब अपने लिए ही नहीं समाज के लिए राष्ट्र के लिए भी जिया। उनके व्यक्तित्व को निश्चय ही बहुआयामी कहा जा सकता है। जब हम उनके कर्तृत्व पर दृष्टिपात करते हैं तो पाते हैं कि इस अकेले व्यक्तित्व म इतनी क्षमता और शक्ति-स्फूर्ति कहाँ से आती थी? जो अहर्निश जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में चाहे वह सामाजिक क्षेत्र हो या सास्कृतिक चाहे फिर औद्योगिक क्षेत्र हो या न्यायिक सबमे उनका व्यक्तित्व सदैव एक 'मिरर' की भांति परिलक्षित होता है। उन्हे यदि 'एनर्जेटिक' कहा जाय तो यह कथन उनके लिए अतिशयोक्तिपूर्ण न होगा। युवाओं के लिए वे निश्चय ही एक प्रेरणा स्रोत थे। सुश्रावक के सस्कार आरम्भ से ही उनमे गहरे समाए हुए थे। स्वाध्याय, सयम तथा सेवा उनके जीवन के अभिन्न अग कहे जा सकते हैं। आचार्य श्री जवाहरलालजी म सा के वे परम सेवक-सुश्रुषक थे। गुरु महाराजा की भक्ति मे उन्हे अपूर्व सुख और शान्ति मिलती थी।

'णाणस्स णणस्स सारो' अर्थात् ज्ञान जीवन का सार है। बिना ज्ञान के जीवन निस्सार है इस बात से वे भली भांति परिचित थे। इसी को ध्यान में रखकर उन्होंने अनेक शैक्षणिक संस्थाओं का निर्माण कराया। छात्रों के लिए भीनासर (राजस्थान) में श्री जवाहर हाई स्कूल छात्राओं के लिए श्री बांठिया बालिका माध्यमिक स्कूल तथा जवाहर पुस्तकालय/ वाचनालय का निर्माण कराया। इतना ही नहीं जवाहर विद्यापीठ की स्थापना भी की जिसमें महिला सिलाई बुनाई केन्द्र को विशेष रूप से रखा। उनकी

धारणा थी कि आज प्रत्येक व्यक्ति को विशेषकर महिला को आत्मनिर्भर होना चाहिए। आत्मनिर्भरता/स्वावलम्बन से जीवन मे आनन्द का निर्झर फूटता है।

लक्ष्मी का वरण अपने पुरुषार्थ आदि के माध्यम से हरेक कर सकता है किन्तु उसे सही सही उपयोग मे लाना हरेक के वश मे नहीं। इसलिए यह गौरतलब बात है कि श्री बाठिया जी ने इस दिशा मे भी एक आदर्श की स्थापना की। उनकी दानप्रियता और कल्याणकारी प्रवृत्तियों ने उनसे धार्मिक ट्रस्ट सस्थाएँ शालाएँ खुलवाकर समाज को एक दिशा दी। आज भी ये सस्थाए समाज के कमजोर वर्ग के लिए असहाय पीड़ित-प्रपीड़ितो के लिए अनवरत कार्यशील हैं।

प्यासे की प्यास बुझाने के लिए इन्होंने भीनासर क्षेत्र मे मीठे व मृदुजल के एक नहीं दो-दो कुओं का निर्माण कराया। यह सब जानते हैं और अनुभव भी करते हैं कि राजस्थान की भूमि मे पानी का अभाव है। पानी वहाँ के निवासियो के लिए अमृत समान है। ऐसे क्षेत्र मे पानी की सुविधा जुटाना वस्तुत एक बहुत बड़ा पुण्योपार्जन का कार्य है जिसे श्री बाठियाजी ने चरितार्थ किया। आज भी जो राहगीर वहाँ से गुजरता है वह अपनी तीव्र प्यास को बुझाकर कुआ-स्थापक को दुआएँ देता आगे बढ़ जाता है।

श्री बाठियाजी कलाप्रेमी थे। उन्होंने अपने ही क्षेत्र मे एक ऐसी हवेली बनवायी जो स्थापत्यकला मे अपना विशिष्ट स्थान रखती है। दूरदराज से लोग इस कलाकृति को देखने आते हैं और श्री बाठियाजी की कलाप्रियता से अभिभूत होते हैं।

श्री बाठियाजी ऑनरेरी मजिस्ट्रेट' थे। यह उनकी दूर-दर्शिता एव न्यायप्रियता का एक ज्वलन्त उदाहरण है। उनके सटीक निर्णय आज भी लोगो की जुबान पर हैं। वे इस क्षेत्र में भी लोकप्रिय थे। राजनीति के क्षेत्र मे यदि श्री बाठियाजी का आकलन किया जाए तो इनकी इस क्षेत्र मे भी जो सेवाए हैं वे सचमुच श्लाघनीय तो है ही साथ ही ऐतिहासिक भी बन पड़ी हैं। उन्होंने अपने विधान सभा सदस्यकाल में बाल दीक्षा के विरोध मे जो विधेयक प्रस्तुत किया वह सचमुच समाज के लिए एक वरेण्य साबित हुआ।

श्री बाठियाजी ने चहुँदिशाओं मे अपनी कार्यकुशलता से अपने को निश्चित रूप से प्रमाणित किया है। उसी का ही यह नतीजा था कि इनको नगरपालिका एव बीकानेर राज्य व्यापार उद्योग सघ का अध्यक्ष साधुमार्गी जैन हितकारिणी सस्था बीकानेर का (३७ वर्षों तक) अध्यक्ष बनाया गया साथ ही साथ तत्कालीन महाराजा श्री गगासिंहजी द्वारा पब्लिक सर्विस मैडल फर्स्ट क्लॉस से सम्मानित व चाँदी छड़ी चपड़ास तथा

बीकानेर जैन समाज की ओर से स्वर्णपदक से इनको सम्मानित कर स्वय गर्वित और गौरवान्वित हुए। इतना ही नहीं समय-समय पर अनेक सस्थाओं द्वारा अभिनन्दन-सम्मान पत्रो से इनका सम्मान होता रहा है। सम्मान होना इतनी बड़ी बात नहीं है किन्तु इस सम्मान मे मान का न होना बड़ी बात है। श्री बाठिया जी स्वाभिमानी तो थे किन्तु अभिमानी कदापि नहीं। वे सरल स्नेही और गुणग्राही थे।

श्री बाठियाजी वस्तुत एक व्यक्ति नहीं एक सस्था थे। नयी पीढ़ी के लिए एक प्रेरक स्तम्भ थे आदर्श थे। धन्य है जैन समाज और अनन्य है यहाँ की रज जिसने एक एसी विभूति को पाया जो वर्षों बाद उपलब्ध हुआ करती है। ऐसी महान आत्मा को मेरे अनेक-अनेक प्रणाम। □

—मगल कलश ३६४ सर्वोदय नगर
आगरा रोड अलीगढ़ (उ.प्र) २०२००१

सदैव स्मरणीय

— प चन्द्रभूषण मणि त्रिपाठी —

स्व बाठिया जी के बारे मे जितना लिखा जाय उतना थोड़ा ही है। कई बार उनसे मिलना हुआ था। सरलता माधुर्य कर्तव्य परायणता आदि विशिष्ट गुण उनके अन्तस्तल म कूट-कूट कर भरे हुए थे। उनकी स्मृति सदैव बनी रहेगी।

—परीक्षाधिकारी
श्री तिलोकरत्न स्था जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड
आचार्य श्री आनन्द ऋषि जी महाराज मार्ग
अहमदनगर ४१४००१

कर्मयोगी श्री बाठियाजी

— श्री रिखबदास भसाली —

समाज के उन्नयन और विकास मे जिन महानुभावो का निष्काम योगदान रहता है उनकी स्मृति कभी धूमिल नही होती। ऐसे महापुरुष अपने पीछे एक महक छोड़ जाते हैं जो परोक्ष रूप मे भी प्रेरणा प्रदान करती रहती है।

स्वर्गीय श्री चम्पालाल जी बाठिया का जीवन सादगी और सयम का आदर्श प्रतीक था। आपकी दृष्टि सकीर्णता से परे अत्यत व्यापक एव उदार थी। स्पष्टवादिता आपकी महती विशेषता थी। अनुभव ज्ञान और चिंतन के क्षत्र मे उनका हृदय और मस्तिष्क विशेप आकर्षित रहा है। समाज के सभी क्रियाकलापो मे तन मन और धन से सहयोग सक्रिय रूप से प्रदान करना उनके जीवन का शुभ सकल्प था। सबको साथ लेकर चलने की आप म अद्भुत क्षमता थी। मानवीय आचार ही व्यक्ति की चेतना शक्ति को विकसित करता है और नर से नारायण बना देता है। श्रद्धेय बाठिया जी म भी कर्मठता उदारता एव समाज सेवा की भावना कूट कूट कर भरी थी। जवाहर विधापीठ की स्थापना श्री जवाहर हाई स्कूल भीनासर का निर्माण एव जवाहर किरणावलिया का प्रकाशन जैसे अनेक महान कार्यों मे उनकी धर्म एव समाज के विकास के प्रति अटूट सेवा भावना दृष्टिगोचर होती है। साथ ही सुसस्कारो के जागरण हेतु शिक्षा के क्षेत्र मे भी उनकी गहन अभिरुचि रही है।

ऐसे कर्मयोगी के प्रति श्रद्धा-सुमन समर्पित करना मेरा अहोभाग्य है। वे जीवन पर्यन्त समाज एव देश को अपनी सेवाये देते रहे। ऐसे महामानव को मैं विनयावनत होकर अपनी भावाजलि अर्पित करता हूँ।

मैं शासन देव से यही प्रार्थना करता हूँ कि उनकी भावना के अनुरूप समाज निरतर गतिशील रहे और भावी पीढ़ी उनके अनूठे व्यक्तित्व से प्रेरणा प्राप्त कर स्व और पर के कल्याण मे अपने जीवन को समर्पित कर एक आदर्श मानव बनकर उनके आदर्शों को हृदयगम कर। यही हमारी उस आत्मा के प्रति सच्ची श्रद्धाजलि होगी। ऐसे महान ओजस्वी व्यक्ति से प्रेरणा प्राप्त कर कुछ सेवा प्रदान कर सकू यही मेरी मनोकामना है। □

—२२७/१वी आचार्य जगदीश चन्द्र बोस रोड़ ७ वीं मजिल कलकत्ता-७०००२०

अपने मे वेजोड़

— श्री नथमल लूणिया —

पूज्य प्रवर स्व सेठ श्री चम्पालाल जी बांठिया अपने क्षेत्र के एक बहु प्रतिष्ठित प्रसिद्ध एव चर्चित व्यक्ति रहे हैं। वे बड़े चतुर दूरदर्शी नीतिज्ञ, कुशल एव कर्मठ पुरुष थे। अनोखी सूझबूझ के धनी श्री बांठिया जी बड़े हसमुख विनोदी मृदुभाषी एवं मिलनसार स्वभाव के थे। यो मैंने उन्हें कभी किसी से दो जुबान होते हुए तो नहीं देखा, फिर भी उनके व्यक्तित्व एव कर्तृत्व की यह विशेषता थी कि उन से बेरुखी में जा कर या टकरा कर जल्दी कोई जीत नहीं पाता था। आस पास के क्षेत्र में उनका बड़ा प्रभाव, सम्मान एव दबदबा भी था।

यों तो भीनासर का यह बांठिया परिवार बड़ा कुलीन सम्रात एव अपने क्षेत्र का सर्वाधिक समृद्ध परिवार रहा है किन्तु श्री चम्पालाल जी इनमें विशेष प्रसिद्ध हुए। सामाजिक धार्मिक सास्कृतिक एव शैक्षणिक सेवा कार्यों में आपका सराहनीय योगदान रहा है। सार्वजनिक कार्यों में आपकी अभिरुचि थी और इस हेतु वे अपना अमूल्य समय भी देते थे। इसी परिवार द्वारा निर्मित भीनासर में लड़कों एवं लड़कियों की स्कूलों के क्रमश: विकास एव सवर्धन में आपकी सूझबूझ श्रम एव अप्रतिम योगदान सर्वविदित है। भीनासर की सुप्रसिद्ध श्री मुरली मनोहर गौशाला का कार्यभार भी वर्षों तक आपने समाला था।

जिनशासन श्रृगार श्रीमद् जवाहराचार्य अपने जीवन के अतिम समय में जब भीनासर विराजे थे तो श्री बांठिया जी ने उनकी तन मन धन से निष्ठापूर्वक सेवा की। आचार्य श्री के स्वर्गारोहण के पश्चात् भव्य वैकुण्ठी मे उनकी शव यात्रा में जुटे हजारों श्रद्धालुओं की भीड़ आज भी नजरों के सामने है जिसका सफल सयोजन नियत्रण श्री बांठिया जी ने किया। आचार्य श्री की पावन स्मृति में श्री जवाहर विद्यापीठ, पुस्तकालय वाचनालय आदि की स्थापना भी आपके सद्प्रयास से हुई जो आज भी हमारे सामने है। आचार्य श्री के युगातरकारी अनमोल प्रवचनसाहित्य संपादित होकर आपकी प्रेरणा से ही जवाहरकिरणावलियों के रूप मे लिपिबद्ध होने से न केवल उनकी कल्याणी वाणी को ही अमरत्व मिला बल्कि इससे जन जन में धार्मिक, आध्यात्मिक एवं व्यवहारिक चेतना का उदय एवं विकास भी हुआ।

भीनासर नगरपालिका के अध्यक्ष बीकानेर विधानसभा के सदस्य एव न्यायालय के ऑनरेरी मजिस्ट्रेट बनने के साथ ही समय समय पर आप राजकीय सम्मान से भी सम्मानित हुए। प्रबन्ध कुशलता आपका विशिष्ट गुण था। परिस्थितियो के अनुरूप किसी सामाजिक धार्मिक एव सास्कृतिक उत्सव समारोह को अपने ढग से सुसपन्न करा देने मे आप सुदक्ष थे। भीनासर का वृहत् साधु सम्मेलन एव समय समय पर होने वाले आचार्यों सतों के चातुर्मास दीक्षा समारोह आदि में आपकी प्रबन्ध कुशलता सदा याद रहेगी। अखिल भारतीय स्थानकवासी जैन कान्फ्रेस के सम्माननीय अध्यक्ष के रूप मे आपने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई और इस सस्था के प्रधान कार्यालय को बम्बई से राजधानी दिल्ली ले आए। सुप्रसिद्ध साधुमार्गी जैन हितकारिणी सस्था बीकानेर के भी आप वर्षों तक माननीय अध्यक्ष रहे एव वहा के श्री सघ द्वारा सम्मानित पुरस्कृत भी हुए।

सक्षेप मे मैं यही कहूँगा कि सेठ चम्पालाल जी का बेजोड़ व्यक्तित्व था। वे अपने ढग के एक निराले व्यक्ति थे। मैं उनकी सप्तम पुण्य तिथि पर इन्ही शब्दो के साथ अपनी श्रद्धाजलि अर्पित करता हूँ। □

— नवरग एण्ड क
लालजी मार्केट पटना ४

उदारमना एव अनन्य सेवाभावी

— श्री पुखराजमल एस लुकड़ —

जीवन के साथ मृत्यु लगी है किन्तु ऐसे भी कुछ व्यक्तित्व होते हैं जिन्हे न मृत्यु मार सकती है और न कालचक्र ही मिटा सकता है। वे अपने लिए नहीं जीते बल्कि समाज सघ और राष्ट्र के लिए तन-मन धन से न्यौछावर होकर अमर हो जाते हैं। स्व सेठ चम्पालाल जी बाठिया एसे ही व्यक्तियो मे एक थे।

उनकी जीवन गाथा एव कार्यों की सुगध से मैं सुपरिचित हू। अ भा श्वे स्था जैन कान्फ्रेस के (सन् १९५२ ई) सादड़ी सम्मेलन में आप अध्यक्ष निर्वाचित हुए। कॉन्फ्रस के अध्यक्ष के नाते आपने स्थानकवासी जैन समाज की महत्त्वपूर्ण सेवाएँ की हैं।

आपका व्यक्तित्व बहुमुखी था। धर्म समाज शिक्षा राजनीति आदि अनेक क्षेत्रों मे आपने उल्लेखनीय कार्य किये। सादड़ी म सम्पन्न साधु-सम्मेलन के आप अध्यक्ष थे एव बाद मे सन् १९५६ ई में भीनासर म विराट साधु-सम्मेलन बुलाने मे भी आपकी अहम भूमिका रही थी। बीकानेर महाराजा श्री गगासिंह जी द्वारा आप विशेष सम्मानित नागरिक थे एव नगरपालिका तथा राज्य व्यापार उद्योग सघ के अध्यक्ष रहे। बीकानेर राज्य की विधान सभा के सदस्य भी आप रहे और बीकानेर न्यायालय में आनरेरी मजिस्ट्रेट के रूप में सेवाए दीं।

उद्योग एव व्यापार के क्षेत्र म आप जाने-माने व्यक्ति थे और इसी प्रकार लोक कल्याणकारी प्रवृत्तियों समाज सेवा के कार्यों म भी उदारतापूर्वक दान देकर कीर्ति बढ़ाई। जैन जवाहर विद्यापीठ की स्थापना पौषध शाला, कुओं का निर्माण, श्री जवाहर हाईस्कूल, श्री बाठिया बालिका माध्यमिक स्कूल आदि आप की आज भी यशोगाथा गा रहे हैं। पूज्य आचार्यश्री जवाहरलाल जी महाराज के प्रवचनों का प्रकाशन 'जवाहर किरणावलियाँ' शीर्षक से कराकर आपने उनकी वाणी को घर-घर तक फैलाया।

अनेक सघा, सस्थाओं द्वारा आपका सम्मान हुआ। आपने अनेक सस्थाओं का निर्माण किया एव अनेक प्रवृत्तियो को प्रोत्साहन दिया। आप एक आदर्श श्रावक थे। अपनी धुन के धनी स्वभाव से उदार एव धर्म के प्रति अटल आस्थावान ऐसे विरले श्रावक से वर्तमान पीढ़ी उनके जीवन चरित्र एव कार्यों से प्रेरणा ग्रहण करेगी।

मैं व्यक्तिश और अ भा श्वे स्था जैन कॉन्फ्रेस दिल्ली की ओर से स्व बाठिया जी की दिव्यात्मा को श्रद्धाजलि अर्पित करते हुए उनके पुत्रों से यही कामना करता हूँ कि वे भी अपने यशस्वी पिता की तरह समाज धर्म और राष्ट्र को सेवाए देकर उनका आदर्श बनाये रखे। □

— पूर्व अध्यक्ष-अ भा श्वे स्था
जैन कान्फ्रेस दिल्ली

स्वनाम धन्य चम्पा सुमन

— श्री फूलचन्द लूणिया —

श्रीमान् स्व श्रेष्ठी श्री चम्पालाल जी बाठिया के विषय मे जितना भी लिखा जाय कम है। यथा नाम तथा गुण के धनी श्री बाठिया जी आज हमारे बीच नहीं रहे फिर भी उनके गुणो की सौरभ विद्यमान है। फूलो में चम्पा के फूल की सुगध दूर से ही आती रहती है इसी प्रकार श्री बाठिया जी के सद्गुणो की सुगध दूर दूर में भी फैल गई थी। फूल खिलता है फिर मुरझा जाता है लेकिन सुगन्ध छोड़ जाता है। इसी प्रकार श्री बाठिया जी हमारे समाज मे अवतरित होकर खिले अनेक शुभ-कार्यो मे भरसक योगदान दिया जिसे समाज कभी भूल नहीं सकता। ई सन् १६५६ मे भीनासर मे साधु सम्मेलन हुआ, उस समय मैं भी वहा गया था तब उनके निवास स्थान का भवन देखने मे आया। बहुत ही सुन्दर कारीगरी से सुसज्जित ऐसे भवन आज तो विरले ही बना सकते हैं। श्री बाठिया जी के प्रति अगाध श्रद्धा भक्ति के साथ हार्दिक स्मरणाजलि। □

—दीवान सुरप्पा लेन
चिकपेट बैंगलोर ५३

स्वधर्मी वात्सल्य के प्रतीक

— श्री गुमानमल चोरड़िया —

स्वनामधन्य श्रीमान् चपालाल जी साहिब बाठिया आचार्य श्री जवाहर के अनन्य भक्त थे। आपका व्यापारिक सामाजिक धार्मिक एव सास्कृतिक क्षेत्रो में अपूर्व अविस्मरणीय योगदान रहा है। आप कर्मठ निष्ठावान उदारमना श्रद्धाशील सुश्रावक होने के साथ-साथ आचार्य श्री जवाहर के प्रति पूर्ण समर्पित थे।

द्वितीय महायुद्ध के वक्त का प्रसग है। आप श्री का व्यवसाय बगाल मे विशाल पैमाने पर विस्तृत था आचार्य श्री जवाहर भीनासर मे विराज रहे थे आपने आचार्य श्री के समक्ष कलकत्ता प्रस्थान करने हेतु अपनी भावना व्यक्त की। आचार्य श्री जवाहर के मुखारविन्द से यह भाषा उद्‌घोषित हुई कि यहा कौनसी कमी रहेगी आप श्री ने बगाल जाने का विचार स्थगित कर दिया। आपके विशाल मात्रा में जूट की खरीदी की हुई थी जूट के भाव इतने बढ़े कि आपको उस वक्त सभवतया एक करोड़ का या लाखो रुपये का मुनाफा हो गया। लिखने के भाव यही है कि बड़े व्यवसायी होने पर भी आपने आचार्य श्री के भावो के अनुरूप ही कार्य किया सर्वभावेण समर्पण किया यह आपकी आचार्यश्री के प्रति अटूट श्रद्धा का परिचायक है।

आचार्य श्री जवाहर भीनासर स्थिरावास विराज रहे थे दर्शनार्थी जो भी आते उनको बहुत प्रेम से सन्मान से आप स्वय पास मे बैठकर भोजन करवाया करते थे। हमारा परिवार आचार्य श्री के दर्शनार्थ भीनासर गया था हमने वहा स्वय का चौका भी लगाया था परन्तु प्रथम दिवस आपके वहा ही भोजन किया था, उस वक्त जिस प्रेम से आपने पास बैठकर भोजन करवाया यह आज भी स्मृति पटल पर अकित है। यह आपकी स्वधर्मी वात्सल्यता का प्रतीक है।

आप कुशाग्र बुद्धि के धनी होने के साथ श्रमनिष्ठ एव मानवीय सवेदना में रचे-पचे थे। आपने आचार्य श्री जवाहर के व्याख्यानों को लिपिबद्ध करवा कर प्रकाशित करने में जो दक्षता दिखलाई जो गुरुत्तर भार सम्हाला वह आपके व्यक्तित्व एव कृतित्व का एक अभिन्न अग है। सेवा धर्म आपके जीवन का अभिन्न अग था। □

—सौंथली वालों का रास्ता
जौहरी बाजार जयपुर ३०२००३

श्रद्धानिष्ठ सघ सेवक

— श्री पी सी चोपड़ा —

भीनासर का बाठिया परिवार स्थानकवासी समाज और धर्म की सेवा करने के लिए प्रख्यात है। जीवन की सध्या मे पूज्य श्री जवाहराचार्य भीनासर पधारे तब इस परिवार का उत्साह अनुपम था। बाठिया परिवार के अग्रगण्य उत्साही सेठ चम्पालालजी बाठिया की पूज्य श्री के प्रति अनुपम भक्ति थी। जब तक आचार्य श्री वहा विराजमान रहे आप समस्त घरेलू काम काज से छुटकारा लेकर अनन्य भाव से उनकी सेवा मे तल्लीन हो गये। न दिन गिना न रात। तन-मन-धन से जुट गये। चिकित्सा की दृष्टि से कोई खामी नहीं रखी। फिर भी जब पूज्य श्री का स्वास्थ्य निरन्तर गिरता चला गया तो उन्होंने एक वर्ष पूर्व ही स्वर्णमडित रजत विमान तैयार करवा लिया।

आपने पूज्य श्री के व्याख्यानो को सम्पादित करवा कर 'जवाहर किरणावली के नाम से प्रकाशित करवाये जो आज भी पाठक बड़ी रुचि से पढ़ते हैं। श्री जवाहराचार्य के अन्तिम जीवन काल मे पूज्य श्री की जयन्ती एव दीक्षा स्वर्ण जयन्ती के आयोजन-कर्ता भी सेठ चम्पालाल जी बाठिया ही थे। पूज्य श्री की स्मृति में भीनासर मे श्री जवाहर विद्यापीठ के नाम से शिक्षण सस्था की स्थापना में आपका प्रमुख योगदान रहा। पूज्य श्री एव समाज के प्रति आपकी विशिष्ट सेवाओं के लिए अनेक सस्थाओं द्वारा आपको सम्मानित किया गया एव अभिनन्दन पत्र भेट किये गये।

ऐसे सघनिष्ठ दानवीर एव जनश्रद्धा के केन्द्र श्री चम्पालाल जी बाठिया का सामाजिक धार्मिक व्यावसायिक औद्योगिक व राष्ट्रीय क्षेत्र मे अद्वितीय योगदान रहा है। वे समग्र जैन समाज के पथ प्रदर्शक एव अग्रणी थे। उनका यशस्वी जीवन सदैव जन-मन को अनुप्रेरित करता रहेगा।

उनकी स्मृति मे प्रकाशित होने वाले स्मृति ग्रन्थ की सफलता के लिए अपनी हार्दिक शुभकामनाए अर्पित करता हूँ। □

—पूर्व अध्यक्ष, श्री अ भा साधुमार्गी जैन सघ बीकानेर

एक अनूठा व्यक्तित्व

— श्री दीपचद भूरा —

कुछ ऐसे व्यक्ति जन्म लेते हैं जिनकी मृत्यु के बाद भी समाज एव देश उनको भुला नहीं पाता। देश और समाज को दी गई उनकी सेवाओं के लिए पूरा समाज उनका सदैव ऋणी रहता है। ऐसे ही एक अनूठे व्यक्तित्व का नाम है स्व सेठ श्री चपालाल जी सा बाठिया।

मेरा बाठिया परिवार से बहुत घनिष्ट सपर्क रहा है। कलकत्ता में इनकी एक फर्म—हमीरमल सोहनलाल बाठिया का मेरे जीवन की व्यावसायिक उन्नति में बहुत महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। इस परिवार का मेरे प्रति जो प्रेम व स्नेहभाव रहा है उसे मैं कभी विस्मृत नहीं कर सकता।

धार्मिक क्षेत्र मे आपकी उपलब्धिया अत्यत सराहनीय रही हैं। सन् १६५६ में विराट् साधु-सम्मेलन का सफलतापूर्वक आयोजन कर आपने अद्वितीय कीर्तिमान स्थापित किया था। आप साधुमार्गी जैन हितकारिणी सस्था के ३७ वर्षों तक अध्यक्ष रहे। आपको बीकानेर जैन समाज की तरफ से विशिष्ट समाज-सेवा के लिए स्वर्णपदक से भी सम्मानित किया गया। आपने आचार्य श्री जवाहरलाल जी महाराज साहब की बहुत सेवा की एव उनके प्रवचनों को 'जवाहर किरणावलियों' के माध्यम से जन जन तक पहुँचाने का श्रेय भी आपको ही है। बीकानेर राज परिवार के साथ आपके अत्यन्त मधुर सपर्क रहे। आप बीकानेर राज्य की विधानसभा के सदस्य भी रहे। बीकानेर न्यायालय के कई वर्षों तक आनरेरी मजिस्ट्रेट के रूप में भी कार्य किया तथा विशिष्ट समाज सेवा के लिए तत्कालीन महाराजा श्री गगासिंह जी द्वारा पब्लिक सर्विस मेडल फर्स्ट क्लास से आपको सम्मानित भी किया गया।

उनकी धर्मपत्नी श्रीमती ताराबाई बाठिया आज भी धर्म एव समाज के लिए प्रेरणादायक काम कर रही हैं एव आदर्श जीवन व्यतीत कर रही हैं।

यश और कीर्ति की जो पताका बाठिया सा ने फहराई थी उसको उनके उत्तराधिकारी सुचारु रूप से थामे हुए उच्च कुल की मर्यादा का पालन करते हुए कटिबद्ध हैं। यह हर्ष का विषय है। □

—पूर्व अध्यक्ष श्री अ भा साधुमार्गी जैन सघ

देशनोक (बीकानेर)

दीप्तिमान नक्षत्र

— श्री जसकरन सुखानी —

प्रतिभावान व्यक्ति विरासित से नहीं वरन् अपने सत्कर्म और सेवाभाव से समय की शिला पर विशिष्ट कीर्ति अकित कर जन-जन के प्रिय हो जाते हैं। ऐसे ही प्रखर व्यक्तित्व के धनी कर्तव्य परायण धर्मनिष्ठ उदारमना थे चम्पालाल जी बाठिया।

मैंने वचपन म बाठिया साहव को कई धर्मसभाओं मे व समाज सेवा के कार्यों मे अग्रणी रहकर तन मन धन से सेवा करते देखा है। वे जव भी किसी सभा मे सस्था मे आते थे तथा अपनी भागीदारी निभाते थे तो ऐसा लगता था कि यह कोई साधारण व्यक्ति नहीं वल्कि शक्ति का प्रतीक पुज है। सचमुच समाज में उनकी अपनी अलग पहचान थी।

विभिन्न धर्म सभाओं में उनका आगमन श्रेष्ठता का प्रतीक माना जाता था क्योंकि अपनी व्यापारिक कुशलता एव सूझ-बूझ के साथ वे निरन्तर लोक कल्याणकारी प्रवृत्तियों से सदैव जुटे रहते थे तथा अपनी उदारता तथा सेवाभावना से सबके हृदयहार बन जाते थे।

मरूधरा की इस पावन धरती पर जन्म लेकर आपने अपनी धार्मिक आस्था सेवा भावना से अपने जीवन में एक ऐसी सुगन्ध पैदा की है जो भीनासर ही नहीं आसपास के सभी क्षेत्रो मे आज भी सुगन्धित है।

श्री बाठिया जी बीकानेर की प्राचीन नगर परम्परा व सस्कृति के दीप्तिमान नक्षत्र थे। विभिन्न समुदायो समाजों सगठनो एव राज समाज के प्रतिष्ठानो से आपका सघन स्नेहिल सम्बन्ध था। सवके बीच सबसे ऊपर वे वेदाग व्यक्तित्व के धनी थे अत उनकी कही पत्थर की लकीर मानी जाती थी। महाराजा गगासिंह जी शार्दुलसिंहजी, व सासद करणीसिंह जी सहित बीकानेर राजघराने के आप सदैव विश्वासपात्र रहे।

श्री बाठियाजी कठमुल्लापन के सख्त विरोधी थे। आडम्बरो का समर्थन उन्होंने धार्मिक व सामाजिक स्तर पर कभी नहीं किया। वे कहा करते थे 'समय की गति प्रवल है इसे रोकने वाला रुक जाता है। देश काल परिस्थिति को देखते हमे आचरण मर्यादित करने चाहिए अपने सास्कृतिक व आध्यात्मिक मानव मूल्यो का दर्पण समर्पण करके नहीं वल्कि उन पर उदारता की भावना से दृढ़ रहकर।

उनके जीवन का सार उक्त विचार मे समाहित है। नाम के लिए उन्होंने सेवा कार्य नहीं किया। दानी थे पर अभिमानी नहीं थे दान का प्रचार नहीं करते थे। उन्होंने अपने जीवनकाल मे कई व्यावसायिक धार्मिक, सामाजिक व राजनीतिक वादविवाद अपनी समन्वयात्मक विलक्षणता से सुलझाये। बीकाणे के इस युगधर सपूत समाज भूषण करुणानिधान सेवानिष्ठ तथा सस्कृति रक्षक नररत्न को शत शत नमन! □

—मत्री भारत जैन महामडल शाखा बीकानेर

कर्मवीर एव धर्मवीर

— श्री सोहनलाल सिपानी —

सेठ श्री चम्पालालजी सा बाठिया चतुर्विध सघ के गणमान्य व्यक्ति थे। उनका व्यक्तित्व बड़ा मनमोहक और आकर्षक था। उनका जीवन कर्तव्य पालन सेवा और कई सस्थाओं क गौरवपूर्ण पदो से शोभित था। वे बड़े धार्मिक और श्रद्धाशील व्यक्ति थे। उनका जीवन बहुत पवित्र और सद्या था।

जैसा मैंने उनके बारे मे सुना था, व्यवहार और व्यक्तित्व में उससे भी अधिक पाया। ऐसे मैं उनके गुणा और अनुभवों से विशेष लाभान्वित नहीं हो सका किन्तु जितना परिचय और सान्निध्य प्राप्त हुआ वह मेरे लिए स्मरणीय बन गया।

सचमुच वे समाज के कुशल कलाकार आदर्श श्रावक और सुधारवादी सज्जन थे। ऐसे कर्मवीर और धर्मवीर पुरुष को मेरा शत शत वन्दन। □

—सिपानी एन्टरप्राइजेज

३ बेनरपट्टा रोड बैंगलोर ५६००२९

मानवीय गुणो के धनी

— श्री हरिश्चन्द्र दक —

बीकानेरी पगड़ी गोल चेहरा, घनी मूछे मझला-कद गठा-बदन बाहर से यही बाठियाजी का स्वरूप था। किन्तु इस व्यक्तित्व मे विविध प्रतिभाओं का पुज था जिसके प्रकाश से जैन समाज ही नहीं सम्पूर्ण मारवाड़ की धरा आलोकित थी।

मैं कल्पना भी नहीं कर सकता कि मुझे बाठियाजी पर कभी कुछ लिखना पड़ेगा। क्योंकि उनके व्यक्तित्व के समक्ष मेरी लेखनी नगण्य है। पर आज अब उनके ८५ वर्ष के दीर्घ एव यशस्वी जीवन के उपरान्त जो स्मृति ग्रन्थ उनकी श्रद्धा मे प्रकाशित हो रहा है यह लेख उसमे एक श्रद्धा सुमन के रूप मे समर्पित है।

पिता श्री एव बाठिया सा के सम्पर्क गहरे थे। सामाजिक साहित्यिक एव जनोपयोगी कार्यों मे पिता श्री से सलाह लेते थे।

एक अद्भुत सहयोग था सरस्वती पुत्र एव लक्ष्मी पुत्र के आपसी स्नेह का।

कक्षा ८ से ११ तक की मेरी शिक्षा भीनासर विद्यापीठ के सान्निध्य मे हुई। बाठियाजी विद्यापीठ के सरक्षक थे। वे यदा-कदा छात्रावास एव पुस्तकालय मे आते वहा की व्यवस्था देखते तथा छात्रो के भोजन आदि की व्यवस्था की स्वय जाच करते। वे सहज थे। इतने सहज कि छात्रो के द्वारा आयोजित छोटे से छोटे कार्यक्रम मे आग्रह पर सम्मिलित होते थे।

छोटी उम्र और अपार उत्साह। हम बच्चों ने तरुण परिषद का गठन किया। हस्तलिखित पत्रिका निकाली। प्रति सप्ताह बैठक और भिन्न-भिन्न कार्यक्रमो का आयोजन। एक वर्ष पूर्ण होने पर तरुण परिषद का वार्षिक अधिवेशन था। एक नाटिका एव सास्कृतिक कार्यक्रम रखा गया था। समस्या थी अर्थ की एव मच के लिए पर्दों की। उत्साह के अतिरेक मे मैं बाठिया सा के पास गया उनसे सारी बात कही उन्होंने ध्यान से सुनने के पश्चात परिषद को आर्थिक सहयोग भी दिया तथा बीकानेर की एक फर्म से पर्दे भी दिलाये। इतना ही नहीं परिषद के वार्षिक अधिवेशन के कार्यक्रम मे पूरे समय उपस्थित रहे तथा कार्यक्रम समाप्ति पर बालकों की पीठ थपथपा कर उत्साहवर्धन किया।

प्रसग भीनासर मे द्वितीय साधु-सम्मेलन के आयोजन का था। इसका जिम्मा बाठिया जी पर था। सदा की तरह दो माह पूर्व ही पडितजी को बुला लिया गया।

अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन सघ के विविध कार्यकलापा मे आपका सक्रिय सहयोग सदा सर्वदा स्वर्ण अक्षरा म अकित रहेगा।

बाठिया परिवार इसी तरह सामाजिक शैक्षणिक सेवाओं मे सलग्न रहे इसी कामना से विराम देता हू। □

—६६१ से ४ हिरण मगरी
उदयपुर ३१३००१

वीर प्रसविनी मरुधरा के कर्मवीर सपूत

— श्री भवरलाल कोठारी —

महामना स्वर्गीय चम्पालालजी बाठिया हमारी रत्नगर्भा वसुन्धरा के एक अनुपम रत्न थे। व वीर प्रसविनी मरुधना के कर्मवीर सपूत थे। उनका व्यक्तित्व बहुआयामी था। वे कुशल व्यवसायी थे। पर उससे अधिक वे समर्पित समाज-सेवी थे। शिक्षा-प्रेमी साहित्यानुरागी कला-मर्मज्ञ सजग विधायक कुशल प्रबन्धक अनन्य गुरुभक्त सेवानिष्ठ समाजचेता दृढ़धर्मा, प्राणी-मित्र न्यायविद आदि विविध रूपो मे वे सुप्रतिष्ठत थे।

युग प्रवर्तक क्रातद्रष्टा आचार्य जवाहर के वे निष्ठावान अनुयायी थे। उनका रोम रोम उनके लिए समर्पित था। जवाहर विद्यापीठ के प्रारम्भ से ही और जीवन के अन्तिम समय तक वे सस्थापक-सचालक रहे। भीनासर के जवाहर-धाम में उन्होंने जवाहर हाईस्कूल जवाहर पुस्तकालय वाचनालय की स्थापना की। जवाहर वाणी को 'जवाहर किरणावलियो' के रूप मे सपादित प्रकाशित करवाकर आपने जीवन जागृति-मूलक राष्ट्रीय सत् साहित्य मजूषा को जो शाश्वत ज्ञान रश्मियो का अनुपम सग्रह भट किया है वह आपके देदीप्यमान सार्थक जीवन की युग-युगान्तरो तक कायम रहने वाली अमर कृति है।

उस आत्मचेता महामना मनीषी को मेरा भावपूर्ण नमन। □

— ओसवाल कोठारी मोहल्ला बीकानेर

'चरैवेति' के साधक

— श्री लालचन्द 'पुनीत' —

सशक्त विचारो के अनुरूप वे उस समय लौह पुरुष गिने जाते थे। चिन्तन की गहराइयो से नवनीत निकाल पाना उनकी खूबी थी मतभेद से उन्हे कोई अर्थ नहीं था। उनका अपना नारा तो चलते रहो चलते रहो ही था। जीवन पर्यन्त थकने का नाम उन्होंने लिया ही नहीं। पुरुषार्थ को आराध्य देव मान कर अपने मानस को एक खुली पुस्तक के रूप मे रखा ताकि हर कोई उनके जीवन से प्रेरणा लेकर जीवन की सार्थकता को समझे और जीवन को अपने लिये नहीं दूसरो के लिये जीने की विविधता को अगीकार करे।

प्रारम्भ मे मेरा लगाव बाठिया गौत्र की प्रतिभाओं के रूप म था जिसे भाई हजारीमलजी बाठिया ने अधिक सक्रियता प्रदान कर मुझे याठिया डायरेक्ट्री के सम्पादन का भार सौंपा जिसमे जीवन खण्ड' अभी अपूर्ण है तथापि इस माध्यम से मैं बाठिया गौत्र के अनेक बहुआयामी पुरुषो के कार्य-कलापा के साथ अपने इस ग्रथ से सम्बद्ध मनीषी के बारे में भी अनेक विशेष तथ्यो को जान पाने मे समर्थ हुआ। इससे मुझे वही पुराना हीरा अब अधिक तराशा हुआ व जानदार वजनी अनुभव होने लगा। मैं उन लोगो को अत्यन्त ही भाग्यशाली समझता हूँ जिन्हें ऐसे विचारक का सान्निध्य मिला जो चिन्तक लेखक विचारक, समाज सेवी और सबसे पहले एक मानव थे।

विसर्जन की प्रवृत्ति के पक्षधर होने के कारण जीवन पर्यन्त लोकोपयोगी कार्यों के लिये मुक्तहस्त से दान-पुण्य किया और इस तथ्य को प्रतिपादित किया कि किसी के पास कितनी धन-सम्पदा है उसका कोई विशेष अर्थ नहीं है, अर्थ इसमे निहित है कि वह औरो के लिये कितना लगा सकता है—जुटा सकता है। आलोचनाओं को सम्वल मान कर अपनी मजिल की ओर वे सदा बढ़ते रहे निराशा व असफलताओं के धूमिल वातावरण से वे कभी विचलित नहीं हुए और एक कर्मयोगी की भाति अपने मिशन में सदा दत्तचित्त रहे। □

—कसारा स्ट्रीट बालोतरा (बाड़मेर)

दानवीर समाजसेवी सेठ

— श्री तोलाराम मिन्नी —

ओजस्वी व्यक्तित्व के धनी, सुश्रावक कर्मठ कार्यकर्ता भीनासरवासी स्व सेठ श्री चम्पालालजी बांठिया को कौन नहीं जानता। आपका जन्म बांठिया कुल में सेठ श्री हमीरमलजी बांठिया के यहाँ वि सम्वत् १६५६ मिती मिगसर सुदी १५ को हुआ था।

आपने स्व १००८ श्रीमज्जैनाचार्य पूज्यवर्य श्री जवाहरलालजी म सा की सेवा तन मन, धन से की। उनके व्याख्यानों का सकलन प श्री शोभाचन्दजी भारिल्ल से कराया जो आज जवाहिर-किरणावलियों के नाम से प्रसिद्ध हैं। आचार्यश्री जी की यादगार में आपने 'जैन जवाहर विद्यापीठ' की स्थापना कराई जो आज 'दादा-गुरु का पुण्यधाम' कहलाता है और श्री बांठिया-हाल' के सामने ही है। ज्ञान-दर्शन-चारित्र की आराधना के लिए यह 'हाल' बहुत ही उपयोगी है। सत-सतियों के ठहरने तथा धर्मध्यान के लिए समाज के काम आता है। त्रिवेणी के मध्य केन्द्रित है।

वि स २०१२ में 'बृहत्-साधु सम्मेलन' भीनासर मे श्री बांठियाजी ने कुशल कार्यकर्ता का परिचय दिया। आपकी सगठित सुव्यवस्थित भावना अनुकरणीय है। कोई भी शुभ कार्य आना चाहिए फिर आप उसे अमल मे लाने के लिए कसर नहीं रखते। मेरे स्व पू पिताजी श्री जैवन्तमलजी मिन्नी आपके घनिष्ट एवं पड़ौसी मित्र थे। वे कहा करते थे कि बांठियाजी बात के धनी एवं समय की पाबन्दी रखते थे। उनकी हवेली की कारीगरी को विदेशी —दूर-दूर के लोग देखने आते थे। गांव में दो कुओं का निर्माण कराकर मीठा पानी उपलब्ध कराया जो दूर-दूर तक प्रसिद्ध है।

महान् क्रान्तिकारी पू जवाहराचार्य का अन्तिम समय में यहीं विराजना हुआ। दूर-दूर से दर्शनार्थियों का ताता लगा रहता था। बांठिया बधु तथा गगाशहर भीनासर संघ सभी अतिथियों का उत्साहपूर्वक स्वागत कर रहा था। आपने एक वर्ष पूर्व चाँदी की एक सुन्दर वैकुण्ठी (विमान) तैयार कराई। जिसको आचार्यश्रीजी सहित अग्नि-सस्कार किया गया। ठीक वैसी ही एक और वैकुण्ठी आज भी विद्यमान है जो संत-सतियों के देहावसान पर उपयोग में आती है।

श्री बांठियाजी का खान-पान आहार भी सतुलित था। इसी कारण आपने अपने जीवन के ८५ वर्ष सयमपूर्ण व्यतीत किये। वि सम्वत् २०४४ मिती चैत सुदी ३ को आपका स्वर्गवास हो गया। यह सम्पूर्ण जैन समाज के लिए अपूरणीय क्षति है। □

—४४ दिवान रामा रोड, मद्रास-८४

भीनासर के भामाशाह

— श्री लच्छीराम पूगलिया, भीनासर —

श्री चम्पालालजी बाठिया सद्गुणो के भण्डार थे। उन्होंने भीनासर की सुख-सुविधा और भलाई के लिये जितना कार्य किया उनका लेखा-जोखा लिखना मेरे वश की बात नहीं है। मैं तो उन्हे भीनासर का भामाशाह ही मानता हूँ। मेरा घर उनकी हवेली के बिल्कुल पास सटा हुआ है। मैं पिछले साठ वर्षों से उनके विषय मे गहराई से जानता हूँ। वे चरित्र की दृष्टि से अपने आप मे एक महान व्यक्ति थे। छोटे से भीनासर नगर मे जितने भी सेवा-सस्थान बने-बनाये हैं वे प्राय सबके सब श्री बाठियाजी के प्रयास से बने हैं जैसे श्री जवाहर हाई स्कूल श्री जवाहर विद्यापीठ बाठिया बालिका विद्यालय नगर जल सप्लाई सस्थान, श्री बाठिया पौषधशाला बाठिया व्याख्यान हॉल पोस्ट ऑफिस का भवन पुस्तकालय वाचनालय आदि। श्री बाठिया मुरली मनोहर गौशाला, ओसवाल पचायती म्युनिसिपल बोर्ड भीनासर में स्थापित करना पानी की कमी को दूर करने के लिये कुओं का निर्माण कराना और भी कई कार्य उन्होंने जनहित के लिए कराये और उनकी स्थायी सुन्दर व्यवस्था की।

उनमे साम्प्रदायिकता नाममात्र की नहीं थी। उनका जीवन राष्ट्रीयता से ओत-प्रोत था राष्ट्र के प्रति पूरी तरह से समर्पित थे। उन्होंने जो भी सेवा कार्य किया नि स्वार्थ भाव से किया। वे पढ़े-लिखे जरूर कम थे लेकिन उनका ज्ञान और अनुभव इतना अधिक था कि उनके सामने अच्छे पढ़े-लिखे सब बौने दिखलाई पड़ते थे। वे इतने अधिक होशियार और अनुभवी थे कि उनके कार्य करने का तरीका अनोखा और बेमिसाल होता था। फिजूलखर्च से वे कोसो दूर रहते थे। वे सरल स्वाभावी मितभाषी मिलनसार और गहरे विचारवान व्यक्ति थे। बीकानेर स्टेट सरकार मे उनकी काफी प्रतिष्ठा थी। वे बीकानेर एसेम्बली के सदस्य भी थे। बीकानेर जिला व्यापार मण्डल के वे अध्यक्ष भी रहे। वे पचकूला गुरुकुल और स्थानकवासी जैन कान्फ्रेंस के भी अध्यक्ष रहे और भी अनेक सस्थाओं से जुड़े रहे और उन्हे बराबर सहयोग सहायता देते रहे। बाल दीक्षा के विरोध में जनहित की दृष्टि से एक बिल एसेम्बली में रखा जिसका समझदार लोगो ने पूरी तरह समर्थन किया।

उन्होंने स्थानकवासी जैन समाज की इतनी अधिक ठोस सेवा की जिसका एक अलग इतिहास है। उस पर एक बड़ा ग्रथ लिखा जा सकता है। पूज्य आचार्यश्री

जवाहरलालजी महाराज साहब के वे अनन्य भक्त थे। आचार्यश्री जवाहर महान दूरदृष्ट क्रान्तिकारी संत थे। ऐसे उच्च कोटि राष्ट्र संत को हमारे इस क्षेत्र व नगर में ले आये यह साधारण कार्य नहीं था। इतनी लम्बी दूरी से और बड़े-बड़े श्रीमंतों के नगरों को बाद देकर हमारे भीनासर जैसे छोटे से नगर में ले आना कोई आसान कार्य नहीं था, बहुत बड़े सामर्थ्य की बात है। उनकी सेवा जिस लगन और श्रद्धा के साथ थी वह स्वर्णाक्षरों मे लिखा एक इतिहास ही है। यह ऐतिहासिक घटना हमेशा अमिट रहेगी। उन्होंने श्री जवाहर किरणावलियों के रूप में आचार्यश्री जी का साहित्य प्रकाशित कराकर समाज के सम्मुख एक ऐसी नवनिधि प्रस्तुत कर दी जिसके कारण पाठक उनको हमेशा साधुवाद देता रहेगा। वस्तुतः वे स्वयं साहित्य निर्माण के कारण अमर हो गये। श्री स्थानकवासी सम्प्रदाय का जो वृहद् साधु सम्मेलन इस नगर मे हुआ वह बाँठियाजी की बुद्धि और कौशल का एक ऐसा प्रमाण था जिसकी प्रशंसा क्षेत्र के सारे लोगों ने भरपूर की। उनका सारा जीवन कर्म सापेक्ष था। वे सच्चे धार्मिक और पक्के आस्तिक थे। लेकिन कुसंस्कारों गलत परम्पराओं अज्ञान और रूढ़ियों की बातों मे कतई विश्वास नहीं था। वे सही रूप में क्रांतिकारी और उत्कट समाजसेवी थे। मैंने उनके जीवन जीने की शैली में आचार्य नरेन्द्रदेवजी और डाक्टर राममनोहर लोहिया जैसा रूप देखा। वे अपना निजी कार्य हमेशा अपने हाथ से किया करते थे। आलस्य उनमे नाम मात्र का नहीं था। पास पड़ौस और गाँव में मुश्किल और कठिनाई के आये कार्य करने में वे तत्पर रहते अपने पास से पैसे खर्च करके भी आई मुसीबत को मिटाते थे। ऐसे समाजसेवा के ठोस कार्य हर कोई कर सके यह संभव नहीं है। वे स्थापत्य कला के विशेष पारखी थे। उन्होंने अपनी हवेली को बड़े सुन्दर और कलात्मक रूप से बनायी। नवागन्तुक व्यक्ति हवेली को देखकर आकर्षित होता है और उनके शिल्प मर्मज्ञ होने का प्रमाण पत्र देता हुआ फिर आगे बढ़ता है।

उनके विषय मे मैं जितना लिखूँ थोड़ा है। वे अब हमारे बीच नहीं हैं। उन्होंने जन कल्याण के हित में जितने कार्य किये वे हर व्यक्ति के लिये अनुकरणीय हैं। उनके परिवार से पूरी आशा है कि वे सब उनके द्वारा किये समाज हितैषी कार्यों को आगे बढ़ाते हुए उनकी 'यशोगाथा' को और अधिक विस्तार करने में पूरी जागरूकता से कार्य करेंगे। उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि एक मात्र यही ठीक होगी उनके किये सद्कार्यों को पूर्ण जागरित होकर करते रहें। वर्तमान आचार्य श्री नानालालजी महाराज के प्रति भी उनकी पूर्ण श्रद्धा थी। अपने समाज की कीर्ति बढ़ती देखकर वे बड़े प्रसन्न होते थे। ☐

—भीनासर (बीकानेर)

महान विभूति

— डॉ बहादुर सिंह कोचर —

यह हमारा मानव जन्म अत्यत ही दुर्लभ है और इसे पाकर इसका उपयोग किस भाति किया जाय यह प्रत्येक व्यक्ति की चेतनाशक्ति पर आधारित है। हममे से अधिकाश अपने स्वार्थों की पूर्ति में ही लगे रहकर अपनी जीवन लीला की इतिश्री कर लेते हैं, बिरले ही ऐसे होते है जो इस दुर्लभ जीवन का सदुपयोग परहित के लिए करते हैं। अपने ही विकास और अर्थोपार्जन तथा उदरपूर्ति मे तो अधिकाश लोग लीन रहते ही हैं कतिपय विभूतियाँ अवतरित होती हैं जो स्वय से कही अधिक समाज के विकास की ओर चिंतन करती हैं और क्रियाशील रहती हैं। यह सत्य है कि आज के विषम जटिल आर्थिक युग मे सामान्य व्यक्ति को अपनी ही बात सोचनी पड़ती है और अपनी ही चिंता करनी पड़ती है परन्तु ऐसे ही परिवेश मे जो व्यक्ति दूसरो के विषय मे सोचे चिंतन करे अपने चिंतन को अपने कार्यों से साकार करे वस्तुत वह महान होता है। समाज-सेवा और धर्म-सेवा के रग मे तन मन और धन से अपना योगदान देकर मनुष्य महानता की सीढ़िया चढ़ता है। वह भले ही शरीर से चला जाय उसके कार्य उसे अमर बना देते हैं।

ऐसी ही एक महान विभूति ने साहसी-प्रसवा मरुधरा मे जन्म लेकर अपने साहस वादिता से न केवल अपने व्यवसाय को चार चाद लगाये अपितु अपने रचनात्मक सेवाकार्यों से अपना जीवन सार्थक किया था। अपना समय श्रम शक्ति धन चिंतन और साधन समाज को समाज के धार्मिक एव जन हितकारी कार्यों मे लगाकर अनेक सस्थाए एव ज्ञात-अज्ञात व्यक्ति विकसित कर दिये थे। उन्होंने अपने जीवन का अमूल्य समय लगाकर अपना अर्जित धन लगाकर अनेक सस्थाएँ खड़ी कर दी जिनका लाभ आज भी अन्य अनेको को मिल रहा है। इन सस्थाओं के माध्यम से आज भी वह महान आत्मा अमर है।

पगड़ी धारण किये हुए सादे सरल भारतीय मारवाड़ी पोशाक पहने मृदुभाषी मितभाषी शिष्टभाषी मध्यम कद के सावले रग के श्री चपालालजी बाठिया की सेवाओं को कौन भुला पायेगा। वे चतुर्विध सघ के जाने-माने एव पहिचाने गौरवशाली व्यक्ति थे। उनके सम्मुख जब जब कोई समाज और धर्म सबधी समस्याएँ आई आपने अपने धैर्य विवेक साहस सद्भाव मैत्री सेवा कर्त्तव्य भावना के अनन्त अनुपम उपादानो

से निर्मित व्यक्तित्व से उन समस्याओं का सहज समाधान किया। अपने आत्मविश्वास आत्मबल और आत्मजागरण के द्वारा न केवल अपनी आत्मा का उत्थान कर आत्मकल्याण किया अपितु समाज का कल्याण कर समाज को गौरवान्वित किया। आप युगपुरुष आचार्यश्री जवाहरलालजी महाराज साहब के अनन्य भक्त थे उनके सिद्धान्तों को गतिशील बनाने वाले श्रद्धावान सुश्रावक साधुमार्गी जैन संघ को सुदृढ़ बनाने वाले समाज स्तम्भ थे। परमादरणीय मुनिराजो एव महासतियाँजी की सेवा म सदैव तत्पर रहने वाले श्री चपालालजी बाठिया ने एक सम्प्रदाय विशेष के उन्नयन तक ही अपना ध्यान सीमित नहीं रखा अपितु सर्वसाधारण के हितार्थ कुएँ निर्माण करवाना विद्यालय पुस्तकालय वाचनालय विद्यापीठ पौषधशाला, सिलाई बुनाई केन्द्र आदि स्थापना करना उनका सचालन करना और उनका विकास करना आपके स्तुत्य एव स्मरणीय कार्य थे हैं और रहेंगे। समय एव समाज आपका सदैव आभारी रहेगा। □

—स्नातकोत्तर विभागाध्यक्ष

व्यवसाय प्रशासन विभाग

श्री जैन स्नातकोत्तर महाविद्यालय बीकानेर

समाज के गौरव

— श्री प्रतापसिंह वैद —

स्वर्गीय श्री चम्पालालजी बाठिया ओसवाल (जैन) समाज मे एक ऐसे व्यक्ति हो गए हैं जिन पर गर्व किया जा सकता है।

मैं लगभग १० १२ वर्ष का रहा हूगा हमारे मकान १० कैनिंग स्ट्रीट कलकत्ता मे आपका प्रतिष्ठान था। हमारी पूज्य दादीजी बाठिया की बेटी थी सो मैं उन्हें दादाजी कहता था —उनका स्नेह भी महान था। बाद मे नजदीकी सम्बन्धी हो गये।

सिद्धातो के लिए मर मिटना व्यक्तिगत आदर्श है। पर ऐसे आदर्शों की सफल निष्पत्तिया व्यक्ति को यथार्थ महानता तक पहुचा देती है। विचार और सिद्धान्त इन दो बिन्दुओं पर व्यक्तित्व की नींव लगाई जाती है। विचारो मे जब स्थिरता आ जाए तो वे सिद्धात बन जाते हैं। जीवन की उच्चतम भूमिका तक पहुचने के लिए हरेक व्यक्ति अपने कुछ सिद्धान्त बनाकर चलता है और विजय पाता है।

पूज्य दादाजी श्री चम्पालालजी का ऐसा ही प्रेरक व्यक्तिव था। उनके अपने सिद्धात थे, विचार थे और जीने का अपना अनोखा तरीका था। वे बनी बनाई लकीरो पर चलना पसन्द नहीं करते थे। उनमे स्वतन्त्र अस्तित्व को स्थापित करने की क्षमता थी। उनके जीवन विश्लेपण मे कुछेक सिद्धान्त आज भी अनुकरणीय हैं।

वे खुद के लिए पूर्ण रूप से जीए जीवन भर औरा के लिए भी जीए। उन्होंने परार्थ के नाम पर जीवन के अगिणत क्षण विसर्जित किये। समाज सेवा सघ सेवा के साथ साथ जो भी उनके पास समस्याए लेकर आता उन्हें प्रेम से अपनाते समाधान देते। उनकी नि स्वार्थ सेवाओं ने उन्हे *'समाज रत्न' तक बना दिया।*

आगम की इस गाथा को मानो उन्होंने जीवन में उतारने का सकल्प सा कर लिया था —

'जय चरे जय चिट्ठे जय मासे जय सये ।
जय भुजतो भासतो पाव कम्म न बधई ।।

यह (मानव) जन्म मात्र सुख भोग के लिए नहीं है सिर पर कठिन दायित्व भी है। यह दायित्व ज्ञान उनमे पूरा था।

मुझे दृढ़ विश्वास है कि आत्म कृत सुकृत्या के कारण उनकी आत्मा को निश्चय ही सद्गति की प्राप्ति हुई है। उनकी आत्मा को चिर शांति मिले यही मेरी कामना है। हम उनके पदचिह्न पर चलकर उनके प्रति सच्ची श्रद्धाञ्जलि अर्पण कर सकते हैं। मैं नतमस्तक होकर उस पुण्य आत्मा को प्रणाम करता हूँ। □

—पूर्व अध्यक्ष भारत जैन महामण्डल बम्बई
महावीर आटो पार्ट्स महावीर भवन श्रीलाल मार्केट
सिलीगुड़ी-७३४४०१

विशिष्ट गरिमायुक्त व्यक्ति

— श्री सोहनलाल कोचर —

किसी के व्यक्तित्व को जानने के लिए कभी कभी अल्पसमय भी पर्याप्त होता है जैसा कि श्रद्धेय स्वर्गीय चम्पालालजी बाठिया के विषय में घटित हुआ।

उनके सुपुत्र श्री धीरजलालजी बाठिया ने आयकर सम्बन्धी परामर्श के लिए मुझ से समय नियत किया और मैंने देखा कि निर्धारित समय पर एक ऐसे व्यक्ति से मेरा साक्षात्कार हुआ जो प्रथम दृष्टि में ही एक सरल किन्तु विशिष्ट गरिमायुक्त व्यक्ति लगे।

धोती कमीज कोट और पगड़ी पहने मेरा उनका प्रथम मिलन ही कुछ ऐसा लगा जैसे मैं अपने सामने किसी पिता-तुल्य व्यक्ति को देख रहा हूँ और ज्यों-ज्यों परामर्श सम्बन्धी वार्तालाप होता गया मुझे लगा कि यह व्यक्ति काम क्रोध राग, द्वेष एवं मोह-माया के अन्तर जाल से निश्चित रूप से अपने आप को अलग कर चुका है। यद्यपि परामर्श स्वरूप ऐसे भी कुछ सुझाव मैंने दिये जिससे कि किसी अन्य व्यक्ति का हित न हो तथापि उन्होंने किसी भी ऐसे परामर्श को स्वीकार नहीं किया जो किसी का अहित करे चाहे वह निर्विवाद रूप से न्यायोचित ही क्यो न हो। मेरी दृष्टि में ऐसा व्यक्ति निःसन्देह श्रद्धा के पात्र हैं। इस के बाद भी उनसे मेरी मुलाकात दो बार उनके भीनासर स्थित बगले पर हुई और मुझे यह कहना ही होगा कि उनके अन्तरमन में मैंने किसी प्रकार की लालसा नहीं पाई। आडम्बर में वह मुझे कोसो दूर लगे। मैंने उन्हें एक सरल व्यक्ति एक अच्छा इन्सान पाया। उन्हे मेरा शतश प्रणाम। □

—८६ कैनिंग स्ट्रीट कलकत्ता ७००००१

सेवा एव उदारता के प्रतीक

— श्री मोहनलाल कठौतिया —

श्रीमान चम्पालालजी बाठिया से मेरा सम्पर्क विगत ४५ वर्षों से उनके जीवन पर्यन्त बना रहा। दिल्ली मे उनके व्यवसाय मे साझेदारी से प्रारम्भ हुआ। सम्पर्क धीरे धीरे अपनत्व बनता गया। २ वर्ष बाद हमने बिजली के पखो का कारखाना लगाया और उसमे भी हमारा साथ अन्त तक सौहार्द्रपूर्ण रहा। आपसी स्नेह पारिवारिक सम्बन्ध मे परिणत हो गया जो आज तक अखड चल रहा है।

श्री बाठियाजी हसमुख एव स्पष्टवादी थे। कला से उनका विशेष प्रेम था। अत आपने अनेक कला पूर्ण वस्तुओं का सग्रह भी किया।

उनकी सहनशीलता अनुकरणीय थी। मैंने उनको कभी क्रोधित होते नहीं देखा। दूरदर्शिता के साथ-साथ समाज सेवा की भावना उनकी तीव्र थी। सम्पन्नता और उदारता का उनके जीवन मे सयोग था जो सब जगह नहीं मिलता। समाजहित के लिये उन्होंने अनेक विद्यालय पुस्तकालय का निर्माण कराया और भी अनेक जनोपयोगी कार्यों मे उनका सहयोग यथासम्भव बराबर चलता रहा जिसका पूरा विवरण उनकी जीवनी मे लिखा है।

बीकानेर राज्य मे उन्होंने अच्छा सम्मान प्राप्त किया। तत्कालीन बीकानेर नरेश श्रीमान गगासिंहजी अपने राज्य के साहूकारो की हित रक्षा में बड़े सजग थे। राज्य मे सहयोगी साहूकारो को चादी की छड़ी चपड़ास आदि बख्शिशो द्वारा सम्मानित करते थे। उन साहूकारों मे श्री बाठियाजी का नाम उल्लेखनीय है। राज्य के अधिकारियो से उनका निकट सम्पर्क भी था और समाज के लोगो मे आपसी विवादों को भी उन्होंने बुद्धिमत्ता से सुलझाकर परस्पर सद्भावना को सुरक्षित रखने मे अच्छी भूमिका निभाई।

धार्मिक क्षेत्र मे विशेषकर जैन स्थानकवासी समाज मे उन्होंने ख्याति अर्जित की। उच्च पदो पर आसीन रहे साधु-सन्तो की सेवा एव धर्मार्थ कार्यों मे अनेक प्रकार से सहयोग देते रहे। उनकी साम्प्रदायिक भावना भी विशालता मे परिणित हो गई।

श्वास की तकलीफ रहते हुए भी वे अपने कर्त्तव्यपालन में सदैव सक्रिय रहे —यह उनकी विशेषता थी। इतनी लम्बी आयुष्य म भी कभी उनमे निराशा नहीं दिखाई दी।

जैन धर्म मे जीवन से अधिक महत्व मृत्यु का है। जो श्रावक अंत समय में विशुद्ध विचारो के साथ अनशन युक्त मृत्यु को प्राप्त करता है वह उच्च गति को प्राप्त होता है और उसकी आध्यात्मिक विचारधारा अगले जीवन म भी प्रवाहित रहती है। श्री बांठियाजी ने संथारा (अनशन) के साथ अपनी जीवन-यात्रा को सम्पन्न किया, यह धार्मिक जगत म अति महत्वपूर्ण है।

ऐसे महान मित्र के प्रति मैं अपनी स्नेहांजलि अर्पित करते हुए आनन्द का बोध करता हू। □

—निदेशक अध्यात्म साधना केन्द्र
नई दिल्ली ३०

अपनी अलग पहचान

— श्री सत्य प्रकाश गुप्ता —

श्रेष्ठी वर्ग मे अपनी अलग छवि के लिए सेठ श्री चम्पालालजी बांठिया का व्यक्तित्व सदैव चमकता रहा। वैसे मेरे पूज्य पिताजी श्री महावीर प्रसाद गुप्त का बांठिया परिवार से सन् १६२८ से सम्बन्ध रहा है और तब से वे उनके मुख्तार आम थे। बचपन से सेठजी को पिताजी के पास आते देखता रहा हूँ, सन् १६३६ मे सेठजी से मेरा परिचय हो गया। सन् १६४२ में अपना कार्य शुरू करने पर सेठजी से निकटता बढ़ी और सन् १६४४ में तो उनका अधिकार कार्य मैंने संभाल लिया था काम सामाजिक हो या कचहरी का या आयकर सम्बन्धी हो बराबर उनसे मिलना होता था इस प्रकार घनिष्ट पारिवारिक सम्बन्ध हो गया।

सेठजी की स्पष्टवादिता ने मुझे सदैव प्रभावित किया। बीकानेर में उनका इनकम टैक्स सम्बन्धी कार्य शुरू किया तब उन्होंने मुझे स्पष्ट रूप से कहा— नये डाक्टर की तरह आपेशन मत कर डालना। मैंने भी विश्वासपूर्वक कह दिया—यदि कार्य ठीक नहीं हो तो आप मुझसे कार्य नहीं करवाना। उन्हे विश्वास में लेकर मैंने कार्य किया और अन्त तक सफल रहा। इसी विश्वास के सहारे मैं उनका अंतरग बन गया। उनकी

प्रसन्नमुद्रा एव अपनत्व की भावना कभी भूली नहीं जा सकती। रामपुरिया आईस फैक्ट्री मे भी मुझे सहयोगी बनाया और लाखो का व्यवसाय की देख रेख का कार्य मुझे सौंप दिया जो मेरे लिए कल्पनातीत था।

सेठजी की मुझ पर असीम कृपा रही है। २६ वर्ष की अल्पायु मे मैंने अपना मकान बनाने की ठान ली तो सेठजी का इसमे मुझे पूर्ण सहयोग मिला। सन् १६५० से तो उन्होंने अपना इनकम टैक्स का सारा कार्य मुझे सौंप दिया था और मैंने रिटायर होने तक कार्य निष्ठा से किया लेकिन इतनी लम्बी अवधि मे भी उनसे किसी बात पर मनमुटाव नहीं हुआ। उनका विश्वास अमर बेल की तरह बढ़ता ही गया। हा एक दो बार मेरी ओर से त्रुटियाँ भी हो गई लेकिन उन्होंने अन्यथा न लेकर उदारता का परिचय दिया।

उनके गुणो का बखान करना कठिन है। वे जबान के पक्के गरीब अमीर मे अन्तर न करने वाले अपनो के हितैषी स्पष्टवक्ता व अत्यन्त मिलनसार थे। मेरे पिताजी व दादाजी के देहावसान की सूचना मिलते ही तत्काल सात्वना देने मेरे घर पर आए थे।

मेरे जीवन मे पढ़े-लिखे ज्ञानी करोड़पति व लखपति बहुत आए परन्तु सेठजी जैसा कोई नहीं था। मेरी अस्वस्थता के समय आपने मद्रास अपने समधीजी को लिखा था आप सत्य प्रकाशजी के लिए जो करेगे वह मैं अपने लिए समझूगा यह उनकी आत्मीयता का परिचायक है।

वस्तुत उस विराट व्यक्तित्व को शब्दो मे बाधना मेरी सामर्थ्य में नहीं है उनकी कमी अपूरणीय है तथा सदा कचोटती रहेगी। ☐

—ग्रीन कॉटेज माल मसूरी

धर्मनिष्ठ कर्मनिष्ठ समाजसेवी

— श्री जयचन्दलाल रामपुरिया —

श्रद्धेय चम्पालालजी बाठिया जो कि मेरे सगे चाचीश्वसुर थे को समाज कभी भी विस्मृत नहीं कर सकता। उनका व्यक्तित्व बहु आयामी था। धार्मिक एव सामाजिक सेवा प्रकल्पो की स्थापना एव उनके कुशल सचालन मे उन्होंने उच्चतम कीर्ति को प्राप्त किया। वे वास्तव मे समाज भूषण व समाज-गौरव थे।

आदरणीय चम्पालालजी नीति परायण धर्मनिष्ठ एव सुश्रावक थे। आचार्य प्रवर जवाहरलालजी महाराज की अन्तिम समय मे भीनासर में सतत् सेवा, उनके प्रवचनो व साहित्य का प्रकाशन, उनकी पावन स्मृति मे जैन जवाहर विद्यापीठ की स्थापना आदि धर्म एव सघ के प्रति उनकी दृढ़ आस्था के प्रतीक हैं। स्वर्गीय बाठिया साहब अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन सघ के अध्यक्ष भी रहे। अखिल भारतवर्षीय श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कान्फ्रेस का तेरहवा स्वर्ण जयन्ती अधिवेशन भीनासर में उनके सतत् प्रयत्न से अत्यन्त ही समारोहपूर्वक व सफलतापूर्वक विनयचद भाई दुर्लभजी जौहरी की अध्यक्षता म दिनाक ४ ५ ६ अप्रेल १९५६ को सम्पन्न हुआ। इसका उद्‌घाटन भारत के गृहमत्री माननीय गोविन्द वल्लभ पत ने किया। इस समारोह में मोहनलालजी सुखाड़िया, जयनारायणजी व्यास बलवतरायजी मेहता व श्रीमती रुक्मणि अरूडेल आदि अनेक गणमान्य व्यक्तियों ने भाग लिया। चम्पालालजी सा ने मुझे इस समारोह का स्वागताध्यक्ष का पद सभालने के लिए कहा। मैंने उनकी भावना का सम्मान करते हुए यह पद स्वीकार किया। उनकी निष्ठा व लगन से यह सम्मेलन ऐतिहासिक बन पड़ा। ऐसे धर्मनिष्ठ कर्मनिष्ठ समाजसेवी चम्पालालजी बाठिया को मैं अपने श्रद्धासुमन अर्पित करता हूँ। □

—५ पन्नालाल बनर्जी लेन (फेन्सी लेन)

कलकत्ता-७००००१

प्रेरणा के अजस्र स्रोत

— श्री केशरीचन्द सेठिया —

श्रेष्ठीवर्य श्री चम्पालालजी बाठिया का जन्म मरुधरा के प्रसिद्ध नगर भीनासर मे हुआ था। भीनासर मे बाठिया परिवार की ख्याति एव कीर्ति की सुवास चारो ओर फैली हुई है। सुसम्पन्न श्रीमत परिवारो मे इसकी गणना की जाती है। बाठियाजी उन इनेगिने व्यक्तियो मे से थे जिन्होने हर क्षेत्र म अपनी प्रतिभा की छाप छोड़ी।

मझलाकद गेहूँ वर्णी चेहरे पर स्मितहास व दृढ़ता का अनोखा सम्मिश्रण घनी मूछे आकर्षक चेहरा सर पर राजस्थानी बहुरगी पगड़ी आपके व्यक्तित्व को उभारती थी।

अल्पवय मे ही आप पाट (जूट) का व्यवसाय महानगरी कलकत्ता मे करने लगे। व्यापार के क्षेत्र मे विशेष कर पाट के क्षेत्र मे आप के फर्म की अच्छी साख थी। लेकिन प्रारम्भ से ही आपको व्यापार मे कम और सामाजिक धार्मिक कार्यों मे अधिक रुचि थी।

हमारे परिवार का सम्बन्ध इस परिवार से ७० ८० वर्षों से भी अधिक का है।

मैं जब किशोरावस्था मे था आपको निकट से देखने का अवसर मिला है। प्राय वे हमारे सेठिया ग्रथालय मे स्वर्गीय पूज्य दादाजी श्री भैरोदानजी से मिलने सलाह-मशवरा करने आते रहते थे। पू दादाजी का स्नेह इनके प्रति अधिक था। वे बाबूजी का सम्मान ही नहीं करते उन पर श्रद्धा भी रखते थे।

श्री जैन हितकारिणी सस्था व अन्य सस्थाओं की बैठको के कारण उनका आना होता ही रहता था। सामाजिक उन्नयन व नव परिवर्तन सम्बन्धी चर्चाओं के अतिरिक्त समाज की बिखरी शक्ति को सुसगठित करने तथा धार्मिक प्रवृत्तिया मे नवयुवक-नवयुवतियो को आगे लाने उनमें धार्मिक सस्कार आदि पर मत्रणा होती थी। समाज मे फैली कुरीतियो के प्रति उनके दिल मे एकाग्रता एक कसक थी। अपने समाज के बच्चों को व्यवहारिक शिक्षा के साथ-साथ धार्मिक शिक्षा व सुसस्कार दे सके इसके लिये वे जीवन पर्यन्त प्रयत्नशील रहे।

महान क्रान्तिकारी आचार्य श्री जवाहर के आप अनन्य परमभक्त ही नहीं उनके प्रति अगाध श्रद्धा भी रखते थे। स्वर्गीय आचार्य श्री के उद्बोधनों को 'जवाहर

किरणावली के माध्यम से ३५ भागो मे प्रकाशित करवाकर एक महान एव महत्त्वपूर्ण कार्य किया। उनका यह चिरस्मरणीय कार्य साहित्य जगत मे सदा सदा के लिये स्मरणीय रहेगा। आचार्य प्रवर अपनी अतिम अवस्था म भीनासर में ही विराजते थे। उस समय आपने जो सेवा की वह अनुकरणीय है। उस समय पूरे भारतवर्ष का तीर्थ स्थल बन गया था भीनासर।

मुझे और अधिक नजदीकी से देखने का अवसर उस समय मिला जब मैं छात्र था। उस वर्ष पवकुला गुरुकुल का वार्षिकोत्सव आपकी अध्यक्षता मे मनाया गया। उनकी कार्य कुशलता तत्काल निर्णय व उनके क्रान्तिकारी विचारों से प्रभावित हुआ।

राजनैतिक क्षेत्र मे भी उन्होंने अपनी एक विशेष पहचान बनाई थी। सरकारी गैर सरकारी अनेक सस्थाओं मे आप पदाधिकारी रहे।

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन सघ बीकानेर ने आपके सन्मानार्थ प्रशस्ति पत्र व शाल भेंट करने के लिये मुझे व समाज के विशिष्ट व्यक्तियों को यह कार्य सौंपा। हम उनकी हवेली मे गये। काफी अर्से से वे रुग्णावस्था मे थे। उन्होंने आचार्यश्री सघ और समाज के प्रति जो श्रद्धा भक्ति के भाव व्यक्त किये उससे हम सब गद्‌गद् हो गये। यह हमारी अतिम भेट थी उनके साथ।

आज वे हमारे हमारे बीच नहीं हैं पर उनके द्वारा समाज की बिखरी शक्ति को सुसगठित करने, ज्ञान वृद्धि के कार्य मे सतत तत्पर रहने व प्रगति पथ पर उन्मुख बनाने में उन्होंने जो कुशल नेतृत्व दिया वह हमेशा हमेशा इतिहास के पन्नों में यादगार बनकर प्रेरणा का अजस्र स्रोत रहेगा। □

—सहमंत्री, श्री अ भा साधुमार्गी
जैन सघ एवं मंत्री साधुमार्गी
जैन सघ मद्रास

अद्वितीय कर्मयोगी

— श्री धनराज बेताला —

श्रीमान् सेठ साहब श्री चम्पालालजी बाठिया अपने सुदीर्घ जीवन काल मे ऐसे कर्मयोगी हुए जिनकी बहुआयामी समाजसेवा, सघर्ष एव उपलब्धियो का अपूर्व खजाना है जिसको अनावृत्त करना किसी एक लेखनी से सभव नहीं है। सेठ साहब के जीवन की झाकी मुझे मेरे पूज्य मामासा स्व श्री मूलचन्दजी सा पारख व उनके निकट सम्पर्कों से ही प्राप्त हुई। आदरणीय श्री बाठियाजी जिनका कि जैन समाज मे उनके कार्यो से जो विशिष्ट स्थान था और उनका सम्पर्क सूत्र अनेकानेक नगरो कस्बो एव गावो के विशिष्ट महानुभावो से था उनमे पूज्य मामासा का भी प्रमुख स्थान था जिसके कारण सेठ सा का सान्निध्य प्राप्त करने व कर्म शैली से परिचित होने का मुझे भी अवसर प्राप्त हो सका।

श्रीमान् सेठ सा श्री चम्पालालजी सा बाठिया जिस किसी भी कार्य को हाथ मे लेते उसे अपने सत् पुरुषार्थ से पूरा करने तक आराम से नहीं बैठते। कार्य करने की आपकी विशिष्ट शैली थी, जिसमे उनके सम्पर्क मे आने वाले व्यक्ति को प्रभावित कर उससे अपने मतानुकूल कार्य करने के लिए तैयार कर लेने की अद्वितीय क्षमता थी। आपने अपने जीवन काल में समाज सेवा, जनोपयोगी कार्यों के ऐसे कीर्तिमान स्थापित किये वैसे करने वाले युग पुरुष कम ही होते हैं। आप द्वारा किये गये कार्यों के कीर्ति स्तम्भ आज भी भीनासर के एक छोर से दूसरे छोर तक स्पष्ट परिलक्षित होते हैं।

आपके जीवन काल के महान क्रान्तिकारी श्रीमद् जवाहराचार्य के आचार्यत्व काल की उपलब्धियो का समय उल्लेखनीय ही नहीं वरन ऐतिहासिक हो गया। पूज्य श्री जवाहरलालजी म सा के सदुपदेशो को जवाहर किरणावलियों के रूप मे पुस्तको की बड़ी शृखला प्रकाशित करवाकर आपने सत् साहित्य प्रकाशन मे अमरत्व प्राप्त कर लिया। सद्धर्म मन्डन जैसे विशिष्ट ग्रन्थ भी आपके पुरुषार्थ से जैन जगत को प्राप्त हुए।

आपके द्वारा समाज में सस्थाओं के माध्यम से जो कार्य सम्पन्न हुए जिनसे आप स्थानकवासी समाज के अध्यक्ष बनाये गये। आपके अध्यक्षीय कार्यकाल मे स्थानकवासी श्रमणसघ सुसगठन को प्राप्त हुवा जिसका श्रेय भी आपकी विलक्षण कार्यशैली को ही है।

आपक द्वारा सेठ सा की स्मृति में ग्रन्थ प्रकाशन की जो योजना बनाई है। वह सेठ सा की सेवाओं के आयामो को उद्घाटित करेगी जिसमे समाज की आगामी पीढ़ी को सेवा कार्यों मे सपृक्त होने हेतु प्रोत्साहित करेगी आपका यह सत् प्रयास अत्यन्त सफल हो यही कामना है। □

—मत्री श्री सुरेन्द्र कुमार साड
शिवा सोसाइटी, नोखा

यशस्वी एव समर्पित व्यक्ति

—श्री जसकरन बोथरा —

स्व सेठ श्री चम्पालाल जी सा बाठिया की स्मृति मे आपने जो स्मृति ग्रन्थ प्रकाशन का निर्णय लिया है वह बहुत सामयिक व उपयुक्त है। क्योंकि सेठ सा उसके वास्तविक अधिकारी हैं।

मेरा सेठ सा से सम्पर्क बहुत पुराना है। भीनासर साधु सम्मलेन में उनके साथ रहकर व्यवस्था आदि का गगाशहर क्षेत्र का भार सम्भालने वालो म से भी एक था। उसके बाद श्री जवाहर विद्यापीठ मे भी साथ रहकर खूब कार्य करने का सुअवसर मिला। साथ कार्य करके मैंने यह अनुभव किया कि सेठ सा दीर्घ अनुभवी व विरल सूझ-बूझ के धनी थे। उनकी पकड़ बहुत पैनी थी। वे शीघ्र निर्णय लेने में पूर्ण सक्षम थे। गाव-समाज में उनकी अपनी एक छाप थी।

गगाशहर भीनासर में श्री जवाहर विद्यापीठ श्री जवाहर हाईस्कूल, श्री बाठिया बालिका विद्यालय पीने के पानी हेतु कुआ बाग आदि का निर्माण युगा-युगो तक उनकी स्मृति को तरोताजा रखेगा।

श्री जवाहर किरणावलियों का प्रकाशन कराके उन्होंने समाज और देश को एक युगान्तरकारी साहित्य सुलभ कराने की पहल की जिसके लिए वे सदैव स्मरण किए जाते रहेंगे।

उनके यशस्वी जीवन के प्रति मेरी हार्दिक श्रद्धा। □

—नई लाइन गगाशहर (बीकानेर)

समाज सेवा के सेठ

—डॉ महेन्द्र भानावत —

धनवीर कई होते हैं समाजवीर बहुत कम। जो समाजवीर होते हैं उनकी पहचान अधिक लम्बी और फैलाव लिये होती है। लोकमान उन्हीं का होता है जो धन भूषण के साथ-साथ उतने ही समाजभूषण होते हैं। जैन समाज मे ऐसे वीरों की कमी नहीं रही जिन्होंने लोकहितकारिणी प्रवृत्तियो मे अपना अधिकाश समर्पित कर दिया। युद्धवीर महाराणा प्रताप के साथ दानवीर भामाशाह सोने में सुगध की तरह आज भी याद किये जाते हैं।

ऐसे ही भीनासर के सेठ चम्पालालजी बाठिया स्मरणीय हो रहे हैं। कानोड़ मे तो जवाहर विद्यापीठ था ही पर वहा पढ़ते-पढ़ते यह भी सुन लिया था कि मारवाड़ के भीनासर मे भी इसी से मिलता-जुलता जैन जवाहर विद्यापीठ है। जैन गुरुकुल छोटी सादड़ी से दसवीं पास कर आगे पढ़ने जाने की जगह तब मेवाड़ के छात्रो के लिये या तो उदयपुर थी या फिर मारवाड़। बोर्डिंग की दृष्टि से तब कुचेरा राणावास और भीनासर का बड़ा नाम था। मेवाड़ के छात्र इन छात्रावासो मे पढ़ने लग गये थे। पढ़ने के अलावा अन्य सभी प्रवृत्तियो म भी इधर के छात्र सराहे जाते थे।

राणावास केवल तेरापथी समाज का था पर कुचेरा भीनासर मे ऐसी कट्टरता नहीं थी। यह कट्टरपन हमारे घर परिवार मे भी नहीं रहा और वहा भी नहीं रहा जहा हम पढ़ सके। बीकानेर जाने पर दो सेठो के नाम जिधर देखो उधर ही चर्चा मे रहते। इनमे से एक नाम भीनासर के सेठ श्री चपालालजी बाठिया का होता और दूसरा बीकानेर के सेठ श्री भैरोदानजी सेठिया का। बीकानेर मे ही नहीं देश के पूरे जैन समाज मे सेठिया-बाठिया बड़े आदर की दृष्टि से देखे जाते।

बाठियाजी से भीनासर मे उनके घर की बैठक में मिलना हुआ। उनके विद्यापीठ मे भी मिलना हुआ पर एक साधारण छात्र की हैसियत से अन्य छात्रों के साथ। बातचीत मे लगा कि उनकी वाणी मे एक ऐसा घोष विद्यमान है जिसम कहने से अधिक कुछ सार्थक करने की फलश्रुति है और वह प्रभावना भी है जिसमे सामर्थ्य का सबल और सामाजिक स्वीकृति है।

वे आगे से आगे कुछ करने की धुन लिये रहते। समाज के काम। गाव के काम। शिक्षा के काम। सेवा के काम। सब तरफ उनकी दृष्टि दौड़ती थी। एकता और

अखडता मे उनका पक्का विश्वास था इसलिए वे तड़ और फड़ को किसी समाज में देखना पसद नहीं करते थे। जैन समाज में जो विभिन्न पथ और सप्रदाय घर कर गये थे और सम्प्रदाय मे भी जो अन्तर-सम्प्रदाय पैदा हो गये थे उन्हे एक करने का उन्होंने भागीरथ प्रयास किया। अपने भीनासर मे ही विराट साधु सम्मेलन कराना उन्हीं के बूते की बात थी। आवश्यकता सभी महसूस कर रह थे पर इतना साहस और सबको एकमच पर ला खड़ा करना उन्हीं का अद्‌भुत कौशल था। यही कौशल उन्होंने सादड़ी म अखिल भारतवर्षीय स्थानकवासी जैन कान्फ्रेंस का सम्मेलन कर दिखाया जिसकी वड़ी व्यापक चर्चा रही और सारे देश का जैन समाज वहा उमड़ा। बांठियाजी ने अध्यक्ष की भूमिका लेकर वह सम्मेलन ऐतिहासिक ही नहीं बनाया उसे एक ऐतिहासिक मोड़ भी दिया।

बांठियाजी उस तरह के दानी नहीं थे जिनके वहा दान लेने वालो की पक्ति लगी रहती थी और वे गुपचुप अपनी बधी मुट्ठी दूसरा की मुट्ठी मे खोल देते थे। वे हर समर्थ व्यक्ति को जहा समाजहित म अच्छा करने की सामर्थ्य देते वहा अर्थ की कमी की सपूर्ति के लिये कर्मशील दृष्टि-पथ देते और उसके सरक्षक बन उसे पूर्णता दिलाते। ऐसे सब तरह के कार्य उन्होंने सम्पन्न करवाये जिनसे सभी आम खास लाभान्वित होते। स्कूल वाचनालय पुस्तकालय, सत्साहित्य प्रकाशन नगरपालिका विधानसभाई सदस्य हवेली निर्माण ऑनरेरी मजिस्ट्रेट पौषधशाला कुए खुदवाना धार्मिक ट्रस्टे का सचालन जैसे कार्यों मे वे अपनी बहुमुखी चहुमुखी-सर्वमुखी-सर्वसुखी ऊर्जा क्षमता के साथ कइयों को साथ लिये चलते। प्रेरित करते। साधन जुटवाते। सुविधाएँ मुहैय्या करवाते इसलिए जहा उनकी जैसी चाह बन जाती वहा वैसी राहे प्रियदर्शिनी हो पगायमान हुई मिलतीं।

समाज की ऐसी विभूतियों को हमें बार-बार स्मरण कर उनके सेवा कार्यों को जग जाहिर करना चाहिये पर कई बार उनके परिवार वाले ही उन्हे विस्मृत करते पाये जाते हैं। यह प्रसन्नता की बात है कि सेठ चपालालजी बांठिया को समाज और उनका परिवार दोनों ही निरन्तर याद किये हुए हैं इसीलिए उनके द्वारा सचालित प्रवृत्तिया आज भी चलायमान हैं और वे सुवासिनी बनी हुई हैं।

इस अवसर पर मैं श्री जवाहर विद्यापीठ के कार्यकर्ताओं को भी साधुवाद देना चाहूगा कि उन्होंने बांठियाजी की स्मृति को इस रूप मे अक्षुण्ण बनाने का सकल्प लिया। □

— ३५२ श्री कृष्णपुरा उदयपुर ३१३००१

महामना को शत्-शत् प्रणाम!

— डॉ विष्णु दत्त आचार्य —

सौम्यता सेवा और सत्कार के त्रिवेणी सगम मे अवगाहन किया हो ऐसा मुझे अनुभव हुआ जब नगर सेठ स्व श्री चम्पालाल जी बाठिया से मेरा प्रथम साक्षात्कार हुआ। सागोपाग मारवाड़ी पहनावे मे सजा-सवरा इकहरे बदनवाला दीदारू नयनाभिराम चेहरा बरबस मुझे आकृष्ट कर रहा था। मृदुता युक्त मुस्कराहट और नेत्रो से छलकता स्नेहिल स्वागत सोने मे सुहागे का काम कर रहा था। बात चीत की शैली नपी तुली शब्दावली भाषा सौष्ठव और वाणी का मिठास देख लगता था धन की अधिष्ठात्री देवी श्री लक्ष्मी जी के साथ वीणा वादिनी मा सरस्वती का भी आपके यहा वास है। आतिथ्य मे आपकी गृह लक्ष्मी दो कदम आगे ही रही थी जिसे देख सुखी दाम्पत्य-जीवन की सपुष्टि स्वत ही हो रही थी। इस अवसर पर सेठ साहब के सुपुत्र चि सुमति की देखने को मिली सुसस्कारित शिष्ट व्यवहार की झलक भी श्लाघनीय रही थी।

फिर वह घड़ी आई जब अतिसकोच के साथ श्रीमान् सेठ साहब ने मेरे साथ बातचीत का अपना आशय व्यक्त किया जिसको किसी भी कीमत पर सम्पूर्ण किए जाने का श्रीमती सेठानीजी का सानुग्रह निवेदन था जिसे मैंने प्रभु का आदेश या उसके निमित्त की जानेवाली सेवा के रूप मे तत्काल सहर्ष स्वीकार कर स्वय को अति सौभाग्यशाली समझा और माना कि सर्वशक्तिमान की आज मुझ पर विशेष कृपा हुई है।

आशय को स्पष्ट करते हुए श्रीमती सेठानीजी ने कहा कि सेठ साहब को किसी बात की चाहना नहीं रही है लेकिन जीवन की एक अन्तिम इच्छा अवश्य है और वह यह कि भीनासर स्थित उनके तीन विद्यालय भवन राजकीय जवाहर माध्यमिक विद्यालय श्री बाठिया उ प्रा बालिका विद्यालय एव राजकीय प्राईमरी स्कूल भीनासर बीकानेर (राज) विधिवत् रूप से राजस्थान सरकार के सुपुर्द कर दिए जाए। प्रभु इच्छा बलियशी! उन्हें आश्चर्य तो अवश्य ही हुआ लेकिन तत्काल यह कार्य सम्पादित हो जाने से उन्हे जो आत्मतोष मिला इससे मुझे भी प्रसन्नता हुई जिसके लिए मैं सेठ साहब का आभारी हूँ। स्व महामना को शत् शत् प्रणाम! □

—जोशीवाड़ा बीकानेर

अनुपम शिक्षा प्रेमी

— सुबोध वाला गुप्ता —

श्री बाठिया बालिका विद्यालय मे अक्टूबर १९९० से मैंने प्रधान अध्यापिका का कार्यभार सम्भाला है तभी से बाठिया परिवार से मेरा परिचय हुआ है। प्रथम बार बात करने पर ही ऐसा लगा जैसे वर्षों पुरानी जान पहचान है। पूरा परिवार ही अनूठा-विरला है जो अपनी अमिट छाप छोड़ देता है। आप लोग किसी को परेशान होते तो देख ही नहीं सकते उनकी समस्याए स्वय ही जानकर हल करने का प्रयत्न करते हैं आप लोगा से एक बार बात होने पर शायद ही कोई भुला सकता है। फिर स्वर्गीय सेठ श्री चम्पालाल जी बाठिया के कार्य क्षेत्र ही इतने अधिक हैं शायद ही कोई क्षेत्र छोड़ा हो जिसमें उनका योगदान न हो। मैं तो उनके समक्ष अपने आप को कुछ लिखने योग्य भी नहीं समझ पा रही। मैं केवल शिक्षा क्षेत्र के विषय मे ही दो शब्द लिखुगी।

भीनासर मे छात्र-छात्राओं के लिए पढाई की कोई व्यवस्था न थी सभी माता-पिता अपने बच्चों को दूर भेजने म सक्षम नहीं थे। आपने उनकी कठिनाई को दूर करने के लिए शिक्षा क्षेत्र में बालक-बालिका के लिए विद्यालय खुलवाकर अनुपम कार्य किया जिसका कर्ज शायद ही कभी कोई पूरा कर सकेगा। आप मन मे जिस कार्य को करने की सोच लेते थे पूरा करके ही छोड़ते थे। अगर इस धरा पर आप जैसे थोड़े और व्यक्ति हो जायें तो निरक्षरता निर्धनता अपने आप ही समाप्त हो जायेगी।

'यह श्री बाठिया बालिका विद्यालय है शिक्षा का उत्तम आलय है।

पढ़ती यहा चार सौ छात्रायें हैं सभी गुण गाती श्री बांठिया जी के

जो करते अच्छी देख रेख वे ही हैं इसकी महाशक्ति।

सभी छात्र छात्राओं की शुभकामनायें आपको प्रेषित हैं। नारी जाति ही नहीं वरन् समस्त मानव समाज आपका ऋणी रहेगा तथा एक आदर्श मानव के रूप में आपकी याद बनी रहेगी। सबसे अधिक प्रसन्नता की बात है आपका परिवार आपके चलाये कार्य को ही आगे बढ़ा रहे हैं। भगवान से प्रार्थना है यह परिवार हमेशा प्रगति करता रहे। इन्हीं शुभकामनाओं के साथ। □

— प्रधानाध्यापिका रा बाठिया बालिका उ.प्रा विद्यालय भीनासर

नारी जागरण के प्रेरक

— राजकुमारी शर्मा —

जीवन मे हमेशा कई प्रकार की विकट समस्याए प्रतिदिन आती रहती हैं। शायद उनमे से कुछ ऐसी भी होती है जिनका समाधान न हो पर मानव जाति के इतिहास मे यह बात नहीं के बराबर लागू होती है क्योंकि उनके निराकरण के लिये ईश्वर कुछ ऐसी महान विभूतिया को इस पृथ्वी पर मानव कल्याण के हेतु अवतरित करते हैं जो अपना जीवन जन साधारण की भलाई व उनके उत्थान मे अर्पित कर देते हैं। ऐसी ही एक विभूति के दर्शन का अहोभाग्य हमे प्राप्त हुआ जिनके जन कल्याण के कार्य आने वाली कई पीढ़ियो तक याद रहेगे। ये तेजस्वी व्यक्तित्व के धनी धुन के पक्के भीनासर के गौरव श्रीमान् चम्पालाल जी बाठिया थे जिन्हे हम शत शत नमन् करते हैं।

उनके जन कल्याण के कार्यों को हम जीवन पर्यन्त नहीं भुला पायेगे। भीनासर मे बालिकाओं के प्राथमिक शिक्षा से आगे कोई व्यवस्था नहीं थी। बालिका चाहे कितनी ही तीव्र बुद्धि हो उसे अपने घर बैठना पड़ता था। तब आपने मन मे एक सकल्प लिया कि बालिकाओं को इस हानि से बचाया जाये और इसी के फलस्वरूप आपने उच्च प्राथमिक स्तर तक क्रमोन्नत करने हेतु नये शाला भवन का निर्माण करा कर सरकार को अर्पित किया। जहा बालिकाए उच्च शिक्षा प्राप्त कर सकती हैं। यह उनके नारी जाति के प्रति श्रद्धा व उनके उत्थान की ही इस प्रवृति का द्योतक है। नारी जाति उनके इस कार्य के लिए युगो तक ऋणी रहेगी। इसके साथ-साथ आपने नारी जो पिछड़ी और गरीब तथा परिवार वालो द्वारा प्रताड़ित हो उनके जीवन निर्वाह हेतु एक महिला सिलाई बुनाई केन्द्र की स्थापना कराई।

नारी का सम्मान करने वाले बहुमुखी प्रतिभा के धनी। आपको समस्त मानव समाज एक आदर्श के रूप मे आने वाले समय मे याद रखेगा। आपने जहा व्यापार मे दक्षता प्राप्त की वहीं नगरपालिका न्याय क्षेत्र तथा अन्य कई क्षेत्रो मे अभूतपूर्व कार्य किये। आपके यशोगान हेतु हमारे पास शायद शब्द ही नहीं। अपने जनोपयोगी कार्यों के कारण क्या बालिकाएँ क्या बालक और क्या समाज द्वारा शोषित महिला वर्ग आपको हमेशा हमेशा याद रखेगा। □

—अध्यापिका रा बाठिया बालिका उ.प्रा विद्यालय भीनासर

आदर्श समाज रत्न

— श्री मदनलाल जैन —

सेठ जी के जन्म-जात गुण

मनुष्य मात्र के प्रति सवेदना शील प्यार-दयालुता और करूणा सेठ चम्पालाल जी के जन्म जात गुण थे उनकी निस्पृह समाज सेवा अभिनन्दनीय थी। सेठ जी के व्यक्तित्व मे धार्मिकता समाज-निष्ठा और सेवा शीलता की त्रिवेणी का पावन सगम था। मरुधरा के इस महामानव का ध्यान प्रारम्भ से ही समाज सेवा एव राष्ट्रीयता की ओर सदैव बना रहा। शिक्षा-जगत एव धार्मिक प्रचार और प्रसार में आप श्री के अथक प्रयासों से अनेक सस्थाओं का आविर्भाव हुआ था। सामाजिक व लोक-कल्याणकारी प्रवृत्तिया म सलग्न रह कर आप ने जो कार्य किये स्वय में आदर्श हैं।

जन सेवा के मसीहा

शुद्ध मन से जन सेवा करने वाले पुरुष विरले ही नजर आते हैं—निस्वार्थ जन सेवा की महानता निर्विवाद है। सब प्रकार के स्वार्थो से एव भेद भावो से परे रह कर जन-कल्याण के प्रति सेवा की भावना को अपनाने वाले, कल्याण कारी और सुख समाज की स्थापना करने वाले हमारे चरित्र नायक सेठ वाठिया जी जन सेवा के मसीहा रूप थे। समाज को दी गयी आपकी विशिष्ट सेवाओं के लिए विभिन्न सामाजिक सस्थाओं की ओर से आप को सम्मानित किया गया था और अभिनन्दन पत्र भी भेंट किये गये थे।

यश से तो वे निर्लिप्त थे

कहते हैं कि दुनिया के लोग यश के लिये पागल होते हैं और अधिकाश लोग उसके पीछे-पीछे मारे मारे फिरते हैं पर यह उनकी पकड़ मे नहीं आता। कुछ ऐसे व्यक्ति भी हैं जिनके पीछे यश भागता है पर वे उसकी पकड़ मे नहीं आते। स्वनाम धन्य सेठ श्री चपालाल जी वाठिया ऐसे विशिष्ट व्यक्तियो में थे जो अपने काम से काम रखते थे—यश से तो वे निर्लिप्त थे। □

—जैन स्टोर्स हिरनगेट के अन्दर
जालधर सिटी (पजाब)-१४४००१

जैन रत्न श्री चम्पालाल जी बाठिया स्मृति स्तवन

— रचयिता श्री सरदार भाई-कोचर —

भीनासर सपूत चम्पालाल जी महान्
जैन विभूति तुम्हे जन-जन नमन्
था-विख्यात न्यायविद-न्यायकीर्तिमान
था समाजोद्धारक सामाजिक कृतिउल्लेखमान्=१=

था सघ भूषण, था सघ नायक
था सघ पालक था सघ विस्तारक
था सघ हितकारक था सघ कल्याणकारक
था सघ उद्धारक, था सघ तेजस्वीदीपक=२=

था वह दिव्य ज्योत था वह दिव्य रत्न
था वह दिव्य प्राण था वह प्रेरणारत्न
था वह दिव्य जीवन था वह मरुधर रत्न
था वह दिव्य श्रावक था वह दिव्य वीर भूषण=३=

थे तुम मरुधरा के महामानव
थे तुम बहुआयामी गुणो के व्यक्तित्व
थे तुम अग्रणी प्रेरणाप्रद प्राणित्व
थे तुम कविहृदय यशस्वी कर्तृत्व=४=

जीवन था तुम्हारा प्रेरणा पुज
जीवन था तुम्हारा काव्यकुज
जीवन था तुम्हारा प्रख्यातपुज
जीवन था तुम्हारा चहुँदिशिगुज=५=

जन जन देखे नयन जवाहर विद्यापीठनिर्माण,
जन जन प्यास बुझाये मीठे पानी कुवो का अवतरण
हर छात्र तेरी यशोगाथा गाये जवाहर हाई स्कूल प्रदान
हर छात्रा तेरी स्मृति सजाये बाठिया माध्यमिक कन्याशालादान=६=

स्थानकवासी जैन कान्फ्रेन्स का था प्राण
साधु सम्मेलन के प्रवर्तक किया वह नियोजन
विशेषताएँ झलकाता हुआ था वह नर केशरी रत्न
बीकानेर राज घराने का था वह स्नेह भरा राज्य भूषण॥७॥

—आर के भवन जैल रोड बीकानेर ३३४००१

चपालाल वाठिया

— श्री गोवर्धन दास —

चपा सी महक जीवन मे फैलाई।
पारावार सी लिए गहराई।
लासानी थे लाल हमीरी।
लक्ष्मी सरस्वती कृपा पाई।
वाकुरा रहे समाज धर्म सेवी।
ठिकाने की सदैव बात कही।
यादगार भीनासर मे रहेगी स्थायी।

—प्रधानाध्यापक डी सौ रामपुरिया विद्यानिकेतन
गंगाशहर (बीकानेर)

ऐसे थे सेठ

— श्री के एस पवार —

ऐसे थे सेठ चम्पालाल जी बाठिया
वे थे एक दानी महान् ।
भीनासर गाव बड़ा भारी
जहा रहते हैं सैकड़ो नर नारी ।
यही सेठ चम्पालाल जी का जन्म हुआ
साक्षात् लक्ष्मी का आगमन हुआ ।१।
दानवीर सेठ के कामो को देखे
क्या क्या उन्होंने कार्य किये ।
स्कूले खोली जवाहर विद्यापीठ चलाई
कन्या पाठशाला की शुरुआत कराई ।
फिर राजा ने उनको दिया वह सम्मान ।२।
ऐसे थे सेठ
भीनासर के इन्द्र बन
जनता के लिए कुऐं खुदवाये
पानी पीने को पिलाने को
उन्होंने कई बाग लगाये
हम नहीं भूल सकते उनके
किये हुए उपकार महान् ।३।
ऐसे थे सेठ
प्रात काल रोज उपासरे जाते थे
दीन दुखी गरीबो को रोज समझाते थे
अहिंसा और सत्य के वे थे ऐसे अवतार
उनको कभी न भूलेगा
जैन जगत का यह ससार ।४।
ऐसे थे सेठ । □

—प्राचार्य एम एम सी उ मा वि स्कूल बीकानेर

असमानता मे समानता

— श्रीमती तारा देवी वाठिया —

गृहस्थ जीवन में सुखी वही कहलाता है। जिसका दाम्पत्य जीवन सुखी है। सुख और दु ख एक सिके को दो पहलू हैं और हर एक के जीवन में आते रहते हैं। समय देखकर उससे समझौता कर लिया जाय यही सुखी जीवन का आधार है।

हमारी उम्र में बहुत अन्तर था। उम्र के साथ विचारो मे भी फर्क था। तब पर्दा प्रथा भी बहुत ही जोरों पर थी औरतें आपस मे भी बोलती नहीं थी। हर एक को उत्तर भी नहीं दे सकती थी। सिर्फ इशारे से या टिचकारी से ही जवाब दिया जाता था। बुजुर्गों के आगे चलना भी मना था। ऐसे समय मे उन्हाने और हमने समय के साथ समझौता किया। बीच का रास्ता अपनाया। भगवान बुद्ध ने कहा कि रस्सी को ना ज्यादा खेंचों और ना ज्यादा ढील दो मध्यम मार्ग अपनाओ। यही सफल जीवन का रहस्य है। गृहस्थ के कार्यों मे भी हम एक दूसरे के पूरक रहे। हर एक कार्य एक दूसरे की सलाह से करते थे।

उनका स्वभाव विनोदी था। बात ऐसी अचूकी करते ताकि सभी हँसे बिना नहीं रहते और जब कड़े रुख से रहते तो सभी डरते थे हर एक बोलने में भी घबराता था। वे एक निडर व्यक्तित्व के धनी थे। नमोत्थुण मे एक शब्द आया है पुरुषसिहाण वे पुरुषों में सिंह के समान थे। जब भीनासर में साधु सम्मेलन हुआ तब बीकानेर के प्रमुख श्रावक श्रीमान् सतीदासजी तातेड़ आये और उन्होंने कहा कि आप हमारी नाक कटवाओगे क्या ? तब उन्होंने जवाब दिया कि मैं क्यों कटवाऊँ ? उन्होंने कहा 'हम सम्मेलन का हकारा भरा आपे पर हम बीकानेर में करवा नहीं सकते यदि आप आगे रहो तो हम आपके साथ हैं। उन्होंने कहा—बीकानेर गगाशहर और भीनासर में आदमी बहुत हैं क्या वे कुछ नहीं कर सकते। तातेड़ सा बोले आगे काम करने वाला सपन्न आदमी आपके सिवाय कोई नहीं है सो हमारी नाक आप ही रख सकते हो' आखिर उन्होंने हकारा भरा और अच्छी तरह बढ़िया तरीके से सम्मेलन सफल किया। गाव में भी पंच पचायती हर वक्त होती ही रहती थी। कभी गाँव एक तरफ और आप एक तरफ रहकर भी गाँव की पचायती सम्हाल लेते थे और सफलतापूर्वक हल निकाल लेते थे। कोर्ट कचहरी में भी कभी केस अपनी जिंदगी में हारे नहीं। वे कहा करते थे कि केस हारना मेरे कोष में ही नहीं है। वे साम दाम दड भेद सब नीतियों के जानकार थे सो कोई भी उपाय काम में

लाकर अपने विरोधी को कभी अदालत में जीतने नहीं दिया। बुद्धि के बहुत ही विचक्षण थे उन्हे हाजिर जवाब उपजता था। वे एक असाधारण व्यक्तित्व के धनी थे।

पू जवाहरलालजी महाराज के अन्यय भक्त थे। उनकी बहुत सेवा की और उनके प्रति पूर्ण समर्पित थे। पूज्यजी महाराज भी एक जवाहर की अपेक्षा एक जौहरी भी थे। उन्हे आदमी को परखने की कला बहुत आती थी। वृद्धा अवस्था मे उनके दो चातुर्मास हुए। इनका बहुत ज्यादा सपर्क रहा। मुझे तो उनके दर्शन का सौभाग्य प्राप्त न हो सका पर वे मुझे कहा करते थे कि मेरा जीवन सामाजिक कार्यों मे ढालने वाले जवाहरलालजी महाराज ही हैं। चातुर्मास मे उन्होंने एक बात कही कि जहाँ हमारा चातुर्मास हो और आप ताश खेलो क्या यह अच्छा लगता है तब मुझे शर्म महसूस हुई और मैंने कहा कि अच्छा नहीं लगता है आज से ही मुझे सोगध दिला दीजिये अब मैं कभी नहीं खेलूँगा। अब ताश नहीं खेलो तो दूसरी तरफ कुछ कार्य करो। तब से उनकी रुचि सामाजिक कार्यों मे हो गई और उन्होंने समाज में भारी कार्य किया। कुम्हार घड़े को जैसा रुप देता है घड़ा वैसा ही बन जाता है सो इनके घड़ने वाले जवाहरलालजी महाराज थे सो उनका रूप आज समाज के सामने है। उनकी भी भक्ति असीम थी। वो मुझे कहा करते थे कि जब पूज्यजी महाराज पाट पर विराजते थे तब लगता था कि कोई देवता बिराजे हैं—उनकी बड़ी-बड़ी आँखे थी गौर वर्ण था और उनके उपदेशा का बहुत भारी प्रभाव पड़ता था। आदमी का काया-कल्प हो जाता था।

एक बार उदयपुर मे आपका चातुर्मास था वहाँ एक वेश्या आपकी बहुत भक्त थी उसके एक लड़की थी आपने कहा कि तुम तो अपना धधा करती हो पर इस लड़की से यह धधा मत करवाना। तब उसने कहा कि इस लड़की से शादी कौन करेगा। उन्होंने उस रोज उसी पर व्याख्यान दिया और कहा कि इस सभा म कोई माई का लाल है जो इस लड़की से शादी करे। उस वक्त वहाँ मोहनलालजी सुखाड़िया थे उन्होंने खड़े होकर कहा कि मैं इससे शादी करूँगा और उन्होंने शादी कर ली। यह उनकी वाणी का प्रत्यक्ष प्रमाण था।

आचार्यश्री जी के स्वर्गवास के १ साल पहले ही आपने चाँदी की वैकुठी तैयार करवा ली थी। जब पूज्यजी महाराज का स्वर्गवास हो गया तब इतने भाव विह्वल हो गये कि चाँदी की वैकुठी सहित उनका पार्थिव शरीर चदन एव खोपरे के साथ ही जला दिया गया। उनके पीछे उछाल भी चाँदी के रुपये बोरों में भरकर की गई और बाद मैं जब शरीर जल गया तब कुछ चाँदी और खरीदकर एक और वैकुठी घर मे कारीगर बिठाकर दूसरी बनाकर जवाहर विधापीठ को भेंट मे दे दी।

आपने पूज्यश्री के नाम पर इस संस्था का नाम जवाहर विद्यापीठ रखा। उनके व्याख्यानों पर आधारित जवाहर किरणावलियां का प्रकाशन भी बहुत अच्छे ढंग से करवाया। आज विद्यापीठ की स्थापना के ५० साल पूरे हो गये स्वर्ण जयंती मना ली है। धन्य हैं आचार्यश्री जवाहरलालजी महाराज और धन्य हैं उनके अनन्य भक्त श्री चम्पालालजी बांठिया। □

—अध्यक्षा श्री साधुमार्गी जैन महिला समिति

गंगाशहर भीनासर

अजात शत्रु

— श्रीमती सवर कवर चोरड़िया —

पूज्य पितृश्री का व्यक्तित्व बहुआयामी इन्द्रधनुषी एवं सौरभान्वित था। उनमें धरती की धीरता सागर का गांभीर्य हिमालय की अडिगता सूर्य की तेजस्विता एवं सरिता का समर्पण समाहित था। कर्मठता एवं सात्त्विक विचारों के प्रतीक रूप में आप सदैव प्रेरणादायक रहेंगे। उनका विवेक तलस्पर्शी एवं परमगहन था किसी से कुछ कहने से पूर्व वे अपनी बात तोल कर बोलते थे।

उनकी दृष्टि विशाल, कार्यशैली विलक्षण एवं आत्मीयता मानव मात्र के लिए थी। पड़ोस में गली में या भीनासर में किसी को कोई काम हो, हवेली के द्वार सदैव खुले थे। समाज के हितचिन्तक सन्मार्ग दर्शक एवं प्रेरणास्तंभ रूप में उनका आदर्श अनुकरणीय रहेगा।

गुरु भक्ति एवं संत-सेवा में आप अग्रणी रहे। यही नहीं, संघ व शासन के प्रति उनकी निष्ठा भी सच्चे श्रमणोपासक की थी। संघ व समाज सम्बन्धी कार्यों में उनका चिन्तन समष्टि के लिए था वहां व्यष्टि का महत्व गौण था।

सचमुच आपका जीवन हर खुशी से सराबोर था। आपने आजीवन न तो किसी का बुरा चाहा और न किया। किसी ने आपको धोखा दिया हो फिर भी आपने अपना व्यवहार नहीं बदला। आप तो एक वृक्ष के समान थे, जो पत्थर मारने पर भी फल देता है। ऐसे अजातशत्रु को शतश: वन्दन नमन। □

—३४२ मिंट स्ट्रीट साहुकार पेट

मद्रास ६०००७९

पूज्य पिताजी मेरे आदर्श

—श्री धीरज बाठिया —

मैं अपने आप को विशेष भाग्यशाली मानता हूँ, जिसे पूज्य पिताजी का सर्वाधिक स्नेह मिला। १९८० तक मैं उनके पास बीकानेर मे ही रहता था। यह कुछ पूर्व जन्म के सस्कारो की ही बात थी कि वे हमेशा मेरी हर बात पर विशेष ध्यान देते थे।

वैसे तो हर पिता अपने बच्चो को स्नेह करते ही हैं और हर सन्तान अपने पिता का स्नेह पाता ही है —लेकिन पिताजी मेरे लिए एक साधारण पिता से कुछ बढ़कर थे। एक पिता के रूप मे उनकी यादे आज भी मेरे मन-मस्तिष्क मे अपनी अमिट-छाप बनाए हुए है। उनके सभी कार्य मेरे लिए जिन्दगी के मापदण्ड स्वरूप हैं— वे इतने गुणो के भण्डार थे--कि उनके जीवन से जो भी सीख सकू-कम है। वे निज पर शासन फिर अनुशासन स्पष्टवक्ता दूरदर्शी बात की पकड वाले न्यायनीति सम्पन्न परोपकार भावना से ओत-प्रोत हर बात की वास्तविकता को समझकर पहचानकर ही उसका अनुकरण करते थे। उन्होंने अपना पूरा जीवन जनसेवा के लिए समर्पित कर दिया था उनका पूरा जीवन ही ऐसे उदाहरणो से भरा-पड़ा है— लेकिन मैं यहा सक्षिप्त मे कुछ लिख रहा हूँ।

पहले मैं उनके विशेष स्नेह को अपने बाल्यकाल से ही शुरू कर रहा हूँ। मैं कक्षा १ से १० तक भीनासर जवाहर हाई स्कूल मे ही पढ़ता था जो हमारे मकान से १ किमी भी दूर नहीं होगी—लेकिन मैं शायद ही कभी स्कूल पैदल गया हू। सुबह पिताजी को प्राय १० बजे (Court) कोर्ट पधारना होता था— लेकिन मुझे स्कूल छोड़कर ही वे कोर्ट पधारते थे एव शाम को ४ बजे स्कूल की छुट्टी होने से पहले या तो स्वय पधार जाते या गाड़ी सिर्फ मुझे घर छोड़ने के लिए बीकानेर से भिजवा देते।

मैं १५ वर्ष की उम्र मे कॉलेज मे आ गया था—तो मुझे तुरन्त लायसेस दिलवा दिया और मैं कभी स्कूटर या कभी स्वय गाड़ी लेकर कॉलेज जाने लगा। जब भी मुझे कुछ रुपए की जरूरत होती—तो उन्होंने हमेशा मुझे तिजोरी की चाबी ही दी मैं अपनी इच्छा से ले सकता था। उनका नियम था — १५ दिन मे रोकड़ मिलाते थे —उससे पहले खर्चे का हिसाब लिख देना ही पर्याप्त था।

१९६७ मे १९ वर्ष की उम्र म मेरी शादी हो गई। शादी चूकि अहमदावाद हुई थी। वहा खुलापन अधिक था —इसलिए पिताजी ने वीकानेर में भी हमें कभी, कहीं भी जाने के लिए मना नही किया। और सहजता से उसे सहर्ष स्वीकार भी किया। वे वहुत दूरदर्शी थे —परिस्थितियों को पहचान कर इस प्रकार व्यवहार करते थे कि दूसरे को आभास भी नहीं हो पाता था।

१९६८ मे बी कॉम करने के वाद मैं व्यापार का कार्य सीखने रामलालजी भाईजी के पास हमारे बीकानेर के प्रतिष्ठान पर जाने लगा था। वहाँ भी मुझे पिताजी ने ६ महीने वाद ही मुझे अपने निर्णय से कार्य करने की पूरी-पूरी छूट दे दी। एकदा साल म ही मैचवेल इलेक्ट्रीकल्स पूना म मुझे डायरेक्टर भी वना दिया। यह उनका मेरे प्रति स्नेह और विश्वास ही था कि उन्होंने जल्दी ही निर्णय की स्वतन्त्रता के साथ आगे वढ़ने का मौका दिया।

१९८० मे मुझे कलकत्ता जाने के लिए कहा क्योंकि वैद परिवार से जो कि हमीरमल चम्पालाल मे हमारे भागीदार थे—आपसी मतभेद शुरू हो गए थे। उधर मेरे वड़े भाई शान्तिलालजी के साथ कपड़े का व्यवसाय था जिसे मेरा छोटा भाई देखता था— हमारे मनमुटाव हो गए थे। पूज्य पिताजी ने ये दोनों इतने वड़े निर्णय भी मुझे अपनी सूझबूझ से सलटाने को कहा। वैद परिवार के साथ हमारे कोर्ट केस की स्थिति थी लेकिन वो नहीं करके मैंने आरवीट्रेशन का रास्ता चुना। मुझे आपने मद्रास मे सेठ साहव मोहनमलजी साहब चोरड़िया के पास अकेले ही इसके लिए भेजा। दुर्भाग्यवश कोई फैसला नहीं हो पाया। लेकिन फिर भी पिताजी ने इसे खुले दिल से सराहा। वड़े भाई साहव के साथ कपड़े के व्यवसाय स हुए मनमुटाव को भी मैंने जिस निर्णय से भी सुलझाया। पिताजी ने इन दोनों निर्णयो से अधिक सहमत न होने पर भी मेरी हिम्मत वढ़ाई मुझे टोका नहीं।

कोर्ट कार्य के लिए भी मुझे जव मैं वीकानेर में रहता था जाना पड़ता था। राजकुमारी मालू ट्रस्ट केस के लिए उन्होंने मुझे हाईकोर्ट इनकम टैक्स कमीश्नर आदि सभी जगह पूर्ण विश्वास के साथ भेजा। आपने कहा 'हर कार्य मे सफलता/असफलता दोनों मिलती है। यह पिताजी का विश्वास ही था कि मैं हर क्षेत्र में जाने में सक्षम हो सका। एक पिता को अपने पुत्र पर इतना आत्मविश्वास हो यह एक विशेष बात थी और यह सौभाग्य मुझे मिला। आज मुझे यह उनका एक आर्शीवाद सा प्रतीत होता है।

१९८५ मे जव पिताजी को प्रोस्टेट की तकलीफ हुई और ऑपरेशन के लिए बैंगलौर जाना था —तव भी पूज्य पिताजी ने सभी को साथ चलने के लिए मना कर

दिया और मुझे साथ लेकर बैंगलौर गए। यह एक पुत्र के लिए कितनी सौभाग्य की वात है। आपरेशन पूर्ण सफल रहा—लेकिन कुछ उम्र के कारण उसके वाद से धीरे-धीरे उनके स्वास्थ्य मे गिरावट ही आती गई। वे अपने अतिम समय तक भी पूर्ण स्वावलम्बी थे और इतनी हिम्मत थी कि उनके चेहरे से या वात से किसी अन्य को उन्होंने कभी भी दैहिक कष्ट का आभास नहीं होने दिया।

१६८६ अक्तूबर मे कलकत्ता मे मैंने जब नया फ्लेट लिया तब पिताजी को लिखा अब आप एक दफा पधारे तो अच्छा रहेगा। पिताजी यही सोचकर कि मैं अब इससे ज्यादा स्वस्थ नहीं होऊगा जनवरी १६८७ को पू मासा के साथ कलकत्ता भी पधारे। लेकिन २ महीने मे ही खासी अस्थमा ज्यादा हो जाने से, उनका दिल फिर उठ गया और बोले अब बीकानेर चलते हैं। १५ मार्च के लगभग हम लोग बीकानेर पहुचे—वहाँ तवियत मे थोड़ा सुधार आने लगा तब मुझे कहा 'तुम वापस कलकत्ता चले जाओ। कुछ जरूरी काम पेन्डिग थे —पहले वो निपटाकर फिर ३/४ महीने मे एक दफा देश आ जाना। मैं २८ मार्च को ही वापस पहुचा था कि पूज्य पिताजी का १ अप्रेल को देहावसान हो गया। हम सभी भाई-बहिन, बम्बई-मद्रास-कलकत्ता से दिल्ली पहुचकर २ अप्रेल को बीकानेर पहुचे और यह हमारा सौभाग्य था कि ऐसी पुण्य आत्मा के अन्तिम दर्शन हो सके। आज मुझे ऐसा लग रहा है कि वे अपने पवित्र चरणों से नए घर को पवित्र करने ही कलकत्ता पधारे थे। आज उन्हीं के आशीर्वाद से यह घर फल-फूल रहा है। आज पिताजी हमारे बीच नहीं है, लेकिन मैं अपने घर मे रहते हुए हर पल उन्हे अपने करीब पाता हू। इस घर मे उनका वह स्पर्श ही मेरे लिए एक विशेष महत्व रखता है।

मेरे जन्म से पहले की बात है उनकी दूरदर्शिता का एक उदाहरण आज के सदर्भ मे देखते हैं तो लगता है कि उन्होंने जो वात १६३६ में सोची थी आज वो सुप्रीम कोर्ट मे कानून बनने के लिए पेंडिंग है। तब उन्होंने अकेले ही बाल दीक्षा का विरोध करने का बीड़ा उठाया। उन दिनो बीकानेर मे एसेम्वली हुआ करती थी—पिताजी एम एल ए थे उन्होंने बाल दीक्षा विरोधी एक बिल रखा। समाज के कुछ अन्य धार्मिक सम्प्रदायो ने इसका विरोध किया क्योंकि यह एक धार्मिक भावना थी। सामन्तशाही जमाना था —'एसम्वेली' जरूर थी लेकिन महाराजा ही सर्वोपरि हुआ करते थे। उन्होंने पिताजी को बुलाकर कहा यह Bill Withdraw कर लो। क्योंकि हमे सिर्फ समाज सुधार ही नहीं करना है वरन् राज भी करना है इसके लिए सभी सम्प्रदायो को साथ लेकर चलना पड़ता है। अत यह कानून तो नहीं बन सका —लेकिन पिताजी भी अपनी

बात पर अडिग थे जो उन्होंने २ /३ हजार पत्र छपवाकर देश के सभी प्रमुख नेताओं/उद्योगपतियों चिन्तकों एवं अन्य प्रमुख लोगों को पोस्ट कर दिए और उनके समर्थन स्वरूप जो जवाब आए उसकी एक किताब SOME OPENIONS छपवा दी। आज के सन्दर्भ में वो एक अमूल्य दस्तावेज है।

दूरदर्शिता का दूसरा उदाहरण भीनासर साधु सम्मेलन था जो १९५६ में सम्पन्न हुआ। पिताजी का यह सोचना था कि समस्त भारतवर्ष के स्थानकवासी साधुवर्ग अपना पद त्याग कर एक आचार्य के अन्तर्गत कार्य करें तो ही धर्म की गरिमा एवं दूसरे समाज पर इसका प्रभाव बना रह सकेगा। आने वाली पीढ़ी के लिए यह जरूरी भी है कि धर्म को एक संगठन का रूप भी दिया जाए। उनके सफल नेतृत्व में भीनासर साधु सम्मेलन पूर्ण सफल रहा। लेकिन दुर्भाग्यवश फिर जल्दी ही साम्प्रदायवाद पनपने लगा और आज वो एक अभिशाप सा बन गया है। पिताजी ने हमेशा पूरी जिन्दगी इस बात का विरोध किया चाहे इसके लिए उनको कैसी भी परिस्थिति का सामना क्यों न करना पड़ा।

उन्होंने जवाहरलालजी महाराज साहब की अनन्य सेवा की क्योंकि उनके उदार विचार एवं धर्म को समय के अनुरूप परिवर्तन के वे समर्थक थे। यह बात उनकी दृष्टि से सही थी। यही कारण था कि इसके बाद वे किसी अन्य से इतना नहीं जुड़ सके। वे हमेशा हर बात को समझकर उसकी तह तक पहुंचकर ही उसका अनुसरण करते थे।

वे बहुत ही न्यायनीति सम्पन्न व्यक्ति थे—इसलिए हमारे भुआ साहब श्रीमती राजकुमारी मालू, जो वर्षों से विधवा थे एवं उनके कोई पुत्र भी नहीं था। वे अपनी वसीयत में पू. पिताजी को भाई होने के नाते Executor of the Will बनाना चाहते थे। पिताजी की एक शर्त थी कि यदि वे अपनी कुल सम्पत्ति का ३० % धर्म कार्यों के लिए देना निश्चित करें तो ही वे ट्रस्टी बनेंगे। उनके यह मान लेने पर उन्होंने ट्रस्टी बनना स्वीकार किया।

इसके लिए उन्हें अपनी जिन्दगी के २० वर्ष हाईकोर्ट/सुप्रीम कोर्ट में लगाने पड़े लेकिन हिम्मत नहीं हारी और उसका ही फल था कि हर बार उन्हें सफलता मिली। उन्होंने हमेशा अन्याय का विरोध किया—उससे समझौता नहीं किया और इसके लिए बड़ी से बड़ी चुनौती का सामना भी किया।

कलकत्ता में आपने चम्पालालजी बैद के साथ भागीदारी में जूट का बड़ा व्यापार मैं हमीरमल चम्पालाल के नाम से शुरू किया था। चम्पालालजी बैद ने अपने

जीवन-काल तक उसे इस तरह निभाया तथा हमेशा कहते थे ये ही मेरे सेठ हैं—हम लोग तो इनके कारण ही खड़े हुए हैं। पिताजी ने जिस पर विश्वास किया —पूरा ही किया। हमीरमल चम्पालाल का इतना बड़ा व्यापार मात्र चम्पालालजी वैद के पूर्ण विश्वास के साथ उन पर छोड़ रखा था। आज इतना विश्वास करने वाले इन्सान ससार मे मिलने दुर्लभ हैं।

हम लोगो ने पिताजी को कभी भी दोपहर मे सोते हुए या गप्पे लगाते हुए नहीं देखा आलस्य उनसे कोसो दूर था। वे हमेशा कुछ ना कुछ लिखते या पढ़ते रहते थे। रोज ही ढेर सारे पत्र आते थे— १०/१२ पत्रो का तो उसी दिन ही जवाब भी दे देते। वे चाहे कितने भी व्यस्त क्यो ना हो— यदि उनसे मिलने कोई गया—तो सभी कार्य छोड़कर पहले उससे बात करते। बात समाप्त होते ही तुरन्त अपने कार्य मे व्यस्त हो जाते। उन्होंने शायद ही कभी किसी से कहा होगा—कल आना सोचकर बताऊगा। वे बहुत ही स्पष्टवक्ता एव हाजिर जवाबी थे। वे कर्मठ साहसी एव पुरुषार्थी महापुरुष थे।

नियमबद्ध जीवन उनका लक्ष्य था। शादी विवाह म सभी लोगो को बर्तन आदि देते थे। घर मे बर्तन हैं—तो उन्होंने कभी ना नही कहा। और वो भी यदि कोई दोपहर मे भयकर गर्मी मे भी आ गया—तो भी सब कार्य छोड़कर उसे पहले बर्तन देते। किसी से भी शायद यह नहीं कहा कि बाद मे आ जाना और वो भी नियमानुसार स्वय कष्ट सह लेना स्वीकार्य था पर दूसरो को कष्ट न देना उनका मृहालेख था। जिसने पहले लिखवाया है—उसे ही देते चाहे कोई भी ब्राह्मण माली क्या ना हो। परिवार मे भी किसी के यहा शादी है— लेकिन बर्तन दूसरे ने लिखा रखे हैं तो पिताजी तो उसे ही दगे। ऐसी बहुत सी विशेष बाते थी —छोटे वर्ग को बराबरी का दर्जा देना उनकी विशेषता थी जिससे पूरे ग्रामवासी उनसे बहुत प्रभावित थे। होली दीवाली सैकड़ो की सख्या मे लोग उनसे मिलने आते थे। साधारण व्यक्ति से भी स्नेह निभाने वाले ऐसे व्यक्ति ससार मे कम ही मिलते हैं। यह प्रक्रिया उन्होंने अपने पूरे जीवन-काल तक ज्या की त्या निभाई। १६८५ के बाद कुछ अस्वस्थ रहने लगे थे—सो ऊपर सामने के कमरे मे विराजते थे— फिर भी उनका जीवन तो ऐसे ही नियम बद्ध था।

उनके गुणो को लिखना लेखनी के बाहर की बात है। वे मित्रा के परम मित्र एव समस्त मानव मात्र को एक ही पिता की सन्तान समझने वाले ससार म विरले ही देखने को मिलते हैं। आज सन्त तुलसी के ये शब्द स्मरण हो रहे हैं—

परहित सरिस धर्म नहीं भाई।
परपीड़ा सम नहिं अधमाई।।

इन दोहो के उपरान्त एक और घटना याद आने लगी है। पूज्य पिताजी श्री मुरली मनोहर गौशाला के अध्यक्ष थे। राजकाज मे भी उनका पूरा वर्चस्व था। उन्हे पता लगा सरकार को १० ००० रुपया जमा करवाकर गायो के चरने के लिए गौचर भूमि छुड़ाई जा सकती है। तब पूज्य पिताजी ने अपने स्नेही मित्र श्री बशीलालजी राठी को बुलाकर कहा-आप १०,००० रुपया देकर यह धर्म कार्य क्यो नहीं कर देते। वे पिताजी की बात कभी नहीं टालते थे। उनसे १० ००० रुपया दिलाकर ५४०० बीघा जमीन गाया के चरने के लिए सरकार द्वारा गोचर भूमि रूप म सदैव के लिए छुड़वा दी। वे चाहते तो स्वय भी १० ००० दे सकते थे लेकिन उन्हे अपने मित्रों से विशेष स्नेह था और समस्त मानव मात्र को एक ही पिता की सन्तान समझते थे सो यह कार्य उन्होंने श्री बशीलालजी राठी द्वारा करवाया।

पिताजी मे एक विशेष दिव्य अलौकिक शक्ति थी—जिससे वे जो भी बात किसी से करते उसे पूर्ण समर्थन के लिए तैयार कर लेते। और जिस भी कार्य का उन्होंने कभी बीड़ा उठाया उसे पूर्ण अवश्य किया। भीनासर मे बाबा सालमनाथजी का कुआ यों ही बेकार पड़ा था। पिताजी ने उनसे बात की और उन्हे इस बात के लिए राजी कर लिया कि यदि वे यह जमीन दे देव तो वहा एक गर्ल्स स्कूल बनाकर वे सरकार को समर्पित कर देंगे इस तरह वहा एक बांठिया बालिका विद्यालय बनवाकर उन्होंने सरकार को दे दिया जो आज भी सफलतापूर्वक चल रहा है। इसी तरह पू जवाहरलालजी महाराज की स्मृति में जवाहर हाई स्कूल लड़कों के लिए बनवाया और वो भी सरकार को दे दिया। उनका शिक्षा के प्रति भी बहुत लगाव था। उन दिनो जवाहर विद्यापीठ की स्थापना आचार्यश्री जवाहरलालजी म सा की स्मृति में भीनासर मे आपके अथक प्रयासों से हुई जिससे आर्थिक दृष्टि से असम्पन्न लड़कों को रहने खाने की व्यवस्था थी। इसमें एक जवाहर पुस्तकालय भी बनवाया। गाव में पानी की कमी थी —तो उन्होंने दो कुए भी खुदवाए और गाव की इस समस्या का भी हल निकाला। धार्मिक ध्यान साधना के लिए एक पौषधशाला भी बनवाई। उनकी सामाजिक कार्यों म विशेष रुचि थी और हर क्षेत्र मे उनका कार्य आज उनकी याद भीनासर वासियों में तरोताजा किए हुए है। य पूर्ण रूपेण धार्मिक थे— लेकिन साथ ही सम्प्रदायवाद से बहुत परे थे। उनकी बातें सचाई पर आधारित थी। ऐसे थे मेरे पूज्य पिताजी। यह हम लोगो के लिए बहुत गर्व की बात है। मैं श्रद्धावनत होकर उन्हे शत शत नमन करता हू। □

५ जी मैन्डेविला एपार्टमेन्ट
६ मैन्डेविला गार्डन बालीगंज
कलकत्ता-७०००१६

परम पूज्य बाबूजी स्मृतियो के वातायन से

— श्री सुमतिलाल बाठिया —

सेठ श्री चम्पालाल जी बाठिया मेरे परमपूज्य पिताजी थे जिन्हे हम घर मे बाबूजी कहकर पुकारते थे। चैत्र शुक्ला तृतीया वि सवत् २०४४ तदनुसार दिनाक १ अप्रेल १९८७ को आपका सथारापूर्वक स्वर्गवास हो जाने पर समाज के विशिष्ट व्यक्तियो तथा हमारे परिजनो सम्बन्धियो व भीनासर गाव वासियो ने उनके आदर्श जीवन पर एक स्मृति ग्रथ प्रकाशित करने की प्रेरणा दी ताकि अन्य लोग भी उनके जीवन से कुछ प्रेरणा ले सके। अत पूर्व मे निजी स्तर पर ग्रथ प्रकाशित करने का निर्णय लिया गया तदनन्तर श्री जवाहर विद्यापीठ भीनासर की स्वर्ण जयन्ती का प्रसग आया। इस सस्था के सस्थापक पूज्य पिताजी ही थे अत सस्था ने मीटिंग मे सर्व सम्मति से निर्णय लिया कि सस्था अपनी स्वर्ण जयन्ती के अवसर पर अपने सस्थापक सेठजी की पुण्य स्मृति मे ग्रथ प्रकाशित करेगी अत अब प्रस्तुत ग्रथ जिसमे उनकी जीवन गाथा व स्मृति कथा सकलित है को सस्था प्रकाशित करवा रही है एतदर्थ हम सस्था के प्रति आभारी हैं और ग्रथ मे व्यय की जाने वाली राशि सस्था को भेट स्वरूप प्रदान कर दी गई है ताकि सस्था पर अतिरिक्त व्यय भार न बढ़े।

पूरा मरु प्रदेश बाबूजी को सेठ (श्रेष्ठ) कहकर पुकारते थे। कोई भी व्यक्ति सेठ यू तो नहीं कहलाता है उसमे सेठो के लायक गुण होने चाहिए। सिर्फ धन सम्पदा से ही व्यक्ति सेठ कहलाये तो आजकल बड़े शहरो मे हर मोहल्ले मे सैकड़ो करोड़पति व्यक्ति निवास करते हैं लेकिन कोई उन्हे सेठ नहीं कहता क्योंकि वे अपना भला करते हैं अपने व अपने परिवार के लिए पैसा उपार्जन करते हैं जब कि बाबूजी ने अपना पूरा जीवन समाज के लिए न्यौछावर कर दिया। हालाकि कलकता में उस समय आपका जूट का बहुत बड़ा व्यापार मै हमीरमल चम्पालाल के नाम से चलता था लेकिन आपने सिर्फ उसमें पैसा लगा दिया बाकी सारा कार्य पार्टनर चम्पालाल जी बैद ही देखते थे आप तो सिर्फ १ महीने के लिए अपने व्यापार स्थल पर कलकता जाते थे बाकी ११ महीने समाज सेवा में ही बिताते थे और विशेषकर अपने गाव के लिए तो पूर्णत समर्पित थे। गाव मे जो भी विकास हुआ सब आपके प्रयास से ही हुआ। गाव के लड़को को पढने के लिए गगाशहर बीकानेर जाना पड़ता था इसलिए आपने भीनासर के जवाहर हाई स्कूल की स्थापना की। लड़कियो के लिए हमीरमलजी बाठिया उच्च प्राथमिक कन्या

विद्यालय की स्थापना की। उक्त दोनो भवनो का निर्माण कर कुछ वर्ष अपने स्वय के खर्चे से स्कूल चलाया बाद म सरकार को उक्त दोनो भवन समर्पित कर दिए। भीनासर के दो कुओ का निर्माण कराकर गाव वासियो को मीठा पानी उपलब्ध करवाया जब तक वाटर वर्क्स की स्थापना नहीं हुई आपने पूरे गाव को नि शुल्क पानी उपलब्ध करवाया।

गाव वासिया के हर सुख दुख मे आप भागीदार थे गाव का कोई व्यक्ति बीमार हुआ और उसे इलाज की जरूरत होती उसके लिए तुरन्त अपनी गाड़ी ड्राइवर उपलब्ध करवाते और उसे अस्पताल पहुचाने की व्यवस्था करते और यदि कोई गरीब है इलाज का पैसा भी नहीं है तो उसे आर्थिक सहायता भी प्रदान करते थे। तभी गाव वाले उन्हें याद करते हैं। गाव वाला के आपस मे कोई झगड़ा हो जाता तो उन्ह कोर्ट कचहरी में जाने की जरूरत नहीं थी सेठजी उन दोनो की बात सुनते और आपस मे समझौता करवा देते थे। गाव वाले जानते थे कि वे निष्पक्ष फैसला दगे अत उनकी बात मानते भी थे। गाव मे किसी के भी कोई ब्याह शादी होती तो उसके लिए बर्तन आदि जो भी जरूरत होने आप उन्हे नि शुल्क उपलब्ध करवाते थे। आप गाव वाला का इतना ख्याल रखते थे अत गाव वाले भी आपको उतना ही सम्मान देते थे। शाम को खाना खाने के बाद आप दो घटा घर के बाहर पाट पर विराजते थे। उस समय गाव का कोई भी पुरुष वहा से निकलता तो आपको अभिवादन किए बिना नहीं निकलता था। यदि साइकिल पर सवार है तो साईकिल हाथ मे लेकर पैदल ही जाता था तथा गाव की कोई स्त्री उस सड़क से गुजरती तो पूरा घूघट निकाल कर पाटे से काफी पहले से चप्पल हाथ में ले लेती और काफी आगे गुजर जाने के बाद ही चप्पल पहनती थी। यह सब सम्मान का सूचक है।

आप गाव के किसी आदमी से भी फालतू बात नहीं करते थे। न तो उन्हें फालतू बात कहना पसन्द था और न ही सुनना। वे टु दी पॉइंट ही बोलते थे वैसे उनके चेहरे पर भी इतना ओज व रौब था कि किसी व्यक्ति की कोई निरर्थक बात कहने की हिम्मत भी नहीं होती थी गाव वाले क्या शुरू म तो हम बच्चे भी उनसे डरते थे और जितनी जरूरत की बात होती थी उतनी ही करते थे। उन्हें एकान्तवास ही ज्यादा पसन्द था। वैसे शुरू में कई वर्षों तक तो दोपहर मे आपके ताश की महफिल जमती थी और अपने बराबरी के मित्रा के साथ दोपहर म ३ ४ घंटे ताश खेलते थे। उसके बाद आचार्य श्री जवाहरलाल जी महाराज सा का भीनासर म चातुर्मास हुआ। धार्मिक संस्कार तो आपम शुरू से ही थे अत आचार्य श्री का व्याख्यान सुनने जाते थे तथा आचार्य श्री के व्याख्यानों से आप अत्यधिक प्रभावित हुए उनके व्याख्यान ही ऐसे थे कि सुनने बैठने के बाद उठने की इच्छा भी नहीं होती थी। एक बार कांग्रेस के दिग्गज नेता मदनमोहन मालवीय बीकानेर पधारे तो उन्ह भी आचार्य श्री का व्याख्यान सुनने के लिए अर्ज किया

गया उन्होंने कहा मुझे आधा घण्टा से ज्यादा समय नहीं है आचार्य श्री को भी यह वात कह दी गई तो आचार्य श्री ने अपना व्याख्यान शुरू करने के ठीक आधा घटा बाद रुक गए और मालवीय जी को कहा कि आपको जाना है तो मालवीयजी भी व्याख्यान से इतने प्रभावित हुए उन्होंने कहा नहीं महाराज आप और व्याख्यान चलाइये मैं बैठूगा और दो घटे व्याख्यान चला और वे एकाग्रचित होकर बैठे रहे और आचार्य श्री के परम भक्त हो गए। उसके वाद जव लन्दन गोलमेज कान्फ्रेस मे भाग लेने गए तब दिल्ली से विशेषकर आचार्य श्री से मिलने व मागलिक श्रवण करने के लिए आए फिर आशीर्वाद लेकर लन्दन गए और पिताजी के जीवन मे भी आमूलचूल परिवर्तन करने वाले आचार्य श्री ही थे। वे पारखी थे उन्होंने सोचा यदि ये व्यक्ति अपना समय ताश मे नष्ट नहीं करके रचनात्मक कार्यों मे लगाए तो समाज का भी बहुत उत्थान हो सकता है अत एक दिन आपको पास बुलाकर कहा कि हम आपके भीनासर मे चातुर्मास कर और आप दोपहर मे सेवा म नही आकर ताश खेले क्या यह अच्छा लगता है। आप पर उनकी वात का इतना प्रभाव हुआ कि उसी समय खड़े खड़े ही आचार्य श्री को कह दिया कि आज से और अभी से ही मुझे जीवन पर्यन्त ताश खेलने का सौगन दिला दीजिये और आपने सौगन ले लिये उसके बाद जिन्दगी मे ताश नहीं खेली और पूरा जीवन समाज सेवा मे लगा दिया। आचार्य श्री जवाहरलालजी के प्रति आपकी अटूट श्रद्धा थी और आपने उनकी अनन्य सेवा की। आचार्य श्री का स्वास्थ्य अनुकूल न होने के कारण विहार करने की स्थिति नही थी अत अन्तिम कई वर्षों तक भीनासर मे विराजे अत सेवा का अत्यधिक मौका मिला।

जवाहराचार्य के प्रति सेठजी की अनन्य श्रद्धा एव भक्ति को आज भी लोग याद करते हैं। आपने भीनासर मे मुख्य सड़क पर स्थित भव्य हॉल जहा पहले लड़कियो का स्कूल चलता था (स्कूल के लिए आपने नया भवन बनाकर उसमे स्थानान्तरित कर दिया) आपने व आपके बड़े भाई श्री सोहनलालजी ने अपने पुण्यश्लोका पिताश्री हमीरमल जी की स्मृति मे श्री जवाहर विद्यापीठ को दान म दे दिया जो साधु साध्वियो के व्याख्यान पौषध आदि के ही काम मे आता है। साथ ही इस हॉल के पास ही आपके निजी कमरे बनाये हुए थे वे भी आपने ट्रस्ट बनाकर धर्मार्थ प्रदान कर दिए जो साधु साध्वियो के ठहरने आदि के काम आते हैं।

बाल दीक्षा के आप प्रवल विरोधी थे। आप महाराजा गगासिंह जी के समय बीकानेर राज्य विधान सभा के सदस्य थे और बाल दीक्षा के विरोध म एक विधेयक प्रस्तुत किया उस समय तेरापथियो में बाल दीक्षाए ज्यादा होती थी। वे सब मिलकर महाराजा के पास गये और महाराजा को सभी प्रजाजनों को साथ लेकर चलना होता था अत महाराजा साहब ने सेठ साहब को बुलाकर कहा कि या तो आप ये विधेयक
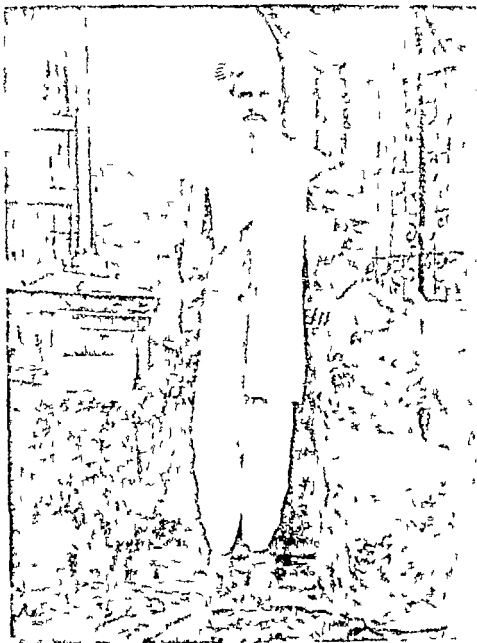
स जीवति गुणा यस्य यस्य धर्म स जीविति।
गुण-धर्म विहीनस्य जीवितं निष्प्रयोजनम्॥

—चाणक्य नीति

जिसके अन्दर गुण और धर्म विद्यमान हैं उसी का जीवन सच्चा जीवन है।
गुण और धर्म विहीन जीवन निरर्थक है।

चित्र वीथी

सामाजिक, धार्मिक, शैक्षणिक व राजनैतिक

सेठजी द्वारा स्थापित भीनासर की सस्थाए
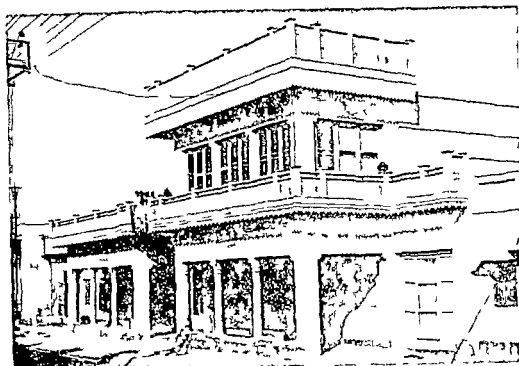
श्री जवाहर विद्यापीठ

सेठ श्री हमीरमलजी बाठिया स्थानकवासी जैन पौषधशाला
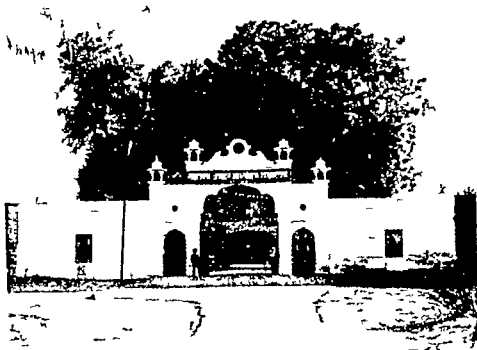
राजकीय जवाहर माध्यमिक विद्यालय
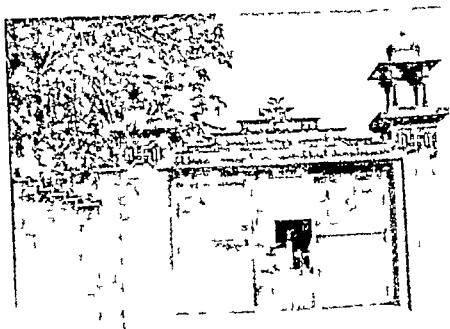
सेठ श्री हमीरमलजी बाठिया राजकीय बालिका उच्च प्राथमिक विद्यालय

सेठ श्री चम्पालालजी बाठिया धर्मार्थ ट्रस्ट

आनन्द सागर कुआ
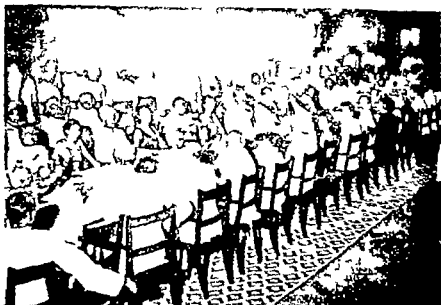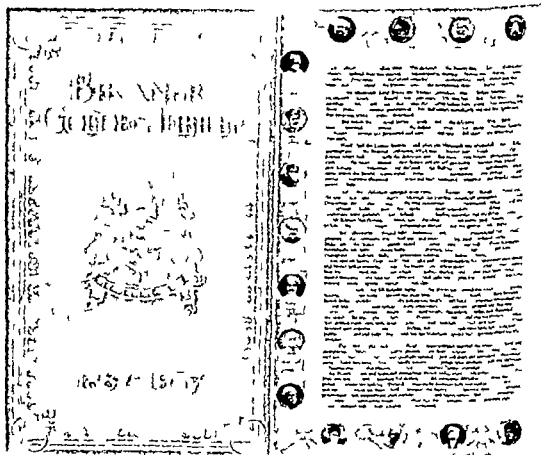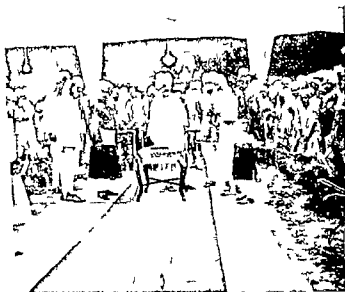
वाठिया बालिका विद्यालय के उद्घाटन हेतु तीन बटन दबाकर ताला कुण्डी व दरवाजा खोलते हुए महाराजा सार्दुलसिंहजी के साथ सेठ सा

वाठिया बालिका विद्यालय का उद्घाटन करके वाठिया हॉल मे प्रवेश करते हुए तत्कालीन बीकानेर महाराजा सार्दुलसिंहजी के साथ मे सेठजी जयचन्दलालजी रामपुरिया व महाराज भैरूंसिंहजी आदि।
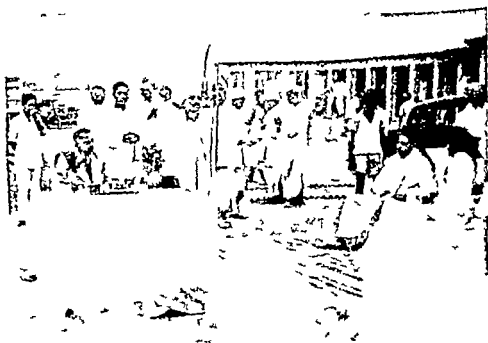
रामपुरिया आईस फैक्ट्री का उद्घाटन समारोह

मुख्य अतिथि बीकानेर के तत्कालीन वित्त मंत्री नारायणसिंहजी का अभिनन्दन करते हुए।

उद्घाटन के श्री
विम ता)

सेठजी भाषण देते हुए कार्यक्रम अध्यक्ष/मुख्य अतिथि बाये से डाक्टर ओझा व श्रीमती लक्ष्मीकुमारी चूडावत। साथ में कम्पनी के डायरेक्टर धीरजलाल बाठिया व फूलचन्द वैद।

रजत जयन्ती समारोह की मुख्य अतिथि श्रीमती लक्ष्मी कुमारी चूडावत को चादी का स्मृति-चिह्न भेट करते हुए।

रामपुरिया आईस फैक्ट्री का उद्घाटन समारोह

मुख्य अतिथि बीकानेर के तत्कालीन वित्त मंत्री नारायणसिंहजी का अभिनन्दन करते हुए।

उद्घाटन समारोह के विशिष्ट व्यक्तियों के साथ (कुर्सी पर बैठे हुए श्री भवरलालजी रामपुरिया तथा पीछे विचार-विमर्श करते हुए बाठिया सा)

सेठजी भाषण देते हुए कार्यक्रम अध्यक्ष/मुख्य अतिथि बाये से डाक्टर ओझा व श्रीमती लक्ष्मीकुमारी चूड़ावत। साथ मे कम्पनी के डायरेक्टर धीरजलाल बाठिया व फूलचन्द वैद।

रजत जयन्ती समारोह की मुख्य अतिथि श्रीमती लक्ष्मी कुमारी चूडावत को चादी का स्मृति-चिह्न भेट करते हुए।

जवाहर विद्यापीठ के उद्घाटन के समय मुख्य अतिथि सोहनलालजी दूगड़ का स्टेशन पर स्वागत करते हुए बाये से—सेठजी श्री दीपचन्दजी भूरा जवाहरमलजी सेठिया सोहनलालजी दूगड़ व महावीरप्रसाद गुप्त वकील

जवाहर विद्यापीठ के उद्घाटन के समय दाहिने से—वनेचन्द भाई दुर्लभजी गुरासा इन्द्रचन्दजी गेलड़ा श्री एव श्रीमती सोहनलालजी दूगड़ शोभाचन्द्रजी भारिल्ल जुगराजजी सेठिया एव सेठजी।

जवाहर विद्यापीठ भीनासर मे एक कार्यक्रम के मुख्य अतिथि महाराजा करणीसिहजी के साथ आते हुए सेठजी
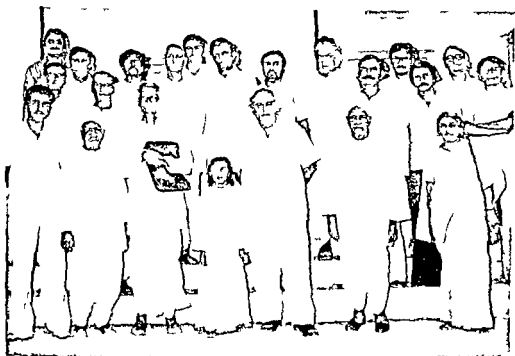
जवाहर विद्यापीठ के कार्यक्रम के दौरान बाये से—श्री देवीसिहजी भाटी जुगराजजी सेठिया डॉ छगन मोहता कविता बाठिया डॉ करणीसिंहजी सेठजी तथा पीछे भंवरलालजी कोठारी रोशन सेठिया छाजेड़जी जसकरणजी बोथरा शुभू पटवा सोहनलालजी मोदी सोहन सेठिया कन्हैयालाल बोथरा धीरजलाल बाठिया दौलतराम बाठिया इन्द्रचन्द बोथरा तोलाराम बोथरा विमल डागा डॉ जेठमल मरोटी व डॉ बोथरा

गणतन्त्र दिवस 26 जनवरी सन् 1980 को जवाहर माध्यमिक विद्यालय भीनासर मे एन सी सी द्वारा युद्ध प्रदर्शन के अवसर पर अध्यक्षीय भाषण करते हुए सेठ साहब। इस अवसर पर आप द्वारा पुरस्कार वितरण भी किया गया। स्कूल के तत्कालीन प्रधानाध्यापक श्री विष्णुदत्तजी आचार्य व भीनासर गांव के अन्य वरिष्ठ नागरिक उपस्थित थे।

बांठिया बालिका विद्यालय भीनासर के वार्षिकोत्सव का निरीक्षण करते हुए सेठजी व सेठानीजी स्कूल के स्टाफ व विद्यार्थियों के साथ। इस अवसर पर आप द्वारा पुरस्कार वितरण भी किया गया।

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ द्वारा दिये गये अभिनन्दन पत्र का वाचन करते हुए श्री भँवरलालजी कोठारी तथा मंच पर विराजमान सेठजी व श्री फूसराजजी बच्छावत

सेठजी को अभिनन्दन पत्र भेंट करते हुए अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ के अध्यक्ष श्री भंवरलालजी बैद
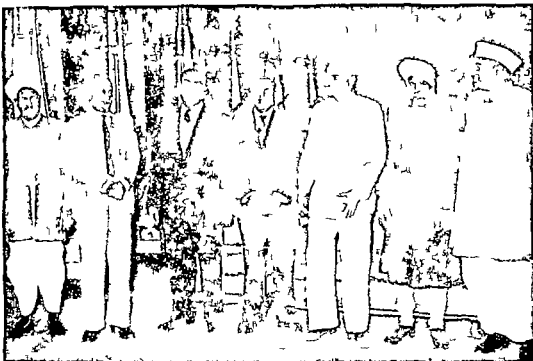
All India Fan Manufacturers Association के वार्षिक अधिवेशन के समय इम्पीरियल होटल नई दिल्ली मे। दाहिने से—उद्योगपति श्री गजाधरजी सोमानी एसोसियेशन के अध्यक्ष श्री मोहनलालजी कठोतिया दिल्ली। बीच मे—श्री मनु भाई शाह कैबिनेट मिनिस्टर भारत सरकार व एकदम बाएँ खड़े सेठजी परिलक्षित हैं।

अहमदाबाद मे धीरज की शादी के समय । बाये से—सेठजी समधी श्री मोहनमलजी सा चौरड़िया चुन्नीलालजी मेहता बम्बई श्री छगनलालजी बैद व अन्य प्रतिष्ठित व्यक्तियो के साथ

देश के प्रधानमंत्री श्री जवाहरलालजी नेहरू के बीकानेर आगमन पर नाल हवाई अड्डे पर स्वागत करते हुए सेठजी पीछे श्रीमती इन्दिरा गाँधी

राजस्थान के तत्कालीन मुख्यमंत्री मोहनलालजी सुखाड़िया को हवेली मे दिये गये भोज के अवसर पर सेठजी बीकानेर के तत्कालीन जिलाधीश श्री मुन्नालाल गोयल के साथ

श्री मोहनलाल सुखाड़िया व उनकी धर्मपत्नी श्रीमती इन्दुबाला सुखाड़िया से विचार-विमर्श करते हुए सेठजी

श्री अखिल भारतवर्षीय श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कान्फ्रेंस के ब्यावर सम्मेलन के अवसर पर
निकली शोभायात्रा मे तत्कालीन व पूर्व अध्यक्षो के साथ सेठजी

सन् 1952 मे श्री अखिल भारतवर्षीय श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कान्फ्रेन्स के बारहवे सादड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष चुने जाने पर हाथी के हौदे पर निकली शोभायात्रा मे सेठ साहब के साथ कान्फ्रेन्स के भू.पू. अध्यक्ष श्री मोहनमल सा चोरड़िया मद्रास तथा स्वागताध्यक्ष सादड़ी निवासी श्री दानमलजी बरलोटा

शोभायात्रा में सेठ साहब जनसाधारण का अभिवादन स्वीकार करते हुए।
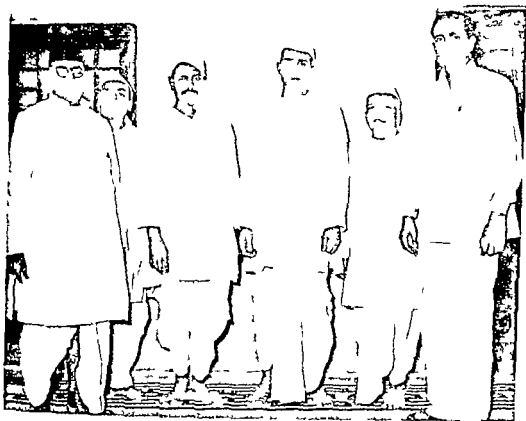
सन् 1952 मे सादड़ी सम्मेलन के समय घर पधारे अतिथियो के साथ। बाय से —जयपुर के बनेचन्द भाई दुर्लभजी सेठजी राजस्थान के तत्कालीन मुख्यमत्री श्री टीकारामजी पालीवाल व दिल्ली के आनन्दराजजी सुराणा व नाथूरामजी मिर्धा।

सन् 1948 मे श्री C.S वैंकयचार्य (सरदार पटेल के Special Representative f
Excession of Bikaner State) के बीकानेर आने पर हवेली मे स्वागत करते हु
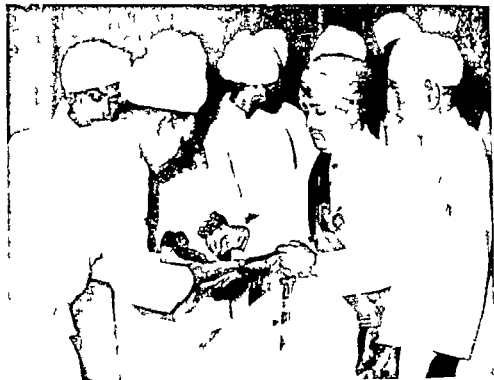
H H श्री करणीसिंहजी को राजतिलक के समय गिन्नी भेंट करते हुए
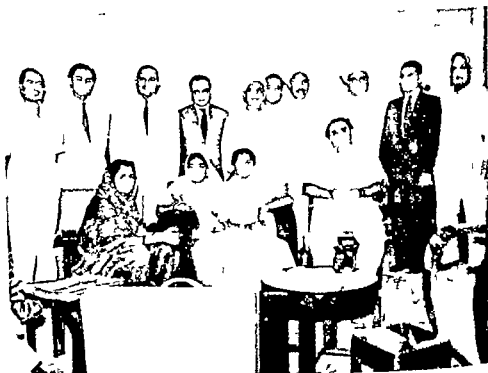
H H करणीसिंहजी वर्ल्ड टूर से आने पर कलकत्ता मारवाड़ी समाज ने सम्मान किया उस अवसर पर। बायें से—आनन्दसिंहजी H H के सेक्रेटरी अभयकुमार रामपुरिया रतनलालजी रामपुरिया बागड़ीजी (पगड़ी वाले) चन्दनमलजी पटवा सठ्जी चम्पालालजी बैद व कमलसिंहजी रामपुरिया तथा बैठे हुए बायें से—महारानी सा सुशीला कुमारीजी रतनलालजी रामपुरिया की पुत्रियां सुशीला व निर्मला तथा H H श्री करणीसिंहजी।

सन् 1952 मे चुनाव के समय तत्कालीन महाराजा श्री करणीसिंहजी के हवेली पधारने पर गिन्नी भेट करते हुए

गन् 1952 मे M P का चुनाव जीतने पर महाराजा करणीसिंहजी के हवेली पधारने पर गावो की समस्याओं की जानकारी देते हुए सेठजी। साथ मे श्री नशीलालजी राठी नेमचन्दजी काकरिया मगनलालजी मल्ल आदि परिलक्षित हैं।
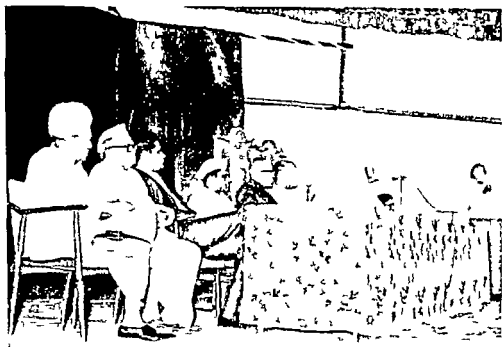
महाराष्ट्र के मुख्यमन्त्री श्री सुधाकर राव नाईक के साथ बम्बई मे एक समारोह मे। मच पर बाईं ओर सेठ्जी व दाईं ओर मोहनलालजी कठोतिया माइक पर भाषण देते हुए

बम्बई के शेरिफ श्री मुन्नीलालजी मेहता व उनके पुत्र राजे— मेहता के साथ
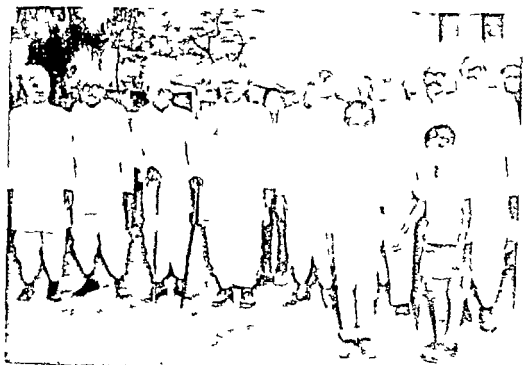
बड़े पुत्र धीरज की शादी के अवसर पर अहमदाबाद मे बारात रवाना होने से पूर्व का एक दृश्य। बाये से—श्री छगनलालजी वैद मगनमलजी बाठिया सेठजी के श्वसुर श्री जेठमलजी कोठारी इन्दौर समधी श्री मोहनमलजी चोरड़िया मद्रास सेठजी रामकरणजी बाठिया अमरचन्दजी लूणिया व श्री खींवराजजी चोरड़िया मद्रास आदि।

विशिष्ट व्यक्तियो के साथ। दाहिने से—बीकानेर के तत्कालीन प्राइम मिनिस्टर श्री जसवन्तसिंहजी तत्कालीन कमिश्नर श्री भगवतसिंहजी प्रसिद्ध सर्जन डाक्टर एन एन सिंघवी सेठजी शान्तिलालजी बाठिया चम्पालालजी वैद व सत्यप्रकाशजी गुप्ता।

हवेली मे दी गई पार्टी म तत्कालीन निदेशक श्री एम एन तुलानी, सेठजी तत्कालीन कमिश्नर श्री भगवंतसिंहजी चम्पालालजी बैद व अन्य परिलक्षित हैं।

हवेली के सुसज्जित सुरम्य कक्ष मे (बायें से —श्री एम एन तुलानी इलेक्ट्रिसिटी बोर्ड के इन्चार्ज श्री ए एस मेहता व सेठजी तथा पीछे खड़े हुए शान्तिलाल बांठिया कुंजीलाल गहलोत व भैरूदानजी बाठिया)

अपने पार्टनर श्री चम्पालालजी बैद व एडवोकेट सत्यप्रकाशजी गुप्ता के साथ।
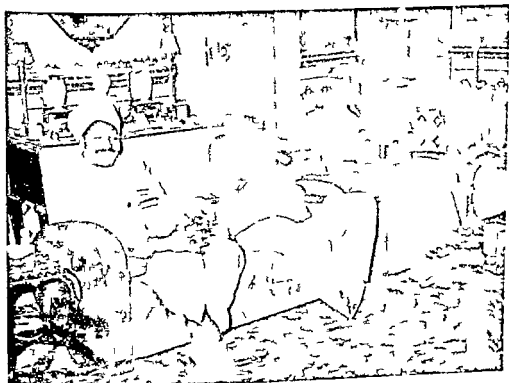
ठाकुर खींवसिंहजी व तत्कालीन प्राइम मिनिस्टर जसवन्तसिंहजी के साथ।

हवेली मे अधिकारियो को दी गई पार्टी म (दाहिने से—श्री महावीर प्रसाद जी गुप्ता सेठजी शातिलालजी तत्कालीन कलेक्टर श्री C S Gupta S B B J के जनरल मैनेजर सत्यदेवजी इलेक्ट्रिसिटी बोर्ड के इन्चार्ज ए एस मेहता DIG गोवर्धनजी तथा P A to Commissioner विद्यासागरजी सूद आदि)
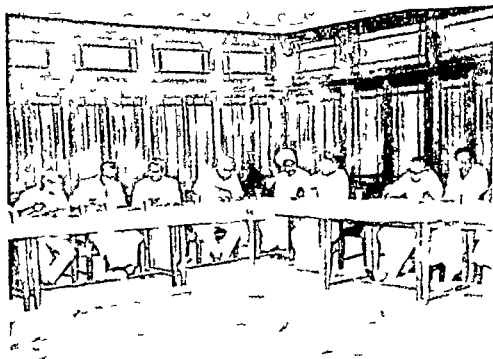
हवेली के चौक में तत्कालीन अधिकारियों को सेठजी द्वारा दी गई पार्टी का एक दृश्य।

पुत्र धीरज की शादी के अवसर पर अहमदाबाद मे समधी [illegible]
चोरड़िया के साथ।

सेठजी अपनी द्वितीय पुत्री सवरदेवी की सगाई के अवसर पर मद्रास मे अपने समधी श्रीमान् मोहनमल सा चोरड़िया (अगरचद मानमल) उनके भाई खींवराज जी चोरड़िया व चम्पालालजी [illegible] आदि के साथ।

बीकानेर की फर्म राजस्थान टिम्बर सप्लाई कम्पनी की रजत जयन्ती के अवसर पर।
बाये से—माणकचन्दजी बच्छावत धनपतसिंहजी खजाची धीरजलाल सेठजी रामलालजी बाठिया
सुमतिलाल व तरुण खजाची आदि।
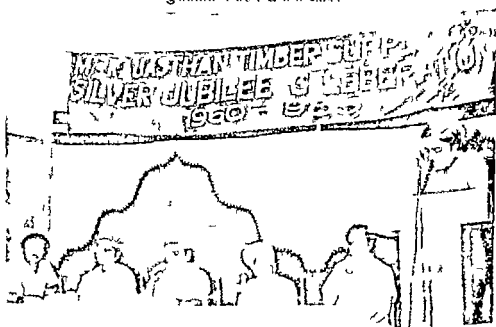
सिल्वर जुबली के अवसर पर मुख्य अतिथि बीकानेर के विधायक श्री बी डी कल्ला कार्यक्रम
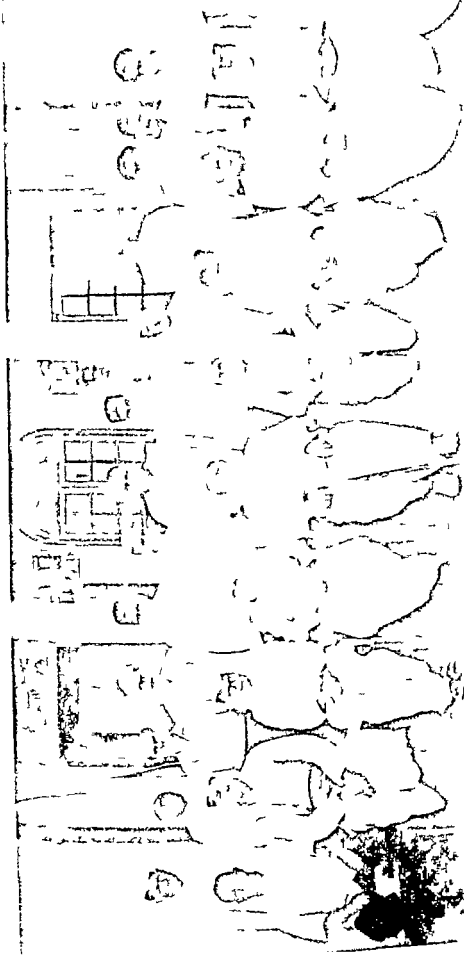
श्री अखिल भारतवर्षीय श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कार्फ्रेंस नई दिल्ली की मैनेजमेंट कमेटी व स्टाफ मेम्बर्स के साथ सेठजी
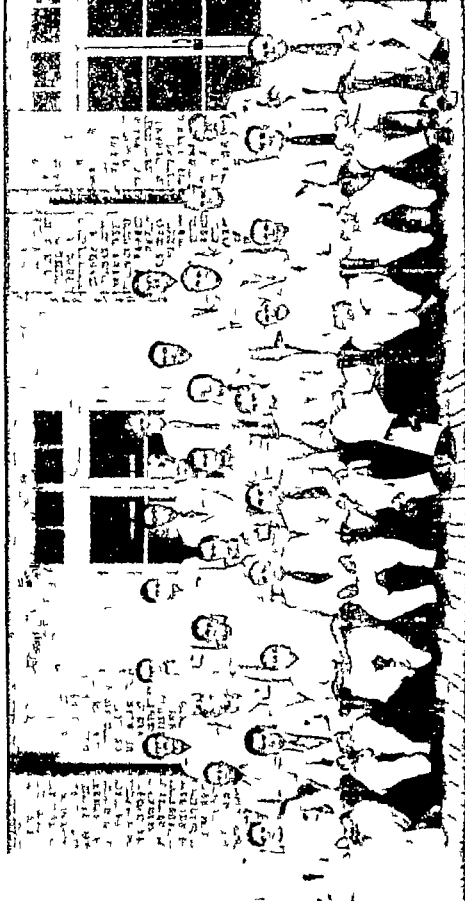
पाचवे दशक में एक विशेष आयोजन के अवसर पर बीकानेर के गणमान्य विशिष्ट व्यक्तियों व डॉक्टरों के मध्य सेठजी

मडल काग्रेस (आई) कमेटी भीनासर —सेठजी का स्वागत करते हुए। साथ मे उदयरामसर के श्री गोवर्धनसिंहजी यादव
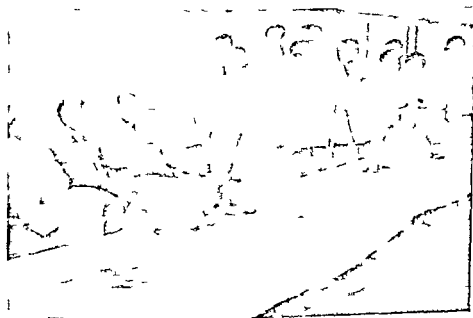
पखा बनाने की फैक्टरी मै मैचवेल इलेक्ट्रिक्ल्स इडिया लि पूना के तीन प्रमुख शेयर होल्डर्स श्री मोहनलालजी कथोतिया दिल्ली श्री रामकृष्णजी बजाज बम्बई व सेठजी कम्पनी के अन्य शेयरहोल्डर्स व स्टाफ के साथ एक पार्टी मे। अब कम्पनी का बजाज इलेक्ट्रिक्ल्स मे विलय हो गया है।

महाप्रयाण यात्रा के कुछ दृश्य
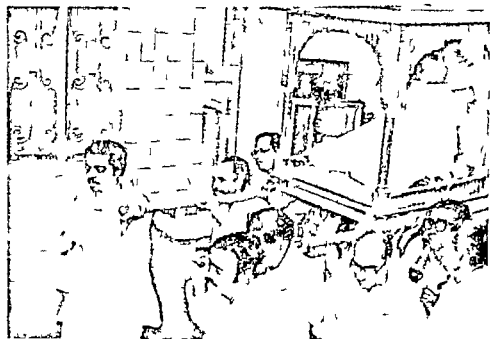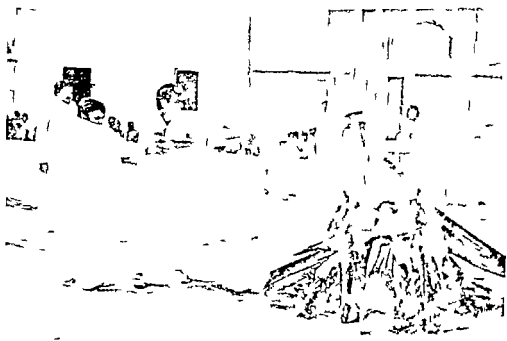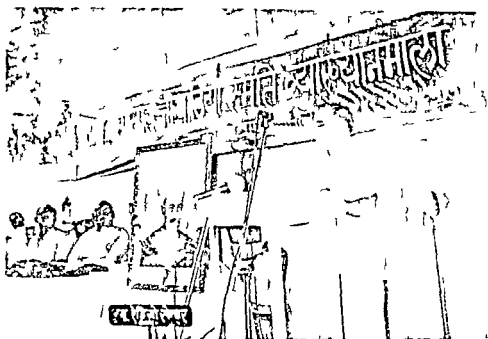
श्री जवाहर विद्यापीठ भीनासर द्वारा सेठजी की पुण्यस्मृति मे प्रतिवर्ष आयोजित होने वाली सेठ श्री चम्पालालजी बांठिया स्मृति व्याख्यानमाला के प्रथम वर्ष के आयोजन मे बाये से—संस्था के उपाध्यक्ष चम्पालालजी डागा समारोह के अध्यक्ष दीपचन्दजी भूरा तथा भाषण देते हुए समारोह के मुख्य अतिथि बीकानेर के तत्कालीन कलक्टर मदनलालजी गुप्ता

महावीर जयन्ती के अवसर पर दिनाक 7 अप्रैल 1990 को आयोजित व्याख्यानमाला के प्रथम चरण में दिये गये विषय वर्तमान युग में जैन धर्म की सार्थकता मे द्वितीय स्थान प्राप्त करने वाली सुश्री सुजाता जैन को पुरस्कार व प्रशस्ति पत्र प्रदान करते हुए जिला कलेक्टर। पृष्ठ भाग मे है कार्यक्रम संचालक प्रोफेसर सुमेरचन्द जैन व संस्था के अध्यक्ष भवरलालजी कोठारी।

दिनाक 28 3 91 को आयोजित सेठ श्री चम्पालालजी [illegible]
मे दिये गये विषय विश्व शाति और जैन धर्म मे द्वितीय स्थान [illegible] कुमार [illegible]
को मुख्य अतिथि श्री जे के जैन डाइरेक्टर राज्य अभिलेखागार पुरस्कार [illegible] प्राप्त
करते हुए। पीछे सस्था के मत्री सुमतिलाल बाठिया व माईक पर सस्था अध्यक्ष भवरलालजी
कोठारी।
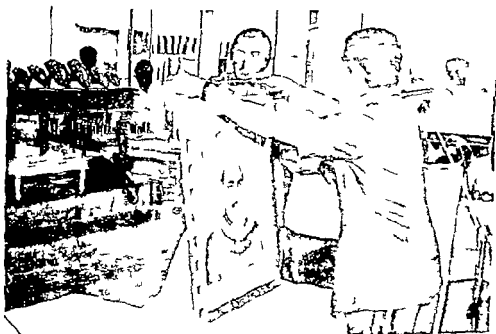
दिनाक 15 4 92 को आयोजित सेठ श्री चम्पालालजी बाठिया स्मृति व्याख्यानमाला के तृतीय वर्ष
मे मुख्य अतिथि जिला कलेक्टर श्री आर के मीणा सेठजी के चित्र का माल्यार्पण कर श्रद्धाजलि
अर्पित करते हुए। पीछे सस्था मत्री सुमतिलाल बाठिया परिलक्षित हैं। इस व्याख्यानमाला के
विषय शाकाहार का जीवन पर प्रभाव के विजेताओं को प्रदान किये जाने वाले पुरस्कार
परिलक्षित हैं।
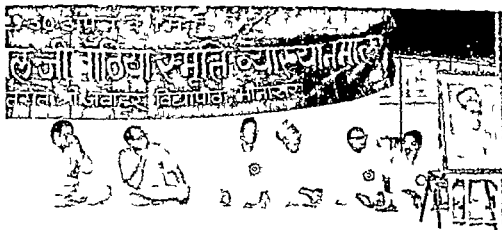
दिनाक 30 4 92 को सस्था की स्वर्ण जयन्ती पर आयोजित सेठ श्री चम्पालालजी बाठिया स्मृति व्याख्यानमाला अहिसा शाकाहार और भारतीय सस्कृति विषय पर आयोजित की गई। इस अवसर पर मच पर विराजित बाय से—सयोजक श्रीमान् रिखबचन्दजी जैन दिल्ली मुख्य अतिथि श्री रमेशचन्द्रजी स्वरूप जिला कलेक्टर कार्यक्रम अध्यक्ष श्री गुमानमलजी चोरड़िया जयपुर सस्था अध्यक्ष श्री चालचन्दजी सेठिया सस्था उपाध्यक्ष श्री भवरलालजी बडेर व सस्था मंत्री श्री सुमतिलाल बाठिया।
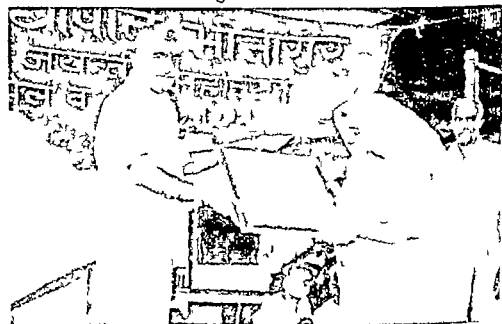
श्री जवाहर विद्यापीठ स्वर्ण जयन्ती महोत्सव के मुख्य कार्यक्रम में दिनाक 1 5 94 को सस्था के सस्थापक सेठजी द्वारा समाज को दी गई विशिष्ट सेवाओं के लिए मरणोपरान्त समाजभूषण पदवी प्रदान कर सम्मानित किया गया। उक्त सम्मान पत्र उनकी धर्मपत्नी श्रीमती तारादेवी बाठिया समारोह के मुख्य अतिथि श्री देवीसिंहजी भाटी नहर एवं सिंचाई मंत्री राजस्थान सरकार से ग्रहण कर रही हैं।

श्री जवाहर विद्यापीठ स्वर्ण जयन्ती महोत्सव मुख्य समारोह मे दिनाङ्क ... 1 9.. को कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्रीमान् देवीसिंहजी भाटी नहर एव सिचाई मन्त्री राजस्थान सरकार समाजभूषण सेठ श्री चम्पालालजी बाठिया स्मृति ग्रथ का विमोचन करते हुए। विमोचन हेतु ग्रथ प्रस्तुत कर रहे हैं सस्था अध्यक्ष श्री बालचन्दजी सेठिया।

लोकार्पण के पश्चात् ग्रथ की प्रथम प्रति समारोह अध्यक्ष श्रीमान् गुमानमलजी चोरड़िया जयपुर को भेंट कर रहे हैं मुख्य अतिथि श्रीमान् देवीसिंहजी भाटी नहर एव सिचाई मत्री राजस्थान सरकार।

सेठ श्री चम्पालालजी बाठिया स्मृति व्याख्यानमाला की वर्ष 1994 की विद्यालय स्तरीय प्रतियोगिता में प्रथम रही कु सीमा बाठिया को पुरस्कार प्रदान करते हुए समारोह के विशिष्ट अतिथि डॉ रामप्रतापजी खाद्य एव नागरिक आपूर्ति राज्य मत्री राजस्थान सरकार।

सेठ सा की सबसे छोटी पौत्री कविता की सगाई दिनांक 22 5 91 को श्री गौतम सामसुखा आत्मज श्री दिलीपजी सामसुखा कलकत्ता से सम्पन्न हुई जो शीघ्र ही दिनांक 13 12 94 को विवाह-सूत्र में बधने वाले हैं।

सम्मान, अभिनन्दन
वन्दन, श्रद्धार्पण

राजकीय सम्मान

अभिनन्दन एव सम्मान

उद्योग-व्यापार, समाज-सेवा, शिक्षा प्रसार धार्मिक एव जनकल्याणकारी क्षेत्रो मे बाठिया सा ने अनुकरणीय व आदर्श कार्य किये। तत्कालीन नरेश सामाजिक सस्थाओं आदि द्वारा आपको अभिनन्दित/सम्मानित किया जाना आपकी लोकप्रियता व नि स्वार्थ सेवा का ही परिणाम है।

उल्लेखनीय सेवाओं का मूल्याकन

सेठ सा का राजघराने से घनिष्ट सम्बन्ध था। तीन पीढ़ियो से निजत्व का व्यवहार रहा और अनेक अवसरो पर महाराजा सा का आपकी हवेली पर पदार्पण हुआ। आपकी बहुआयामी सेवाओं को गोल्डन जुबली बुक, बीकानेर व हूज हू में रेखाकित किया गया।

पब्लिक सर्विस मैडल फर्स्ट क्लास

विशिष्ट समाज सेवा के लिए महाराजा श्री गगासिंह जी द्वारा बाठिया सा को पब्लिक सर्विस मैडल फर्स्ट क्लास प्रदान किया गया। यह ऐतिहासिक व महत्त्वपूर्ण सम्मान पाकर भी आपने स्वय को समाज का साधारण सेवक ही माना। अपनी दूरदर्शिता कार्यकुशलता व अनवरत सेवा से एक आदर्श स्थापित किया।

(मैडल द्रष्टव्य पिछले कवर पृष्ठ पर)

गगा गोल्डन जुबली मैडल का सम्मान

महाराजाधिराज श्री गगासिंहजी बहादुर के स्वर्ण जयन्ती महोत्सव सवत् १६४४ १६६४ मे राज श्री बीकानेर द्वारा गोल्डन जुबली मैडल देकर सम्मानित किया गया।

(मैडल द्रष्टव्य पिछले कवर पृष्ठ पर)

सामाजिक सम्मान

विशिष्ट समाज-सेवा स्वर्णपदक सम्मान

श्री श्वेताम्बर साधुमार्गी जैन श्री सघ द्वारा सवत् २००६ मे विशिष्ट समाज सेवा के लिए स्वर्णपदक प्रदान कर आपको सम्मानित किया गया।

(स्वर्ण पदक द्रष्टव्य पिछले कवर पृष्ठ पर)

अभिनन्दन पत्र श्री जैन गुरुकुल ब्यावर

दिनाक २३ १२ ४८ को श्री जैन गुरुकुल ब्यावर के वार्षिकोत्सव का अध्यक्ष बनाया गया व अभिनन्दन पत्र भेट कर सम्मानित किया गया। (मूल अभिनन्दन पत्र परिशिष्ट में)

अभिनन्दन-पत्र श्री जैन जवाहिर मण्डल, देशनोक

सस्था द्वारा सेठ सा को सप्तम वार्षिकोत्सव का सभापति बनाया गया और दिनाक १७-१ ५० को अभिनन्दन-पत्र भेट कर बहुमान किया गया। (मूल अभिनन्दन पत्र परिशिष्ट में)

अभिनन्दन पत्र श्री वर्द्धमान स्था जैन श्रावक सघ, ब्यावर

दिनाक १५ ६ ५४ को अ भा स्था जैन कान्फ्रेस के अध्यक्ष रूप मे पदार्पण पर आपको सम्मानित कर अभिनन्दन-पत्र भेट किया गया। (परिशिष्ट मे द्रष्टव्य अभिनन्दन-पत्र)

अभिनन्दन-पत्र श्री साधुमार्गी जैन श्रावक सघ (त्रिवेणी)

त्रिवेणी सघ (बीकानेर गगाशहर भीनासर) द्वारा आपको अग्रगण्य समाज-सेवक सत्साहित्य प्रसारक एव विवेक-सम्पन्न महानुभाव रूप मे सम्मानित कर दिनाक १८ ११-७३ को अभिनन्दन पत्र समर्पित किया गया। (परिशिष्ट में द्रष्टव्य अभिनन्दन पत्र)

सम्मान-पत्र श्री अ भा साधुमार्गी जैन सघ, बीकानेर

दिनाक २५-६-७६ को श्री अ भा साधुमार्गी जैन सघ बीकानेर द्वारा नोखामडी में आपको सम्मान-पत्र समर्पित कर अभिनन्दित किया गया। (मूल अभिनन्दन पत्र परिशिष्ट में)

मरणोपरान्त सम्मान

श्रद्धार्पण-पत्र श्री श्वे साधुमार्गी जैन हितकारिणी सस्था

सस्था की हीरक जयन्ती के अवसर पर दीर्घकालीन सेवाओं का मूल्याकन करते हुए आपको श्रद्धार्पण पत्र (मरणोपरान्त) प्रदान किया गया जिसे दिनाक ६ १-६१ को आपकी धर्मपत्नी श्रीमती तारादेवी बाठिया ने प्राप्त किया। (मूल श्रद्धार्पण-पत्र परिशिष्ट मे)

श्रद्धा सुमनाजलि राजकीय बाठिया बालिका उच्च प्रा विद्यालय

शाला की हीरक जयन्ती के अवसर पर दिनाक ३ ४ ६४ को शिक्षक अभिभावक समिति द्वारा मरणोपरान्त श्रद्धा सुमनाजलि के रूप मे सम्मान-पत्र दिया गया जो आपके पुत्र सुमतिलाल बाठिया ने प्राप्त किया। (मूल श्रद्धा सुमनाजलि परिशिष्ट म)

समाज भूषण पदवी सम्मान पत्र श्री जवाहर विद्यापीठ भीनासर

सस्था व समाज को दी गई विशिष्ट सेवाओं के लिए सस्था की स्वर्ण जयन्ती के अवसर पर दिनाक १ ५-६४ को प्रदत्त समाज भूषण सम्मान पत्र आपकी धर्मपत्नी श्रीमती तारादेवी बाठिया ने प्राप्त किया। (मूल सम्मान पत्र परिशिष्ट म)

सेठ श्री चम्पालालजी बाँठिया स्मृति व्याख्यानमाला श्री जवाहर विद्यापीठ, भीनासर

युवा वर्ग में धर्म के प्रति आस्था एव वक्तृत्व प्रतिभा का विकास करने के लिए सस्था द्वारा वर्ष १९९०-९१ से प्रतिवर्ष महावीर जयन्ती को विद्यालय एव महाविद्यालय स्तरीय भाषण प्रतियोगिताएँ आयोजित की जाती हैं एव दोनों वर्ग के विजेताओं को सेठ श्री चम्पालालजी बाँठिया स्मृति पुरस्कार देकर सम्मानित किया जाता है।

श्रीमान सेठ चम्पालालजी साहब बाठिया, भीनासर (बीकानेर)
की सेवा मे सादर समर्पित

अभिनन्दन-पत्र

आज गुरुकुल के इक्कीसवें वार्षिकोत्सव के अवसर पर स्नातक सम्मेलन को आपका अभिनन्दन करते हुए हार्दिक प्रसन्नता हो रही है।

गुरुकुल तथा ट्रेनिंग कॉलेज के स्नातकों का यह संघ आपके क्रान्तिकारी विचारों से अत्यन्त प्रभावित हुआ है। गुरुकुल की पवित्र भूमि में अ भा स्था जैन कॉन्फ्रेन्स के कार्यकर्ताओं की उपस्थिति में हम आपका स्वागत करते हैं।

लक्ष्मीपुत्र !

समाज में लक्ष्मीपुत्रों की कमी नहीं ! कमी है तो विचारों में क्रांति तथा कार्यतत्परता की ! ये दोनों ही चीजें आप में कूट-कूट कर भरी हुई हैं।

आप क्रान्तिकारी विचारों के युवक हैं। समाज में व्याप्त शिथिलता के विरुद्ध आपको हमेशा आवाज बुलन्द करते देखा है।

राजस्थान की पवित्र भूमि में बेसमझ बच्चों की दीक्षा का विरोध करने के लिए बीकानेर काउन्सिल में बिल पेश करके आपने अपूर्व निर्भीकता एव साहस का परिचय दिया है।

समाज भले आपके इस बिल का समर्थन न करे किन्तु निकट भविष्य में वह समय आवेगा जब उसे अपनी भूल स्वीकार करते हुए आपके बिल का समर्थन करना होगा।

साहित्यसेवी !

जैनाचार्य पूज्य श्री जवाहरलालजी महाराज साहब के मौलिक अपूर्व साहित्य के प्रकाशन में आपने जो तत्परता दिखाई है उसका समाज चिरऋणी रहेगा।

क्रान्तिकारी योद्धा !

आप अवस्था से ही युवक नहीं हैं अपितु विचारों से भी युवक हैं। आपकी असाम्प्रदायिक मनोवृत्ति समाज के लिए आदर्शरूप है ! धार्मिक क्षेत्र में आप हमेशा उदारता से काम करते देखे गये हैं।

शिक्षाप्रेमी !

शिक्षा-प्रचार के काम में सदैव अग्रणी रहे हैं। स्थानकवासी समाज की संस्थाओं में शायद बहुत कम ऐसी संस्थायें होंगी जहां आपकी सहायता नहीं पहुंची हो। कई संस्थाओं की अध्यक्षता भी आप कर चुके हैं और उन्हें बड़ी-बड़ी सहायता दी है। श्री जैन गुरुकुल ब्यावर को इसी वर्ष दी हुई ११११) की रकम आपकी उदारता का एक उज्वल उदाहरण है।

श्री जैन जवाहर विद्यापीठ के मंत्री का कार्यभार भी आप ही संभाले हुए हैं तथा उसका संचालन बड़ी योग्यतापूर्वक कर रहे हैं। आपकी ओर से एक कन्या पाठशाला भी चल रही है।

अन्त में हम आपका अभिनन्दन करते हुए शासनदेव से प्रार्थना करते हैं कि आप चिरायु हों तथा अपने क्रान्तिकारी विचारों से समाज में व्याप्त शिथिलाचार तथा साम्प्रदायिकता को मिटाने में अग्रसर हों।

हम हैं आपके—

ब्यावर
२३ १२-४८

स्नातक
श्री जैन गुरुकुल, ब्यावर

श्री वीतरागाय नमः

समाजभूषण, दानवीर सेठ
श्रीमान् चम्पालाल जी बांठिया, भीनासर निवासी
के
कर कमलों में सादर समर्पित
अभिनन्दन-पत्र

महानुभाव !

आदरणीय समाजभूषण, दानवीर सेठ चम्पालाल जी बांठिया, हमें आज आप जैसे नवीनविचारक, समाज-सुधारक, कार्यदक्ष मिलनसार वृत्ति के, निरभिमानी व्यक्ति को इस पुनीत संस्था के सप्तम वार्षिकोत्सव का सभापति बनाते हुए जितना हर्ष हो रहा है, वह कल्पना के परे की चीज है, इसे तो कोई हमारे हृदय-स्थल तक पहुँच कर ही जान सकता है। यद्यपि हमने पिछले कई वार्षिकोत्सवों पर श्रीमान् से सभापति पद को सुशोभित करने की प्रार्थना की थी, लेकिन कई आवश्यक कारण बताकर आप टालम टोल करते रहे। और अन्त में आपने हमारी उत्कट इच्छाओं का आदर किया और इस मण्डल ने जो कि एक महान् आत्मा के नाम पर स्थापित किया गया है और जिनके कि आप परम भक्त हैं आपको अपनी ओर आकृष्ट किए बिना नहीं छोड़ा और साथ ही हमारी अनेक बार की प्रार्थनाओं का असर भी आप पर पड़ना निश्चित ही था। इन्हीं सब कारणों से हम लोगों पर परम कृपा करके आपने इस बार इस पद को स्वीकार करके हमें कृतार्थ किया।

हम श्री जैन-जवाहिर-मंडल के सदस्यगण आपकी इस कृपा के लिए पूर्ण कृतज्ञ हैं और हृदय से आपका अभिनन्दन करते हैं और जगन्नियन्ता से बार बार प्रार्थना करते हैं कि सदैव ही हमारे समाज को ऐसे नर रत्नों से सुशोभित रखे ताकि वे समाज के उत्थान को सदैव आगे बढ़ाते रहें।

हम हैं आपके दर्शनाभिलाषी—
सदस्यगण
श्री जैन जवाहिर मंडल देशनोक

दिनांक १७-१-५०

अग्रगण्य समाज-सेवक, सत्साहित्य-प्रसारक एव विवेक-सम्पन्न महानुभाव

श्रीमान् सेठ चम्पालाल जी सा वांठिया

के कर-कमलो म सादर समर्पित

अभिनन्दन-पत्र

सम्माननीय महानुभाव ! समाज-सेवा के लिए प्रख्यात भीनासर के बांठिया परिवार के सुयोग्य उत्तराधिकारी के रूप में आपने सुसंस्कृत समाज-संरचना हेतु अपूर्व निष्ठा एवं अध्यवसाय से संस्थापित नित-नूतन कीर्तिमानों द्वारा अपने पूर्वजों की यशोगाथा को सदा-सर्वदा के लिए स्मरणीय एवं सम्माननीय बना दिया है। आपका उज्ज्वल आदर्श सम्पूर्ण समाज के लिए प्रेरणादायक एवं मार्गदर्शक है।

सत्साहित्य-प्रेमी ! सत्साहित्य जनमानस को सुसंस्कारों से समृद्ध बनाने का एक विशिष्ट माध्यम माना गया है। एतदर्थ भौतिक उपलब्धियों से चमत्कृत इस युग में युगदृष्टा श्रीमज्जवाहराचार्य के प्रेरक प्रवचनों को 'जवाहर-किरणावली' के रूप में प्रकाशित करने सम्बन्धी आपके सत्प्रयत्नों के लिए समाज उपकृत एवं कृतज्ञ है।

आदर्श समाज-नेता ! आपको नेतृत्व की आकांक्षा नहीं परन्तु समाज सदैव आपके चिन्तन मनन एवं अपूर्व कार्य-क्षमता से लाभान्वित होने के लिए लालायित रहा है। अखिल भारतीय श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कान्फ्रेन्स के अध्यक्ष-पद पर आपको प्रतिष्ठित करके समाज ने स्वयं को गौरवान्वित अनुभव किया है। आपको समाज-सेवा के पुनीत क्षेत्र में युवा-पीढ़ी को अग्रसर करने का सुन्दर श्रेय प्राप्त है।

युवकोचित उत्साह-मूर्ति ! आप वय से वृद्ध हैं परन्तु आपमें युवकोचित उत्साह स्फूर्ति एवं तेजस्विता की त्रिवेणी के दर्शन करके युवा-पीढ़ी आपको अपना प्रमुख प्रतिनिधि मानने में अत्यन्त गौरव एवं उल्लास अनुभव करती है।

समाज के धार्मिक आचार-विचार के आधारभूत श्रमण-वर्ग की ज्ञान और संयम में एकनिष्ठ को *अक्षुण्ण रखने के लिए आपके प्रबल प्रयत्न और सामयिक सूझबूझ के फलस्वरूप ही सं २०१२ का वृहद्* साधु-सम्मेलन भीनासर में सोत्साह सानन्द सम्पन्न हुआ था जो आपकी सुदक्षता एवं क्षमता का प्रकाशमान प्रमाण है।

संघ-गौरव के प्रतिष्ठापक ! संघ-गौरव की सुरक्षा हेतु प्रयत्न-रत विभूतियों में आप प्रमुख हैं। परमश्रद्धेय स्वर्गीय श्री हुकमीचंद जी म सा के पाटानुपाट श्रीमज्जैनाचार्य पूज्य श्री जवाहरलाल जी म सा की सेवा भक्ति और प्रभावना के लिए आपके द्वारा किया गया अनवरत श्रम समाज के इतिहास में प्रकाशस्तम्भवत् देदीप्यमान है।

आदर्श शिक्षा-प्रेमी ! आप अपने युगानुरूप शिक्षा प्राप्त कर सके परन्तु भावी-पीढ़ी को समुचित शिक्षा-प्राप्ति हेतु प्रोत्साहित करने के लिए जवाहर सैकण्डरी स्कूल तथा बांठिया कन्या विद्यालय (भीनासर) का विशाल एवं भव्य भवन-निर्माण आपके शिक्षा-प्रेम तथा सात्त्विक दान का प्रतीक है। इसी प्रकार परम पूज्य श्री जवाहराचार्य जी म सा की पुण्य-स्मृति में संस्थापित श्री जवाहर विद्यापीठ के प्रारंभ से ही मंत्री रह कर पुस्तकालय छात्रावास शिक्षणशाला महिला उद्योगशाला जैसी लोकोपकारी प्रवृत्तियों के माध्यम से आपने समाज के सर्वतोमुखी विकास-कार्यों का श्रीगणेश किया है।

हम आपके सम्मान के लिए यथोचित स्वर-संरचना में असमर्थ हैं परन्तु आपके आदर्शों से अनुप्राणित मर्मस्पर्शी से प्रेरित होकर हम अपनी भावनाओं का पुष्प प्रस्तुत करते हैं कि आप शतायु हों और आपके उज्ज्वल आदर्श समाज में सदैव सचेतना का संचार करते रहें।

स्थान श्री जवाहर विद्यापीठ भीनासर — हम हैं आपके—

सं २०३० मिती मार्गशीर्ष कृष्णा ६ रविवार — सदस्यगण—श्री साधुमार्गी जैन श्रावक संघ

दिनांक १८ नवम्बर सन् १९७३ — बीकानेर-गंगाशहर भीनासर

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

बीकानेर (राजस्थान)

द्वारा

सादर समर्पित

सम्मान-पत्र

समाजरत्न, दानवीर सेठ श्रीमान् चम्पालालजी सा बांठिया

मीनासर (बीकानेर)

आदरणीय महोदय

- आपका धर्मानुराग एवं शिक्षा प्रेम समाज के सभी क्षेत्रों में प्रकाशमान है।
- आपने युगद्रष्टा युगस्रष्टा युगप्रवर्तक महान् ज्योतिर्धर आचार्य श्री जवाहरलाल जी महाराज के जीवनोपयोगक सारगर्भित हृदयस्पर्शी प्रवचनों का प्रकाशन कर समाज राष्ट्र एवं मानव मात्र की अपरिमित सेवा की है।
- आपकी उदारता तथा दानशीलता समाज के विकास में विशेष उपयोगी एवं प्रेरणादायक रही है।
- आपकी कार्यकुशलता एवं कर्तव्यनिष्ठा से समाज सदैव लाभान्वित हुआ है।
- आपका धर्मभावी एवं क्रियाशील जीवन सदैव एक प्रकाशस्तंभ के रूप में समाज का मार्गदर्शन करता रहा है और करता रहेगा।

अतः श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ अत्यन्त प्रसन्नता एवं विनम्रतापूर्वक आपको यह सम्मान-पत्र समर्पित करते हुए आपके सुदीर्घ आयुष्य हेतु मंगल कामना करता है।

गोगामंडी
दिनांक २४ सितम्बर, १९७६

मंत्री

अध्यक्ष

जैन आर्ट प्रेस बीकानेर

भीनासर के गौरव, नारी, उन्नयन के अग्रदूत एव

अनुकरणीय समाजसेवी

सेठ चम्पालालजी बाठिया

की पुनीत स्मृति मे सादर समर्पित

श्रद्धासुमनाजलि

भीनासर के गौरव!

बीकानेर के गौरवमयी धरती के भीनासर उपनगर में अपने जीवन के ८४ वसन्त देखते हुए आपने जो कीर्ति अर्जित की उसकी यशपताका अद्यावधि निर्बाध रूप से फहराती रही है और हमारे अन्तर्मन को पुलकित एव गौरवान्वित करती रही है। तत्कालीन बीकानेर राज्य में आपने जन प्रतिनिधि एव मानद न्यायाधीश के रूप मे सेवाए देकर जन-जन से जो अन्तरग जुड़ाव स्थापित किया वह चिरस्मरणीय है। प्रत्येक समाजसेवी के लिए आपकी हार्दिक उदारता व सदाशयता नमनीय है।

नारी उन्नयन के अग्रदूत!

भारतीय स्वतन्त्रता से पूर्व ही आपने नारी-जाति में स्वाभिमान व स्वावलम्बन की भावना जाग्रत करने हेतु नारी-कल्याण की अनेक शैक्षिक व व्यावसायिक प्रवृत्तियो का शुभारम्भ एव सफल संचालन कर जिस दूरदर्शिता तथा सेवा भावना का परिचय दिया वह अभिनन्दनीय है।

अनुकरणीय समाज-सेवी!

कहा जाता है कि लक्ष्मी और सरस्वती का मेल दुर्लभ ही होता है पर आपने अपने कर्त्तव्य से सुगम सिद्ध किया और लक्ष्मी के वरद-पुत्र होकर श्री सरस्वती मन्दिरो के निर्माण मे जिस अग्रगण भूमिका का निर्वहन किया वह स्तुत्य है। बाठिया बालिका विद्यालय तथा जवाहर विद्यालय इसके प्रत्यक्ष साक्षी हैं। अनेक सार्वजनिक व सामाजिक प्रवृत्तियो के निर्माण व सचालन द्वारा आपने जो कीर्तिमान स्थापित किया वह वन्दनीय है।

अपने मृदु एव स्नेहिल व्यवहार से आपने प्रत्येक समकालीन के हृदय में जो अमिट स्थान बनाया वह हमारे लिए मार्गवर्धक प्रेरक एवं अनुकरणीय है। आज आपकी पुनीत स्मृति मे अपने श्रद्धा-सुमन अर्पित कर हम कृतार्थ हैं।

श्रद्धावनत

हीरक जयन्ती समारोह — शिक्षक-अभिभावक समिति व नागरिकगण

रविवार ३ अप्रेल १९९४ — राजकीय बाठिया बालिका उ.प्रा विद्यालय

भीनासर (बीकानेर)

सेवा, सरलता एवं सौम्यता की प्रतिमूर्ति
आदर्श श्रावक रत्न एवं संघनिष्ठता के प्रतीक
सेठ श्रीमान् चम्पालालजी बांठिया को मरणोपरांत

समाज-भूषण

सादर समर्पित सम्मान-पत्र

सम्माननीय!

अदम्य उत्साह स्फूर्ति एवं जीवट से ओत-प्रोत आपका जीवन जन-जन के लिए प्रेरक एवं स्मरणीय है। बहुआयामी व्यक्तित्व एवं प्रखर प्रतिभा द्वारा आपने समाज की प्रगति के लिए जो कार्य किये हैं वे स्तुत्य एवं अनुकरणीय हैं।

अग्रगण्य श्रावक!

आपने उदात्त सात्विक एवं मर्यादित रह कर आदर्श श्रावक का सागार धर्म-पूर्ण आस्थापूर्वक निर्वहन किया। आचार विचार एवं व्यवहार में आप सदैव सहज रहे। भौतिक समृद्धि में भी आप निर्लिप्त एवं अप्रमत्त रहकर आत्माभिमुख रहे। आपकी न वैभव प्रदर्शन की प्रवृत्ति रही और न बाह्य आडम्बर के प्रति आसक्ति।

कर्मयोगी!

तत्कालीन बीकानेर नरेश एवं अनेक संस्थाओं से सम्मानित अभिनंदित होकर भी आप अहं से दूर ही रहे। सक्रियता एवं विशाल हृदयता ही आपके जीवन पाथेय रहे। आपने उद्योग व्यापार, नगर पालिका न्याय एवं वैधानिक क्षेत्रों में आदर्श प्रस्तुत किया धार्मिक सामाजिक एवं शैक्षणिक नगरपालिका न्याय एवं वैधानिक क्षेत्रों में आदर्श प्रस्तुत किया धार्मिक सामाजिक एवं शैक्षणिक संस्थाओं से सम्बद्ध रहकर कीर्तिमानीय कार्य भी किये। श्लाघनीय है आपकी दूरदर्शिता कि आपने तत्कालीन आलोचनाओं एवं विरोध के बावजूद बाल दीक्षा निषेध विधेयक प्रस्तुत करने का साहस किया जिसकी उपादेयता आज भी प्रासंगिक है।

निःस्वार्थ सेवा के प्रतीक!

जिस प्रकार सेवा एवं स्वावलम्बन के क्षेत्रों में अनेकानेक संस्थाओं जवाहर हाई स्कूल बांठिया बालिका उच्च प्राथमिक विद्यालय जवाहर विद्यापीठ पौषधशाला धार्मिक ट्रस्ट की स्थापना कर आपने लोक कल्याण कार्यों को गतिशील रखा तो समाज को लोकप्रिय नेतृत्व भी प्रदान किया श्रीमद्‌जवाहराचार्य की वाणी को कालजयी बनाने हेतु 'जवाहर किरणावली' का प्रकाशन साहित्य के क्षेत्र में मील का पत्थर है।

अनुप्रेरक!

पार्थिवरूप में आप आज भले ही नहीं पर आपके कार्य समाज को सर्वदा अनुप्रेरित करते रहेंगे। आपकी दीर्घकालीन बहुमुखी सेवाओं के लिए हम आभारी हैं एवं सादर नमन सहित 'समाज-भूषण' पदवी से सम्मानित कर हम गौरवान्वित हैं।

स्वर्ण जयन्ती समारोह	हम हैं
भीनासर (बीकानेर)	श्री जवाहर विद्यापीठ
दिनांक १ मई १९९४	भीनासर
वार रविवार	के सदस्यगण

श्रद्धा-सुमन

सवेदना के स्वर

Lallgarh Palace,
Bikaner 334 001
(Rajasthan.)

8th April, 87.

I was deeply distressed to hear about the sudden demise of your Revered Father Shri Champalalji Banthia We send you our heartfelt condolences. I knew Shri Champalalji Banthia well and his loss will be a personal loss to me. May the Almighty grant the departed soul rest in peace in Heaven

With regards,

Yours sincerely,

Karni Singh

(Dr. Karni Singh of Bikaner)

दैनिक युगपक्ष / ३ अप्रेल, १९८७

चम्पालाल बाठिया का समाधिमरण

बीकानेर। भीनासर के प्रमुख समाजसेवी चम्पालाल बाठिया का गुरुवार को निधन हो गया। वे ८५ वर्ष के थे। बाठिया ने जैन परम्परा के अनुरूप चौविहार सथारा ले लिया था। सथारे मे ही उनका समाधिमरण हुआ। उनकी अन्तिम यात्रा वैकुण्ठी के रूप में निकाली गई। जिसमें समाज के व अनेक गणमान्य लोग सम्मिलित हुए।

भीनासर में जवाहर जैन विद्यापीठ, जवाहर उ मा.वि तथा स्थानक पौषध शाला जैसे अनेक धार्मिक व समाजसेवा कार्यों मे स्व बाठिया सदैव अग्रणी रहे। भारत जैन महामडल के शाखा मत्री जसकरन सुखानी ने उनके निधन पर शोक व्यक्त करते हुए उन्हे हर क्षेत्र में अग्रणी बताया।

वर्तमान/६ अप्रेल, १९८७

भीनासर के बाठियाजी का स्वर्गवास सेठायी युग की आखिरी कड़ी भी समाप्त

बीकानेर-नगर की उपबस्ती भीनासर के सेठ चम्पालाल बांठिया का इसी १ अप्रेल ८७ को लगभग ८६ वर्ष की आयु मे स्वर्गवास हो गया। स्व बाठिया सेठायी युग की आखिरी कड़ी माने जाते थे जो अब नहीं रहे हैं।

जैन श्वेताम्बर समाज मे बाठियाजी प्रगतिशील माने जाते थे तथा आप साधु समाज मे बाल दीक्षा के सख्त विरोधी माने जाते थे। आप पूर्व रियासत बीकानेर की असेम्बली के मनोनीत सदस्य रहे थे। आप ने महाराजा सार्दुलसिंहजी के जमाने में असेम्बली मे बाल दीक्षा विरोधी बिल रखा था जो भारत में बहुत चर्चित रहा था। कहा जाता है कि दिल्ली की हुकूमत के हस्तक्षेप से यह बिल बीकानेर रियासत की असेम्बली मे पारित होने से रह गया था।

बांठिया जी भीनासर की अलग इकाई को बनाये रखने को कटिबद्ध रहे। अब भीनासर नगर पालिका जो नगर परिषद बीकानेर क्षेत्र में सम्मिलित कर ली गई है। भीनासर के नागरिकों की सुविधा के लिए यहाँ अलग से हायर सैकेण्डरी स्कूल कन्या विद्यालय डाकघर आदि आपके प्रयासो के ही फलस्वरूप कायम हो सके हैं।

बीकानेर एक्सप्रेस / १३ अप्रेल, १६८७

प्रमुख समाज सेवी श्री बाठिया को श्रद्धाजलि

बीकानेर। रियासती युगीन बीकानेर समाज को शिक्षा के क्षेत्र मे तथा नगर विकास और पर्यावरण की दृष्टि से मीनासर के सेठ श्री चम्पालाल बाठिया के नाम से सभी परिचित हैं यह तत्कालीन राज्य मे एम एल ए रहे और व्यापार उद्योग मडल के अध्यक्ष। इन्होंने बाल दीक्षा निषेद्ध बिल प्रस्तुत कर भारत मे नाम कमाया है। ख्याति प्राप्त बाठिया जी एक अप्रेल, ८७ को यह आसार ससार छोड़ चल बसे। राज साहित्य निकेतन द्वारा श्रद्धाजलि अर्पित करने हेतु शोक सभा का आयोजन किया गया जिसमें श्री धीरज बाठिया, श्री सुमति तथा अन्य इनके परिजन और सामाजिक कार्यकर्ता उपस्थित थे। डा वी डी आचार्य ने बाठिया जी के जनहित के कार्यों पर प्रकाश डाला और उन्हे एक महान मानवतावादी राजनेता की सज्ञा दी।

अधिकार / १४ अप्रेल, १६८७

पूर्व विधायक बाठिया को श्रद्धाजलि

बीकानेर १३ अप्रेल (वि)। सुधारक चम्पालाल बाठिया मीनासर के निधन पर राजस्थान साहित्य निकेतन की ओर से आयोजित शोक सभा मे उनके पुत्र धीरज बाठिया सुमति तथा उनके अन्य परिजन एव सहयोगी सहित अनेक समाजसेवियो ने उनके कार्यों का उल्लेख करते हुए उन्हे भाव भीनी श्रद्धाजलि अर्पित की। श्री बाठिया का गत १ अप्रेल को निधन हो गया था।

डा वी डी आचार्य ने बाठिया जी के शिक्षा प्रेम के अनुपम उदाहरण प्रस्तुत कर उनके द्वारा तत्कालीन ऐसेम्बली मे एक एम एल ए की हैसियत से बाल दीक्षा निषेध अर्थात अल्प व्यस्क बालक-बालिकाओं को साधु साध्वी बनाये जाने की कुप्रथा के विरुद्ध बिल लाये जाने का साहसिक कदम बताया जिसका तत्कालीन वृहत्तर भारत के विभिन्न प्रातो के महान चितको समाज शास्त्रियो राजनेताओं आदि ने तहेदिल से अनुमोदन करते हुए श्री बाठिया को अपने पत्रो में महान मानवतावादी राजनेता तथा एक साहसिक समाज सुधारक कहकर सम्बोधन किया है।

शोक सभा के अन्त मे एक प्रस्ताव पारित कर दिवगत आत्मा के प्रति श्रद्धा अर्पित करते हुए परमपिता से प्रार्थना की गई कि बाठिया जी के शोक सतप्त परिवार को इस असह्य दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

श्री बाठिया जी अपने पीछे तीन पुत्र तथा भरा पूरा परिवार छोड़कर गये हैं।

दैनिक युगपक्ष/१४ अप्रेल, १९८७

स्व वाठिया ने अपना सारा जीवन शिक्षा, प्रेम व समाज सुधार मे लगाया

बीकानेर (कास)। राजस्थान साहित्य निकेतन की ओर से एक शोकसभा का आयोजन कर समाज सुधारक चम्पालाल बाठिया को भावभीनी श्रद्धाजलि दी गई। डा वी डी आचार्य ने बाठिया के शिक्षा प्रेम तथा समाज सुधार की चर्चा करते हुए बताया कि १९५४ ५५ की टाइम्स ऑफ इण्डिया इयर बुक मे स्व बांठिया का उल्लेख था। बीकानेर रियासत के समय धारा सभा (एसेम्बली) के सदस्य रहते हुए उन्होंने बाल दीक्षा के विरोध के लिए साहसिक बिल रखा था उसकी सर्वत्र सराहना हुई।

शोकसभा में स्वर्गीय बाठिया के पुत्रों धीरज बाठिया सुमति परिजन एव अन्य समाज सेवियो ने स्व बाठिया के प्रति श्रद्धा सुमन अर्पित किए। एक शोक प्रस्ताव पारित कर सतप्त परिवार को दु ख सहन करने की क्षमता देने की प्रार्थना की गई।

राष्ट्रदूत/१४ अप्रेल १९८७

पूर्व विधायक बाँठिया को श्रद्धाजलि अर्पित

बीकानेर १३ अप्रेल। टाईम्स ऑफ इण्डिया १९५४ ५५ की ईयर बुक मे जिन समाज सुधारक श्री चम्पालाल जी बाँठिया भीनासर (बीकानेर) के सम्बन्ध में उनके साहसिक कार्यों का उल्लेख किया गया था उन बाँठिया जी का एक अप्रेल को निधन हो गया।

श्री बाँठिया जी के निधन पर राज साहित्य निकेतन की ओर से आयोजित शोक सभा मे उनके पुत्र श्री धीरज बाँठिया श्री सुमति बाँठिया तथा उनके अन्य परिजन एव सहयोगी सहित अनेक समाज सेवियों ने श्री बाँठिया जी के समाज सुधार के कार्यों का उल्लेख करते हुए उन्हे भावभीनी श्रद्धाजलि अर्पित की। वी डी आचार्य ने उनके व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला।

दिशा-कल्प/ १५ अप्रेल, १९८७

प्रमुख समाज सेवी श्री बाँठिया को श्रद्धाजलि

बीकानेर। रियासती युगीन बीकानेर समाज को शिक्षा के क्षेत्र मे तथा नगर विकास और पर्यावरण की दृष्टि से भीनासर के सेठ श्री चम्पालाल बाँठिया के नाम से सभी परिचित हैं। यह तत्कालीन राज्य मे एम एल ए रहे और व्यापार उद्योग मण्डल के अध्यक्ष। इन्होने बाल दीक्षा निषेध बिल प्रस्तुत कर भारत में नाम कमाया है। ख्याति प्राप्त बाँठिया जी एक अप्रेल ८७ को यह असार ससार छोड़ चल बसे। राज साहित्य निकेतन द्वारा श्रद्धाजलि अर्पित करने हेतु शोक सभा का आयोजन किया गया जिसमे श्री धीरज बाँठिया श्री सुमति तथा अन्य इनके परिजन और सामाजिक कार्यकर्ता उपस्थित थे। डा वी डी आचार्य ने बाँठिया जी के जनहित के कार्यो पर प्रकाश डाला और उन्हे एक महान मानवतावादी राजनेता की सज्ञा दी।

देश और व्यापार/२० मई से ५ जून, १९८७

अब जिनकी स्मृति युगो-युगो तक पथ प्रदर्शन करती रहेगी

(प्रकाश पुगलिया द्वारा)

[भीनासर के भामाशाह, समाज के मूर्धन्य नेता, युग चेत्ता सेठ श्री चम्पालाल जी बाँठिया के स्वर्गवास का समाचार सुनकर मैं मर्माहत हो गया। जिनकी स्मृति मात्र से जनमानस का दिल श्रद्धा से नत-मस्तक हो जाता है ऐसे कर्म पुरुष को मेरा हार्दिक नमन एव श्रद्धाजलि]

भीनासर गाँव [अब बीकानेर शहर का एक भाग] के इतिहास से अगर सेठ श्री चम्पालाल जी के कार्यों को अलग कर दिया जाय तो वीरान सा नजर आयेगा सचमुच इस गाव की कायाकल्प कर डाली थी सेठजी ने। ८५ वर्ष की आयु मे इस नश्वर शरीर को छोड़कर स्वर्गलोक मे सिधारे सेठ साहब का समूचा जीवन समाज गाव एव राष्ट्र को समर्पित था। आज से लगभग ३५ वर्ष पूर्व आपने भीनासर मे जवाहर हाई स्कूल का निर्माण करवाया गाव मे पोस्ट ऑफिस का निर्माण सड़कों का निर्माण बाँठिया बालिका विद्यालय का निर्माण जैन जवाहर विधापीठ का निर्माण, एव मुरली मनोहर गौ शाला के विकास एव प्रगति मे आपने तन मन धन से सब कुछ समर्पण किया। सेठ साहब हमेशा ही गाँववासियों को निष्पक्ष न्याय की प्रेरणा प्रदान करते रहते थे यही वजह थी कि उनके पास जरूरत मद लोगो का ताता लगा रहता था।

सेठ जी ने मीठे पानी के दो कुवे खुदवाकर भीनासर गगाशहर के निवासियों को पीने के पानी की कमी महसूस नहीं होने दी। नवम्बर १९८३ में आपने ट्रस्ट बनाकर एक और भवन समाज को समर्पित कर दिया जिसमे जैन साधु-सत निवास करते हैं।

जैन समाज के अग्रणी सेठ श्री

सेठजी समूचे जैन समाज के अग्रणीय रहे। आप अखिल भारतीय श्वे स्था जैन कान्फ्रेंस के सादड़ी (मारवाड़) सम्मेलन मे अध्यक्ष चुने गये। कान्फ्रेंस का साधु सम्मेलन आपके ही अथक प्रयासा से भीनासर मे सम्पन्न हो सका। इस सम्मेलन में सभी गुटो के जैन साधु-सन्त एक मच पर एकत्रित हुवे। अनेकानेक जैन सस्थाओं ने आपका हार्दिक अभिनन्दन कर सम्मानित किया। इनमे निम्न प्रमुख थे

१ अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन सघ

२ श्री साधुमार्गी जैन श्रावक सघ बीकानेर-गगाशहर भीनासर

३ श्री जैन जवाहर मण्डल देशनोक एव

४ श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक सघ ब्यावर आदि

यहा तक कि बीकानेर के महाराजा स्व श्री गगासिंह जी ने आपकी सामाजिक सेवाओं से प्रभावित होकर आपको 'फर्स्ट क्लास पब्लिक सर्विस मडल' प्रदान कर सम्मानित किया एव बीकानेर जैन समाज ने आपको 'गोल्ड मेडल' प्रदान किया। आप बीकानेर रियासत के एसेम्बली मेम्बर थे। आपने बाल दीक्षा का व्यापक विरोध किया एव एक बिल पास करवाने का प्रस्ताव भी किया जिस पर देश भर के बड़े-बड़े राजनीतिज्ञों सामाजिक कार्यकर्ताओं एव उद्योगपतियों के समर्थन पत्र प्राप्त हुए। लेकिन बीकानेर महाराजा के अनुरोध पर आपने यह बिल वापिस ले लिया।

ऐसे कर्मठ महामानव श्री चम्पालालजी बांठिया ८५ वर्ष की आयु मे गत १ अप्रेल को हमारे बीच से चल बसे। आपकी स्मृति आपकी कीर्ति का यशगान युगो-युगों तक करती रहेगी।

दूर-दूर तक से शोक सदेश

सेठजी के स्वर्गवास का समाचार सुनकर समूचा जैन समाज शोक में डूब गया एव उनकी कर्मठता एव नेतृत्व शक्ति को नमन करने के लिए दूर दूर से सैकड़ों शोक सन्देश प्राप्त हो रहे हैं उनमें से कुछेक निम्नलिखित हैं

१ बीकानेर नरेश श्री करणीसिंहजी ने एक शोक सन्देश में कहा है कि

श्री बाँठिया जी का अभाव मेरी व्यक्तिगत क्षति है। भगवान आपकी स्वर्गात्मा को सुख शान्ति प्रदान करें।

२ उद्योगपति श्री रामकृष्ण जी बजाज ने श्रद्धाजलि सन्देश मे कहा कि आपके निधन का समाचार मुझे विदेश से वापस लौटने पर मिला। ईश्वर आपकी स्वर्गात्मा को शाति प्रदान करे।

३ अखिल भारतवर्षीय जैन सघ बीकानेर के मन्त्री महोदय ने शोक सन्देश मे कहा कि आप जैन समाज के मूर्धन्य नेता थे एव शिक्षा स्वाध्याय सामाजिक सुधार एव राष्ट्रीय विकास मे मुक्त हस्त से योगदान करते रहे।

४ अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन सघ मद्रास तथा कलकत्ता से भी आपको श्रद्धान्जलि अर्पित की गई एव शोक प्रस्ताव पास किये गये।

५ राजकीय जवाहर माध्यमिक विद्यालय ने एक शोक सन्देश मे कहा है कि दानवीर एव समाज सेवी स्व सेठजी का शिक्षा जगत मे सदा नाम अमर रहेगा। यह विद्यालय भवन सेठ साहब की अमर कीर्ति है और इसमें अध्ययनरत छात्र आपका हमेशा यश गान करते रहेंगे।

जीत की भेरी/अजमेर, मासिक पत्रिका/मई १९८७

महकते फूल, जो अब नही रहे

मीनासर (बीकानेर) १५ दिस १९०२ को सेठ स्व श्री हमीरमल जी बांठिया के घर जन्मे सेवाभावी समाज रत्न दानवीर एव कई सस्थाओं के पोषक सेठ चम्पालाल जी बांठिया का १ अप्रेल १९८७ को स्वर्गवास हो गया है। आपने अपने जीवन मे कई महत्वपूर्ण कार्य जनता एव समाज के लिए किए जिसके लिए आपको कई नगरों व गावों में सम्मान पत्र भेट किये गये एव पुरस्कृत भी किया गया। आप द्वारा मिडिल स्कूल हाई स्कूल मीठे पानी के लिए कुए, विद्यापीठ, पौषधशाला, गेस्ट हाऊस धर्मार्थ ट्रस्ट, सड़कों एव नालियों का निर्माण कराया गया। आप भू पू महाराजा गगासिंहजी के एम एल ए तथा मजिस्ट्रेट भी रहे। नगरपालिका के वर्षों तक चेयरमेन रहे। कई सस्थाओं के अध्यक्ष मत्री रहकर आपने समाज एव जनता की खूब सेवा की। श्री जैनाचार्य जवाहरलाल जी म का सवत् १९९८-९९ का चतुर्मास भी आप द्वारा कराया गया। मीनासर साधु सम्मेलन मे आप की बहुमूल्य सेवाये रही। सादड़ी सम्मेलन मे तो आप अध्यक्ष चुने गये। इन सबके साथ-साथ आपने समाज में व्याप्त कुरीतियों को भी

मिटाने का पूरा प्रयास किया। आप बाल दीक्षा के पूर्ण विरोधी रहे। आपके तीन सुपुत्र एव सात सुपुत्रिया हैं। तीनों ही पुत्र अपने पिता के पद चिह्नों पर चल रहे हैं। आप बीकानेर ही नहीं समस्त राजस्थान के जाने-माने लब्ध प्रतिष्ठित श्रावक थे। आपकी कई जगह पर शोक सभाए आयोजित कर श्रद्धाजलिया अर्पित की गई।

शासनदेव आपकी आत्मा को चिर शान्ति प्रदान करे एव परिवार को वियोग सहने की शक्ति प्रदान करे।

श्री जैन जवाहर मित्र मण्डल, ब्यावर (राज)

बाठिया सा के निधन की सूचना पाकर हार्दिक दु ख हुआ। प्रभु से प्रार्थना है कि परिजनो को यह विछोह सहन करने की शक्ति एव दिवगत आत्मा को चिर शान्ति प्रदान करें।

—भवरलाल बाठिया प्रेसीडेंट

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय सघ, जोधपुर (राज)

नियति के नियमो मे परिवर्तन परिवर्धन नहीं हो पाता, उनका आपके व हमारे साथ इतना ही सम्बन्ध था ऐसा समझकर सन्तोष एव धैर्य करना चाहिए। बाठिया सा की आचार्य प्रवर सन्त-सती मण्डल एव सघ के प्रति जो अटूट श्रद्धा एव आस्था थी वह हम सभी के लिए अनुकरणीय है। आत्मा की अमरता शाश्वतता नित्यता एव शरीर की क्षण भगुरता निस्सारता का चिन्तन करते हुए देव गुरू धर्म पर दृढ़ आस्था रखते हुए उनकी एव वीतराग प्रभु की आज्ञा पालन में समय बिताना ही श्रेयस्कर है।

—चचल मल चोरड़िया, सचिव

जैन विश्व भारती, लाडनू (राज)

श्री चम्पालाल जी के स्वर्गवास के समाचार जानकर बड़ा दु ख हुआ। साथ ही उन्होंने सथारा पूर्वक समाधिपूर्ण मृत्यु का वरण किया-यह जान कर गौरवानुभूति हुई। जहा जन्म है वहा मृत्यु निश्चित है किन्तु इस प्रकार समाधि मरण को प्राप्त करने वाले वीर विरले ही होते हैं। आप सरल शान्त प्रकृति वाले श्रमनिष्ठ एव धुन के धनी थे एव जैन धर्म के प्रति गहन निष्ठावान भी। अन्त समय में अनशन कर जिस समता व दृढ़ मनोबल का आपने परिचय दिया वह प्रशसनीय एव अनुकरणीय है। आप सभी

परिवारिकजनो के प्रति हमारी हार्दिक सवेदना स्वीकार करे। दिवगत आत्मा आध्यात्मिक विकास के पथ पर उत्तरोत्तर अग्रसर होती हुई शीघ्र ही सिद्ध बुद्ध और मुक्त बने यही कामना करते हैं।

आप उनके जीवन की विशेषताओं को अपने जीवन मे सजोते हुए उनकी कमी पूर्ति का प्रयास करेंगे - ऐसी आशा है। मूलचन्द घोसल निदेशक

श्री मुरली मनोहर गोशाला, भीनासर (बीकानेर)

सेठ साहब श्री चम्पालालजी बाठिया के आकस्मिक निधन का समाचार सुनकर सभी सदस्यो को गहरा दु ख हुआ है। सदस्यगण ने दिवगत आत्मा को अपनी शोक-श्रद्धाजलि अर्पित की तथा परमात्मा से यह प्रार्थना की कि वह उन्हे सदगति एव शान्ति दे तथा परिवार जनो को यह दारूण दु ख सहने की असीम शक्ति प्रदान करे।

सेठ साहब की इस गौशाला के प्रति तथा गौ-हित म गोचर भूखण्ड को सुरक्षित करवाने मे की गई सेवाए सदा अमर रहगी। —ईश्वरदास सारड़ा

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन सघ, मद्रास

स्व श्रीमान चम्पालालजी बाठिया एक जाने माने धर्मनिष्ठ सुश्रावक थे। जवाहर किरणावलियों के प्रकाशन एव स्वर्गीय आचार्य श्री जवाहिरलाल जी म सा जब भीनासर विराजते थे तब आपने जिस लगन और निष्ठा से सेवा की वह स्तुत्य ही नहीं अनुकरणीय है। स्थानकवासी जैन इतिहास मे आपका नाम हमेशा अग्रणी के रूप मे अंकित रहेगा। भीनासर सम्मेलन मे भी आपका योगदान विशेष रहा। आपके निधन से समाज मे एक वरिष्ठ नेता की क्षति हुई है जिसकी पूर्ति निकट भविष्य मे होनी कठिन है।

जिनेश्वर देव आपकी आत्मा को चिर शान्ति प्रदान करे एव शोक सतप्त पारिवारिक जनों को इस आघात को सहने का सबल दे। —केशरीचन्द सेठिया, मत्री

श्री श्वेताम्बर साधुमार्गी जैन हितकारिणी सस्था, बीकानेर

श्री श्वे साधुमार्गी जैन हितकारिणी सस्था बीकानेर की यह आम सभा सुश्रावक श्रीमान चम्पालाल जी सा बांठिया भीनासर के स्वर्गवास पर हार्दिक शोक प्रकट करती है।

आपने श्री जवाहर विद्यापीठ की स्थापना मे जो सहयोग दिया वह समाज के लिए आदर्श रूप है। आप समाज में व जन हितकारी कार्यों म हर समय अग्रणी रहते थे। सामाजिक कुरीतियों के उन्मूलन मे सक्रिय रहे। आप कला प्रेमी भी थे उनका सग्रहालय कला प्रेमियों के लिए दर्शनीय है।

सस्था आपके परिवार के प्रति हार्दिक सवेदना प्रकट करती है और दिवगत आत्मा को सद्‌गति प्राप्त हो यह कामना करती है। —सुन्दरलाल तातेड़

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन सघ, बीकानेर

जैन समाज के मूर्धन्य नेता सेठ सा श्रीयुत चम्पालाल जी सा बांठिया के निधन से समाज की गहरी क्षति हुई है।

स्व सेठ सा ने शिक्षा और स्वाध्याय सामाजिक सुधार और राष्ट्रीय विकास कार्यक्रमों तथा धर्म और नीति के उन्नयन सम्बन्धी सभी आयोजनो में सदैव मुक्तहस्त से योगदान दिया और उससे भी बढ़कर सक्रिय नेतृत्व प्रदान किया।

स्व आचार्य ज्योतिर्धर श्री जवाहरलालजी म सा री अनन्य सेवा और उनकी अमृतवाणी का जवाहर किरणावली के रूप मे प्रकाशन उनके जीवन के ऐसे यशस्वी कार्य हैं जो युग युग तक समाज और राष्ट्र को सत्कार्यों की प्रेरणा देते रहेंगे।

उनसे अपने क्षेत्र के प्रत्येक प्रबुद्ध जन को सामाजिक-धार्मिक कार्यों में सयमित-सन्तुलित रीति से भाग लेने की प्रेरणा मिली है।

मैं स्वय की तथा श्री अ भा साधुमार्गी जैन सघ की ओर से प्रशस्त सघ सहयोगी शासननिष्ठ स्व सेठ सा को हार्दिक श्रद्धाजलि अर्पित करते हुए उनकी आत्मा की चिर शान्ति के लिए प्रभु से प्रार्थना करते हुए कामना करता हू कि हम सभी को इस असह्य दु ख को सहने की क्षमता व शक्ति प्रदान कर। —चम्पालाल डागा, मन्त्री

अ भा श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक सघ, जोधपुर

श्री चम्पालाल जी सा बांठिया आचार्य श्री जवाहरलाल जी म सा के अनन्य भक्त थे। उनका सथारे के साथ चैत्र शुक्ला ३ को निधन हो गया जानकर दुःख हुआ। जैन समाज के प्रति जागरूक विचारक, कर्मठ सेवाभावी एव विद्वान श्रावक की क्षति हो गई है। स्वर्गस्थ आत्मा की शान्ति के साथ स्थानीय श्रावक सघ उनके सुपुत्रों से आशा करता है कि वे बांठिया सा के रिक्त स्थान को पूरा करेंगे।

—राजेन्द्र कुमार जैन

राजकीय जवाहर माध्यमिक विद्यालय, भीनासर (बीकानेर)

सेठ साहब श्री चम्पालाल जी बाठिया के आकस्मिक निधन का समाचार सुनकर विद्यालय-परिवार को अपार दु ख हुआ है।

विद्यालय-परिवार ने शोक-सभा आयोजित कर दिवगत आत्मा को शोक-श्रद्धाजलि अर्पित की एव शोक प्रस्ताव पारित किया।

१ विद्यालय-परिवार परम पिता परमात्मा से यह प्रार्थना करता है कि वह स्वर्गीय आत्मा को सद्गति एव शाति प्रदान करे।

२ परमात्मा आपके परिवार को इस दारूण दु ख को सहन करने की असीम शक्ति दे।

३ दानवीर, समाज सेवी स्वर्गीय सेठ साहब का नाम शिक्षा-जगत मे सदा अमर रहेगा और उनकी यश-कीर्ति सदा अमिट रहेगी।

४ यह विद्यालय भवन सेठ साहब की अमर-कीर्ति है और इसमे अध्ययनरत छात्र आपका हमेशा यशगान करते रहेगे। —मोहम्मद जफर, प्रधानाध्यापक

● दौरे से वापस आने पर आपके पिताश्री के देहावसान के बारे मे मालूम हुआ एव अत्यन्त दु ख हुआ। मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हू कि आपके पिताश्री की दिवगत आत्मा को भगवान शान्ति प्रदान करे एव आप सबको यह दु ख सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

—एस आर भसाली

शासन सचिव
विधि एव विधिक कार्य विभाग
१/१०, गाधीनगर जयपुर

● विदेश से आने पर मिले समाचार से दु ख हुआ। मेरी तरफ से हार्दिक सवेदना स्वीकार करे। ईश्वर से प्रार्थना है कि वह स्वर्गस्थ आत्मा को शाति प्रदान करे व आप सब लोगों को यह दु ख सहन करने के लिए धीरज दे।

—रामकृष्ण बजाज

बजाज भवन,
जमनालाल बजाज मार्ग २२६ नरीमन पॉइंट बम्बई ४०००२१

- श्रीमान चम्पालाल जी साहब के स्वर्गवास के समाचार से बहुत दुःख हुआ। नागोरी बात है। काल चक्र अगाड़ी फेरोइ जोर चले नहीं। आप लोग धैर्य रखावसी।

  रामपुरिया चेम्बर्स —कमलसिंह रामपुरिया
  १० क्लाइव रो कलकत्ता १

- बाबूजी से सम्पर्क होने पर कोई भी उनसे प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता था। उनकी कमी से निश्चित ही पूरा बीकानेर प्रभावित है।

  सवाई माधोपुर —माणक मोहता
  जिला एव सत्र न्यायाधीश

- श्री बांठिया जी ओसवाल एव जैन समाज के एक स्तम्भ थे। अनेक गतिविधियों एव सस्थानो से जुड़ा उनका व्यक्तित्व सदैव क्रियाशील एव अद्वितीय रहा। हमारे क्षेत्र की वे एक प्रमुख हस्ती थे, जिनके जूझारूपन ने उन्हें विरल रखा। सामाजिक एव धार्मिक क्षेत्र मे अपने कर्मठ योगदान की जो लकीरें उन्होंने खींची है उनकी समकक्षता करने हेतु किसी भी कार्यकर्ता को एक युग लगेगा।

  दीर्घावधि तक प्रभावित करने वाले ऐसे प्रतिभाशाली व्यक्तित्व को खोकर हम सभी अपने को अधिक कमजोर अनुभव कर रहे हैं। इस क्षति को अपूर्णीय कहना मात्र औपचारिकता नहीं होगी।

  जिस स्वाभिमान से वे जीये उसी स्वाभिमान व दृढ़ता से उन्होंने 'सथारा' कर मृत्यु को स्वीकारा। उनकी आत्मा को शाति मिले एव वह नित्य विकास करती रहे।

  The karanpur Ginning & —धर्मचन्द/सज्जन धींपड़ा
  Pressing Co Pvt Ltd Sri Karanpur

- We are extremely sorry on this irreparable loss not only to you and your family but to his dear and near ones including those who have known him all these years

  We pray the Almighty God to give you all enough

strength to bear this great affliction May the departed soul rest in peace.

R.Y Durlabhji
P O Box No 78
Jaipur-302001

—K.S Durlabhji

• I was shocked to get the news delivered through Mr B D Banthia I know how it affects a man when he parts with a person who has been living all along in times of good and bad to guide and to give a moral support in times of need

I wish I were with you to share the grief but though I am not physically present my thoughts are always wish you

15 A, 3rd Cross Street (Extn)
VI th Lay out
Coimbatore 641038

—S Rajaram

• I am much grieved to get this bad news He was very intimate to me and we have spent together some time of our life. I found him very courageous and Straight forward person May God give you strength to bear this loss May the departed soul rest in peace.

L P Agarwalla & Co
Advocates & Notary Public
1 B old Post office Street Calcutta-700001

—L P Agarwalla

- विधि के विधान के आगे मानव के सब प्रयत्न असफल हो जाते हैं। आप सब शान विचारें। कृपया आपके माताजी को इस दु ख की घड़ी में हमारे परिवार की तरफ से सवेदना अर्ज करावे।

Sah Agurchand Manmull Bankers —सरदार मल चोरड़िया
342 Mint Street Madras 600079

- बाठिया सा जैन समाज के अग्रणी एव धर्म परायण श्रावक थे। ऐसे धर्मानुरागी महानुभाव के देहात से पूरा समाज शोकातुर है। जैन समाज मे ऐसे व्यक्ति की पूर्ति होना कठिन है। इष्टदेव से प्रार्थना है कि स्वर्गस्थ आत्मा को शाति प्रदान करे।

194 NARENDRA STATION ROAD —अमेराज बलदोटा
WADALA BOMBAY 31 नरेन्द्रकुमार बलदोटा एव परिवार

- अचानक यह समाचार सुनकर बहुत दुःख हुआ परन्तु इसके आगे किसी का जोर नहीं चलता। तुम लोग हिम्मत रखना और दोनो भाभीजी को हमारी तरफ से हिम्मत बधाना।

Pan Kavur Bai —Panna Devi
Financiers
103 Mint Street sowtcarpet Madras 1

- विधि के विधान के आगे हम सब असमर्थ हैं। हमारी आपके साथ सवेदना है। भगवान आपको व परिवार को यह शोक बर्दाश्त करने की शक्ति दे।

पूना —हसराज बोथरा

- बहुत छोटी हुई पण निजोरी बात छै। मायत रो विछोह दुखदायक है पण आप लोगां ने धीरज सू काम लेणो पड़सी। आपणा हाथ ही सीर सरकार हा। आदरणीया सगी साहब ने अर बीनणी सुमन ने धीरज बधाइज्यो।

Jiwanmal Dharmraj (Bharat) Pvt Ltd —डूगरमल भूतोड़िया
3 Johuri Patty Burdwan (W B)

- ईश्वर की लीला के आगे निरूपायता है। आप ज्ञान की दृष्टि मे समझकर दिल मे समाधान रखावे।

  M/s Kumarpal Uttamchand Samdadia
  Anand Bhavan Marchar —उत्तमचद भागचद समदड़िया
  Pune 410503

- पढ़कर-दुख हुयो पर अपने हाथ की बात नहीं। समाज री पूरी खामी पड़ी इण री निकट भविष्य मे पूर्ति होणी मुश्किल है। पडित मरण मिलनो कठिन है कोई पुण्यशाली ने ही मिले छै। इण समय मे धर्म पर चित्त लगानो चाहिए ताकि शान्ति मिले।

  11 Nowroji Road Chetpet —मोहनलाल सेठिया
  Madras 31

- कालचक्र के सामने सभी को विवश होना पड़ता है। श्री वीर प्रभु से प्रार्थना है कि स्वर्गस्थ आत्मा को शाति एव आपके परिवार को इस महान दुख को धैर्य सहित सहन करने की शक्ति प्रदान करावे।

  Mootha Finance Corporation —मदनराज विजयराज मूथा
  555 Bangali Bazar Road
  Alandun Madras 600016

- पूज्य बहनोई सा रे स्वर्गवास रा समाचार सू मन मे बहुत दु ख हुयो है। अन्त समय मे उच्च विचार रहा तथा सर्व प्रकार त्याग पच्चक्खान कर सथारा लिया यह सौभाग्य की बात है। पू तारावाई सा ने भी हमारी तरफ सू हिम्मत बधासोजी।

  Mohanlal Punamchand —Mohan Lal Kothari
  39 A Armanian St Calcutta 700001

- मौत के आगे जोर है नहीं। धर्म पर दृष्टि रखावोगा।

  8 Bahu Bazar St —शातिलाल रामपुरिया
  Culcutta

- नियति के इस क्षण के आगे हम सभी निरुपाय हैं। उनकी स्मृति चिर स्मरणीय है। इस शोकमय वेला में हमारी सहानुभूति सहृदयता आपके साथ है। ईश्वर से प्रार्थना है कि उनकी आत्मा को चिरस्थायी शांति मिले।

  Dreamland Ahmedabad 9 —गौतमचद मेहता

- ईश्वर आपको एव आपके परिवार को इस दुःख से सभलने की शक्ति दे। मृतात्मा की सद्गति के लिए प्रार्थना है।

  Tarachand Motilal Lodha —ताराचद लोढ़ा
  Mouktik College Road
  Malegaon Camp NASIK

- ऐसी जगह इन्सान हिम्मत हार जाता है और सब अरमान धरे ही रह जाते हैं। उस दिवगत महान् आत्मा को शान्ति प्राप्त हो।

  तेजपुर —शिखरचद राजेन्द्रकुमार एव समस्त परिवार

- आपके पूज्य पिताजी बहुत प्रतिभाशाली व्यक्तित्व के धनी थे। भगवान आप सबको इस असहनीय दुख को सहने की शक्ति प्रदान करे।

  करीमगज —कन्हैयालाल पटवा

- इसके आगे किसी का जोर नहीं फिर भी आप धीरज रखें तथा सगी सा को धीरज बधायें।

  सूरत —शान्ता

- दुखद समाचार से मेरे पिताजी को बहुत दुःख हुआ। वे अपने पुराने सबधों की याद कर रहे थे। हम सभी दिवगत आत्मा की शान्ति के लिए प्रार्थना करते हैं तथा आपके इस दुःख में सहभागी हैं।

  Soni Investments & Consultants —सुरेन्द्र सोनी
  1/8 Rivervict Apartments
  Koregaon Park Pune-411001

- यही ससार की नश्वरता है। मा जी को मेरी ओर से निवेदन करना कि उनके पीछे अधिक कर्मों का सचय न करे। वे स्वय ही समझदार एव धर्मनिष्ठ हैं। दु ख मे धर्म ही एक आधार है।

Adhyatma Sadhna kendra —मोहनलाल कठोतिया
Chhatterpur Mehrouli
New Delhi 110030

- उस पुण्यात्मा का अपने साथ रहने का इतना ही योग था। भगवान उनकी आत्मा को शाति प्रदान करे।

Arihant Metal Company —**Vimal Baid**
4403 Gali Lottan wall
Pahari Dhiraj Delhi 110006

- बाबूजी के स्वर्गवास का समाचार जानकर बहुत दु ख हुआ लेकिन मौत के आगे मनुष्य हार जाता है। भगवान् आपको इस असहनीय दु ख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

Dest Aur Vyapar —प्रकाश कुमार पूगलिया
76 Pt Purushottam Roy st Calcutta 700007

- साहजी श्री बाठिया साहब के अवसान का समाचार जानकर अत्यन्त खेद हुआ। विधि की विडम्बना के आगे किसी का चल नहीं सकता। ईश्वर उनकी आत्मा को शाति दे।

25 Meghdoot Flats —**Mohanlal L Metha**
Ashram Road Navarangpura
Ahmedabad 380009

- स्वर्गीय बाठिया जी मेरे अभिन्न मित्र ही नहीं एक सजग समाज सुधारक और नेता थे। इनकी क्षति पूर्ति शीघ्र नहीं दिखती है। ईश्वर हमें इस आघात को सहने की शक्ति और दिवगत आत्मा को शाति प्रदान करें।

लोकमत कार्यालय बीकानेर —अम्बालाल माथुर

● पूज्य मामासा श्री जी शरण हो गये सो सुनकर बहुत ही दु ख हुआ। होनी को कोई भी टाल नहीं सकता है। आप अपना पूरा ध्यान रखें।

चित्रा आईस फैक्ट्री — चित्रा काकरिया
भीनासर

● दु खप्रद समाचार से मैं सपरिवार मर्माहत हो उठा। यह पारिवारिक क्षति के साथ ही सामाजिक धार्मिक और व्यापार जगत की भी अपूरणीय क्षति हुई है। मुख्यत मैं तो अपने आत्मीय एव परम हितैषी आदरणीय साहजी सा के अभाव में अपने आपको शोकाभिभूत ही पाता हू परन्तु विधि विधान बड़ा ही प्रबल है—

'हानि-लाभ जीवन-मरण यश-अपयश विधि हाथ ।

आ सगीजी सा ज्ञानी हैं और आप स्वय सुविज्ञ हैं अत धैर्य धारण करें।

४ मेरेडिथ स्ट्रीट — माणकचन्द रामपुरिया सपरिवार
कलकत्ता-७०००७२

● पढ़कर बहुत दु ख हुआ यहा आकर किसी का जोर नहीं चलता। तुम सभी मन म शान्ति रखोगा। पूज्य भजाईजी सा ने दिलासा दरावोगा। कोई तरह का आर्तध्यान नहीं करके शान्ति जाप करोगा, जिके सू स्वर्गस्थ आत्मा ने शाति मिलेगा। आपा लोगा सू इतनो ही सस्कार थो।

सापटग्राम — मानिकचन्द रूपचन्द धाड़ीवाल

● दादासा का समाचार सुनकर बहुत दु:ख हुआ। दादीसा को धीरज धराई जो।

कलकत्ता — गोरधनदास बाठिया

● दादासा के स्वर्गवास का पढ़कर बहुत दु:ख हुआ। भगवान आपको यह दु ख सहन करने की शक्ति देवें। ताराबाई को हमारी ओर से धीरज बधावें।

उज्जैन — सुलतानचन्द बाठिया

● बाचकर घोत दु:ख हुआ कि पूज्य दादासा का स्वर्गवास हो गया। बहुत खोटा हुआ

है लेकिन नीजोर बात छै। इण आगै आपा लोगा रो काई जोर चाले नहीं।

दिनहटा

—जयचन्दलाल वैद

● ब्याही जी सा के स्वर्गवास का समाचार सुनकर बहुत दु ख हुआ। ज्ञान विचारसी जी।

Manakchand Pukhraj
Vinayaga Mudali st
Sowcarpet Madras 1

—पुखराज मिट्ठालाल छल्लाणी

● सुनकर बहुत दु ख हुयो, आपणे घर सू इतनो ही सीर सस्कार थो। कालचक्र के आगे किण रो भी जोर चाले नहीं। आप सब समझदार छो, ज्ञान ऊपर दृष्टि दरावसी तथा घर में सबा ने हमा सब री तरफ सू धीरज बधावसी।

376 Mint Street
Madras 600079

—माणकचन्द कुसुमकुमार सेठिया

● बड़ो दु ख होयो लेकिन निजोरी बात है इण बात आगे किसी रो जोर चाले नहीं। पू मामीसा ने हमारी तरफ से सात्वना दिराइजो।

कलकत्ता

—हेमराज खजाची

● इण दु ख आगे केरोई जोर चाले छे नहीं। सब निजोरी बात छे।

कलकत्ता

—भवरलाल दुलीचन्द

● श्रीमान् चम्पालाल जी सा रो स्वर्गवास रो सुणकर मन बहुत उदास हो गयो। इण दु खद वेला में हमारी हार्दिक सवेदना स्वीकार करसो।

कलकत्ता

—जयचन्दलाल शरदकुमार रामपुरिया

● उनके सथारापूर्वक निधन पर किसी भी प्रकार का दु ख व शोक न रखकर धर्म प्रवृत्ति में रहे। उनकी आत्मा को शाति मिले इसी इच्छा के साथ।

—अभयराज धनेशकुमार

- शाहजी श्रीमान चम्पालाल जी साहब के स्वर्गवास से बहुत दुःख हुआ है। शरीर तो नाशवान है ही परन्तु धर्म क्रिया (सथारा) के साथ देहावसान होना बहुत कठिन है। आप लोगो ने व्यवस्थित ढग से करके अपना जीवन सार्थक किया है।

  जन्म-मरण किसी के हाथ नहीं आयुष्य के अनुकूल होता रहता है। आप सगीजी सा को मेरी तरफ से सात्वना दे। वे तो स्वय पूर्ण समझदार हैं, उनको लिखने के लिए मेरे पास शब्द नहीं है।

  Sudha Textiles —मोहनलाल सिरोहिया
  1 Noormal Lohia Lane Calcutta 700007

- प्रभु दिवगत आत्मा को शाति प्रदान करें तथा परिजनो को यह महान दुःख सहने की शक्ति प्रदान करे। मा साहब से हमारी ओर से धीरज बधावे।

  रतलाम —सुन्दरसिंह चोरड़िया

- जिनेश्वर देव से यही प्रार्थना है कि दिवगत आत्मा को शान्ति प्रदान करे। आप सब धैर्य रखे।

  कलकत्ता —सोहनलाल कुन्दनमल वैद

- बांठिया साहब बहुत ऊचे विचारो के थे तथा आपकी सलाह ठोस व व्यावहारिक होती थी। विधि के निर्मम विधान के आगे मनुष्य का जीवन कितना बेबस है? हमारा धैर्य हमारी आस्था और हमारी अन्तर्मुखी आध्यात्म शक्ति ही ऐसे समय में एक मात्र सम्बल है।

  बम्बई —धनपतराज भडारी

- मन विश्वास नहीं करता परन्तु विधि की विडम्बना के आगे हमारा कोई वश नहीं उसे धैर्यपूर्वक सहन करना ही आवश्यक है। पूज्य बाबूजी सदैव हमारे प्रेरणा स्रोत रहें। अब युगों युगों तक उनकी स्मृतिया हमें प्रेरणा देती रहे यही कामना है। पूज्य मासा व सम्पूर्ण परिवार को मेरी हार्दिक सवेदना।

  M C Bhandari & Co Chartered Accountants —मेघराज जैन
  4 Synagolue Street Calcutta 700001

● उन्होंने सघ के प्रति जो सेवाए की वे अविस्मरणीय है। जीवन भर की गई साधु सन्तो एव समाज की सेवा-एक अनूठा आदर्श है जो उन्हे महान बनाने वाला है। उनके निधन से समाज को एक क्षति पहुँची है, जिसकी पूर्ति होना अत्यन्त कठिन है।

जयपुर —सरदारमल उमराव मल ढढ्ढा

● आचार्य श्री जवाहरलाल जी म सा के प्रति अनन्य श्रद्धा एव जवाहर साहित्य के प्रकाशन मे उनका योगदान अविस्मरणीय है। जब भी हम उनके सम्पर्क मे आए उनकी उदारता, सघ निष्ठा सिद्धान्तो के प्रति दृढ़ता तथा सामयिक विचारधारा ने हमें प्रभावित किया। कृपया दु:ख के इन क्षणो को साहस और धैर्य से सहन करे हम आपके सहभागी हैं।

चादनी चौक, रतलाम —मगनलाल मेहता एव
शाता देवी मेहता

● समाचार जाणकर बहुत दु ख हुयो। इण दुखद वेला में हमा सारा री तरफ सू सवेदना स्वीकार करसो। परमात्मा दिवगत आत्मा ने शाति प्रदान करै। आप लोग धैर्य रखावजो।

५ फैन्सी लेन, —रतनलाल, अभयकुमार, राजेन्द्र कुमार रामपुरिया
कलकत्ता-७००००१

● सुनकर मन बहुत उदास हुआ है। सेठ सा बहुत ही सयमी एव हिम्मती थे। धीरज रखावें एव आपकी माताजी को हिम्मत बधावे।

44 Dewan Rama Iyengar Road —तोलाराम मिन्नी
Madras 600084

● मेरी भगवान से यही प्रार्थना है कि दिवगत आत्मा को शान्ति तथा आप सबको इस हादसे को सहने की शक्ति प्रदान करे।

50/7th Cross —शांतिलाल साड
Willson Garden Bangalor 560027

- उनकी लायकी हमेशा याद रहेगी। आप समझदार हैं ज्ञान विचारे।

Siremull Hirachand —प्रकाशचन्द चोरड़िया
48 General Muthia Mudali St
Madras 600079

- परम पिता उनकी आत्मा को शांति प्रदान करे तथा आप सबको यह दुख सहने की शक्ति दे। हमारी संवेदना स्वीकार करे।

R D Mundhra —हरदास, रामदेव मूंधड़ा
Hulgoram House
Dr Annie Besant Road worli Bombay 400018

- बहुत दुःख भया। इसके आगे किसी का जोर चलता नहीं।

—पदमचंद दूगड़ सपरिवार

- बांठिया सा उदार हृदय समाज सेवी तथा उच्च विचारों के धनी थे। उनके निधन से समाज में एक बहुत बड़ी कमी हुई है।

PRAVEER —प्रकाशचन्द छल्लानी
Ashoka Road Mysore 570001

- शासनदेव से प्रार्थना है कि वह दिवगत आत्मा को चिरशांति तथा शोकातुर परिवार को धैर्य प्रदान करावे।

सम्पादक 'तरुण जैन'
त्रिपोलिया जोधपुर ३४२००२ —फतहसिंह जैन

- श्रीमान् चम्पालाल जी साहब ने समाज की अमूल्य सेवाए कीं। आज समग्र जैन समाज आपके बिना अनाथ हो गया।

Kankariya Bhawaan —नेमीचन्द ज्ञानचन्द कांकरिया
12 Baphna Gali BEAWAR 305901

● बाठिया साहब ने स्व श्री जवाहिराचार्य की विशिष्ठ सेवाए की हैं। आपके मन्त्रित्व काल मे प्रकाशित साहित्य आज भी अपनी विशिष्टता रखता है।

आपको सथारा आया यह प्रमोद का विषय है अनगार भी कभी-कभी इससे वचित रह जाते हैं।

जयपुर —गुमानमल चोरड़िया

● दुखद देहावसान के समाचार से मुझे आघात लगा है। मेरा उनसे वर्षों का स्नेह सम्बन्ध रहा है। सन् १६४८ मे काग्रेस अधिवेशन मे स्व हीरालाल जी शास्त्री चीफ मिनिस्टर के बुलावे पर जयपुर आने पर मेरा पारिवारिक सा सम्बन्ध हो गया था। वे बड़े विलक्षण कुशल सगठनकर्ता मानव-पारखी एव समाज सेवी थे। उनमे अपनो के प्रति अनुराग था। सन् १६५६ के भीनासर सम्मेलन मे उन्होंने मुझे सपरिवार बुलाया था। सबसे प्राणवान यादगार आज भी आखो मे तैर रही है कि उन्होंने परम प्रतापी स्व जवाहरलाल जी म सा की अतिम वक्त प्राणपन से अनन्य सेवा की थी वह किसी प्रकार भुलाई नहीं जा सकती।

बाल दीक्षा के विषय मे उन्होंने बीकानेर धारा सभा मे बिल प्रस्तुत किया था। यह बड़ा साहसिक कदम और प्रयत्न था।

डेगाइच भवन, —प्रेमचद लोढ़ा

नथमल जी का चौक

जौहरी बाजार जयपुर ३

● इण समाचार सू चिंता हुई। नाजोर बात है- कालचक्र रे आगे किणी रो जोर चले नहीं। आपरे घर मे मोटी कसर पड़ी सो पड़ी मगर सारा स्थानकवासी समाज मे एक प्रतिष्ठित अनुभवी धार्मिक जाणकारी वाला री मोटी कसर पड़ी इणरी पूर्ति निकट भविष्य मे होनी असम्भव है।

Jeevraj Janwrilal —जीवराज मेहता

Cloth Merchants

Bhandi Bazar Belgaum 590002

- I am deeply grieved to learn about the sad demise. Please accept my heartfelt condolences on this berevement. I know this being an indelible loss, mere words cannot console you in this hour of grief

  I earnestly pray to almighty to give you and other members of the family enough strength and Courage to withstand the loss with fortitude.

  May the departed soul rest in eternal peace.

  —**Arun Nahar**
  M Sc. D R P LLB CAIIB

- Personally I had known Sh Champalalji for the past five years. I still remember the excellent hospitality he extended to all of us during our visits He also used to narate his past experiences which reflected the amount of dynamism he had Kindly accept our heartfelt condolences on this sad occasion

  118 Broadway —**S Harikrishna Jhaver**
  2nd Floor Madras 600108

- We convey our heartfelt condolences and pray to almighty God the Great Architect of the universe that the departed soul may rest in peace.

  Pannalal Sagarmal —***Chhater Singh Bald***
  Bald Bhawan
  10 Canning St. Calcutta 700001

- Highly grieved to learn about the sad demise. Heartfelt sympathies Pray the Almighty to provide strength to the

bereaved family to bear the heavy loss and to give eternal peace to the departed soul.

—**Ranjit Singh Bengani & family**

Minerva Industrial & Commercial Corp

15 India Exchange Place Calcutta 1

- शोकाकुल पत्र पाने पर स्वय को अत्यधिक असहाय सा अनुभव कर रहा हूँ। स्वय को सभालने के साथ-साथ आदरणीय मा सा को भी हिम्मत बधाए। ईश्वर उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करे।

—वैकुण्ठ नाथ पाण्डे

Meenakshi Enterprises
207 SURYA CHAMBERS
NEHRU BAZAR JAIPUR 302003

- पू मासासा के देहावसान का समाचार पढ़कर बहुत दुख हुआ। यहा आकर मनुष्य के वश मे कुछ नहीं है। पू मासीसा एव सर्व परिवार को आप धैर्य बधाएँ।

—विजयकुमार कोचर

Shiv Chand Brij Lal
Katra Ahluwala
AMRITSAR 143006

- श्री गुरुदेव महाराज इणा री आत्मा ने शान्ति प्रदान करे। आप सब ने दिलासा दिरावसी। नाजोरी वात है।

—माणकचन्द बेंगाणी

कलकत्ता

- विधि के विधान के आगे मानवीय प्रयास विफल हैं। शासनदेव से प्रार्थना है कि उनकी आत्मा को शाति प्रदान करे व आपको क्षमता प्रदान कर।

—माणकचद वेताला

A. Manik Chand Bethala & Co
7 Veerappan St. Madras 600079

- भगवान स्वर्गस्थ आत्मा को चिरशांति प्रदान करे।

पाली —धनराज बच्छावत

- शाहजी साहब के स्वर्गवास हुणे री खबर सू चिन्ता हुई। नाजोर की बात है सो आप ज्ञान विचारसी।

Khivraj Chordia —खीवराज देवराज चोरड़िया
Madras 1

- पूज्य नानासा का श्री सरण होने का समाचार देशनोक से मिला बहुत दु:ख हुआ। भगवान की मरजी के आगे कोई जोर नहीं है।

M/s Devi Enterprises —किरणचद गुलगुलिया
C 2/334 GIDC Ind Area
Jamnagar 361004

- श्रीमान् ब्याहीजी सा हमारे मध्य न रहे जानकर बहुत दु:ख हुआ। ये बहुत समझदार एव हसमुख व्यक्तित्व थे। उनके निधन से बांठिया परिवार को ही नहीं सारे समाज को धक्का लगा है।

Galada Private Ltd —गौतमचद गैलड़ा
3 Peria Naiya Karan St Madras 600079

- सुरेश बाबू से यह दु:खद समाचार मिला। आप सभी धीरज से काम लें धर्म ध्यान में समय वितावें। आदरणीय मासा का पूर्ण ध्यान रखावें।

Burdwan —S S Bhutoria

- गगाशहर के पत्र से समाचार पाकर शोकाकुल हुआ। वे मेरे भाई और पिता जैसे ही रहे। आपके शोक में मैं साथ हूँ। माताजी को दिलासा देवें।

दियातरा —भैरूदान छलानी

- मृत्यु के आगे किसका वश चला है? उनकी बताई हुई आदर्श बातो के साथ चले यही उनके प्रति अपनी सच्ची श्रद्धाजलि होगी।

  'अभिनन्दन'
  Shirting & Suiting —भवरलाल
  Lalgate Surat 3

- दादासा के अचानक हमारे बीच से चले जाने से बड़ा ही दुख हुआ। भगवान की इस क्रूर इच्छा के आगे सब विफल हैं। उनकी आत्मा को शाति प्राप्त हो।
  5 G Mandevilla Appartment —कविता एव आशीष
  9 Mandevilla Gardens
  Ballygunge Calcutta 700019

- समाज मे एक चमकता हुआ नक्षत्र अस्त हो गया। यह न केवल आपको ही क्षति हुई है वरन् समाज मे भी एक अपूरणीय क्षति हुई है। काल धर्म की इस विचित्र लीला के आगे निरूपायता है। आप ज्ञान की दृष्टि से विचार कर दिल मे समाधान रखावे।
  K. Phoolchand —फूलचद लूणिया
  D S Lane Chickpet Cross
  Bangalore 560053

- पूज्य दादाजी के स्वर्गवास का समाचार पढ़कर बहुत दु:ख हुआ। मैं आज से ५० /५५ वर्ष पूर्व की बात याद करता हूँ तो उनका स्नेह याद आता है। कितने महान थे! ऐसे पुरूष हजारो वर्षों मे तथा हजारों मे एक ही होते हैं। इस निजोरी बात के आगे जोर चालै नहीं।

  Mahavir Auto Parts —प्रतापसिंह वैद
  Mahavir Bhawan Siliguri 734401

- ईश्वर उनकी आत्मा को शाति व आप सभी को यह दु:ख सहन करने की शक्ति प्रदान करे।
  अजमेर —जय-सन्तोष
  —ऋतु-मनीष

वास्तविक सेठजी

- श्रीमान् बांठिया जी ने गंगाशहर, भीनासर व बीकानेर को जो राह दिखाई व जो कार्य किये वे अविस्मरणीय हैं। आप त्रिवेणी-संघ के एक मात्र व वास्तविक सेठजी थे। उनकी सूझ-बूझ दूरदर्शिता एवं धर्मनिष्ठ समाज के लिए अनूठा उदाहरण है।

K.L Bothra & Co —K L Bothra
Advocates & Taxation Consultants
35 Armenian Street Calcutta 700001

विश्वास नही होता

- मासासा के निधन का समाचार पढ़कर विश्वास नहीं होता पर संसार का यही हाल है। एक-एक को देखकर शांति रखनी पड़ती है। हमारी श्रद्धांजलि।

अनोपचन्द बच्छावत —विजयकुमार, जयकुमार आदि
४ ब्रज दुलाल स्ट्रीट कलकत्ता ६

समाज मे खामी

- इण पर कोई रो भी जोर चाले नहीं। समाज म बहुत बड़ी खामी हुई है। आवती टैम मे जल्दी पूर्ति हुणी सम्भव नीं लागै।

कलकत्ता १६ —पारसमल काकरिया

समाज सेवा मे जीवन अर्पण

- पिताश्री का वरद हस्त जीवन का अनुपम सबल होता है जो ज्योति प्रदान करता हुआ मार्ग प्रशस्त करता है। मन को आघात लगा कि समाज ने एक ऐसे समर्पित व्यक्तित्व को खो दिया है, जिसने पूर्ण निष्ठा, योग्यता एवं लगन से समाज सेवा में अपना जीवन अर्पण कर दिया। —उमरावमल घोरड़िया

13 Takht E-Shahi Road Jaipur 302004

अनन्य गुणो के धनी समाज के पितृवत्

● श्री चम्पालाल सा अनन्य गुणो के धनी थे। मृदु एवम् मित्त भाषी होते हुए भी सदैव स्पष्ट बोलते थे चाहे सामने वाले को कितना ही कटु क्यो न लगे। कोई भी उन्हे अपने उसूलो से विचलित नहीं कर सकता था। हर परिजन सामाजिक-व्यक्ति या साधु-साध्वी उनकी सच्चाई का कायल था और इनमे से कोई भी उनके सामने अप्रमाणिक बात करने की हिम्मत तक नहीं कर सकता था।

उनका रहन-सहन, खान-पान वाणी-वर्ताव सब कुछ नियमबद्ध था और अन्तिम समय तक इसी प्रकार रहा। वे आपके ही पिता नहीं अपितु सारे समाज के पिता थे। आप लोगा के लिए कितने गौरव की बात है कि आप उनकी सतान हैं।

क्षति-पूर्ति तो असम्भव है लेकिन उनके गुणो मे से कुछ अपने जीवन मे उतार कर उनकी आत्मा को शाति पहुँचा सकते हैं।

U L Mehta —उत्तमचन्द मेहता
1 Cosmoville Satyagraha Marg
Ahmedabad 380054

सर्व गुण सम्पन्न विराट व्यक्तित्व

● शाहजी श्री चम्पालाल जी के स्वर्गवास बाबत जानकर बहुत दु:ख हुआ। कुदरत के सामने सभी नत-मस्तक हैं। समाज के कर्मठ कार्यकर्ताओं मे अग्रणीय बाठिया सा का अनुभव एव मार्ग-दर्शन सदैव स्मरणीय रहेगा। सर्व गुण सम्पन्न उस विराट व्यक्तित्व की उदारता दानवीरता भी कभी भुलाई न जा सकेगी।

Hirachand Tejraj —तेजराज चोरड़िया
11 Ayya Mudall St
Sowcarpet Madras 600079

● सुनकर सभी शोकाकुल हैं परन्तु मृत्यु के आगे किसी का जोर नहीं होने से विवश हैं। अपने साथ इतना ही सयोग मानते हुए श्री जिनेश्वर देव से प्रार्थना है कि उनकी

आत्मा को चिरशान्ति मिले।

Amar Industrial Corporation —सम्पतराय चौरड़िया
18 Sembudass St. Madras 600001

अपूरणीय क्षति

- मुझे व परिवार को अत्यन्त वेदना हुई प्रकृति के आगे सब असहाय हैं।

Sekhawat Estate —हेमन्तकुमार शेखावत
Shanti Bhawan
87 Sitlamata Bazar Indore 2

समर्पित जीवन आदर्श

- बांठिया सा धर्मनिष्ठ, कर्तव्य परायण कर्मठ सेवाभावी स्वधर्मी वात्सल्य के समर्पित जीवन आदर्श थे। आचार्य श्री जवाहरलालजी के प्रति उनकी अटूट श्रद्धा हम सबके लिए अनुकरणीय एवं अभिनन्दनीय है। स्वर्गस्थ आत्मा को चिरशान्ति प्राप्त हो।

मंत्री

सम्यग् ज्ञान प्रचारक मण्डल —चैतन्यमल ढढ्ढा
बापू बाजार जयपुर ३

- I always remember the sincere affection of Seth Champalal ji

Horticulturist —Amilal J Dhaky
Nagindas Mody Marg Porbandar (Guj)

- समाज के एक धर्मनिष्ठ सुश्रावक थे। महान क्षति हुई है जिसकी पूर्ति होना असंभव है। आपने सेवा का कर्तव्य पू पिताजी पर न्यौछावर किया वो आशीर्वाद महान है।

वि सर्जन आश्रम नवलखा —मानवमुनि
इंदौर ४५२००१

Telegrams

- Please accept our Heartfelt condolences
  Calcutta —**Manak Chand Rampuria Familly**

- Accept our hearty condolence
  Calcutta —**Mohanlal Sirohia**

- Heartfelt Condolence on sad demise
  Calcutta —**Dungarmal Surendra Bhutoria**

- Experiencing heartfelt condolence on sad demise of Sethji
  Calcutta —**H M Baid**

- Deeply shocked May God bring peace to Departed soul
  Muzaffarpur —**Ummaid Singh Bhutoria**

- My heartfelt sympathy live with you during agony
  Bombay —**Chunnilal Mehta**

- Accept my heartfelt condolence on sudden Demise of your father
  Jodhpur —**Suraj Raj Bhansali**

- Deeply shocked Heartfelt Condolence to bereaved family
  Calcutta —**Bhoop Raj Jain**

श्री जवाहर विद्यापीठ की भावभीनी श्रद्धाजलि

दिनाक ५ अप्रेल १९८७ रविवार (तदनुसार मिति चैत्र शुक्ला ७ स २०४४) को अपराह्न तीन बजे श्री जवाहर विद्यापीठ की साधारण सभा का विशेष अधिवेशन श्रीमान् कालूरामजी डागा (सस्था के सभापति) की अध्यक्षता मे आयोजित हुआ, जिसमें सस्था के सस्थापक सदस्य श्रीमान् चम्पालाल जी बाठिया का अचानक स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पावन स्मृति मे एक शोक-सभा का आयोजन किया गया।

स्मृति-सभा मे सर्वश्री छगनलाल जी वैद जसकरण जी बोथरा कालूराम जी डागा, नथमल जी डागा सोहनलाल जी पटवा रूपलाल जी सुराना चम्पालाल जी डागा नथमल जी सिंगी गणेशमल जी धाड़ेवा, अमरचन्द जी लूणिया, खेमचन्दजी सेठिया धीरजकुमार जी बाठिया पूनमचन्दजी रामपुरिया महेन्द्रकुमार जी मिन्नी सुन्दरलाल जी तातेड़ उदयचन्द जी वैद चेतन प्रकाश जी सेठिया, भवरलाल जी कोठारी चोरूलाल जी मालू, विमलकुमार जी पुगलिया कमल चन्द जी पुगलिया रामलालजी सेठिया खेमचन्द जी छल्लाणी डालचन्द जी मिन्नी लहरचन्दजी सेठिया, रैवतमलजी सुराणा आदि अनेक गणमान्य नागरिक उपस्थित थे।

अनेक वक्ताओं ने बाठिया सा के व्यक्तित्व एव कर्तृत्व पर प्रकाश डाला और अपनी भावाभिव्यक्तियो मे उन्हे विरल विभूति निरूपित किया।

श्री सुन्दरलाल जी तातेड़ ने दिवगत आत्मा को सादर नमन करते हुए बताया कि ससार मे अपना काम सभी करते हैं परन्तु परोपकार मे जीवन व्यतीत करने वालों का जीवन ही सार्थक है। गुरुनिष्ठ व सेवा के प्रतीक श्रीमान् बाठिया सा इसी कारण वन्दनीय व स्मरणीय हैं।

इसी क्रम को आगे बढ़ाते हुए श्री भवरलालजी कोठारी ने कहा कि सेठ सा एक व्यक्ति नहीं वरन् एक सस्था थे। उन्होंने भीनासर मे अपनी सूझबूझ व प्रतिभा से वृहद् साधु सम्मेलन सफलतापूर्वक आयोजित करवाया। उनका नाम अखिल भारतवर्षीय स्थानकवासी जैन समाज में चिर-स्मरणीय रहेगा। पूज्य स्वर्गीय आचार्य श्री जवाहर लाल जी म सा की आपने जिस लगन व निष्ठा के साथ सेवा की वह स्तुत्य व अनुकरणीय है। इसी प्रकार जवाहर किरणावलियों का प्रकाशन कार्य पूर्ण कर आपने कीर्तिमानीय कार्य किया है। उनका निधन समाज की एक अपूरणीय क्षति है।

श्री नथमल जी सिंगी के शब्दो मे समाज बाठिया सा के कार्यों के लिए सदैव उनका ऋणी रहेगा। साथ ही आपने उनके परिजना द्वारा उनकी परम्परा का निर्वाह करते हुए सघ की सेवा हेतु अपेक्षा की। श्री लहरचन्दजी सेठिया ने ऐसी विभूति का पैदा होना भीनासर के लिए सौभाग्य बताया। आपने विद्यापीठ की स्थापना व साधु सम्मेलन की सफलता का स्मरण कराते हुए उनके कार्यों को पूरा करना ही सच्ची श्रद्धाजलि बताया।

श्रीमान् छगनलालजी बैद ने अपनी भावाजलि देते हुए कहा कि भीनासर मे जो भी विकास कार्य हुए हैं सेठ साहब की प्रेरणा से हुए हैं। भीनासर मे आचार्य श्री नानेश का चातुर्मास कराने का मुख्य श्रेय भी आपको ही जाता है। गुरुदेव नोखा की तरफ विहार कर रहे थे। गगाशहर भीनासर सघ गुरुदेव से विनती करने रासीसर गये तो आपने विनम्रता पूर्वक निवेदन किया कि अस्वस्थता की स्थिति मे आप द्वारा आगे विहार करने से हमारी नाक कट जायेगी। अत स्वास्थ्य ठीक न होने तक आप भीनासर जैसे साताकारी स्थान पर ही विराजे। गुरुदेव को आग्रह मानना पड़ा और वापस भीनासर पधारे। भीनासर को चातुर्मास सहित ११ माह तक सेवा का अपूर्व लाभ मिला। उनकी बातचीत की शैली ही ऐसी थी कि अपनी बात मनवा लेते। उन्होंने अपनी कृतज्ञता पेश करते हुए कहा कि हम लोगों को भी खड़ा करने वाले वे ही शख्स थे। आज हम जो कुछ हैं उन्हीं के पुण्य प्रताप से हैं।

तदनन्तर सर्व श्री चम्पालालजी डागा खेमचन्दजी सेठिया रेवतमलजी सुराणा महेन्द्रजी मिन्नी जसकरणजी बोथरा चेतनप्रकाशजी सेठिया आदि ने भी बाठिया सा का गुणानुवाद करते हुए उन्हे हार्दिक श्रद्धाजलि अर्पित की।

शोक प्रस्ताव पारित करने के पश्चात् श्री धीरज कुमार जी बाठिया ने सभासदों के प्रति आभार ज्ञापित करते हुए अपने पितृश्री के पदचिह्नो पर चलने का आश्वासन दिया।

सर्व सम्मति से निर्णय लिया गया कि सेठ सा की स्मृति स्वरूप उनका एक फोटो वाचनालय के हॉल मे लगाया जावे। अन्त मे सभी उपस्थित जनों ने दिवगत आत्मा की शान्ति हेतु ११ ११ नवकार मत्र का ध्यान किया व २ मिनट का मौन रखकर अपनी भावभीनी श्रद्धाजलि अर्पित की।

स्व सेठ श्री चम्पालालजी बाँठिया

जन्म—मार्गशीर्ष शुक्ला पूर्णिमा वि भवत् १८ ... १५ दिसम्बर १८

स्वर्गवास—चैत्र शुक्ला तृतीया वि सम्वत् २ ... ल १९८७

१
२
आपके जोवन का इतिहास, करेगा जन-जन आत्म विकास ।
कममय धम धममय ज्ञान, सत्य उद्घाटक मनुज महान ॥